□ निर्देशन
साध्वी श्री उमरावकुंवर 'अर्चना'

□ सम्पादकमण्डल
अनुयोगप्रवर्त्तक मुनिश्री कन्हैयालाल 'कमल'
उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री
श्री रतनमुनि
पण्डित श्री शोभाचन्द्र भारिल्ल

□ प्रबन्धसम्पादक
श्रीचन्द सुराणा 'सरस'

□ सम्प्रेरक
मुनिश्री विनयकुमार 'भीम'
श्री महेन्द्रमुनि 'दिनकर'

□ प्रकाशनतिथि
वीरनिर्वाण संवत् २५१५
वि. सं. २०४५
ई. सन् १९८९

□ प्रकाशक
श्री आगम प्रकाशन-समिति
पीपलिया बाजार, ब्यावर (राजस्थान)
पिन—३०५९०१

□ मुद्रक
सतीशचन्द्र शुक्ल
वैदिक यंत्रालय,
केसरगंज, अजमेर—३०५००१

□ मूल्य : ३५) रुपये

Published at the Holy Remembrance occasion
of
Rev Guru Sri Joravarmalji Maharaj

Sūryaprajnapti—Chandraprajnapti

[Original Text, Introduction and Appendices]

Inspiring Soul
Up-pravartaka Shasansevi Rev Swami Sri Brijlalji Maharaj

Convener & Founder Editor
(Late) Yuvacharya Sri Mishrimalji Maharaj 'Madhukar'

Editor
Muni Sri Kanhaiyalalji 'Kamal'

Chief Editor
Pt Shobhachandra Bharilla

Publishers
Sri Agama Prakashan Samiti
Beawar (Raj)

Jinagam Granthmala Publication No. 29

Direction
Sadhwi Umravkunwar 'Archana'

Board of Editors
Anuyoga-pravartaka Muni Shri Kanhaiyalal 'Kamal'
Sri Devendra Muni Shastri
Sri Ratan Muni
Pt. Shobhachandra Bharilla

Managing Editor
Srichand Surana 'Saras'

Promotor
Munisri Vinayakumar 'Bhima'
Sri Mahendramuni 'Dinakar'

Date of Publication
Vir-nirvana Samvat 2515
Vikram Samvat 2045; March, 1989

Publisher
Sri Agam Prakashan Samiti,
Pipalia Bazar, Beawar (Raj.) [India]
Pin 305 901

Printer
Satishchandra Shukla
Vedic Yantralaya
Kesarganj, Ajmer

Price [illegible]

प्रकाशकीय

श्री जिनागम ग्रन्थमाला का २९वाँ ग्रन्थाङ्क आगमप्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमे सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति दो आगमो का समावेश किया गया है। दोनो का एक साथ मुद्रण कराने का हेतु क्या है, इस विषय मे आगम-अनुयोग-प्रवर्त्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी म 'कमल' ने अपने सम्पादकीय मे विस्तृत चर्चा की है, अतएव यहाँ दोहराने की आवश्यकता नही है।

प्रस्तुत दोनो आगम मूलपाठ एव परिशिष्ट आदि के साथ ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। अर्थ-विवेचन आदि नहीं दिये गये हैं। इसका कारण यह है कि इनमे आए कतिपय पाठो और उनके अर्थ मे मतैक्य नही हो सका है। इसके अतिरिक्त इनका विषय ज्योतिष है जो सर्वसाधारण के लिए दुरूह है। इस विषय की चर्चा भी सम्पादकीय मे की गई है।

पाठको को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जीवाजीवाभिगमसूत्र भी विस्तृत व्याख्या के साथ शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। वह दो भागो मे प्रकाशित होगा। प्रथम भाग मुद्रित हो चुका है। द्वितीय भाग का मुद्रण चालू है। इसका अनुवाद एव सम्पादन विद्वद्वर श्री राजेन्द्रमुनिजी ने किया है।

जीवाजीवाभिगमसूत्र के मुद्रण के पश्चात् छेदसूत्रो का प्रकाशन ही शेष रहता है। आगममनीषी मुनिश्री 'कमल' जी म के सम्पादन के साथ इनका प्रकाशन भी शीघ्र ही होने वाला है। इनके प्रकाशित होते ही आगम बत्तीसी के प्रकाशन का महान् अनुष्ठान पूर्णरूप मे सम्पन्न हो जाएगा।

प्रस्तुत प्रकाशन के अनेक आगम कॉलेजो और विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम मे निर्धारित किए गए है। अतएव यह आवश्यक समझा गया कि इनकी उपलब्धि निरन्तर बनी रहे। इस कारण जिन आगमो की प्रतियाँ समाप्त हो रही हैं, उनके द्वितीय सस्करण प्रकाशित कराये जा रहे हैं। तदनुसार आचारागसूत्र प्रथम भाग दूसरी बार छप रहा है और उपासकदशागसूत्र भी शीघ्र प्रेस मे दिया जाने वाला है। इनके अतिरिक्त जिन-जिन आगमो के प्रथम सस्करण समाप्त होते जाएँगे, उन्हे भी दूसरी बार प्रकाशित किया जाएगा।

सन्तोष का विषय है कि ग्रन्थमाला के इन प्रकाशनो का समाज एव विद्वद्वर्ग ने पर्याप्त आदर किया है। आशा है भविष्य मे इनका और अधिक प्रचार-प्रसार होगा और श्री आगम प्रकाशन समिति का प्रयास अधिक सफल और सुफलप्रदायक सिद्ध होगा।

अन्त मे आगम-अनुयोग के विशाल कार्य मे व्यस्त होते हुए भी मुनिश्री कन्हैयालालजी म 'कमल' ने मूलपाठ का सम्पादन कर व डाक्टर श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना लिखकर जो सहयोग प्रदान किया है, उसके लिए आदरपूर्वक आभार मानते है। साथ ही श्री प. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने अवलोकन किया एव सहयोगी कार्यकर्त्ताओ से सहयोग प्राप्त हुआ है, तदर्थ उनके भी हम आभारी है।

निवेदक

रतनचन्द मोदी
कार्यवाहक अध्यक्ष

अमरचन्द मोदी
मन्त्री

सायरमल चौरड़िया
महामन्त्री

श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर

सम्पादकीय

ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति अर्थात् चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति

सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्रपाठ

पूर्व प्रकाशित सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रो से प्रस्तुत सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्र यदि अक्षरश मिलाना चाहेगे तो नही मिलेंगे। क्योकि इस सस्करण के सूत्रो को कई पूरक वाक्यो से पूरित किया है, फिर भी सूत्रपाठो की प्रामाणिकता यथावत् है।

आगमो के विशेषज्ञ ही सूत्रपाठो की व्यवस्था के औचित्य को समझ सकेंगे।

सामान्य अन्तर के अतिरिक्त चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति सर्वथा समान हैं, इसलिए एक के परिचय से दोनो का परिचय स्वत हो जाता है।

उपांगद्वय-परिचय

सकलनकर्ता द्वारा निर्धारित नाम—ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति है।

प्रारम्भ मे सयुक्त प्रचलित नाम—चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति रहा होगा। बाद मे उपागद्वय के रूप मे विभाजित नाम—चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति हो गये है, जो अभी प्रचलित है।

प्रत्येक प्रज्ञप्ति मे बीस प्राभृत है और प्रत्येक प्रज्ञप्ति मे १०८ सूत्र है।

तृतीय प्राभृत से नवम प्राभृत पर्यन्त अर्थात् सात प्राभृतो मे और ग्यारहवे प्राभृत से बीसवे प्राभृत पर्यन्त अर्थात् दस प्राभृतो मे "प्राभृत-प्राभृत" नही है।

केवल प्रथम, द्वितीय और दसवें प्राभृत मे "प्राभृत-प्राभृत" है।

सयुक्त सख्या के अनुसार सतरह प्राभृतो मे प्राभृत-प्राभृत नही है। केवल तीन प्राभृतो मे प्राभृत-प्राभृत हैं।

उपलब्ध चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति का विषयानुक्रम वर्गीकृत नही है। यदि इनके विकीर्ण विषयो का वर्गीकरण किया जाए तो जिज्ञासु जगत अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकता है।

वर्गीकृत विषयानुक्रम

चन्द्रप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

१ चन्द्र का विस्तृत स्वरूप
२ चन्द्र का सूर्य से सयोग
३ चन्द्र का ग्रहो से सयोग
४ चन्द्र का नक्षत्रो से सयोग
५ चन्द्र का ताराओ से सयोग।

सूर्यप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

१ सूर्य का विस्तृत स्वरूप	१ ग्रहो के सूत्र
२ सूर्य का चन्द्र से सयोग	२ नक्षत्रो के सूत्र
३ सूर्य का ग्रहो से सयोग	३ ताराओ के सूत्र
४ सूर्य का नक्षत्रो से सयोग	१ काल के भेद प्रभेद
५ सूर्य का ताराओ से सयोग	२ अहोरात्र के सूत्र
१ चन्द्र, सूर्य के सयुक्त सूत्र	३ सवत्सर के सूत्र
२ चन्द्र, सूर्य, ग्रह के सयुक्त सूत्र	४ औपमिक काल के सूत्र
३ चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र के सयुक्त सूत्र	५ काल और क्षेत्र के सूत्र
४ चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, ताराओ के सयुक्त सूत्र	

दोनों प्रज्ञप्तियो की निर्युक्ति आदि व्याख्याएँ

द्वादश उपागो के वर्तमान मान्य क्रम मे चन्द्रप्रज्ञप्ति छठा और सूर्यप्रज्ञप्ति सातवाँ उपाग है—इसीलिए आचार्य मलयगिरि ने पहले चन्द्रप्रज्ञप्ति की वृत्ति और बाद मे सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति रची होगी।

यदि आचार्य मलयगिरिकृत चन्द्रप्रज्ञप्ति-वृत्ति कही से उपलब्ध है तो उसका प्रकाशन हुआ है या नही ? या अन्य किसी के द्वारा की गई निर्युक्ति, चूर्णि या टीका प्रकाशित हो तो अन्वेषणीय है।

आचार्य मलयगिरि ने सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति मे लिखा है—सूर्यप्रज्ञप्तिनिर्युक्ति नष्ट हो गई है[1] अत गुरु-कृपा से वृत्ति की रचना कर रहा हूँ।[2]

नामकरण और विभाजन

सभी अग-उपागो के आदि या अन्त मे कही न कही उनके नाम उपलब्ध हैं किन्तु इन दोनो उपागो की उत्थानिका या उपसहार मे चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का नाम क्यो नही है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

दो उपागो के रूप मे इनका विभाजन कब और क्यो हुआ ? यह शोध का विषय है।

ग्रह, नक्षत्र, तारा ज्योतिष्क देव हैं—इनके इन्द्र हैं चन्द्र-सूर्य—ये दोनो ज्योतिषगणराज हैं।

उत्थानिका और उपसहार के गद्य-पद्य सूत्रो मे "ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति" नाम ही उपलब्ध है किन्तु इस नाम से ये उपाग प्रख्यात न होकर चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति नाम से प्रख्यात हुए हैं।

"ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" का सकलनकर्त्ता ग्रन्थ के प्रारम्भ मे "ज्योतिष-गण-राज-प्रज्ञप्ति" इस एक नाम से की गई स्वतन्त्र सकलित वृत्ति को ही कहने की प्रतिज्ञा करता है।

इसका असदिग्ध आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ मे दी हुई तृतीय और चतुर्थ गाथा है।[3]

---

१ अस्या निर्युक्तिरभूत्, पूर्वं श्री भद्रबाहुसूरिकृता।
कलिदोषात् साऽनेशद् व्याचक्षे केवल सूत्रम्॥

२ सूर्यप्रज्ञप्तिमह गुरूपदेशानुसारत किंचित्।
विवृणोमि यथाशक्ति स्पष्ट स्वपरोपकाराय॥ —सूर्य० प्र० वृत्ति० प्र० १

३ गाहाओ—फुड-वियड-पागडत्थ, वुच्छ पुव्वसुय-सार-णिस्सद॥
सुहुम गणिणोवइट्ठ, जोइसगणराय-पण्णत्ति॥३॥
नामेण इदभूइत्ति, गोयमो वदिऊण तिविहेण॥
पुच्छइ जिणवरवसह, जोइसरायस्स पण्णत्ति॥४॥

इसी प्रकार चन्द्र और सूर्य प्रज्ञप्ति के अन्त मे दी हुई प्रशस्ति-गाथाओ मे से प्रथम गाथा के दो पदो मे[1] सकलनकर्त्ता ने कहा है—"इस भगवती ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का मैंने उत्कीर्तन किया है।"

इस ग्रन्थ के रचयिता ने कही यह नही कहा कि "मैं चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का कथन करू गा," किन्तु "ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" यही एक नाम इसके रचयिता ने स्पष्ट कहा है, इस सन्दर्भ मे यह प्रमाण पर्याप्त है।

यह उपाग एक उपाग के रूप मे कब से माना गया ? और इसके दो अध्ययनो अथवा दो श्रुतस्कन्धो को दो उपागो के रूप मे कब मे मान लिया गया ? ऐतिहासिक प्रमाण के अभाव मे क्या कहा जाय।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के संकलनकर्त्ता

प्रश्न उठता है—"ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" के सकलनकर्त्ता कौन थे ?

इस प्रश्न का निश्चित समाधान सम्भव नही है, क्योकि सकलनकर्त्ता का नाम कही उपलब्ध नही है।

"चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति को कइयो ने गणधरकृत लिखा है। सम्भव है इसका आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ की चतुर्थ गाथा[2] को मान लिया गया है। किन्तु इस गाथा से गौतम गणधरकृत है, यह कैसे सिद्ध हो सकता है ?

इसके सकलनकर्त्ता कोई पूर्वधर या श्रुतधर स्थविर है, जो यह कह रहे हैं कि "इन्द्रभूति" नाम के गौतम गणधर भगवान् महावीर को तीन योग मे वदना करके "ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" के सम्बन्ध मे पूछते हैं।

इस गाथा मे "पुच्छइ" क्रिया का प्रयोग अन्य किसी सकलनकर्त्ता ने किया है।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का सकलनकाल

भगवान् महावीर और निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुसूरि—इन दोनो के बीच का समय इस ग्रन्थराज का सकलन-काल कहा जा सकता है, क्योकि भद्रबाहुसूरिकृत "सूर्यप्रज्ञप्ति की निर्युक्ति" वृत्तिकार आचार्य मलयगिरि के पूर्व ही नष्ट हो गई थी, ऐसा वे सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति मे स्वय लिखते हैं।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति एक स्वतन्त्र कृति है

सकलनकर्त्ता चन्द्रप्रज्ञप्ति की द्वितीय गाथा[3] मे पाँच पदो को वन्दन करता है और तृतीय गाथा[4] मे वह कहता है कि "पूर्वश्रुत का सार निष्यन्द-झरना" रूप स्फुट-विकट सूक्ष्म गणित को प्रकट करने के लिए "ज्योतिष-गण-राज-प्रज्ञप्ति" को कहूँगा। इससे स्पष्ट ध्वनित होता है—यह एक स्वतन्त्र कृति है।

---

१ गाहा—इय एस पागडत्था, अभव्वजणहियय-दुल्लभा इणमो।
उक्कित्तिया भगवती, जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥३॥

२ नामेण इदभूइत्ति, गोयमो वदिऊण तिविहेण।
पुच्छइ जिणवरवसह, जोइसरायस्स पण्णत्ति ॥४॥

३. नमिऊण सुर-असुर-गरुल-भुयगपरिवदिए गयकिलेसे।
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहू य ॥ २ ॥

४. फुड-वियड-पागडत्थ, वुच्छ पुव्वसुय-सारणिस्सद।
सुहुम गणिणोवइट्ठ, जोइसगणराय-पण्णत्ति ॥३॥

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ मे "ता" का प्रयोग है। यह "ता" का प्रयोग इसको स्वतन्त्र कृति सिद्ध करने के लिए प्रबल प्रमाण है।

इस प्रकार का "ता" का प्रयोग किसी भी अंग उपागो के सूत्रो मे उपलब्ध नही है।

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के प्रत्येक प्रश्नसूत्र के प्रारम्भ मे "भते !" का और उत्तर सूत्र के प्रारम्भ मे 'गोयमा' का प्रयोग नही है। जबकि अन्य अग-उपागो के सूत्रो मे भते ! और गोयमा ! का प्रयोग प्रायः सर्वत्र है, अत यह मान्यता निर्विवाद है कि यह कृति पूर्ण रूप मे स्वतन्त्र सकलित कृति है।

ग्रन्थ एक, उत्थानिकाएँ दो

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति की एक उत्थानिका चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ मे दी हुई गाथाओ की है और एक उत्थानिका गद्य सूत्रो की है।

इन उत्थानिकाओ का प्रयोग विभिन्न प्रतियो के सम्पादको ने विभिन्न रूपो मे किया है—

१ किसी ने दोनो उत्थानिकाएँ दी हैं।

२ किसी ने एक गद्य-सूत्रो की उत्थानिका दी है।

३. किसी ने पद्य-गाथाओ की उत्थानिका दी हैं।

इसी प्रकार प्रशस्ति गाथायें चन्द्रप्रज्ञप्ति के अन्त मे और सूर्यप्रज्ञप्ति के अन्त मे भी दी है। जबकि ये गाथाएँ ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के अन्त मे दी गई थी।

सभव है ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति को जब दो उपागो के रूप मे विभाजित किया गया होगा, उस समय दोनो उपागो के अन्त मे समान प्रशस्तिगाथाएँ दे दी गई हैं।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति की संकलन-शैली

चिर अतीत मे ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का सकलन किस रूप में रहा होगा ? यह तो आगम-साहित्य के इतिहास-विशेषज्ञो का विषय है किन्तु वर्तमान मे उपलब्ध चन्द्रप्रज्ञप्ति तथा सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ मे दी गई विषय-निर्देशक समान गाथाओ मे प्रथम प्राभृत का प्रमुख विषय "सूर्यमण्डलो मे सूर्य की गति का गणित" सूचित किया गया है, किन्तु दोनो उपागो का प्रथम सूत्र मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का हैं।

सूर्य सम्बन्धी गणित और चन्द्र सम्बन्धी गणित के सभी सूत्र यत्र-तत्र विकीर्ण हैं। ग्रह, नक्षत्र और ताराओ के सूत्रो का भी व्यवस्थित क्रम नही है। अत आगमो के विशेषज्ञ सम्पादक श्रमण या सद्‌गृहस्थ इन उपागो को आधुनिक सम्पादन शैली से सम्पादित करें तो गणित की आशातीत वृद्धि हो सकती है।

प्रथम प्राभृत के पाँचवें प्राभृत-प्राभृत मे दो सूत्र हैं। सोलहवें सूत्र मे सूर्य की गति के सम्बन्ध मे अन्य मान्यताओ की पाच प्रतिपत्तियाँ हैं और सत्रहवें मे स्वमान्यता का प्ररूपण है।

इस प्रकार अन्य मान्यताओ का और स्वमान्यता का दो विभिन्न सूत्रो मे निरूपण अन्यत्र नही है।

संकलन काल

गणधर अग आगमो को सूत्रागमो के रूप मे पहले सकलित करता है और श्रुतधर स्थविर उपागो को बाद मे सकलित करते हैं। यह सकलन का कालक्रम निर्विवाद है।

अग आगमो को सकलित करने वाला गणधर एक होता है और उपाग आगमो को सकलित करने वाले श्रुतधर विभिन्न काल मे विभिन्न होते हैं अत उनकी धारणाएँ तथा सकलन पद्धति समान सभव नही है।

स्थानाग अग आगम है। इसके दो सूत्रो मे[1] चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के नामो का निर्देश दुविधाजनक है, क्योकि स्थानाग के पूर्व चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति का सकलन होने पर ही उनका उसमे निर्देश सम्भव हो सकता है।

इस विपरीत धारणा के निवारण के लिए बहुश्रुतो को समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, किन्तु समाधान प्रस्तुत करने से पूर्व उन्हे यह ध्यान मे रखना चाहिए—यह सक्षिप्त वाचना की सूचना नही है—ये दोनो अलग-अलग सूत्र है।

नक्षत्र-गणनाक्रम मे परस्पर विरोध है

चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति दशम प्राभृत के प्रथम प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र-गणनाक्रम की स्वमान्यता का प्ररूपण है—तदनुसार अभिजित से उत्तराषाढा पर्यन्त २८ नक्षत्रो का गणनाक्रम है किन्तु स्थानाग अ २, उ ३, सूत्राक ९५ मे तीन गाथाएँ नक्षत्र गणनाक्रम की हैं और यही तीन गाथाएँ अनुयोगद्वार के उपक्रम विभाग मे सूत्र १८५ मे हैं। इनमे कृत्तिका से भरणी पर्यंत नक्षत्रो का गणनाक्रम है।

स्थानाग अग आगम है—इसमे कहा गया नक्षत्र-गणनाक्रम यदि स्वमान्यता के अनुसार है तो सूर्यप्रज्ञप्ति मे कहे गये नक्षत्र-गणनाक्रम को स्वमान्यता का कैसे माना जाय? क्योकि उपाग की अपेक्षा अग आगम की प्रामाणिकता स्वत सिद्ध है।

यदि स्थानाग मे निर्दिष्ट नक्षत्र-गणनाक्रम को किसी व्याख्याकार ने अन्य मान्यता का मान लिया होता तो परस्पर विरोध निरस्त हो जाता किन्तु जबूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि के आगमपाठो से स्वमान्यता का क्रम अभिजित से उत्तराषाढा पर्यंत का है अन्य क्रम अन्य मान्यता के हैं।

प्राभृत पद का परमार्थ[2]

सूर्यप्रज्ञप्ति-वृत्ति के अनुसार प्राभृत शब्द के अर्थ

इष्ट पुरुष के लिए देशकाल के योग्य हितकर दुर्लभ वस्तु अर्पित करना।

अथवा जिस पदार्थ से मन प्रसन्न हो ऐसा पदार्थ इष्ट पुरुष को अर्पित करना, ये दोनो शब्दार्थ हैं।

---

१ (क) स्थानाग अ. ३, उ २, सू. १६० (ख) स्थानाग अ ४, उ. १, सू. २७७

२ (क) अथ प्राभृतमिति क शब्दार्थ ?

उच्यते—इह प्राभृत नाम लोके प्रसिद्ध यदभीष्टाय पुरुषाय देश-कालोचित दुर्लभ-वस्तु-परिणाम-सुन्दरमुपनीयते।

(ख) प्रकर्षेण आ-समन्ताद् भ्रियते-पोष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानेनेति प्राभृतम्।

(ग) विवक्षिता अपि च ग्रन्थपद्धतय परमदुर्लभा परिणामसुन्दराश्चाभीष्टेभ्यो विनयादिगुणकलितेभ्य शिष्येभ्यो देश-कालौचित्येनोपनीयन्ते। —सूर्य. सू ६ वृत्ति-पत्र ७ का पूर्वभाग

श्वेताम्बर परम्परा मे चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के अध्ययन आदि विभागो के लिए "प्राभृत" शब्द प्रयुक्त है।

दिगम्बर परम्परा के कषायपाहुड आदि सिद्धान्त ग्रन्थो के लिए प्रयुक्त 'पाहुड' शब्द के विभिन्न अर्थ—

१—जिसके पद स्फुट—व्यक्त हैं वह "पाहुड" कहा जाता है।

२—जो प्रकृष्ट पुरुषोत्तम द्वारा आभृत=प्रस्थापित हैं वह "पाहुड" कहा जाता है।

३—जो प्रकृष्ट ज्ञानियो द्वारा आभृत=धारण किया गया है अथवा परम्परा से प्राप्त किया गया है वह "पाहुड" कहा जाता है। —जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष से उद्धृत

चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति से सम्बन्धित अर्थ

विनयादि गुण सम्पन्न शिष्यो के लिए देश-कालोपयोगी शुभफलप्रद दुर्लभ ग्रन्थ स्वाध्याय हेतु देना।
यहाँ "देश-कालोपयोगी" विशेषण विशेष ध्यान देने योग्य है।

कालिक और उत्कालिक

नन्दीसूत्र मे गमिक को "उत्कालिक" और अगमिक को "कालिक" कहा है।

दृष्टिवाद गमिक है।[1] दृष्टिवाद का तृतीय विभाग पूर्वगत है,[2] उसी पूर्वगत से ज्योतिपगणराज-प्रज्ञप्ति (चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति) का निर्यूहण किया गया है, ऐसा चन्द्रप्रज्ञप्ति की उत्थानिका की तृतीय गाथा से ज्ञात होता है।

अग-उपागो का एक दूसरे से सम्वन्ध है, ये सव अगमिक है, अत वे सव कालिक है।

उसी नन्दीसूत्र के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति कालिक है[3] और सूर्यप्रज्ञप्ति उत्कालिक है।[4]

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय गद्य-पद्य सूत्रो के अतिरिक्त सभी सूत्र अक्षरश समान है, अत. एक कालिक और एक उत्कालिक किस आधार पर माने गये है?

यदि इन दोनो उपागो मे से एक कालिक और एक उत्कालिक निश्चित है तो "इनके सभी सूत्र समान नही थे" यह मानना ही उचित प्रतीत होता है, काल के विकराल अन्तराल मे इन उपागो के कुछ सूत्र विच्छिन्न हो गये और कुछ विकीर्ण हो गये हैं।

मूल अभिन्न और अर्थ भिन्न

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रो मे कितना साम्य है? यह तो दोनो के आद्योपान्त अवलोकन से स्वत ज्ञात हो जाता है, किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रो की चन्द्रपरक व्याख्या और सूर्यप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रो की सूर्यपरक व्याख्या अतीत मे उपलब्ध थी। यह कथन कितना यथार्थ है? कहा नही जा सकता है, क्योकि ऐसा किसी टीका, निर्युक्ति आदि मे कही कहा नही है। यदि इस प्रकार का उल्लेख किसी टीका, निर्युक्ति आदि मे देखने मे आया हो तो विद्वज्जन प्रकाशित करें।

एक श्लोक या एक गाथा के अनेक अर्थ असम्भव नही है। द्विसधान, पचसधान, सप्तसधान आदि काव्य वर्तमान मे उपलब्ध हैं। इनमे प्रत्येक श्लोक की विभिन्न कथापरक टीकाएँ देखी जा सकती है। किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के सदर्भ मे विना किसी प्रवल प्रमाण के भिन्नार्थ कहना उचित प्रतीत नही होता।

---

१ नन्दीसूत्र गमिक अगमिक श्रुत सूत्र ४४.

२ नन्दीसूत्र दृष्टिवाद श्रुत सूत्र ९०

३ नन्दीसूत्र उत्कालिक श्रुत सूत्र ४४

४ नन्दीसूत्र कालिक श्रुत सूत्र ४४

ज्योतिपशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इसका विशेषज्ञ शुभाशुभ जानने मे सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानने की होती है क्योकि वह इष्ट का-सयोग एव कार्य की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ज्योतिप विषय के उपाग है—यद्यपि इनमे गणित अधिक है और फलित अत्यल्प है, फिर भी इनका परिपूर्ण ज्ञाता शुभाशुभ निमित्त का ज्ञाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के द्योतक है अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक सवध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की अगाध श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रो के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेतर प्राणी-जगत् से चन्द्र आदि ज्योतिषी देवो का शाश्वत सवध है। क्योकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वय प्रकाशमान देव है और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों को प्रकाश प्रदान करते रहते है।

ज्योतिप लोक और मानव लोक का प्रकाश्य-प्रकाशक भाव सम्बन्ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि आह्लादने धातु से "चन्द्र" शब्द सिद्ध होता है।

चन्द्रमाह्लाद मिमीते निर्मिमीते इति चन्द्रमा

प्राणिजगत् के आह्लाद का जनक चन्द्र है, इसलिए चन्द्रदर्शन की परम्परा प्रचलित है।

चन्द्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमे कुछ ऐसे पर्यायवाची है जिनसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थो से एव पुरुषो से चन्द्र का प्रगाढ सवध सिद्ध है।

कुमुदबान्धव—जलाशयो मे प्रफुल्लित कुमुदिनी का बन्धु चन्द्र है इसलिए "कुमुदबान्धव" कहा जाता है।

कलानिधि चन्द्र के पर्याय हिमाशु, शुभ्राशु, सुधाशु की अमृतमयी कलाओ से कुमुदिनी का सीधा सम्बन्ध है।

इसकी साक्षी है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल मे बसे कुमुदिनी, चन्दा बसे आकाश।
जो जाहु के मन बसे, सो ताहु के पास॥

औषधीश—जगल की जडी बूटियाँ "औषधि" है—उनमे रोग-निवारण का अद्भुत सामर्थ्य सुधाशु की सुधामयी रश्मियो से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है, वह औषधियो से प्राप्त होता है—इसलिए औषधीश चन्द्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति—चन्द्र है।

श्रमजीवी दिन मे "श्रम" करते हैं और रात्रि मे विश्राम करते हैं। आह्लादजनक चन्द्र की चन्द्रिका मे विश्रान्ति लेकर मानव स्वस्थ हो जाता है इसलिए मानव का निशानाथ से अति निकट का सम्बन्ध सिद्ध होता है। जैनागमो मे चन्द्र के एक "शशि" पर्याय की ही व्याख्या है।[1]

(२) सूर्य शब्द की रचना

सू प्रेरणे धातु से "सूर्य" शब्द सिद्ध होता है।

सुवति-प्रेरयति कर्मणि लोकान् इति सूर्य.—जो प्राणिमात्र को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है वह सूर्य है।

सूरज—ग्रामीण जन "सूर्य" को "सूरज" कहते हैं।
सु+ऊर्ज से सूर्ज या सूरज उच्चारण होता है।
सु श्रेष्ठ—ऊर्ज=ऊर्जा=शक्ति।
सूर्य से श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है।

सूर्य के पर्याय अनेक है। इनमे कुछ ऐसे पर्याय है, जिनसे सूर्य का मानव के साथ सहज सम्बन्ध सिद्ध होता है।

सहस्रांशु—सूर्य की सहस्र रश्मियो से प्राणियो को जो "ऊष्मा" प्राप्त होती है, वही जगत् के जीवो का जीवन है।

प्रत्येक मानव शरीर मे जब तक ऊष्मा=गर्मी रहती है, तब तक जीवन है। ऊष्मा समाप्त होने के साथ ही जीवन समाप्त हो जाता है।

भास्कर, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, द्युमणि, अहर्पति, भानु आदि पर्यायो से "सूर्य" प्रकाश देने वाला देव है।

मानव की सभी प्रवृत्तियाँ प्रकाश मे ही होती हैं। प्रकाश के बिना वह अकिंचित्कर है।

---

१ ससी सद्दस्स विसिट्ठऽत्थो

प्र. से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चई—चदे ससी, चदे ससी?

उ गोयमा! चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे, कता देवा, कताओ देवीओ, कताइ आसण-सयण-खभ-भडमत्तोवगरणाइ, अप्पणा वि य ण चदे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कते सुभए पियदसणे सुरूवे,

से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—"चदे ससी, चदे ससी"। —भग स. १२, उ ६, सु. ४

शशि शब्द का विशिष्टार्थ

प्र हे भगवन्! चद्र को "शशि" किस अभिप्राय से कहा जाता है?

उ हे गौतम! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिषराज चन्द्र के मृगाक विमान मे मनोहर देव, मनोहर देविया तथा मनोज्ञ आसन-शयन-स्तम्भ-भाण्ड-पात्र आदि उपकरण हैं और ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिषराज चन्द्र स्वयं भी सौम्य, कान्त, सुभग, प्रियदर्शन एव सुरूप है।

हे गौतम! इस कारण से चन्द्र को "शशि" (या सश्री) कहा जाता है।

सूर्य के ताप से अनेक रोगों की चिकित्सा होती है।
सौर ऊर्जा से अनेक यन्त्र शक्तियों का विकास हो रहा है।
इस प्रकार मानव का सूर्य से शाश्वत सम्बन्ध है।

जैनागमों में सूर्य के एक "आदित्य"[1] पर्याय की व्याख्या द्वारा सभी कालविभागों का आदि सूर्य कहा गया है।

(३) गृह—ग्रह की रचना

ग्रह उपादाने धातु से यह ग्रह शब्द सिद्ध होता है।
जैनागमों में छह ग्रह और आठ ग्रह का उल्लेख है।[2]

चन्द्र-सूर्य को ग्रहपति माना है, शेष छ को ग्रह माना है, राहु-केतु को भिन्न न मानकर एक केतु को ही माना है।

अट्ठासी ग्रह भी माने है।
अन्य ग्रन्थों में नौ ग्रह माने है।
ग्रहों के प्रभाव के सम्बन्ध में वशिष्ठ और वृहस्पति नाम के ज्योतिर्विदाचार्य ने इस प्रकार कहा है—

वशिष्ठ—ग्रहा राज्य प्रयच्छति, ग्रहा राज्य हरन्ति च।
ग्रहैस्तु व्यापित सर्व, त्रैलोक्य सचराचरम्॥

वृहस्पति—ग्रहाधीन जगत्सर्वं, ग्रहाधीना नरामरा।
काल ज्ञान ग्रहाधीन, ग्रहा कर्मफलप्रदा॥

(३२वा गोचर प्रकरण—वृहद्दैवज्ञरजन, पृ ८४)

(४) नक्षत्र और नरसमूह

नक्षत्र शब्द की रचना

१ न क्षदते हिनस्ति "क्षद" इति सौत्रो धातु हिसार्थ आत्मनेपदी। ष्टन (उ ४/१५९) नभ्राण्नपाद् (६/३/७५) इति नञ प्रकृतिभाव।

---

१ सूर सद्दस्स विसिट्ठत्थो—
प्र. से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—"सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे"?
उ गोयमा! सूरादीया ण समयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव ओसप्पिणीइ वा, उस्सप्पिणीइ वा।
से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—"सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे।—भग स १२, उ ६, सु, ५

सूर्य शब्द का विशिष्टार्थ
प्र हे भगवन्! सूर्य को "आदित्य" किस अभिप्राय से कहा जाता है?
उ हे गौतम! समय, आवलिका यावत् अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी काल का आदि कारण सूर्य है।
हे गौतम! इस कारण से सूर्य "आदित्य" कहा जाता है।

२ छ तारग्गहा पण्णत्ता, त जहा—
१ सुक्को, २ बुहे, ३ वहस्सति, ४ अगारके, ५ सणिच्छरे, ६ केतू। —ठाण अ ६, सु ४८
अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता त जहा—
१ चन्दे, २ सूरे, ३ सुक्के, ४ बुहे, ५ वहस्सति, ६ अगारके, ७ सणिच्छरे, ८ केतू। —ठाण ८ सू ६/३

२ णक्ष गतौ (भ्वा. प. से.) नक्षति ।
अमि-नक्षि-यजि-वधि-पतिभ्यो त्रन् (उ ३/१०५) प्रत्यये कृते ।

३ न क्षणोति क्षणु हिंसायाम् (त. उ. से) (ष्ट्रन्) (उ. ४/१५९) नक्षत्र ।

४. न क्षत्रं देवत्वात् क्षत्र भिन्त्वात् ।

जो क्षत=खतरे से रक्षा करे वह "क्षत्र" कहा जाता है । इस "क्षत्र" का जो "रक्षा करना" धर्म है वह "क्षात्र धर्म" कहा जाता है । क्षत्र की सन्तान "क्षत्रिय" कही जाती है ।

इस भूतल के रक्षक नर"क्षत्र" हैं और नभ-आकाश मे रहने वाले रक्षक देव "नक्षत्र" हैं । इन नक्षत्रो का नर क्षत्रो से सम्बन्ध नक्षत्रसम्बन्ध है ।

अट्ठाईस नक्षत्रो मे से "अभिजित्" नक्षत्र को व्यवहार मे न लेकर सत्ताईस नक्षत्रो से व्यवहार किया है ।

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण हैं अर्थात् चार अक्षर है । इस प्रकार सत्ताईस नक्षत्रो के १०८ अक्षर होते है ।

इन १०८ अक्षरो को बारह राशियो मे विभक्त करने पर प्रत्येक राशि के ९ अक्षर होते हैं ।

इस प्रकार सत्ताईस नक्षत्रों एव बारह राशियो के १०८ अक्षरो से प्रत्येक प्राणी एव पदार्थो के "नाम" निर्धारित किये जाते हैं ।

यह नक्षत्र और नर समूह का त्रैकालिक सम्बन्ध है ।

चर स्थिर आदि सात, अन्ध काण आदि चार इन ग्यारह सज्ञाओ से अभिहित ये नक्षत्र प्रत्येक कार्य की सिद्धि आदि में निमित्त होते हैं ।

(५) तारामण्डल

तारा शब्द की रचना

तारा शब्द स्त्रीलिंग है ।

तॄ प्लवन-तरणयो. धातु से "तारा" शब्द की सिद्धि होती है । तरन्ति अनया इति तारा ।

सायात्रिक—जहाजी व्यापारियो के नाविक रात्रि मे समुद्रयात्रा तारामण्डल के दिशाबोध से करते थे ।

ध्रुव तारा सदा स्थिर रहकर उत्तरदिशा का बोध कराता है । शेष दिशाओ का बोध ग्रह, नक्षत्र और राशियो की नियमित गति से होता रहता है । इसलिए नौका आदि के तिरने में जो सहायक होते हैं, वे तारा कहे जाते हैं ।

रेगिस्तान की यात्रा रात्रि मे सुखपूर्वक होती है इसलिए यात्रा के आयोजक रात्रि मे तारा से दिशाबोध करते हुए यात्रा करते हैं ।

तारामण्डल के विशेषज्ञ प्रान्त का, देश का शुभाशुभ जान लेते हैं इसलिए ताराओ का पृथ्वीतल के प्राणियो से अतिनिकट का सम्बन्ध सिद्ध है ।

इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा मानव के सुख-दु.ख के निमित्त हैं ।

गणितानुयोग का गणित सम्यक्श्रुत है

मिथ्याश्रुतो की नामावली मे गणित को मिथ्याश्रुत माना है[1], इसका यह अभिप्राय नही है कि—"सभी प्रकार के गणित मिथ्याश्रुत हैं।"

आत्मशुद्धि की भावना मे जो गणित उपयोगी या सहयोगी नही है, केवल वही गणित "मिथ्याश्रुत" है, ऐसा समझना चाहिए। यहाँ "मिथ्या" का अभिप्राय "अनुपयोगी" है, झूठा नही।

वैराग्य की उत्पत्ति के निमित्तो मे लोकभावना अर्थात् लोकस्वरूप का विस्तृत ज्ञान भी एक निमित्त है[2], अत अधो और ऊर्ध्व लोक मे सम्बन्धित सारा गणित "सम्यक् श्रुत" है, क्योकि वह गणित आजीविका या अन्यान्य सावद्य क्रियाओ का हेतु नहीं हो सकता है।

स्थानाग, समवायाग और व्याख्याप्रज्ञप्ति—इन तीनो अगो मे तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति—इन तीनो उपागो मे गणित सम्बन्धी जितने सूत्र हैं वे सब सम्यक्श्रुत हैं। क्योकि अग, उपाग सम्यक्-श्रुत हैं।

अन्य मान्यताओ के उद्धरण—स्वमान्यताओ का प्ररूपण

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति मे अनेक मान्यताओ के उद्धरण दिये गये है, साथ ही स्वमान्यताओ के प्ररूपण भी किये गये है।

अन्य मान्यताओ का सूचक "प्रतिपत्ति" शब्द है।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति मे जितनी प्रतिपत्तियाँ है, उनकी सूची इस प्रकार है—

सूर्यप्रज्ञप्ति में प्रतिपत्तियो की संख्या

प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या	प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपति सख्या
१	४	१५	६ प्रतिपत्तियाँ	१	८	२०	३ प्रतिपत्तियाँ
१	५	१६	५ प्रतिपत्तियाँ	२	१	२१	८ प्रतिपत्तियाँ
०	०	१७	स्वमत कथन	२	२	२२	२ प्रतिपत्तियाँ
१	६	१८	७ प्रतिपत्तियाँ	२	३	२३	४ प्रतिपत्तियाँ
१	७	१९	८ प्रतिपत्तियाँ	३	०	२४	१२ प्रतिपत्तियाँ
		"एक के समान स्वमान्यता"		४	०	२५	१६ प्रतिपत्तियाँ

प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या	प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या
५	०	२६	२० प्रतिपत्तियाँ	१०	१	३२	५ प्रतिपत्तियाँ
६	०	२७	२५ प्रतिपत्तियाँ	१०	२१	५९	५ प्रतिपत्तियाँ
७	०	२८	२० प्रतिपतियाँ	१७	०	८८	२५ प्रतिपत्तियाँ
८	०	२९	३ प्रतिपत्तियाँ	१८	०	८९	२५ प्रतिपत्तियाँ
९	०	३०	३ प्रतिपतियाँ	१९	०	१००	१२ प्रतिपत्तियाँ

---

१ नन्दीसूत्र

२ जगत्कायस्वभावौ च सवेग-वैराग्यार्थम्। —तत्त्वार्थसूत्र अ ७

०	०	३१	२५ प्रतिपत्तियाँ	२०	०	१०२	२ प्रतिपत्तियाँ
०	०	०	२ प्रतिपत्तियाँ[1]	२०	०	१०३	२ प्रतिपत्तियाँ
०	०	०	९६ प्रतिपत्तियाँ				

बहुश्रुतो का कर्तव्य

उपागद्वय मे उद्धृत प्रतिपत्तियो के स्थल निर्देश करना, प्रमाणभूत ग्रन्थ से प्रतिपत्ति की मूल वाक्यावली देकर अन्य मान्यता का निरसन करना और स्वमान्यताओ का युक्तिसगत प्रतिपादन करना इत्यादि आधुनिक पद्धति की सम्पादन प्रक्रिया से सम्पन्न करके उपागद्वय को प्रस्तुत करना।

अथवा—किसी शोधसस्थान के माध्यम से चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति पर विस्तृत शोधनिवन्ध लिखवाना।

किसी योग्य श्रमण-श्रमणी या विद्वान् को शोधनिवन्ध लिखने के लिए उत्साहित करना।

शोधनिवन्ध-लेखन के लिए आवश्यक ग्रन्थादि की व्यवस्था करना। शोधनिवन्ध लेखक का सम्मान करना। ये सब श्रुतसेवा के महान् कार्य है।

एक व्यापक भ्रान्ति

दोनो उपागो के दसवे प्राभृत के सतरहवे प्राभृत-प्राभृत मे प्रत्येक नक्षत्र का पृथक्-पृथक् भोजन-विधान है।

इनमे मासभोजन के विधान भी हैं।

इन्हे देखकर सामान्य स्वाध्यायी के मन मे एक आशका उत्पन्न होती है।

ये दोनो उपाग आगम हैं—इनमे ये मासभोजन के विधान कैसे हैं ?

यह आशका अज्ञात काल से चली आ रही है।

सूर्यप्रज्ञप्ति के वृत्तिकार मलयगिरि ने भी इन मासभोजनविधानो के सम्बन्ध मे किसी प्रकार का ऊहापोह या स्पष्टीकरण नही किया है।

एक कृत्तिका नक्षत्र के भोजनविधान की व्याख्या करके शेष नक्षत्रो के भोजन कृत्तिका के समान समझने की सूचना दी है।

शेष नक्षत्रो के भोजनविधानो की व्याख्याएँ न करने के सम्बन्ध मे यह कल्पना है कि—मासवाची शब्दो की व्याख्या क्या की जाय ?

अथवा मासवाची भोजनो को वनस्पतिवाची सिद्ध करने की कल्पना करना उन्हे उचित नही लगा होगा ? या उस समय ऐसी कोई परम्परागत धारणा न रही होगी ?

---

१ (क) इन प्रतिपत्तियो के पूर्व के प्रश्नसूत्र विच्छिन्न है।
(ख) इन प्रतिपत्तियो के वाद स्वमत-प्रतिपादक सूत्राश भी विच्छिन्न है।
उपागद्वय के सकलनकर्ता ने प्रतिपत्तियो के जितने उद्धरण दिये हैं, उनके प्रमाणभूत मूल ग्रन्थो के नाम, ग्रन्थकारों के नाम, अध्याय, श्लोक, सूत्राक आदि नही दिये हैं।

स्व. पूज्य श्री घासीलालजी म ने इस भोजन सूत्र को प्रक्षिप्त सिद्ध किया है और कतिपय मासनिष्पन्न भोजनों को वनस्पतिनिष्पन्न भोजन भी सिद्ध किया है। ये दोनो परस्पर विरोधी कार्य हैं।

नक्षत्रभोजन का यह सूत्र यदि प्रक्षिप्त है तो मासनिष्पन्न भोजनो को वनस्पत्यादि निष्पन्न भोजन सिद्ध करने मे लाभ ही क्या है ? क्योंकि सूर्यप्रज्ञप्ति के प्ररूपक लौकिक कार्यों की सिद्धि के लिए सावद्य विधि का प्ररूपण ही नही कर सकते और सूत्रागमो का गुथन करने वाले गणधर ऐसे आमक शब्दो का प्रयोग भी नही करते, यह निश्चित है। इसलिए हमारे बहुश्रुतो को इस सूत्र के सम्बन्ध मे सर्वसम्मत निर्णय घोषित करना ही चाहिए।

जैनागमो मे नक्षत्र गणना का क्रम अभिजित से प्रारम्भ होकर उत्तरापाढा पर्यन्त का है।

प्रस्तुत प्राभृत के इस सूत्र मे नक्षत्रो का क्रम कृत्तिका से प्रारम्भ होकर भरणी पर्यन्त का है।[1]

उपलब्ध अनेक ज्योतिष ग्रन्थो मे भी यह नक्षत्र गणना का क्रम विद्यमान है—अत यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत नक्षत्रभोजनविधान का क्रम अन्य किसी ज्योतिष ग्रन्थ से उद्धृत है।[2]

---

१ चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति के सकलनकर्त्ता श्रुतधर स्थविर ने नक्षत्र गणना क्रम की पांच विभिन्न मान्यताओ का निरूपण करके स्वमान्यता का प्ररूपण किया है।

पांच अन्य मान्यताओ का निरूपण—

अट्ठाईस नक्षत्रो का गणना क्रम—

१—कृत्तिका नक्षत्र से भरणी नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

२—मघा नक्षत्र से अश्लेषा नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

३—धनिष्ठा नक्षत्र से श्रवण नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

४—अश्विनी नक्षत्र से रेवती नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

५—भरणी नक्षत्र से अश्विनी नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

स्वमान्यता का प्ररूपण—

अभिजित नक्षत्र से उत्तरापाढा नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

—चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति, दशम प्राभृत, प्रथम प्राभृत-प्राभृत, सूत्राक ३२

नक्षत्र गणना के इस क्रम के विधान से यह स्पष्ट है कि दशम प्राभृत व सप्तदशम प्राभृत-प्राभृत मे निरूपित नक्षत्रभोजनविधान सूर्यप्रज्ञप्ति के सकलनकर्त्ता की स्वमान्यता का नही है। आश्चर्य यह है कि अब तक सम्पादित एव प्रकाशित चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्तियो के अनुवादको आदि ने इस सम्बन्ध मे स्पष्टीकरण लिखकर व्यापक भ्रान्ति के निराकरण के लिए सत्साहस नही किया।

२ कुल्मापास्तिलतण्डुलानपि तथा माषाश्च गव्य दधि।
त्याज्य दुग्धमथैणमासमपर तस्यैव रक्त तथा॥
तद्वत्पायसमेव चापपलल मार्गं च शाश तथा।
पाष्टिक्य च प्रियग्ववूपमथवा चित्राण्डजान सत्फलम्॥
कौर्म सारिकगोधिक च पलल शाल्य हविष्य हया।
वृक्षे स्यात्कृसरान्नमुदमपिना पिष्ट यवाना तथा॥
मत्स्यान्न खलु चित्रिताक्षमथवा दध्यन्नमेव क्रमात्।
भक्ष्याऽभक्ष्यमिद विचार्य मतिमान् भक्षेत्तथाऽऽलोकयेत्॥

इन उपागद्वय की सकलन शैली के अनुसार अन्य मान्यताओ के बाद स्वमान्यता का सूत्र रहा होगा, जो विषम काल के प्रभाव से विच्छिन्न हो गया है—ऐसा अनुमान है ।

सामान्य मनीषियो ने इस नक्षत्रभोजनविधान को और नक्षत्रगणनाक्रम को स्वसम्मत मानने की बहुत बडी असावधानी की है ।

इसी एक सूत्र के कारण उपागद्वय के सम्बन्ध मे अनेक चमत्कार की बातें कहकर भ्रान्तियां फैलाई गई हैं ।

इन भ्रान्तियो के निराकरण के लिए आज तक किसी भी बहुश्रुत ने अपने उत्तरदायित्व को समझकर समाधान करने का प्रयत्न नही किया है ।

इसका परिणाम यह हुआ कि इन उपागों का स्वाध्याय होना भी बन्द हो गया ।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति और अन्य ज्योतिषग्रन्थो का तुलनात्मक चिन्तन

दशम प्राभृत के अष्टम प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र सस्थान
नवम प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र, तारा सख्या

नक्षत्रस्वामी-देवता

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति मे दशम प्राभृत के बारहवें प्राभृत-प्राभृत के सूत्र ४६ मे नक्षत्र देवताओ के नाम हैं ।
मुहूर्त चिन्तामणि के नक्षत्र प्रकरण मे नक्षत्र देवताओ के नाम हैं ।
इन दोनो के नक्षत्र देवता निरूपण मे सर्वथा साम्य है । केवल नक्षत्र गणना क्रम का अन्तर है ।
इसी प्रकार दशम प्राभृत के तेरहवें प्राभृत-प्राभृत मे तीस मुहूर्तों के नाम,
चौदहवें प्राभृत-प्राभृत मे पन्द्रह दिनो के और रात्रियो के नाम,
पन्द्रहवें प्राभृत-प्राभृत मे दिवस तिथियो और रात्रि तिथियो के नाम,
सोलहवें प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र गोत्रो के नाम,
सत्तरहवें प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र भोजनो के विधान ।
बृहद् दैवज्ञरजनम्, मुहूर्तमार्तण्ड आदि ग्रन्थो में ऊपर अंकित सभी विषय उपलब्ध हैं ।

आनन्दानुभूति

श्रुतसेवा के इस महायज्ञ मे श्री विनयमुनिजी आदि के सविनय सविवेक विविध सहयोगो से अविरत आनन्दानुभव कर रहा हूँ और सभी सहयोगियो की सयमसाधना सफल हो यह कामना कर रहा हूँ ।

आत्मशोधन—सूर्यप्रज्ञप्ति के सम्पादन मे जहाँ कहीं प्रमादवश कुछ भी विपरीत या असगत हुआ हो तो आगमज्ञ बहुश्रुत सुधार कर स्वाध्याय करें और आगामी प्रकाशन के लिए उपयोगी सुझाव प्रेषित करें ।

सहकार साभार स्वीकार

सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय सूत्रो से सम्बन्धित गणित विभाग का सक्षिप्त विवेचन खम्भात सम्प्रदाय के आचार्यप्रवर श्री कान्तिऋषिजी म. सा के प्रशिष्य स्व. श्री महेन्द्रऋषिजी न्याय-साहित्य-व्याकरणाचार्य ने लिखकर हार्दिक सहयोग किया है ।

पण्डित साहब श्री शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने समय-समय पर अनेक उपयोगी सुझाव देकर प्रस्तुत संस्करण के सम्पादन में सक्रिय सहयोग किया है।

श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने सूर्यप्रज्ञप्ति की प्रस्तावना लिखकर जिज्ञासु ज्योतिर्विदो को सूर्यप्रज्ञप्ति के स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया है।

आगम समिति के सूत्रधार सज्जन श्रावकों ने मेरे श्रम की सफलता के लिए जिज्ञासु जनों में इस संस्करण को वितरित किया है।

३१ जनवरी '८९

—अ. प्र. मुनि कन्हैयालाल 'कमल'
—श्री वर्धमान महावीर केन्द्र,
आबू पर्वत ३०७ ५०१

प्रस्तावना

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी
साहित्य-सांख्य-योगदर्शनाचार्य,
एम ए (संस्कृत एव हिन्दी), पी-एच डी , डी लिट्
निदेशक
ब्रजमोहन बिडला शोध केन्द्र, उज्जैन (म प्र)

१. धर्मत्रिवेणी और उसका सर्वमान्य साहित्य

भारत के सिद्ध तपस्वी, मन्त्रद्रष्टा महर्षि और महान् त्यागी-विरागियो द्वारा प्रदत्त ज्ञानपीयूष के कलश को सुरक्षित रखते हुए उसकी अमृत-बिन्दुओ को प्राणिमात्र के कल्याण के लिये वितरित करने वाले जैन, ब्राह्मण एव बौद्धाचार्यों ने जिस धार्मिक/सर्वमान्य साहित्य को पुरस्कृत किया, उसकी समता विश्व के समक्ष किसी अन्य साहित्य मे उपलब्ध नही होती है । 'जैन आगम, ब्राह्मण-वेद तथा बौद्ध-पिटक' के रूप मे व्याप्त दिव्य-प्रकाश की किरणो से जन-जन के अन्तर् को उज्ज्वल बनाने वाले इस सर्वमान्य साहित्य का हमारे पूर्वाचार्यो ने विशुद्धभाव से लोक-कल्याण की भावना से ही उपदिष्ट किया था, यही कारण है कि यह सुदीर्घ काल से पूर्ण श्रद्धा के साथ समाज मे आत्मसात् हुआ है, हो रहा है और चिरकाल तक होता रहेगा । धर्म के सनातन-सत्यो की समष्टि को चिर-स्थिर रखने वाला यह साहित्य भारत को गौरव प्रदान कराता है, मानव-मात्र को सत्य के दर्शन की प्रेरणा देता है, समुचित मार्ग का निर्देश करता है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विवेक सिखाता है और सासारिक-प्रपचो से मुक्त होकर मोक्ष-पथ का पथिक बनने के लक्ष्य तक पहुँचाता है ।

२. एक लक्ष्य 'मोक्ष-प्राप्ति' और उसके क्रमिक सन्दर्भ

भाषा, भाव, कथन की विविधता, वक्ता की और द्रष्टा की भिन्नता एव श्रोता-सग्रहकर्ता आदि की अनेकता के रहते हुए भी 'आगम, वेद अथवा त्रिपिटको' के आन्तरिक उपदेशो मे ऐक्य नितान्त सुसिद्ध है । समान तात्त्विक सिद्धान्तो के हार्दतत्त्व—१ कर्म-विपाक, २ ससार-बन्धन और ३ मुक्ति, मुख्यत एक ही ध्येय की पूर्ति करते हैं, वह है—'सर्वकर्मों का क्षय करके मोक्ष की प्राप्ति[1] ।' मोक्ष किसका अपेक्षित है ? यह प्रश्न मोक्ष-प्राप्ति के प्रसग मे सहज उठता है तो इसका सभी दर्शनकारो का एक ही उत्तर होता है 'आत्मा का' । इस उत्तर से 'आत्मा क्या है ?' यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक हो गया, तब सभी दर्शनकारो ने इस सम्बन्ध मे अपनी-अपनी दृष्टि से 'आत्म-चिन्तन' की प्रक्रियाएँ प्रस्तुत की। इन प्रक्रियाओ के प्रस्तोताओ की भारतीय-वाङ्मय मे एक सुदीर्घ परम्परा प्रवर्तित हुई और जैन, बौद्ध एव वैदिक तथा इनके अवान्तर अनेक चिन्तको ने अत्यन्त प्रौढता एव गम्भीरता के साथ वे उपस्थापित की। आस्तिक और नास्तिक जैसे परम्परा-पोषक भेदो की बहुलता के कारण

१ पुव्वकम्मखयाट्ठए इम देह । —उत्त अ ६, गा १३

चार्वाक ने जहाँ प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानकर 'भूतात्मवाद और देहात्मवाद' को जन्म दिया वही उनके सूक्ष्मरूप से 'मन-आत्मवाद, इन्द्रियात्मवाद (एकेन्द्रियात्मवाद तथा समूहात्मवाद), प्राणात्मवाद, पुत्रात्मवाद, अर्थात्मवाद' के सिद्धान्त भी उभर आये। इसी प्रकार वैदिक-विचारको मे वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त के द्वारा भी विभिन्न ऊहापोह-पूर्वक आत्मा की खोज मे 'धर्म, चेतन, कर्म, देव, माया, ब्रह्म, जीव, जड, पुरुष, प्रकृति' आदि अनेक तत्त्वो की साङ्गोपाङ्ग मीमासा की गई।

जैन-दर्शन मे 'अतति/गच्छति इति आत्मा' इस व्युत्पत्ति को लक्ष्य मे रखकर, गमनार्थक धातु को ज्ञानार्थक भी मानने की व्याकरण-सम्मत व्यवस्था को स्वीकृत करते हुए यह व्याख्या प्रस्तुत की कि जो 'ज्ञान आदि गुणो मे आ-सामन्तात् रहता है अथवा उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप त्रिक के साथ समग्ररूप मे रहता है, वह 'आत्मा' है।[1]

जैनदर्शनकारो ने आत्मा के सम्बन्ध मे अनेक दृष्टियो से विचार किया है, इसीलिये जैनदर्शन का अपर-नाम 'अनेकान्तदर्शन' भी प्रसिद्ध है। 'चैतन्यस्वरूप' यह आत्मा का मुख्य विशेषण है। जैनमतानुसार अन्य विशेषण इस प्रकार है—

'चैतन्यस्वरूप. परिणामी कर्ता साक्षाद् भोक्ता देहपरिमाण. प्रतिक्षेत्र भिन्न पौद्गलिकादृष्टवाश्चायम्'[2]

३ आत्मा का पर्याय 'जीव' तथा उसका मौलिक विश्लेषण

जैनदर्शन का 'आत्मशास्त्र' अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी विचारणा सम्पूर्ण वैज्ञानिक है। विभिन्न दर्शनकार आत्मा का अस्तित्व तो मानते है किन्तु उनमे से कुछ आत्मा का 'अनेकत्व, नित्यत्व अथवा कर्तृत्व-मोक्षादि' नही मानते हैं किन्तु जैनदर्शन मे आत्मा को नित्य और अविनाशी माना है। आत्मा के अस्तित्व के बारे मे 'जीवो उवओगलक्खणो[3] सूत्र द्वारा वर्धमान महावीर ने उसकी पहचान का मार्ग दिखलाया है।

जैन शास्त्रकार आत्मा के पर्याय रूप मे 'जीव' शब्द का प्रयोग करते हैं और वह जीवन, प्राणशक्ति एव चेतना का द्योतक है। त्रैकालिक जीवन-गुण से युक्त होने के कारण आत्मा की 'जीव' सज्ञा सार्थक है। 'जीवन' के आधार दशविध 'प्राण' बतलाये गये है। यह व्यवहारदृष्टि है। निश्चयदृष्टि से जिसमे 'चेतना' पायी जाए वह 'जीव' है।[4] जीव का लक्षण जैनदर्शन के अनुसार 'उपयोग' है। उपयोग, चेतना का अनुविधायी परिणाम होता है। इसके 'ज्ञान' और 'दर्शन' नाम से दो भेद है तथा इन दोनो के धारक को 'जीव' कहते हैं। जीव मे अचेतन पदार्थों की तरह 'प्रदेश' और 'अवयव' भी माने गये है, उसे इसी कारण 'अस्तिकाय' कहा गया है।[5] उसमे प्रतिक्षण परिणमन क्रिया होती रहती है, फिर भी वह अपने मूलरूप/गुण को नही छोडता। ये 'उत्पाद, व्यय और

---

१ [क] नाण च दसण चेव चरित्त च तवो तहा।
वीरिय उवओगो य एय जीवस्स लक्खण॥ —उत्त अ २८, गा ११

[ख] बृहद् द्रव्यसग्रह-५७

२ प्रमाणनय-तत्त्वालोक, ७-५६

३ क उत्त अ २८, गा १०
ख उपयोगो लक्षणम् —तत्त्वार्थसूत्र अ. २, सू ८

४. तत्त्वार्थराजवार्तिक, १४७

५ तत्त्वार्थराजवार्तिक, २८१

ध्रौव्य[1] ये पर्याय उसमें सदा पाये जाते हैं। इन कारणो से जीव को भी एक 'द्रव्य' माना गया है। जीव-द्रव्य अनन्त है। वे सभी अरूपी और चैतन्य गुण वाले होने के निरन्तर अपने-अपने बाह्य-आभ्यन्तर उभय परिणामों के कर्त्ता और भोक्ता बनते हैं तथा स्व-पर परिणामो के ज्ञाता भी हैं। जीवद्रव्य के अतिरिक्त अन्य चार 'अजीव-द्रव्य' भी हैं, जो चैतन्य-रहित जड़त्व-गुण से युक्त हैं। इनमे १ 'धर्मास्तिकाय' द्रव्य है, जो 'अरूपी' और 'गति-सहायक' गुण-धर्म वाला है। 2. 'अधर्मास्तिकाय' द्रव्य भी अरूपी एव स्थिति-सहायक गुण-धर्म वाला है। 3. लोकालोक प्रमाण 'आकाशास्तिकाय' द्रव्य भी अरूपी, अवकाश देने के गुण-धर्म वाला है। 4. 'पुद्गलास्तिकाय' द्रव्य स्कन्ध-देश-प्रदेश और परमाणु स्वरूप से पूरण-गलन-स्वभाव वाला और वर्ण-गन्ध-रस और स्पर्शादि धर्म से युक्त होकर रूपी द्रव्य है।[2]

४. जीव तथा अजीव द्रव्य रूप 'जगत्' और उसके ज्ञान की आवश्यकता

सर्वज्ञ एव सर्वदर्शी श्री वीतराग जिनेश्वर ने समस्त जगत् को जीव और अजीव द्रव्यो का राशि रूप कहा है और यह भी प्ररूपित किया है कि यह जगत् अनादि, अनन्त तथा 'पंचास्तिकायमय' है। अत. जगत् मे जो-जो द्रव्य दिखाई देते हैं और विभिन्न स्वरूप मे जीव द्रव्यों के भोग-उपभोग में आते हैं, वे सभी पुद्गल द्रव्य हैं तथा जड़-पुद्गल-द्रव्यों के चित्र-विचित्र परिणामो के संयोग-वियोगादि में, जिस-जिस को भिन्न-भिन्न स्वरूप में सुख-दु.खादि का अनुभव होता है ये भिन्न-भिन्न जीव-द्रव्य हैं। क्योंकि जड़ द्रव्यो मे सुख-दु.खादि की अनुभव रूप ज्ञान-चेतना

---

१. उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत्। —तत्त्वार्थसूत्र अ. ५, सू २९

२ प कइ ण भते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?

उ गोयमा ! पच अत्थिकाया पण्णत्ता,

त जहा-१. धम्मत्थिकाए, २. अधम्मत्थिकाए,
३. आगासत्थिकाए, ४. जीवत्थिकाए,
५. पोग्गलत्थिकाए। —विया स २, उ १०, सु. १

यद्यपि जैन शासन मे द्रव्य पाच ही हैं 'पचास्तिकायो लोक' यह सूत्र इसका प्रमाण है, तथापि कहीं-कहीं 'काल' को स्वतन्त्र द्रव्य मानकर 'षड्द्रव्य' भी बतलाये गये हैं।

दव्वाण नामाइ—

प से किं तं दव्वणामे ?

उ दव्व-णामे छव्विहे पण्णत्ते,

त जहा-1 धम्मत्थिकाए, 2 अधम्मत्थिकाए,
3 आगासत्थिकाए, 4 जीवत्थिकाए,
5. पोग्गलत्थिकाए 6. अद्धासमए, अ।

से त दव्व-णामे।

—अणु. सु. 218

तत्त्वार्थकार ने भी पाचवें अध्याय के 30वें सूत्र में स्पष्ट लिखा है कि 'कालश्चेत्येके' अर्थात् कुछ आचार्य काल को भी स्वतन्त्र द्रव्य मानते हैं। जबकि पचद्रव्यवादी 'काल' को जीव और अजीव का पर्याय-स्वरूप मानते हैं।

नहीं होती। इसीलिये जैन दृष्टि से समस्त जगत् जीव और अजीव ऐसे दो पदार्थों मे विभक्त है[1] और अजीव के विविध परिणमनरूप मे प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला यह समस्त जगत् नवतत्त्वात्मक स्वरूप से सत् है।[2] जिसकी किसी भी काल मे, किसी से उत्पत्ति नहीं हुई और जिसका किसी भी काल मे आमूल-सर्वथा विनाश भी नहीं है, ऐसे अनादि-अनन्त, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य परिणामी पाचों अस्तिकाय द्रव्यो मे कालादि भेद से जो-जो चित्र-विचित्र पर्याय-परिणमन होते हैं, वे सभी 'स्वत' और 'परत' सहेतुक होते है। अत उनसे सम्बद्ध कार्य-कारणभाव का यथार्थ स्वरूप जानना आवश्यक है।

धर्मास्तिकायादि पदार्थ लोकाकाश रूप जगत् मे ही व्याप्त है। इसी जगत् मे जीवो की स्थिति है और जगत् के समस्त जीवों को अनादिकाल मे सुख और शान्ति की अपेक्षा रहती ही आयी है। सुख और शान्ति के लिये तड़पते हुए जीवों को सुख-शान्ति का वास्तविक मार्ग बतलाने की दृष्टि से ही परम करुणामूर्ति अरिहन्त तीर्थंकर धर्मतीर्थ की प्ररूपणा करते हुए कहते हैं कि 'जिन आत्माओं को सुख एव शान्ति की अभिलाषा हो, उन्हें अपनी आत्मा मे मोक्षाभिलाषरूप 'सवेगभाव' तथा सासारिक सुख के प्रति अनासक्त भाव रूप 'निर्वेद' प्रकट करना चाहिये, तभी वे सुख-शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।' इसीलिये वाचकप्रवर श्री उमास्वाति ने भी सवेग-निर्वेद की उत्पत्ति का उपाय बतलाते हुए कहा है कि—'जगत्-कायस्वभावौ च सवेग-वैराग्यार्थम्' और उसी 'तत्त्वार्थसूत्र' मे तथा 'नवतत्त्व' मे आत्मा मे सवरभाव प्रकट करने के लिये बारह भावनाओं के भावने की बात कही गई है। उनमे 'लोक-स्वभाव-भावना' भी एक है। यह 'लोक-स्वभाव-भावना' तभी भावित कर सकता है, जबकि उसे 'लोक का स्वरूप' ज्ञान हो।

"जगत्" का अपर-पर्याय "लोक" है। लोक का अर्थ दृश्यादृश्य "क्षेत्र" भी होता है। अत धर्मास्ति-कायादि द्रव्य जिस आकाश मे विलसित हो रहे हैं, उस क्षेत्र को भी "लोक" कहते हैं। इसी लोक का स्वरूप-परिज्ञान करने की आज्ञा जैनागम तथा अन्य शास्त्रो मे दी गई है। "आचाराङ्ग-सूत्र" मे कहा गया है—

"विदित्ता लोग वता लोगसण्ण से मइम परिक्कमेज्जासि"।[3] इसके अनुसार लोकविषयक ज्ञान के अनन्तर ही विषयासक्ति मे त्याग के पराक्रम निर्दिष्ट है। इसी प्रकार—

"द्वीप-समुद्र-पर्वत-क्षेत्र-सरित्-प्रभृति-विशेष सम्यक् सकल-नैगमादि-नयेन ज्योतिषा प्रवचन-मूलसूत्रैर्जन्य-मानेन कथमपि भावविद्भि सद्भि स्वय पूर्वापरशास्त्रार्थ-पर्यालोचनेन प्रवचन-पदार्थविदुपासनेन चाभियोगादि-विशेषविशेषेण वा प्रपचेन परिवेद्य इति।"[4] कथन द्वारा श्लोकवार्तिककार ने भी लोक-विषयक सभी पदार्थों के

---

१ (क) दुवे रासी पण्णत्ता,
त जहा—१ जीवरासी य, २ अजीवरासी य। —सम सू १४८
(ख) अत्थि जीवा, अत्थि अजीवा, —उव सु ५६
(ग) के अय लोगे? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। के अणता लोगे? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। के सासया लोगे? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। —ठाण अ २, उ ४ सु ११४

२ जीवाजीवा य बधो य पुण्ण-पावासवा तहा।
सवरो निज्जरा मोक्खो सतेए तहिया नव ॥१४॥ उत्त. अ २८, गा १४

३. आचारागसूत्र—श्रुत १, अ ३, उ, १, सू २५

४ तत्त्वार्थसूत्र ३/७० पर श्लोकवार्तिक

ज्ञान करने का आग्रह किया है। वस्तुत आन्तरिक-सत्ता के ज्ञान के साथ बाह्य-सत्ता का ज्ञान भी आवश्यक माना गया है। इसीलिये जैन और अन्यान्य सभी धर्मानुयायियो के प्रमाणभूत आगमादि ग्रन्थो मे "सृष्टि-विज्ञान" को धर्मचर्चा के रूप मे प्रस्तुत करते हुए मान्यता दी गई है। साथ ही इस विज्ञान को सर्वज्ञ जिनेश्वर-प्ररूपित होने के कारण इसे मोक्ष के प्रमुख साधनभूत धर्म के चार भेदो के अन्तर्गत "धर्मध्यान" नामक भेद मे लोक के स्वभाव और आकार एव उसमे स्थित विविध द्वीपादि, क्षेत्र तथा समुद्रादि के स्वरूप-चिन्तन मे मनोयोग "सस्थान-विचय" नामक धर्मध्यान होता है—ऐसा कहा गया है।[1] इस प्रकार की लोक-भावना करते हुए आत्मा "सस्थान-विचय" नामक धर्मध्यान मे पहुँचने से अपने कर्मो का नाश कर शुक्लध्यान मे पहुँचता है और क्षपकश्रेणी मे आ जाने से अष्टकर्मक्षय करके अपनी आत्मा को शाश्वत सुख का भागी बनाता है। ऐसे अनेक तथ्यो के कारण ही लोक की "स्थिति और विस्तार" आदि की मीमासा जैन आगमो मे पर्याप्त विस्तार से हुई है, उसके मूल मे धर्म-बोध की ही प्रधानता रही है और इसीलिए धार्मिक चर्चाओ मे सर्वत्र "लोकविज्ञान, लोकचिन्तन" को भी महत्त्व मिला है। ऐसी एक आवश्यक चर्या का आध्यात्मिक महत्त्व सर्वोपरि है और वह है—

प्र एयसि ण भते ! एमहालयसि लोगसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलत्ते वि पएसे जत्थ ण अय जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?

उ नो इणट्ठे समट्ठे।

प्र से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—
"एयसि ण एमहालयसि लोगसि नत्थि केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ ण अय जीवे ण जाए वा न मए वा वि ?"

उ गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अयासहस्सस्स एग मह अयावय करेज्जा, से ण तत्थ जहण्णेण एक्क वा दो वा तिण्णि वा,

उक्कोसेण अयासहस्स पक्खिवेज्जा,
ताओ ण तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ,
जहण्णेण एगाह वा, दुयाह वा, तियाह वा,
उक्कोसेण छम्मासे परिवसेज्जा।

अत्थि ण गोयमा ! तस्स अयावयस्स केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे ण तासि अयाण उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिघाणएण वा वतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहि वा रोमेहि वा सिंगेहि वा खुरेहि वा नहेहि वा अणोक्कतपुव्वे भवइ ?

उ णो इणट्ठे समट्ठे।

होज्जा वि ण गोयमा ! तस्स अयावयस्स केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे ण तासि अयाण उच्चारेण वा जाव नहेहि वा अणोक्कतपुव्वे

नो चेव ण एयसि एमहालयसि लोगसि लोगस्स य सासयभाव, ससारस्स य अणादिभाव,

जीवस्स य निच्चभाव कम्मबहुत्त जम्मण-मरणाबाहुल्ल च पडुच्च नत्थि केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे—"जत्थ ण अय जीवे न जाए वा, न मए वा वि।"

से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—

---

१ ज्ञानार्णव ३४/४-८ तथा हैमयोगशास्त्र ७/१०-१२.

"एयसि ण एमहालयसि लोगसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ ण अय जीवे ण जाए वा न मए वा वि।"

—विया स. १२, उ. ७, सु. ३/१-२

अर्थात् इस लोक का ऐसा कोई प्रदेश नही है, जहाँ अनेक बार जीव उत्पन्न हुआ और मरा नही। जिस लोक मे मानव उत्पन्न हुआ है, उसके स्वरूप-परिज्ञान से वह सोचने लगता है कि "इस लोक के प्रत्येक प्रदेश मे मेरे अनन्तवार जन्म और मरण हुए हैं, अत इस पुन पुन जन्म-मरण के चक्र से मुझे मुक्त होना चाहिए।" उसकी यह जागरूकता उसे विभिन्न पुण्य-पाप, सत्कर्म-दुष्कर्म आदि से परिचित कराती है और वह उनके स्वरूपो से परिचित होकर असत्कर्मो से निवृत्ति एव सत्कर्मप्रवृत्तिपूर्वक अपने निरापद गन्तव्य का निर्धारण करने में तत्पर हो जाता है। यदि समस्त लोक तथा पृथ्वी पर स्थित द्वीपादि का निरूपण शास्त्रो मे नही होता तो जीव अपने स्वरूप के परिचय से अपरिचित ही रह जाता और वैसी स्थिति मे आत्मज्ञान के प्रति श्रद्धान तथा ज्ञानादि की सम्भावनाएँ भी विलुप्त हो जाती।

जो जीवे वि न याणाति अजीवे वि न याणति।
जीवाऽजीवे अयाणतो कह सो नाहीइ सजम ॥ ३५ ॥

जो जीवे वि वियाणाति अजीवे वि वियाणति।
जीवाऽजीवे वियाणतो सो हु नाहीइ सजम ॥ ३६ ॥

जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणई।
तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई ॥ ३७ ॥

तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई।
तया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणई ॥ ३८ ॥

जया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणई।
तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ ३९ ॥

जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ सजोग सऽब्भितरबाहिर ॥ ४० ॥

जया चयइ सजोग सऽब्भितर-बाहिर।
तया मुडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिय ॥ ४१ ॥

जया मुडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिय।
तया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे अणुत्तर ॥ ४२ ॥

जया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे अणुत्तर।
तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ॥ ४३ ॥

जया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड।
तया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छई ॥ ४४ ॥

जया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छई।
तया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ॥ ४५ ॥

जया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरु भित्ता सेलेसि पडिवज्जई ॥ ४६ ॥

जया जोगे निरु भित्ता सेलेसि पडिवज्जइ ।
तया कम्म खवित्ताण सिद्धि गच्छइ नीरग्रो ॥४७॥

जया कम्म खवित्ताण सिद्धि गच्छइ नीरग्रो ।
तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो भवइ सासग्रो ॥४८॥ —दस ग्र ४, गा ३५-४८

इन्ही सव कारणो से लोक-सम्बन्धी ज्ञान ग्रत्यावश्यक माना गया है ग्रौर इस ज्ञान की उपलब्धि के लिए ग्रागम-साहित्य सदैव परिशीलनीय माना गया है ।

५ लोक और उसमे "सूर्य"—

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि "लोक-विज्ञान" का निदर्शन जैन-ग्रागमो मे विस्तार से हुग्रा है । वहाँ उसका परिचय " १ समग्र, २ विभिन्न अंग ग्रौर ३ अग-विशेष " के रूप मे निर्दिष्ट होकर उत्तरकाल के ग्राचार्यों द्वारा भाष्य, टीका-निर्युक्ति, चूर्णी, वृत्ति ग्रादि के रूप मे उसे ग्रौर भी पल्लवित एव पुष्पित किया गया है । ऐसे साहित्य मे—

लोक परिचय के लिए

१ आचाराग सूत्र १ श्रुतस्कन्ध, २ ग्रध्ययन, १ उद्देशक[1] ।
२ स्थानाग सूत्र, १ स्थान[2] ।
३ समवायाग सूत्र—प्रथम समवाय[3] ।
४ भगवतीसूत्र ११ शतक, १० उद्देशक[4] ।

---

१ इच्चत्थ गढिए लोए वसे पमत्ते ग्रहो य राग्रो य परितप्पमाणे कालाकालसमुट्ठायी सजोगट्ठी ग्रट्ठालोभी ग्रालुपे सहसक्कारे विणिविट्ठचित्ते एत्थ सत्थे पुणो पुणो । —ग्राचा श्रु १, ग्र २, उ १, सु ६३

२ ठाण. अ. १, सु ५

३ सम अ १, सु ३

४ प्र कइविहे ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते,
त जहा—१ दव्वलोए, २ खेत्तलोए, ३ काललोए, ४ भावलोए ।
प्र खेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते,
त जहा— १ ग्रहेलोयखेत्तलोए, २ तिरियलोयखेत्तलोए, ३ उड्ढलोयखेत्तलोए ।
प्र ग्रहेलोयखेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते,
त जहा—रयणप्पभापुढविग्रहेलोयखेत्तलोए जाव ग्रहेसत्तमपुढविग्रहेलोयखेत्तलोए ।
प्र तिरियलोयखेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?

[शेप ग्रगले पृष्ठ पर]

५ १३ शतक, ४ उद्देशक ।[1] तथा अन्य सूत्रो मे प्रासगिक रूप से चर्चित विषयो का अध्ययन किया जाये तथा—

2. लोक के आकार-ज्ञान के लिये—

१ आचारागसूत्र श्रुत १ अ ८, उ ।२। द्रष्टव्य है ।

लोक-विषयक विचारणा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है । जैन आगमो मे लोक का अभिप्रेतार्थ "रज्जुलोक" है, क्योकि यह चौदह विभागो मे विभाजित है, अत इसे "चौदह रज्जुलोक" के नाम से भी पहचाना जाता है । वैसे वैदिक-धर्मग्रन्थो मे भी "चौदह रज्जुलोक" की मान्यता एव वर्णन मिलते हैं ।

एक रज्जुलोक का प्रमाण—"कोई देव एक हजार भार वाले लोहे के गोले को अपनी समग्र शक्तिपूर्वक आकाश से फेंके और वह लोहगोलक ६ माह, ६ दिन, ६ घडी, ६ पल मे जितना क्षेत्र लाघ जाए, उतना क्षेत्र

उ गोयमा ! असखेज्जइविहे पण्णत्ते,
त जहा—जबुद्दीवतिरियलोयखेत्तलोए जाव सयभुरमणसमुद्दतिरियलोयखेत्तलोए ।
प्र उड्ढलोयखेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते,
त जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुयउड्ढलोयखेत्तलोए ।
गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए
इसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ।

—विया स. ११, उ. १०, सु. २-६

१ प कहि ण भते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स असखेजइभाग एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।
प कहि ण भते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स साइरेग अद्ध ओगाहित्ता, एत्थ ण अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।
प कहि ण भते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! उप्पि सणकुमार-माहिंदाण कप्पाण हेट्ठि बभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे, एत्थ ण उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।
प कहि ण भते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! जम्बुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ ण तिरियलोयमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ ण इमाओ दस दिसाओ पवहति,
त जहा-पुरत्थिमा पुरत्थिमदाहिणा एव जहा दसमसते जाव नामधेज्ज त्ति ।

—विया स १३, उ. ४, सु १०-१५

२ अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, सादिए लोए, अणादिए लोए, सपज्जवसिए लोए, अपज्जवसिए लोए, सुकडे ति वा दुकडे ति वा कल्लाणे ति वा पावए ति वा साधू ति वा असाधू ति वा सिद्धी ति वा असिद्धी ति वा निरए ति वा अनिरए ति वा ।

—आचा श्रु १, अ. ८. उ १, सु २००

एक रज्जुलोक कहलाता है। चौदह रज्जुलोक का आकार दोनो पैर सीधे करके कटि के दोनों पार्श्वों पर हाथ रखकर खडे हुए पुरुष के समान है। आगम साहित्य मे इसे लोक पुरुष की सज्ञा दी गई है। इसी मे धर्मास्तिकायादि (काल द्रव्य, सहित) छह द्रव्य हैं।

लोक के वाहर जो आकाशास्तिकाय है, उसमे इन छह द्रव्यों के न होने से उसे "अलोक" कहते हैं। अलोक का विस्तार लोक की अपेक्षा अनन्त गुना विशाल है।

लोक के "ऊर्ध्व", "अध" और "तिर्यक्" ऐसे तीन विभाग हैं। इनमे "रत्नप्रभा" मे नौ सौ योजन ऊपर तथा नौ सौ योजन नीचे इस प्रकार कुल अठारह सौ योजन मोटाई वाला, एक रज्जु चौडा ऐसा "तिर्यक् लोक" है। वहाँ से नौ सौ योजन न्यून सात रज्जु प्रमाण "अधोलोक" है और "ऊर्ध्वलोक" भी नौ सौ योजन न्यून सात रज्जु प्रमाण है।

सक्षेप मे यह लोक का सामन्य परिचय है। विशेष ज्ञान के लिये गणितानुयोग का आद्योपान्त अवलोकन "लोक-प्रकाश", क्षेत्रसमास आदि दर्शनीय हैं।

६ सूर्य का आलोक और उसका स्वरूप

तिर्यक्लोक मे जो प्रकाश व्याप्त है, वह सूर्यों के द्वारा ही प्राप्त है। मनुष्यलोक के अन्दर और वाहर के विभागो को प्रकाशित करने वाले सूर्य पृथक्-पृथक् हैं और इस दृष्टि से सूर्यों की अनेकता सिद्ध है। इस मध्यलोक के प्रकाशक सूर्य और इनके सहयोगी अन्य देव, जो कि "ज्योतिष्क देव" के रूप में पहचाने जाते हैं—इन सवका परिचय आगमो मे इस प्रकार है—

जम्बूद्वीप के मध्य मे स्थित "मेरुपर्वत की समतल भूमि से ऊपर ७९० योजन की ऊँचाई के पश्चात् ज्योतिश्चक्र का क्षेत्र प्रारम्भ होता है जो कि ११० योजन प्रमाण है अर्थात् ज्योतिश्चक्र की स्थिति इसी मध्यलोक मे है। इन ११० योजनो मे से १० योजन छोडकर उसके ऊपर मेरु की समतल भूमि से ८०० योजन की ऊँचाई पर सूर्य के विमान है। उससे ८० योजन की ऊँचाई पर चन्द्र के विमान हैं। वहाँ से २० योजन तक अर्थात् मेरु की समतल भूमि से ९०० योजन की ऊँचाई तक की परिधि मे ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्ण तारागण हैं। तारासमूह को प्रकीर्ण कहने का कारण यह है कि अन्य कतिपय तारे अनियतचारी होने से कभी सूर्य और चन्द्र के नीचे भी चलते हैं तथा कभी ऊपर भी। इन सव ज्योतिष्को की स्थिति भी इसी मध्यलोक मे है। मनुष्यलोक की सीमा मे जो ज्योतिष्क हैं वे भ्रमण करते रहते हैं। इसलिये उन्हे "चर ज्योतिष्क" कहते हैं। चर ज्योतिष्कों की गति की अपेक्षा से ही मुहूर्त, प्रहर, अहोरात्र, पक्ष, मास, अतीत, वर्तमान आदि तथा सख्येय-असख्येय आदि काल का व्यवहार है। मनुष्य-लोक की सीमा से वाहर ज्योतिष्को के विमान स्थिर हैं। स्वभावत वे एक स्थान पर स्थिर रहते हैं, भ्रमण नही करते। अत उनका उदय-अस्त न होने से उनका प्रकाश भी एक समान पीतवर्णी और लक्ष योजन-प्रमाण रहता है। इसलिये उन्हे "स्थिर ज्योतिष्क" कहा है।

सभी ज्योतिष्क पाच यूथो मे विभाजित होते हैं और वे सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और ताराओ का प्रतिनिधित्व करते हैं। केवल मनुष्य सृष्टि के लिये ही ये सतत गतिशील रहते हैं ऐसा प्रतीत होता है, यहाँ सूर्य-चन्द्र की वहुलता के सम्वन्ध मे स्पष्टीकरण जैन सिद्धान्त की लाक्षणिकता के लिये आवश्यक है। मुख्यत जम्बूद्वीप (मध्यलोक) में दो सूर्य, दो चन्द्रो का होना माना जाता है। समय विभाजन इन ज्योतिर्मय देवो की गति से ही निर्धारित होता है।

जैनदर्शन की दृष्टि से जगत् मे व्याप्त दृष्ट-अदृष्ट सभी पदार्थ जिन षड् द्रव्यो मे विभक्त हैं उनमे "काल" को भी एक द्रव्य माना है। चेतन और जड़ पुद्गल तीनो कालो मे सक्रिय रहते हैं। जीव तथा पुद्गल की

सक्रियता की समयमर्यादा निश्चित करने का एक मात्र आधार काल-द्रव्य है। सामान्यत जगत् मे "काल" नामक कोई स्वतन्त्र पदार्थ नही है तथापि उपर्युक्त जड और चेतन पदार्थ के सम्बन्ध मे अत्यन्त उपकारक होने से शास्त्रकारो ने इसको औपचारिक द्रव्य भी कहा है। काल का अर्थ यहाँ समय (सेकिंड, मिनिट, घण्टे, दिन, पक्ष, मास और वर्ष आदि) का सूचक है। इस समय को यदि कोई भी निश्चित कर देने वाले साधन है, तो वे हैं "सूर्य-चन्द्र"।

अनन्तज्ञानी तीर्थंकर परमात्मा ने सूर्य-चन्द्र दोनो ही असख्य कहे हैं और इनमे परस्पर तनिक भी न्यूनाधिकता नही है। वस्तुत ये चार प्रकार के देवो मे "ज्योतिषी देव" है। इनके विमानो मे जटित विशिष्ट रत्नो के प्रकाश से जगत् के सर्व पदार्थ प्रकाशित होते हैं। सूर्यविमान के रत्नो मे वर्तमान एकेन्द्रिय जीवो को आतप नामकर्म से उष्ण प्रकाश का अनुभव होता है और चन्द्र विमान के रत्नो मे वर्तमान एकेन्द्रिय जीवो को उद्योत नामकर्म से शीत प्रकाश का अनुभव होता है।

असख्य सूर्य ज्योतिषी-निकाय के इन्द्र हैं और इन असख्य सूर्य इन्द्रो के रहने के विमान भिन्न-भिन्न होते है। इसी प्रकार चन्द्रों के भी विमान भिन्न-भिन्न है। सूर्य का प्रत्येक विमान पूर्वदिशा मे ४००० सिंह रूप, दक्षिण मे ४००० हस्ति रूप, पश्चिम मे ४००० वृषभ रूप तथा उत्तर मे ४००० अश्व रूप इस प्रकार कुल १६००० आभियोगिक (सेवकादि) देव इन विमानो का वहन करते हैं। सूर्य के विमान पृथ्वी से ८०० योजन ऊँचे है तथा वे शाश्वत हैं। शाश्वत पदार्थों का १ योजन ३६०० मील जितना होता है। जम्बूद्वीप और उसके बाद वाले असख्य द्वीप-समुद्रो मे सूर्य-चन्द्र सदा हर समय प्रकाश फैला रहे है। यथा—

जम्बूद्वीप मे	२ सूर्य	—	२ चन्द्र
लवणसमुद्र मे	४ सूर्य	—	४ चन्द्र
धातकीखण्ड मे	१२ सूर्य	—	१२ चन्द्र
कालोदधिसमुद्र मे	४२ सूर्य	—	४२ चन्द्र
अर्ध-पुष्करद्वीप मे	७२ सूर्य	—	७२ चन्द्र
	१३२ सूर्य	—	१३२ चन्द्र

इन सूर्य-चन्द्रो के सम्बन्ध मे अन्य ज्ञातव्य इस प्रकार है—

मनुष्यलोक के सूर्य-चन्द्र

१ अस्थिर (परिभ्रमणशील)
२. इनके विमान की पीठिका अर्ध कोष्ठकाकार
३ चन्द्र विमान ५६/६१ योजन (लम्बाई-चौडाई)
४. चन्द्र विमान की ऊँचाई २८/६१ योजन
५. सूर्य विमान ४८/६१ योजन (लम्बाई-चौडाई)
६. सूर्य विमान की ऊँचाई २४/६१ योजन।

मनुष्यलोक से बाहर के सूर्य-चन्द्र

१. स्थिर (परिभ्रमणरहित)

२ चतुरस्र इष्टकाकार

३ चन्द्र विमान २८/६१ योजन (लम्बाई-चौडाई)

४ चन्द्र विमान की ऊँचाई १४/६१ योजन

५ सूर्य विमान ४४/६१ योजन (लम्बाई-चौडाई)

६ सूर्य विमान की ऊँचाई २४/६१ योजन।

जम्बूद्वीप मे एक चन्द्र, एक सूर्य ४८ घण्टे मे प्रत्येक मण्डल को पूर्ण करता है। जम्बूद्वीप मे एक सूर्य दक्षिणदिशा मे भरतक्षेत्र मे होता है तव दूसरा सूर्य उत्तरदिशा मे—ऐरवत क्षेत्र मे रहता है। उसी समय एक चन्द्र पूर्व महाविदेह मे होता है तव दूसरा चन्द्र पश्चिम महाविदेह मे रहता है। जहाँ सूर्य होता है वहाँ दिन और जहाँ चन्द्र होता है वहाँ रात्रि होती है। अत प्रत्येक क्षेत्र मे जो सूर्य-चन्द्र आज दिखाई देते हैं, वे दूसरे दिन नही दिखाई देते। इस प्रकार सूर्य-चन्द्र का परिभ्रमण सतत चालू है। अढाई द्वीपवर्ती सभी सूर्य-चन्द्र द्वीपवर्ती मेरुपर्वतो के चारो ओर सतत परिभ्रमण कर रहे हैं। इस प्रकार कुल १३२ सूर्य-चन्द्र अढाई द्वीपो के मध्यस्थ मेरु की परिक्रमा कर रहे हैं, वे दो विभाग मे विभक्त ६६-६६ सख्या मे रहते हैं और इनकी पक्ति सदा एक साथ ही परिक्रमा करती है। सूर्य परिभ्रमण करते हुए जैसे-जैसे आगे बढता है वैसे उस क्षेत्र मे सूर्योदय कहलाता है और वह गति करता हुआ पिछले क्षेत्र मे अन्तिम दिखाई देता है तव सूर्यास्त कहलाता है।

वस्तुत जैन आगमो मे वर्णित सूर्य-चन्द्रादि ज्योतिष्क देवो की विचारणा इतनी महत्त्वपूर्ण एव सूक्ष्मता से परिपूर्ण है कि उसका वर्णन करना यहाँ सम्भव नही है। भगवतीसूत्र, जीवाभिगम, सूर्य-प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष्करण्डक, क्षेत्रलोकप्रकाश, बृहत्सग्रहणी, क्षेत्रसमास (लघु एव बृहत्) तथा त्रिलोकसारादि मे यह विषय विस्तार से समझाया गया है।

इतना ही नही, अन्य धर्मों के प्रमुख ग्रन्थो मे भी सूर्य की सर्वोपरि सत्ता को बहुत ही आदर के साथ सराहा गया है। वेदो मे सूर्य को "प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः, विभ्राट्, बृहत्, विश्वाय दृशे सूर्यम्, सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च," और "आकृष्णे न रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृत मर्त्यंश्च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्" इत्यादि अनेक मन्त्रो से विविधरूप मे व्यक्त किया है। सर्वाराध्य गायत्री मन्त्र मे भी सवित् देवता की ही महिमा और प्रार्थना है। सूर्य के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अनेक विवेचन वैदिक मन्त्रो मे अभिव्यक्त हैं, जिनके भाष्यो मे आचार्यों ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म परीक्षणात्मक प्रयोगो के निर्देश भी दिये हैं।

सूर्य सप्ताश्वरथ मे स्थित होकर जगत् को प्रकाशित करता है। ऋग्वेद मे "सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्र" कहते हुए जगत् को सप्तवर्गी ही बतलाया है। ये सात वर्ग—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, दिक् और काल हैं। सौर-परिवार के नौ सदस्य नवग्रह हैं। सूर्य आदि ग्रहो के बिम्बो का व्यास, गति, युति, ग्रहण आदि के वर्णन पुराणो तथा ज्योतिष के ग्रन्थो मे व्यापकरूप से आये हैं। "वृद्ध गर्गसहिता" मे "महासलिलाध्याय" के उत्तरार्ध मे "ग्रहकोपाध्याय, नक्षत्रकर्मगणाध्याय" आदि मे वैज्ञानिक विषयो का विस्तृत वर्णन भी दर्शनीय है। इस प्रकार सूर्य की अखण्ड सत्ता सनातन धर्मग्रन्थो मे भी विस्तार से स्वीकृत है।

ऐसी ही सूर्य की सार्वत्रिक महिमा को वैज्ञानिक दृष्टि से समन्वित चिन्तन-प्रधान असाधारण विवेचना के द्वारा व्यक्त करने वाला एक महान् ग्रन्थ "सूर्य-प्रज्ञप्ति" है। जिसका परिचय इस प्रकार है—

७ सूर्य-प्रज्ञप्ति का आगम साहित्य मे स्थान

जैन आगम-साहित्य प्राचीनतम वर्गीकरण के अनुसार 'पूर्व' और 'अग' के रूप मे वर्गीकृत हुआ था जिसे श्रमण भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती बतलाया है। इसके पश्चात् 'पूर्वश्रुत' को सरल रूप मे ग्रथित कर उसमे 'दृष्टिवाद'

को सम्मिलित करने से आचारादि ग्यारह अगो को 'द्वादशागी' कहा गया। आचाराग आदि के प्ररूपक महावीर की श्रुतराशि 'चौदह पूर्व' अथवा 'दृष्टिवाद' के नाम से पहचानी जाती थी। इसका वर्गीकरण 'अगप्रविष्ट' और 'अगबाह्य' ऐसे दो भागो मे किया गया। इनमे प्रथम 'गणधर द्वारा सूत्र रूप मे निर्मित' और द्वितीय 'स्थविरकृत' समाविष्ट हैं। इनके अतिरिक्त एक और सूक्ष्म विवेचन करते हुए नन्दीसूत्र मे "आवश्यक, आवश्यक-व्यतिरिक्त, कालिक और उत्कालिक" रूप मे आगम की सम्पूर्ण शाखाओ का परिचय दिया है। इनके अतिरिक्त दिगम्बर मान्यता के अनुसार "अगप्रविष्ट" आगमो का एक वर्गीकरण दृष्टिवाद के १ परिकर्म, २ सूत्र, ३ प्रथमानुयोग, ४ पूर्वगत एव ५ चूलिका के रूप मे हुआ है। श्री आर्यरक्षित ने आगमो को अनुयोगो के अनुसार चार भागो मे विभाजित किया जिनके "१ चरण-करणानुयोग, २. धर्मकथानुयोग, ३ गणितानुयोग तथा ४ द्रव्यानुयोग" ये नाम दिये हैं। इन्ही ने व्याख्याक्रम की दृष्टि से १ अपृथक्त्वानुयोग और २ पृथक्त्वानुयोग के रूप मे आगमो के दो रूप भी बतलाये। इन सबके अतिरिक्त नन्दीसूत्र की चूर्णि मे एक दृष्टि और उद्घाटित हुई जिसमे द्वादशागी को "श्रुत पुरूष" के अगो की सज्ञा से अभिहित किया गया। साथ ही द्वादश उपागो का भी विनियोग हुआ और प्रत्येक अग के साथ एक-एक उपाग (अगो मे कहे गये अर्थों का स्पष्ट बोध कराने वाले सूत्र) भी निर्धारित हुए।

इन और ऐसे ही अन्य भेदो मे श्रुतस्थविर-विरचित "सूर्य-प्रज्ञप्ति" सूत्र क्रमश अग, दृष्टिवाद, अगबाह्य, आवश्यक व्यतिरिक्त मे उत्कालिक, दृष्टिवाद का प्रथम भेद परिकर्म, गणितानुयोग, पृथक्त्वानुयोग और श्रुतपुरुष के ज्ञाताधर्मकथाग के उपाग मे अपना स्थान रखती है। बत्तीस आगमो के क्रम मे यह उपागगत २२वी सख्या पर है। कुछ ग्रन्थो मे इसे पाचवा और कही छठा उपाग बतलाया गया है।

८. सूर्य-प्रज्ञप्ति का स्वरूपात्मक परिचय

जैन-आगम वाङ्मय मे "सूर्य और ज्योतिष्कचक्र" का व्यवस्थित दिग्दर्शन कराने वाला यह उपाग ग्रन्थ मुख्यत ज्ञान एव विज्ञान की सश्लिष्ट पद्धति से विचारो को व्यक्त करता है। गणित और ज्योतिष की महत्त्वपूर्ण विवेचना इसमे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी रचना मे १०८ गद्य-सूत्र और १०३ पद्य-गाथाएँ प्रयुक्त हैं। इसमे एक अध्ययन, २० प्राभृत और उपलब्ध मूलपाठ २२०० श्लोक परिमाण है।

"सूर्य-प्रज्ञप्ति" अति प्राचीन ग्रन्थ है, क्योकि इसका उल्लेख श्वेताम्बर, दिगम्बर और स्थानकवासी—तीनो मे मान्य रहा है। इसी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि इसकी स्थिति तीनो के विभाजन से पूर्व थी। इसका समय विक्रम पूर्व का होना चाहिये।

विषय-विस्तार की दृष्टि से इसके २० प्राभृतो मे खगोलशास्त्र की जितनी सूक्ष्म विचारणाएँ प्रस्तुत हुई हैं, उतनी अन्यत्र कही एक साथ प्रस्तुत नही हुई हैं। इसका उपक्रम मिथिला नगरी मे जितशत्रु के राज्य मे नगर से बाहर मणिभद्र चैत्य मे वर्धमान महावीर के पधारने पर धर्मोपदेश के पश्चात् गणधर गौतम की जिज्ञासा के समाधान हेतु हुआ है। इसमे—"मण्डलगतिसख्या, सूर्य का तिर्यक् परिभ्रमण, प्रकाश्य क्षेत्र परिमाण, प्रकाश सस्थान, लेश्या प्रतिघात, ओज सस्थिति, सूर्यावरक उदयसस्थिति, पौरुषी छायाप्रमाण, योगस्वरूप, सवत्सरो के आदि और अन्त, सवत्सर के भेद, चन्द्र की वृद्धि अपवृद्धि, ज्योत्स्नाप्रमाण, शीघ्रगति निर्णय, ज्योत्स्ना लक्षण, च्यवन और उपपात, चन्द्र सूर्य आदि की ऊँचाई, उनका परिमाण एव चन्द्रादि के अनुभाव आदि" विषयो की विस्तृत चर्चा है। अत यह ग्रन्थ खगोलशास्त्र के चिन्तको के लिये पर्याप्त उपयोगी तथ्य उपस्थापित करता है।

उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री ने अपने महनीय ग्रन्थ "जैन आगम साहित्य मनन और मीमासा" मे सूर्य-प्रज्ञप्ति का विस्तृत परिचय देते हुए लिखा है। साराश इस प्रकार है—

प्रथम प्राभृत मे—"दिन व रात्रि मे ३० मुहूर्त, नक्षत्रमास, सूर्यमास, चन्द्रमास और ऋतुमास के मुहूर्तों की वृद्धि, प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पर्यन्त सूर्य की गति के काल का प्रतिपादन एव अन्तिम मण्डल मे सूर्य की एक बार तथा शेप मण्डलो मे सूर्य की दो बार गति होना, आदित्य-सवत्सर के दक्षिणायन और उत्तरायन मे अहोरात्र के जघन्य तथा उत्कृष्ट मुहूर्त एव अहोरात्र के मुहूर्तों की हानिवृद्धि के कारण भरत और ऐरावत क्षेत्र के सूर्य का उद्योत क्षेत्र, आदित्यसवत्सर के दोनो अयनो मे प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पर्यन्त एक सूर्य की गति का अन्तर, अन्तर के सम्बन्ध मे छह अन्य मान्यताएँ, सूर्य द्वारा द्वीपसमुद्रो के अवगाहन सम्बन्ध मे एक अहोरात्र मे सूर्य के परिभ्रमण का परिमाण एव मण्डलो की रचना तथा विस्तार वर्णित है।"

द्वितीय प्राभृत मे—"सूर्य के उदय और अस्त का वर्णन करके अन्यतीर्थिको के मतो का उल्लेख किया है, जिनमे—

१ सूर्य का पूर्वदिशा मे उदित होकर आकाश मे चला जाना,

२ सूर्य को गोलाकार किरणो का समूह बतलाकर सन्ध्या मे नष्ट होना,

३ सूर्य को देवता बतलाकर उसका स्वभाव से उदयास्त होना,

४ सूर्य के देव होने से उसकी सनातन स्थिति रहना,

५ प्रात पूर्वदिशा मे उदित होकर साय पश्चिम मे पहुँचना तथा वहाँ से अधोलोक को प्रकाशित करते हुए नीचे की ओर लौट जाना आदि प्रमुख है। अन्त मे "सूर्य के एक मण्डल से दूसरे मण्डल मे गमन का और वह एक मुहूर्त मे कितने क्षेत्र मे परिभ्रमण करता है? इसका विचार व्यक्त करते हुए स्वमत का भी प्रतिपादन हुआ है। अन्यधर्मावलम्बी पृथ्वी का आकार गोल मानते है किन्तु जैनधर्म की मान्यता उससे भिन्न है, यह भी इससे सकेतित है।"

तृतीय प्राभृत मे—चन्द्र, सूर्य द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले द्वीप एव समुद्रो का वर्णन है। इसी प्रसग मे बारह मतान्तरो का भी निर्देश हुआ है।

चतुर्थ प्राभृत मे—चन्द्र और सूर्य के १ विमान सस्थान तथा २ प्रकाशित क्षेत्र के सस्थान और उनके सम्बन्ध मे १६ मतान्तरो का उल्लेख है। यही स्वमत से प्रत्येक मण्डल मे उद्योत तथा ताप क्षेत्र का सस्थान बतलाकर अन्धकार के क्षेत्र का निरूपण किया गया है। सूर्य के ऊर्ध्व, अध एव तिर्यक् ताप-क्षेत्र के परिमाण भी यही वर्णित है।

पाचवें प्राभृत मे—सूर्य की लेश्याओ का वर्णन है।

छठे प्राभृत मे—सूर्य का ओज वर्णित है अर्थात् सूर्य सदा एक रूप मे अवस्थित रहता है अथवा प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है? इस सम्बन्ध मे २५ प्रतिपत्तियाँ है। जैनदृष्टि से व्यक्त किया है कि जम्बूद्वीप मे प्रतिवर्ष केवल ३० मुहूर्त तक सूर्य अवस्थित रहता है तथा शेप समय मे अनवस्थित रहता है। क्योकि प्रत्येक मण्डल पर एक सूर्य ३० मुहूर्त रहता है। इसमे जिस-जिस मण्डल पर वह रहता है, उस दृष्टि से वह अवस्थित है और दूसरे मण्डल की दृष्टि से वह अनवस्थित है, यह स्पष्ट किया है।

सातवें प्राभृत मे—सूर्य अपने प्रकाश से मेरुपर्वतादि को और अन्य प्रदेशो को प्रकाशित करता है, यह बतलाया है।

आठवें प्राभृत मे—जो सूर्य पूर्व-दक्षिण मे उदित होता है, वह मेरु के दक्षिण मे स्थित भरतादि क्षेत्रो को प्रकाशित करता है और जो मेरु के पश्चिम-उत्तर मे उदित होता है, वह मेरु के उत्तर मे स्थित ऐरावतादि क्षेत्रो

को प्रकाशित करता है। इस प्रकार दो सूर्यों की सत्ता प्रतिपादित हुई है और इसी से दिन-रात्रि की व्यवस्था स्पष्ट की गई है। साथ ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रो की अपेक्षा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का कथन भी इसी प्राभृत मे वर्णित है।

नौवें प्राभृत मे—पौरुषी छाया का प्रमाण बतलाते हुए सूर्य के उदयास्त के समय ५९ पुरुष-प्रमाण छाया होती है, यह बतलाया है और इस सम्बन्ध मे अनेक मत-मतान्तरो का उल्लेख करते हुए स्वमतानुसार पौरुषी-छाया के सम्बन्ध मे स्थापना की है।

दसवें प्राभृत मे—नक्षत्रो मे आवलिका क्रम, मुहूर्त की सख्या, पूर्व-पश्चिम भाग तथा उभयभागो से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, युगारम्भ मे योग करने वाले नक्षत्रो का पूर्वादि विभाग, नक्षत्रो के कुल, उपकुल तथा कुलोपकुल, १२ पूर्णिमा और अमावस्याओ मे नक्षत्रो के योग, समान नक्षत्रो के योग वाली पूर्णिमा तथा अमावस्या, नक्षत्रो के सस्थान, उनके तारे, वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं मे मानक्रम से नक्षत्रो का योग तथा पौरुषी प्रमाण, दक्षिण-उत्तर एव उभयमार्ग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, नक्षत्र रहित चन्द्रमण्डल, सूर्यरहित चन्द्रमण्डल, नक्षत्रो के देवता, ३० मुहूर्तो के नाम, १५ दिन, रात्रि और तिथियो के नाम, नक्षत्रो के गोत्र, नक्षत्रो मे भोजन का विधान, एक युग मे चन्द्र व सूर्य के साथ नक्षत्रो का योग, एक सवत्सर के महीने और उनके लौकिक तथा लोकोत्तर नाम, पाच प्रकार के सवत्सर, उनके ५-५ भेद और अन्तिम शनैश्चर-सवत्सर के २८ भेद, दो चन्द्र, नक्षत्रो के द्वार, दो सूर्य और उनके साथ योग करने वाले नक्षत्रो के मुहूर्त परिमाण, नक्षत्रो की सीमा तथा विष्कम्भ आदि का प्रतिपादन विस्तार के साथ इसके २२ उप-अध्यायो मे हुआ है।

ग्यारहवें प्राभृत मे—सवत्सरो के आदि, अन्त और नक्षत्रो के योग का वर्णन है।

बारहवें प्राभृत मे—नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिवर्धित ५ सवत्सरो का वर्णन, छह ऋतुओं का प्रमाण, ६-६ क्षयाधिक तिथिया, एक युग मे सूर्य और चन्द्र की आवृत्तिया और उस समय नक्षत्रो के योग और योगकाल आदि का वर्णन है।

तेरहवें प्राभृत मे—कृष्ण और शुक्ल पक्ष मे चन्द्र की हानि-वृद्धि, ६२ पूर्णिमा तथा ६२ अमावस्याओ मे चन्द्र-सूर्यों के साथ राहु का योग, प्रत्येक अयन मे चन्द्र की मण्डल-गति आदि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें प्राभृत मे—कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ज्योत्स्ना और अन्धकार का प्रमाण वर्णित है।

पन्द्रहवें प्राभृत मे—चन्द्रादि ज्योतिष्क देवो की एक मुहूर्त की गति है, यह बतलाकर नक्षत्रमास मे चन्द्र, सूर्य, ग्रहादि की मण्डल गति और ऋतुमास तथा आदित्यमास मे भी मण्डल गति का निरूपण किया है।

सोलहवें प्राभृत मे—चन्द्रिका, आतप और अन्धकार के पर्यायो का वर्णन है।

सत्रहवें प्राभृत मे—सूर्य के च्यवन तथा उपपात के सम्बन्ध मे अन्य २५ मत-मतान्तरो का उल्लेख करने के पश्चात् स्वमत का सस्थापन किया है।

अठारहवें प्राभृत मे—भूमि से सूर्य-चन्द्रादि की ऊँचाई का परिमाण बताते हुए अन्य २५ मत-मतान्तरो का उल्लेख करके स्वमत का प्रतिपादन किया है। चन्द्र-सूर्य के विमानो के नीचे, ऊपर तथा सम विभाग में ताराओ के विमान होने के कारण एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार, मेरुपर्वत से ज्योतिष्कचक्र का अन्तर, जम्बूद्वीप मे सर्व बाह्य-आभ्यन्तर, ऊपर-नीचे चलने वाले नक्षत्र, चन्द्र-सूर्यादि के सस्थान, आयाम, विष्कम्भ और

वाहुल्य, उनको वहन करने वाले देवो की सख्या और उनके दिशाक्रम से रूप, शीघ्र-मन्द गति, अल्पवहुत्व, चन्द्र-सूर्य की अग्रमहिषियो का परिवार, विकुर्वणा, शक्ति एव देव-देवियो की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति आदि विषयो पर विस्तार से विचार हुआ है।

उन्नीसवें प्राभृत मे—चन्द्र और सूर्य सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करते हैं अथवा लोक के एक विभाग को ? यह प्रश्न उठाकर इस सम्बन्ध मे वारह मत-मतान्तरो का उल्लेख करते हुए स्वमत का निरूपण किया है। साथ ही लवणसमुद्र का आयाम, विष्कम्भ और चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र एव ताराओ का वर्णन है। उसी प्रकार धातकीखण्ड के सस्थान, कालोदधिसमुद्र और पुष्करार्धद्वीप तथा मनुष्य क्षेत्र आदि का विवरण प्रस्तुत हुआ है। इसी प्राभृत मे यह भी वतलाया गया है कि—इन्द्र के अभाव मे व्यवस्था, इन्द्र का जघन्य और उत्कृष्ट विरहकाल, मनुष्य क्षेत्र के वाहर चन्द्र की उत्पत्ति और गति तथा अन्त मे स्वयम्भूरमण समुद्र तक द्वीपसमुद्रो के आयाम, विष्कम्भ, परिधि आदि का वर्णन है।

वीसवें प्राभृत मे—चन्द्रादि का स्वरूप, राहु का वर्णन, राहु के दो प्रकार तथा जघन्य-उत्कृष्ट काल का वर्णन है। यही चन्द्र को शशि और सूर्य को आदित्य कहने का कारण वतलाते हुए स्पष्ट किया है कि ज्योतिष्को के इन्द्र—चन्द्र का मृग (शश) के चिह्नवाला 'मृगाङ्क-विमान' है और सूर्य समय, आवलिका आदि से लेकर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल का आदि-कर्ता है। चन्द्र और सूर्य की अग्रमहिषियो और चन्द्र-सूर्य के कामभोगो की मानवीय कामभोगो के साथ तुलना भी यहाँ प्रस्तुत हुई है तथा अन्त मे ८८ ग्रहो के नाम बताये गये है। इन प्राभृतो के भी अन्य लघु प्राभृतो के रूप मे विभाजन हैं।

उपर्युक्त विषयो के अवलोकन से सहज ही यह अनुमान किया जा सकता है कि सूर्य-प्रज्ञप्ति के आयाम मे न केवल सूर्य और उससे सम्बद्ध विषयो का ही इसमे विमर्श हुआ है, अपितु समग्र ज्योतिष्क-परिवार का प्रसगानुसार सूक्ष्म एव स्थूल विमर्श समावृत हो गया है। इतना ही नही, यहाँ प्राचीन ज्योतिष-सम्बन्धी मूल मान्यताओ का भी सङ्कलन आ गया है। इसमे चर्चित विषय अन्यान्य धर्मो के मान्य-ग्रन्थो मे चर्चित विषयो से भी कुछ अशो मे साम्य रखते हैं।

९ सूर्य-प्रज्ञप्ति की निर्युक्ति एवं अन्य विवेचनाएँ

सूर्य-प्रज्ञप्ति के व्यापक विषय-विवेचन से प्रभावित होकर निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहु ने दस आगमो पर निर्युक्तियो की रचना की थी, उनमे सूर्य-प्रज्ञप्ति भी थी। किन्तु दुर्भाग्य से अब वह अनुपलब्ध है। किन्तु आचार्य मलयगिरि की वृत्ति मे इसका निर्देश हुआ है। उन्होंने वहाँ लिखा है—'भद्रवाहुसूरि कृत निर्युक्ति का नाश हो जाने से मैं केवल मूल सूत्र का ही व्याख्यान करूँगा।' इसके वीच के काल मे भाष्य और चूर्णिया भी लिखी गई किन्तु सूर्य-प्रज्ञप्ति पर किसी ने लिखा हो, ऐसा कोई प्रमाण नही मिलता।

आचार्य मलयगिरि का स्थितिकाल १५वी शती माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थो मे "सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग टीका" ९५०० श्लोक प्रमाण उपलब्ध होती है। इसी का अपरनाम "सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति" प्रचलित है। आचार्य ने यहाँ प्रारम्भ मे मिथिला नगरी, मणिभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी देवी और भगवान् महावीर का साहित्यिक वर्णन किया है। तदनन्तर गणधर इन्द्रभूति गौतम का वर्णन है। वैसे सूर्यप्रज्ञप्ति के वीसो प्राभृतो का विवेचन मननीय है और उसमे यत्र-तत्र विशिष्ट चिन्तन, आलोचना एव स्वमत-निरूपण को भी स्थान दिया है।

यद्यपि अधिकाश आचार्य, जिन्होंने आगम-ग्रन्थो पर भाष्य, निर्युक्ति, चूर्णि या टीकाएँ लिखने मे पर्याप्त उदारता व्यक्त की है, परन्तु सूर्य-चन्द्र सम्बन्धी प्रज्ञप्तियो पर प्राय नही लिखा है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि सीधे अध्यात्म एव आचार-उपासना जैसे विषयो के प्रति उनकी रुचि विशेष रही होगी। अथवा यह भी कहा जा सकता है कि इन प्रज्ञप्तियो के विषय विज्ञान के अतिनिकट होने से क्लिष्ट जानकर छोड दिये हो।

उत्तरकाल मे कुछ आचार्यो ने इस कमी को समझा और पुन इस पर टीका लिखने का उपक्रम किया। इनमे स्थानकवासी आचार्य मुनि धर्मसिहजी (१८वी शती) ने "सूर्य-प्रज्ञप्ति के यन्त्र" निर्मित किये और इसी परम्परा के अन्य आचार्य श्री घासीलालजी महाराज ने ३२ आगमो पर जो सस्कृत भाषा मे टीकाएँ लिखी है उनमे सूर्य-प्रज्ञप्ति पर "प्रमेयबोधिनी"/सूर्य प्रज्ञप्ति-प्रकाशिका नामक टीका/व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। इसमे आचार्य श्री ने मूलसूत्र की सस्कृत छाया और सस्कृत व्याख्या की है। इसका हिन्दी और गुजराती भाषा मे अनुवाद दो भागो मे प्रकाशित भी हुआ है, जिसका नियोजन पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी ने किया है। हिन्दी और गुजराती अनुवादकर्ताओ का नामोल्लेख नही हुआ है। आचार्य श्री अमोलकऋषिजी ने भी प्रज्ञप्ति का हिन्दी अनुवाद किया है इसका प्रकाशन हैदराबाद से हुआ है तथा और भी कुछ विद्वान् आचार्यो ने इस पर विवेचन किये है।

सूर्य-प्रज्ञप्ति के सम्बन्ध मे देश-विदेश के विचारक मनीषियो ने भी बहुत से अभिमत भिन्न-भिन्न लेखो मे व्यक्त किये हैं। भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र मे बहुमान्य वराहमिहिर[1] निर्युक्तिकार भद्रबाहु के भ्राता थे, उन्होने अपने ग्रन्थ "वराहसहिता" में सूर्य-प्रज्ञप्ति के कतिपय विषयो को आधार बनाकर उन पर लिखा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कर ने सूर्य-प्रज्ञप्ति की कुछ मान्यताओ को लेकर अपने खण्डनात्मक विचार व्यक्त किये है जो "सिद्धान्तशिरोमणि" ग्रन्थ मे द्रष्टव्य है। इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त ने "स्फुट-सिद्धान्त" ग्रन्थ मे भी खण्डन का आधार बनाया है। किन्तु इस युग मे वैदेशिक विद्वानो ने सूर्य-प्रज्ञप्ति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे विज्ञान का ग्रन्थ माना है, डॉ. विन्टरनित्ज उनमे प्रथम हैं। डॉ शुब्रिंग ने तो यहाँ तक कहा है कि "सूर्य-प्रज्ञप्ति के अध्ययन के बिना भारतीय ज्योतिष के इतिहास को सही रूप से नहीं समझा जा सकता।" वेबर ने सन् १८६८ मे "उबेर डी सूर्य-प्रज्ञप्ति" नामक निबन्ध प्रकाशित किया था। डॉ सिबो ने "ऑन द सूर्य-प्रज्ञप्ति" नामक अपने शोधपूर्ण लेख मे ग्रीक लोगो के भारतवर्ष मे आगमन से पूर्व वहाँ "दो सूर्य और दो चन्द्र" का सिद्धान्त सर्वमान्य था, ऐसा प्रतिपादित किया है तथा उन्होंने अतिप्राचीन ज्योतिष के वेदाग ग्रन्थ की मान्यताओ के साथ सूर्य-प्रज्ञप्ति के सिद्धान्तो की समानता भी बतलाई है।

१०. प्रस्तुत प्रकाशन और कुछ प्रश्न : कुछ समाधान

उपर्युक्त "सूर्य-प्रज्ञप्ति" की गरिमा से स्वत सिद्ध हो जाता है कि ऐसे ग्रन्थ का सर्वाधिक स्वाध्याय हो, मनन हो और गम्भीरता-पूर्वक इसमे वर्णित विषयो का स्व-पर कल्याण की दृष्टि से पुन पुन विचार हो। सम्भवत इसी कल्याणमयी भावना से इसका प्रकाशन किया गया है, जो कि अभिनन्दनीय है।

यद्यपि यह ग्रन्थ मूल रूप मे ही प्रकाशित है किन्तु इसके सम्पादनकर्त्ता मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" ने परिश्रमपूर्वक इसके पाठो को विशुद्धरूप मे प्रकाशित करने का प्रयास किया है। साथ ही पाद-टिप्पणियो मे अनेक प्रश्नो को भी उठाया है तथा उनके समुचित समाधानो की कामना भी की है। मैंने जब इसका अवलोकन किया

१ द्रष्टव्य, गच्छाचार की वृत्ति

तो मेरे मन मे भी कुछ प्रश्न उभर आये। उन सबका क्रमिक विचार भी यहाँ प्रस्तुत करना अनुचित न होगा। यहाँ उन प्रश्नो की उपस्थापना के साथ ही उनके यथोपलब्ध समाधान भी प्रस्तुत हैं—

प्रश्न १ सूर्यप्रज्ञप्ति ग्रन्थ वस्तुत खण्डित है फिर यह ग्रन्थ कैसे पूर्ण हुआ ?

समाधान ऐसा कहा जाता है कि इसके पाठो मे और चन्द्रप्रज्ञप्ति के पाठो मे प्राय साम्य है। अत पूर्वाचार्यों ने ही इसे परस्पर पाठानुसधान द्वारा वर्तमान रूप दिया है।

प्रश्न २ वर्तमान सूर्यप्रज्ञप्ति के मूलपाठो मे अब भी पाठान्तर क्यो हैं ? यह स्थिति इस सस्करण से पूर्व प्रकाशित "सूर्यप्रज्ञप्ति" ग्रन्थो से मिलाने से स्पष्टत प्रतीत हो जाती है। जैसे प्रारम्भ मे "वीरस्तुति" नही दी है। कही गद्यपाठ मे कुछ अश त्याग दिये है तो यत्र-तत्र पाठगत शब्दो मे व्यत्यय भी हुआ है, आदि।

समाधान सम्भवत यह इसलिए किया गया होगा कि सम्पादक-वर्ग को ऐसी अन्य पाण्डुलिपिया उपलब्ध हुई हो। साथ ही उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री के शब्दो मे यह भी सम्भव है कि जैन आगम "शब्द" की अपेक्षा "अर्थ" को अधिक महत्त्व देते हैं। वेदो की तरह शब्दवादी नही हैं। अत ऐसा पाठभेद हुआ होगा। एक यह भी कारण हो सकता है कि स्थविरो के द्वारा सग्रह होने के पश्चात् इनकी जो भिन्न-भिन्न कालो मे वाचनाएँ हुई हैं, उनमें वैसी व्यवस्था हुई हो।

प्रश्न ३ इस ग्रन्थ मे एक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है नक्षत्र-भोजन मे मासादि के भोजन का ? यह जैनधर्म के सर्वथा प्रतिकूल कथन इसमे कैसे आया ?

समाधान : इस सम्बन्ध मे भिन्न-भिन्न समाधान प्राप्त होते है। यथा—

१ यह पाठ प्रक्षिप्त है। २ इस पाठ से पूर्व और भी कुछ पाठ था, जो विच्छिन्न हो गया है। ३. इस सम्बन्ध मे आगमप्रभाकर पुण्यविजयजी का अभिमत था कि "इसके पहले के कुछ वाक्य खण्डित हो गये हैं, जिनमे यह भगवान् महावीर के द्वारा कथित न होकर किसी प्रश्न के उत्तर मे उद्धरण के रूप मे अन्य मतो का प्रदर्शन किया गया है।[1] ४ अन्य आचार्यों का कथन है कि यहाँ प्रयुक्त "मास" शब्द का अर्थ प्राण्यङ्ग मास नही है, अपितु यह अत्यन्त प्राचीनकाल मे प्रयुक्त होने वाले अर्थ "वनस्पतिजनित फल, मेवा' आदि के अर्थ मे व्यवहृत है। इसी प्रकार मास के पर्यायवाची अन्य शब्द "पिशित, तरस्, पलल, क्रव्य और आमिष" शब्द भी प्राण्यङ्गजन्य मास के सूचक न होकर अन्य अर्थो के ही सूचक हैं। अमरकोष के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने जो धातुप्रत्यय जनित शब्द की व्युत्पत्ति दी है, उससे "पिशित=अवयववान्, तरस=बलवान्, मास=मानकारक, पलल=गमनकारक, क्रव्य=भयकारक अथवा गतिकारक और आमिष=किंचित् स्पर्धाकारक अथवा सेचन अर्थ का ही प्रतिपादन होता है। कोशकारो के अतिरिक्त आयुर्वेद के ग्रन्थो मे भी ऐसे अनेक शब्दो को वनस्पतियो के अर्थों मे ही प्रयुक्त किया है। ५ वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् और अन्य सहिता-ग्रन्थो मे भी ऐसे मासादि शब्दो के प्रयोग निर्विवादरूप से प्राण्यङ्गजनित मास के लिए कदापि प्रयुक्त नही हैं। ६ तन्त्रग्रन्थो मे भी यही स्थिति है। वहाँ ऐसे शब्दो को वस्तुत आध्यात्मिक अर्थों मे ही सूचित किया है किन्तु वामाचार के नाम पर जिह्वालोलुपवर्ग अपनी लिप्साओ के अनुसार अर्थ करके विकृतमार्ग का अनुसरण करते हैं। प्राचीन महर्षियो की कथन-पद्धति का वास्तविक तथ्य एव प्रक्रिया का पारम्परिक बोध न होने से मनमाना अर्थ लगाकर समाज मे दूषण फैलाने वाले अथवा आक्षेपसिद्धि के लिये दुर्वृत्ति के लोग ऐसा करते हैं।

---

१ यह बात उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्रीजी ने कही थी, जबकि उन्होने इसके लिये स्वय आगमप्रभाकरजी से पूछा था।

"जैन-साहित्य मे प्रयुक्त मास-मत्स्यादि शब्दो के वास्तविक अर्थ" आधुनिक व्यवहार मे प्रचलित अर्थ कथमपि नहीं है, यह निश्चित है । इस तथ्य को "मानव-भोज्य-मीमासा" ग्रन्थ के द्वितीय प्रकरण मे अत्यन्त विस्तार से पन्यास श्री कल्याणविजयजी गणी ने स्पष्ट किया है । प्रसिद्धार्थ और अप्रसिद्धार्थ का विवेक नही रखने से ही अल्पज्ञ वर्ग ऐसी दुर्भावनाएँ फैलाते है । सूर्य-प्रज्ञप्ति मे "नक्षत्र-भोजन" की बात नक्षत्रो के दोष से मुक्त होने के लिये उनकी तुष्टि करने वाले पदार्थो के भोजन से सम्बद्ध है । ज्योतिषशास्त्र मे वारदोष, तिथिदोष, ग्रहदोष, शकुनदोष, दुर्योग आदि की निवृत्ति के लिये ऐसे उपाय बहुधा दिखाये गये हैं, उन्ही को यहाँ भी उदाहरण के रूप मे प्रसङ्गपूर्वक सक्षेप मे दिया होगा । यह धारण अवश्य ही स्वीकरणीय है ।

"मुहूर्त-चिन्तामणि" मे भी ऐसे नक्षत्रो के दोष से छुटकारा पाने के लिये खाद्य-वस्तुओ का कथन हुआ है । उनमे भी "मास" शब्द प्रयुक्त है । किन्तु उसके प्रसिद्ध टीकाकार गोविन्द ज्योतिर्वित् ने अपनी "पीयूषधारा" टीका मे स्पष्ट लिखा है कि—"नक्षत्रदोहद कुल्मापनित्यादिकमिद भक्ष्याभक्ष्य वर्णभेदेन देशभेदेन वा भक्ष्यमेतदभक्ष्य-मिति विचार्य भक्ष्यसम्भवे भक्षयेत्, अभक्ष्यसम्भवे आलोकयेत् पश्येत् स्पृशेद् वेत्यपि ध्येयम् । (पृ० ३९०, निर्णयसागर बम्बई प्रकाशन)। इसका साराश यह है कि—"नक्षत्रदोहद के पालन मे वर्णभेद और देशभेद के आधार पर भक्ष्याभक्ष्य का विचार करके जैसा उचित हो वह करे। यदि भक्ष्य न हो तो उसको देखे अथवा स्पर्श करे"—वही नारद के किसी ग्रन्थ का तथा वसिष्ठ, कश्यप, श्रीपति और भट्ट उत्पल द्वारा भी नक्षत्र-दोहद कथन का सकेत दिया है । अपने कथन के प्रमाण मे टीकाकार ने "गुरु" के वचनो को उद्धृत करते हुए बतलाया है कि—"अत्र यदभक्ष्य दुष्प्राप वा तत् स्मृत्वा, दृष्ट्वा दत्त्वा गन्तव्यमित्याह गुरु ।" इससे स्पष्ट है कि ये दोहद-भक्ष्य जनसाधारण को लक्ष्य मे रखकर सूचित किये थे और उनमे विवेक को प्रधानता दी थी।

आचार्य श्रीमलयगिरि ने इस प्रसग की व्याख्या मे सामान्य अर्थ के रूप मे "कृत्तिका मे प्रारब्ध कार्य निर्विघ्न सिद्ध हो, तदर्थ दधिमिश्रित ओदन का भोजन किया जाता है" इतना कहकर "शेष सूत्रो मे देखें" कह दिया हैं ।

आचार्य श्री घासीलालजी महाराज ने अपनी व्याख्या प्रमेय-बोधिनी मे (दशम प्राभृत के सत्रहवें प्राभृत-प्राभृत मे) "नामैकदेशग्रहणेन नामग्रहण भवतीति नियमात्" कहकर "वृषभमास से धतूरे का सार अथवा चूर्ण ग्राह्य है" ऐसा बतलाया है तथा मृगमास का अर्थ इन्द्रावरुणी वनस्पति, दीपकमास=अजवाइन का चूर्ण, मण्डूकमास =मण्डूकपर्णी का चूर्ण, नखीमास=बाघनखी का चूर्ण, वराहमास=वाराहीकन्द का चूर्ण, जलचरमास=जलचर कुम्भिका का चूर्ण, तिन्तिणीकमास=इमली का चूर्ण—ऐसे अर्थ स्पष्ट किये है ।[1]

आचार्य श्री अमोलकऋषिजी ने भी अपनी व्याख्या मे ऐसे ही अर्थों को व्यक्त किया है, जिसकी तालिका इस प्रकार है—

नक्षत्र-भोजन-तालिका

१	कृतिका	दही	दधि
२	रोहिणी	वसहमस	घृत
३	मिगसिर	मिगमस	कस्तूरी
४	आर्द्रा	णवणीय	नवनीत (मक्खन)

---

१ द्रष्टव्य, टीका ग्रन्थ, पृ १०४८ से १०५२ तक । श्री सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रम् (प्रथम भाग), अ भा श्वे स्था जैन शास्त्रोद्धार समिति, अहमदाबाद से प्रकाशित ।

५	पुनर्वसु	घय	घृत
६	पुष्य	खीर	
७	अश्लेषा	दीवगमस	कवर्चासग अथवा कमल
८	मघा	कसारि	केशर (?) अथवा केसार
९	पूर्वाफाल्गुनी	मेढगमस	एलायची अथवा आलू
१०	उत्तराफाल्गुणी	णक्खिमस	लसूणकद अथवा आलू
११	हस्त	वत्थाणिएग	सिघाडा
१२	चित्रा	मगसूए	मूग की दाल
१३	स्वाति	फल	
१४	विशाखा	आतिसिया	आठली अथवा शाक
१५	अनुराधा	मासा करेण	मिश्र कुरो धान्य
१६	ज्येष्ठा	कोलट्ठिय	कोला-कद्दू
१७	मूल	मूलक	मूली अथवा मोगरे का शाक
१८	पूर्वाषाढा	आमलग	आवला
१९	उत्तराषाढा	विल्ल	विल्व फल अथवा पक्का नीवू
२०	अभिजित	पुप्फ	पुष्प
२१	श्रवण	खीर	
२२	धनिष्ठा	जूस	करेला अथवा सक्कर कोला
२३	शतभिषा	तुम्वरात	तूवा
२४	पूर्वाभाद्रपदा	कारियए	करेला
२५	उत्तरभाद्रपदा	वराहमस	कपूर
२६	रेवती	जलयरमस	जलचर फूलन अथवा पानी
२७	अश्विनी	तित्तरमस	सीताफल
२८	भरणी	तिल तदुल	तिल्ली का तेल अथवा चावल

इस तरह अट्ठाईस नक्षत्रो के भोजन का विषय जैसा अन्य स्थान मे देखने मे आया है वैसा ही लिखा है। टीकाकार श्री मलयगिरि आचार्य ने इसकी टीका नही की है। तत्त्व केवलिगम्य।

—आचार्य अमोलकऋषि जी म.

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा सम्पादित—सूर्यप्रज्ञप्ति पा १० अन्तरपाहुड-१७ पृ २२०-२२३

११-उपसंहार एव कर्तव्य-बोध

इन सब विवेचनो के द्वारा हम एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि "विश्व को सर्वांश मे सर्वज्ञ ही जानते हैं। बुद्धिजीवी जगत् इसकी समग्रता को पहचानने मे सदैव अक्षम ही रहा है। दुर्विज्ञेय आधिभौतिक तत्त्वो का ज्ञान प्राप्त करने के लिये आधिदैविक और आध्यात्मिक भूमिकारूढ हुए विना जीव-जगत् की जिज्ञासा पूर्ण नही हो सकती। अलौकिक तत्त्वोपलब्धि अथवा सत्य का साक्षात्कार आगमो के द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि विश्व-विद्याओं के निधान आगमो का प्रत्येक अक्षर सभी के लिये वहुमान्य है। सर्वज्ञ की वाणी होने से उसका प्रत्येक अश सत्य है, श्रद्धेय है और उपास्य है और साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि "आगम-साहित्य के वास्तविक तत्त्वो को समझने के उनके लिए मर्मज्ञ मनीषियो से पारम्परिक सम्प्रदायार्थ का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, तभी हम कुछ जान सकते हैं। सूर्य-प्रज्ञप्ति भी एक ऐसा ही आगम ग्रन्थ है, जिसके रहस्यार्थ का परिज्ञान आधुनिक परिभाषाओ

की अपेक्षा प्राचीन गाणितिक एव खगोलीय परिभाषाओं को समझे विना तुप-कुट्टन के समान ही निष्फल हो सकता है।

अन्त मे मैं एक वात और कहना चाहता हूँ कि भारतीय सस्कृति के इन अपूर्व ग्रन्थ-रत्नो के चिरन्तन सत्य के परिचायक तत्त्वों की खोज मे विद्वान् गवेषको एव चिन्तको को जैन, वैदिक और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थो का सयुक्त रूप से परिशीलन करना चाहिये, क्योकि ये तीनो धाराएँ प्रारम्भ से ही एक ही लक्ष्य से वही हैं किन्तु वीच के साम्पातिक काल मे कुछ तो स्वय के दुराग्रहो से और कुछ पराये लोगो के वहकावे के कारण विशृ खलित हो गई हैं। जव तक परस्पर मिलकर एक-दूसरे की न्यूनताओं को पूर्ण नही किया जाएगा तव तक पूर्णता की प्राप्ति आकाश-पुष्प ही वनी रहहेगी। अत —

यूय यूय वयमिह वय सर्वदैव ब्रुवद्भि-
र्हन्ता हन्ताग्रह-निपतितैश्च शित नैव कि किम्।
सञ्चिन्त्यात पुनरपि निज स्वत्वमुद्धर्तुमार्या,
यूय ये ते वयमिति मिथ स्वात्मना सवदन्तु॥

यही निवेदन है, कामना, है और प्रार्थना है॥ॐ॥



विषयानुक्रम

प्रथम प्राभृत

द्वितीय प्राभृत

तृतीय प्राभृत

चतुर्थ प्राभृत

पंचम प्राभृत

षष्ठ प्राभृत

सप्तम प्राभृत

अष्टम प्राभृत

नवम प्राभृत

दशम प्राभृत

ग्यारहवां प्राभृत

बारहवां प्राभृत

तेरहवां प्राभृत

चौदहवां प्राभृत

पन्द्रहवां प्राभृत

सोलहवां प्राभृत

सत्तरहवां प्राभृत

अठारहवां प्राभृत

उन्नीसवां प्राभृत

बीसवां प्राभृत

सुयथेरविरइयं उवंगं

सूरियपण्णत्तिसुत्तं
चंदपण्णत्तिसुत्तं

श्रुतस्थविरविरचित उपांग

सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र

प्रथम प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

वीरत्थुई

जयइ नव-नलिण-कुवलय, वियसिय-सयवत्त-पत्तल-दलच्छो ॥
वीरो गइद-मयगल, सललिय-गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥

पंच-पय-वंदणं जोइसगणराय-पण्णत्ति-परूवण-पइण्णा य

नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवदिए गयकिलेसे ॥
अरिहे सिद्धायरिय-उवज्झाए सव्वसाहू य ॥ २ ॥

फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छं पुव्व-सुय-सार-णिस्सदं ॥
सुहुम गणिणोवइट्ठं, जोइसगणराय-पण्णत्ति ॥ ३ ॥

नामेण "इदभूइ" त्ति, गोयमो वदिऊण तिविहेणं ॥
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसरायस्स पण्णत्ति ॥ ४ ॥

१-२ तेणं कालेणं तेणं समएण "मिहिला" णामं णयरी होत्था, वण्णओ।

तीसे ण मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ ण "माणिभद्दे" णामं चेइए होत्था, वण्णओ।

तीसे ण मिहिलाए "जियसत्तू" राया परिवसइ, वण्णओ।

तस्स ण जियसत्तुस्स रण्णो "धारिणी" णाम देवी होत्था, वण्णओ।

तेण कालेणं, तेण समएणं तमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, वण्णओ।

[क] परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ।
[ख] परिसा पडिगया।
[ग] राया जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।

तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी "इंदभूई" णामं अणगारे जाव पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

बीस पाहुडाणं विसयपरूवण

३. गाहाओ—१. कइ मंडलाइ वच्चइ, २. तिरिच्छा किं च गच्छइ ।।
३. ओभासइ केवइय, ४. सेयाइ किं ते संठिई ।। १ ।।

५. कहिं पडिहया लेसा, ६. कहिं ते ओयसंठिई ।।
७. के सूरियं वरयंति, ८. कहं ते उदयसंठिई ।। २ ।।

९. कइ कट्ठा पोरिसिच्छाया, १०. जोगे किं ते व आहिए ।।
११. किं ते संवच्छरेणाई, १२. कइ संवच्छाराइ य ।। ३ ।।

१३. कहं चंदमसो वुड्ढी, १४ कया ते दोसिणा बहू ।।
१५ के सिग्घगई वुत्ते, १६. कहं दोसिण-लक्खणं ।। ४ ।।

१७. चयणोववाय, १८. उच्चत्ते, १९. सूरिया कइ आहिया ।।
२०. अणुभावे के व संवुत्ते, एवमेयाइं वीसई ।। ५ ।।

पढमपाहुडगय अट्ठपाहुडपाहुडसुत्ताणं विसयपरूवणं

४. गाहाओ—१. वड्ढो वड्ढी मुहुत्ताण, २. मद्धमंडल-संठिई ।।
३. के ते चिण्णं परियरइ, अंतरं किं चरंति य ।। १ ।।

५. ओगाहइ केवइयं, ६. केवइयं च विकंपइ ।।
७. मंडलाण य संठाणे, ८. विक्खंभो-अट्ठ पाहुडा ।। २ ।।

पढमपाहुडस्स पडिवत्तिसंखा

५. गाहा — ४. छ, ५. प्पंच य, ६. सत्तेव य, ७, अट्ठ, ८. तिन्नि य हवंति पडिवत्ती ।।
पढमस्स पाहुडस्स, हवंति एयाउ पडिवत्ती ।। १ ।।

बितियपाहुडस्स विसय-परूवणं

६. गाहाओ—१. पडिवत्ताओ उदए, तह अत्थमणेसु य ।।
२. भेयग्घाए कण्णकला, ३. मुहुत्ताण गती ति य ।। १ ।।

निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगई इय ।।
चुलसीइ सयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ।। २ ।।

पडिवत्तिसंखा

गाहा—१. उदयंमि अट्ठ भणिया, २. भेयग्घाए दुवे य पडिवत्ती ।।
३. चत्तारि मुहुत्तगईए, हुंति तइयंमि पडिवत्ती ।। ३ ।।

दसमे पाहुडे बावीसं पाहुड-पाहुडाणं विसयपरूवणं

७. गाहाओ—१. आवलिय, २. मुहुत्तग्गो, ३. एव भागा य, ४. जोगस्स ॥
५. कुलाइं, ६. पुण्णमासी य, ७. सन्निवाए य ८. संठिई ॥ १ ॥
९. तारग्ग, च, १० नेता य, ११. चंदमग्गत्ति, यावरे ॥
१२. देवता य अज्झयणे, १३. मुहुत्ताणं नामाइ य ॥ २ ॥
१४. दिवसा-राइवुत्ता य, १५ तिहि, १६ गोत्ता, १७. भोयणाणि य ॥
१८. आइच्चचार, १९. मासा य, २० पंच सवच्छराइ य ॥ ३ ॥
२१. जोइस्स य, दाराइं, २२. नक्खत्ता विजये वि य ॥
दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुड-पाहुडा ॥ ४ ॥

"मासस्स" मुहुत्ताणं वड्ढोऽवड्ढी

८. ता कहं ते वड्ढोऽवड्ढी मुहुत्ताणं आहिए त्ति, वदेज्जा ?
ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीस च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वदेज्जा ।[1]

---

१ (क) मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र यहाँ कैसे दिया गया है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है ।

सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ मे उत्थानिका के बाद बीस प्राभृतो के प्राथमिक विषयो की प्ररूपक पाच गाथाएँ हैं । उनमें से प्रथम गाथा मे प्रथम प्राभृत के प्रथम प्राभृतप्राभृत की प्राथमिक विषयसूचक गाथा का "कइ मडलाइ वच्चइ" यह प्रथम पद है । इसके अनुसार "एक वर्ष मे सूर्य कितने मडलो मे एक वार और कितने मण्डलो मे दो वार गति करता है ।" यह विषय है ।

वृत्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—"प्रथमे प्राभृते—सूर्यो वर्षमध्ये कति मण्डलान्येकवार, कति वा मण्डलानि द्वि कृत्वा व्रजतीत्येतन्निरूपणीयम् । किमुक्त भवति ? एव गौतमेन प्रश्ने कृते तदनन्तर सर्व तद्विषय निर्वचन प्रथमे प्राभृते वक्तव्यमिति ।" किन्तु प्रथम प्राभृत के आठ प्राभृतप्राभृतो की विषयप्ररूपक दो गाथाओ मे से प्रथम गाथा के प्रथम पद मे "वड्ढोऽवड्ढी मुहुत्ताण" यह पद है । इसके अनुसार प्रथम प्राभृत के प्रथम प्राभृतप्राभृत मे प्रथम सूत्र मे वृत्तिकार के अनुसार चार प्रकार के मासो के मुहूर्तो की हानि-वृद्धि का प्ररूपण है ।

वृत्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते है—"प्रथमस्य प्राभृतस्य सत्के प्रथमे प्राभृतप्राभृते मुहूर्ताना दिवस-रात्रिगताना वृद्धयपवृद्धी वक्तव्ये ।"

विषयप्ररूपक सग्रहणी गाथाओ की रचना के पूर्व एव वृत्तिकार के पूर्व यह व्युत्क्रम हो गया है ।

वृत्तिकार स्वय उक्त व्युत्क्रम की उपेक्षा कर गए तो अन्य सामान्य श्रुतधरो का तो कहना ही क्या ?

यह सूत्र क्रमानुसार कहाँ होना चाहिए, इस सम्बन्ध मे आगे यथास्थान लिखने का सकल्प है ।

(ख) मुहूर्तो की हानि-वृद्धि का यह सूत्र भी खण्डित प्रतीत होता है, क्योकि प्रस्तुत सूत्र के प्रश्नसूत्र मे मुहूर्तो की हानि-वृद्धि का प्रश्न है किन्तु उत्तरसूत्र मे केवल नक्षत्रमासो के मुहूर्तो का ही कथन है ।

सव्वसूरमंडलमग्गे सूरस्स गमणागमण-राइंदियप्पमाणं

९ ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
एस णं अद्धा केवइयं राइंदियग्गे णं आहिते त्ति वदेज्जा ?
ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिते त्ति वदेज्जा ।

सूरमंडलेसु सूरस्स सइं दुक्खुत्तो वा चारं

१०. ता एताए अद्धाए सूरिए कति मंडलाइं चरइ ?
ता चुलसीयं मंडलसयं चरइ ।
बासीइ मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तं जहा—णिक्खममाणे चेव, पवेसमाणे चेव ।
दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तं जहा—सव्वब्भंतरं चेव मंडलं, सव्वबाहिरं चेव मंडलं ।

आइच्चसंवच्छरे अहोरत्तप्पमाणं

११. जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइं अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ,
सइ दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,
पढमे छम्मासे-अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,
नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे,
अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।
दोच्चे छम्मासे-अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,
नत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई,
अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।
पढमे छम्मासे वा दोच्चे छम्मासे वा णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ ।

तत्थ णं कं हेउं वदेज्जा ?

ता अयण्णं जम्बुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-सयसहस्समायाम-विक्खंभे णं, तिन्नि जोयण-सयसहस्साइं दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवे ण पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भतर-मण्डलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तसि अब्भित्तर तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्च मंडलं उवसकमित्ता चार चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं आहिया,

एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराणंतरं मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे दो दो एगट्ठिभाग मुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरमडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भतराओ मडलाओ सव्वबाहिर मडल उवसंकमित्ता चार चरइ तया णं सव्वब्भतरं मंडलं पणिहाय एगे णं तेसीए णं राइंदियसए ण तिण्णि छावट्ठे एगसट्ठि भागमुहुत्त-सए दिवस-खेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चार चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतर मडलं उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं आहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिरं तच्च मंडलं उवसकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मडल उवसंकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मंडलाओ तयाणतर मडल संकममाणे संकममाणे दो दो एगसट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चार चरइ, तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगे णं तेसीए णं राइंदियसए णं तिन्नि छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

एस णं आदिच्चे सवच्छरे एस णं आदिच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे।

उपसंहारसुत्तं

एवं खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइ अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

पढमे छम्मासे—अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे,

अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई।

दोच्चे वा छम्मासे—अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई।

अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे—णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, णत्थि राइदियाण वड्ढोवड्ढीए, मुहुत्ताण वा चयोवचएण णण्णत्थ वा अणुवायगईए,

गाहाओ भाणियव्वाओ।[1]

□□

---

१ अत्र अनन्तरोक्तार्थसग्राहिका अस्या एव सूर्यप्रज्ञप्तेर्भद्रवाहुस्वामिना या निर्युक्ति कृता तत्प्रतिवद्धा अन्या वा काश्चन ग्रन्थान्तरसुप्रसिद्धा गाथा वर्तन्ते ता "भणितव्या" पठनीया, ताश्च सम्प्रति क्वापि पुस्तके न दृश्यन्तइति व्यवच्छिन्ना सम्भाव्यन्ते ततो न कथयितु "व्याख्यातु वा शक्यन्ते।" —सूर्य टीका

प्रथम प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दाहिणा अद्धमंडलसंठिई

१२. ता कहं ते अद्धमडलसंठिई आहितातिं वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे अद्धमडलसंठिई पण्णत्ता, तं जहा—

१. दाहिणा चेव अद्धमडलसंठिई, २. उत्तरा चेव अद्धमडलसंठिई ।

ता कहं ते दाहिणा अद्धमडलसंठिई आहितातिं वदेज्जा ?

ता अयण्ण जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम—विक्खभेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस य अगुलाइं अद्धगुल च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतर दाहिणं अद्धमडलसंठिंति उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निक्खममाणे सूरिए णव संवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितराणतर उत्तर अद्धमडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भितराणतर उत्तर अद्धमंडलसंठिइं उवसकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्तेहिं दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितर तच्च दाहिण अद्धमडलसंठिंति उवसकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भितर तच्चं दाहिण अद्धमडलसंठिंति उवसकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

एवं खलु एएणं उवाएण णिक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतरमडलस्स तसि

तंसि देसंसि त त अद्धमडलसठिति सकममाणे सकममाणे दाहिणाए अतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वबाहिरं उत्तर अद्धमडलसंठिति उवसंकमित्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिराणतर दाहिणं अद्धमडलसंठिति उवसकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणअद्धमडलसठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिरंतर तच्चं उत्तरं अद्धमडलसठिति उवसकमित्ता चारं चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिरं तच्च उत्तरं अद्धमडलसठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एव खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरंसि तंसि तंसि देसंसि त तं अद्धमडलसठिइ संकममाणे संकममाणे उत्तराए अतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चार चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिण अद्धमडलसठिति उवसंकमित्ता चार चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

सूरस्स उत्तरा अद्धमंडलसंठिई

१३ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-सयसहस्समायाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय, तेरस य अगुलाइ, अद्धगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भतर उत्तर अद्धमंडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भंतराणंतर दाहिणं अद्धमडलसठिइं उवसकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए अब्भंतराणतर दाहिण अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चार चरइ, तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भितराणतर तच्च उत्तर अद्धमडलसंठिइ उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया णं सूरिए अब्भितराणतर तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसठिइं उवसकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडलं संकममाणे सकममाणे तसि तसि देससि त तं अद्धमंडलसठिइ संकममाणे सकममाणे उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्ववाहिर दाहिण अद्धमडलसठिइं उवसकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसठिइं उवसकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए तस्साइपएसाए वाहिराणतरं उत्तरं अद्धमंडलसठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए वाहिराणतरं उत्तरं अद्धमंडलसठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसठिइं उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिरं तच्च दाहिण अद्धमडलसठिइं उवसकमित्ता चारं जरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे संकममाणे दाहिणाए अतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वब्भंतरं उत्तर अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे। 

प्रथम प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरियाणं संचरण-खेत्तं

१४ ता कि ते चिण्णं पडिचरति आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, त जहा—भारहे चेव सूरिए । एरवए चेव सूरिए ।

ता एए णं दुवे सूरिया पत्तेय पत्तेय—
तीसाए तीसाए मुहुत्तेहिं एगमेग अद्धमडलं चरइ,
सट्ठीए सट्ठीए मुहुत्तेहिं एगमेगं मडलं संघातयति ।

ता निक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरंति,

पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरति तं सयमेगं चोयाल,

प.—तत्थ ण को हेतु, त्ति वदेज्जा ?

उ.—ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं, अद्धगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता-दाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउतिय सूरियम-याइं जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

उत्तर-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भागमडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

तत्थ णं अयं भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

दाहिण-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भागमडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्थ णं अय एरवए चेव सूरिए जबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएण सएण छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमडलंसि बाणउइय सूरिय-मयाइ जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

दाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

तत्थ णं अय एरवए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणायययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिण-पच्चत्थिमिल्लसि चउब्भाग-मडलसि बाणउइय सूरियमयाइं जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

उत्तर-पुरत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि एंक्काणउइय सूरियमयाइं जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

ता निक्खममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति ।

पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरति सयमेगं चोयालं । □□

प्रथम प्राभृत

[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

सूरियाणं अण्णमण्णस्स अंतर-चारं

१५ ता केवइयं एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चार चरति, आहितेति वएज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१ तत्थ एगे एवमाहसु—

ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीस जोयणसयं अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ।

२ एगे पुण एवमाहसु—

ता एगं जोयणसहस्सं एग च चोत्तीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

३ एगे पुण एवमाहसु—

ता एगं जोयणसहस्सं एग च पणतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्य अतरं कट्टु सूरिया चारं चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

४-१. एगे पुण एवमाहंसु—

ता एग दीवं, एग समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

५-२ एगे पुण एवमाहसु—

ता दो दीवे, दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतर कट्टु सूरिया चारं चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

६-३ एगे पुण एवमाहंसु—

ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे, अण्णमण्णस्स अंतर कट्टु सूरिया चारं चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एव वयामो—

ता पच पच जोयणाइं पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतरं अभिवड्ढेमाणा वा, निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा,

तत्थ णं को हेउ ? आहितेति वदेज्जा,

ता अय णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसयं तेरसय-अगुलाइं अद्धगुल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते,

१ ता जया ण एते दुवे सूरिया सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चार चरंति,

तया णं णवणउइ जोयणसहस्साइ, छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२ ते निक्खममाणा सूरिया णव संवच्छर अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरंति,

तया णं णवणउइं जोयणसहस्साइ छच्च पणयाले जोयणसए पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरंति आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३ ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरंति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया अब्भितर तच्चं मडल उवसकमित्ता चार चरंति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च इक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण निक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणा सकममाणा पच पच जोयणाइं पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेमाणा अभिवड्ढेमाणा, सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चर चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरंति,

तया णं एगं जोयणसयसहस्स छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

२. ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडल उवसंकमित्ता चारं चरति,

तया णं एग जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छत्तीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

३ ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्च मडलं उवसंकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्च मडलं उवसकमित्ता चारं चरति,

ता णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्ण च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अतरं कट्टु चारं चरंति,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएण उवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणतराओ मंडलाओ तयाणतर मडलं सकममाणा सकममाणा पंच पंच जोयणाइ पणतीसे च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अंतरं निवड्ढेमाणा निवड्ढेमाणा सव्वब्भंतर मडलं उवसकमित्ता चारं चरति,

ता जया ण दुवे सूरिया सव्वब्भतरं मडलं उवसकमित्ता चार चरति,

तया णं णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते, उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस ण आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे,

□□

प्रथम प्राभृत

[पंचम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दीव-समुद्द-ओगाहणाणतरं चारं

१६. १७ ता केवइयं ते दीव वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ पच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एग जोयण-सहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय, दीव वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चार, चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता एग जोयण-सहस्स, एग च चउत्तीस जोयणसयं, दीव वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता एग जोयण-सहस्स, एग च पणतीसं जोयणसय दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४. ता अवड्ढं दीवं वा, समुद्दं वा, ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ एगे एवमाहसु,

५ एगे पुण एवमाहसु—

ता नो किंचि एगं जोयणसहस्स एगं च तेत्तीस जोयणसय दीवं वा, समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

१ ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं, दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

ते एवमाहंसु—

क—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मडल उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं जंबुद्दीवं दीवं एग जोयणसहस्सं, एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं लवणसमुद्द एगं जोयणसहस्सं, एग च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

२. एव चउत्तीसेऽवि जोयणसय,

३. पणतीसेऽवि एवं चेव भाणियव्व,

४. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

ता अवड्ढं दीवं वा, समुद्दं वा, ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं अवड्ढं जवुद्दीव दीव ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई गवइ,

एवं सव्वबाहिरे मंडलेऽवि, णवरं—"अवड्ढं लवणसमुद्द" तया णं-"राइदियं" तहेव,[1]

५. तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता नो किंचि दीव वा समुद्दं वा ओगाहित्ता चारं चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं नो किंचि दीवं वा, समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्वबाहिरे मंडले वि, णवर—'नो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, राइंदियं तहेव[2],

---

१ ऊपर अंकित सूत्र के समान है।

२ ऊपर अंकित सूत्र के समान है।

वयं पुण एवं वयामो—

क—ता जया णं सूरिए सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं जंबुद्दीवं दीवं असीयं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणियव्वाओ। □□

प्रथम प्राभृत

[छठा प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स एगमेगे राइंदिए मंडलाओ मंडलसंकमणखेत्तचारं

१८ ता केवइय ते एगमेगे णं राइदिए णं विकंपइत्ता विकपइत्ता सूरिए : चारं चरइ, आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१. ता दो जोयणाइ अद्धदुचत्तालीसे तेसीइं सयभागे जोयणस्स एगमेगेणं, राइदिएणं विकपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं एगमेगेण राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३. ता तिभागूणाइ तिन्नि जोयणाइं एगमेगेणं राइदिएणं विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४. ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीतालीस च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकंपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता अद्धुट्ठाइ जोयणाइ एगमेगेण राइदिएणं विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

६. ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइदिएणं विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता चत्तारि जोयणाइ अद्धबावण्णं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइदिएण विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ,

तत्थ णं को हेऊ ? इति वदेज्जा।

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायामविक्खंभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

१. ता जया ण सूरिए सव्वब्भतरं मडल उवसकमित्ता चारं चरइ—

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२. से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि [अहोरत्तंसि अब्भितराणंतर मंडलं उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चार चरइ,

तया णं दो जोयणाइं अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेण राइदिएणं विकंपइत्ता विकपइत्ता चारं चरइ,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,
दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

३. से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तसि अब्भितरं तच्च मंडल उवसकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चारं चरइ,

तया णं पच जोयणाइ पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइदिएहिं विकंपइत्ता विकपइत्ता चारं चरइ,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,
दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएणं उवाएण निक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं सकममाणे संकममाणे दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइदिएण विकपमाणे विकंपमाणे सव्ववाहिरं मडलं उवसकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भतराओ मडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया ण सव्वब्भतरं मडल पणिहाय एगेण तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदसुत्तरजोयणसए विकंपइत्ता विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१. से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मासं अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणंतर मडलं उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चारं चरइ,

तया ण दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेण राइदिएण विकपइत्ता चार चरइ,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए,

२. से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिरं तच्च मडल उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्च मंडल उवसंकमित्ता चार चरइ,

तया णं पचजोयणाइं पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहि राइदिएहि विकपइत्ता विकपइत्ता चारं चरइ,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाऽणतराओ मडलाओ तयाणंतर मडल सकममाणे संकममाणे दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेग मडल एगेमेगेणं राइदिएण विकपमाणे विकपमाणे सव्वब्भतरं मंडलं उवसकमित्ता चारं चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया णं सव्वबाहिर मडलं पणिहाय एगे णं तेसीए ण राइदियसएण पंचदसुत्तरे जोयणसए विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे। □□

प्रथम प्राभृत

[सप्तम प्राभृतप्राभृत]

चंद-सूर-मंडल-संठिई

१९. ता कह ते मडल-संठिई आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता सव्वावि ण मंडलावता समचउरंस-सठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता सव्वावि णं मंडलावता विसमचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता सव्वा वि ण मंडलावता समचउक्कोणसठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता सव्वा वि णं मडलावता विसमचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहसु—

५. ता सव्वा वि ण मडलावता समचक्कवालसठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

६. ता सव्वा वि ण मडलावता विसमचक्कवाल-सठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहसु—

७. ता सव्वा वि ण मडलावता चक्कद्धचक्कवालसठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

८. ता सव्वा वि ण मडलावता छत्तागारसठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु—

तत्थ जे ते एवमाहसु—

ता सव्वा वि ण मडलावता छत्तागारसठिया पण्णत्ता,

एएण णएण णायव्व, णो चेव ण इयरेहिं । पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ।

□□

प्रथम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स सव्वमंडलाण बाहल्ल आयाम-विक्खभ-परिक्खेव च

२०. ता सव्वा वि ण मडलवया—
केवइय बाहल्लेणं ?
केवइय आयाम-विक्खभेण ?
केवइय परिक्खेवेण ? आहितेति वदेज्जा ।

तत्थ खलु इमा तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—
१—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण,
एग जोयणसहस्स एग तेत्तीस जोयणसय आयाम-विक्खभेण,
तिण्णि जोयणसहस्साइ तिण्णि य णवणउई जोयणसए परिक्खेवेण पण्णत्ता एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—
२—ता सव्वा वि णं मडलवया जोयण बाहल्लेण
एग जोयणसहस्स एग च चउत्तीस जोयणसय आयाम-विक्खभेण,
तिण्णि जोयणसहस्साइ चत्तारि विउत्तराइ जोयणसयाइ परिक्खेवेण पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—
३—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण
एग जोयणसहस्स एग च पणतीस जोयणसय आयाम-विक्खभेण,
तिण्णि जोयणसहस्साइ चत्तारि पचुत्तराइ जोयणसयाइ परिक्खेवेण पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—
ता सव्वा वि ण मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,
अणियया आयाम-विक्खभ-परिक्खेवेण, आहितेति वदेज्जा,
तत्थ ण को हेऊ ? त्ति वदेज्जा ।

ता अय ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-

सहस्समायाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीस च धणुसय, तेरस य अंगुलाइ, अद्धगुल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

१. ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चारं चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स वाहल्लेण,

णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसयाइ आयाम-विक्खभेण,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ पण्णरस जोयणसहस्साइं एगूणणउई जोयणाइ किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण,[1]

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

२. से निक्खम्ममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अब्भितराणतर मंडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भितराणतर मडलं उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स वाहल्ले ण,

णवणउई जोयणसहस्साइ छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ पण्णरस जोयणसहस्साइ एग चउत्तर जोयणसय किंचि विसेसूण परिक्खेवेण,

---

१ सूर्यप्रज्ञप्ति तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सूत्रो मे सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ कहा गया है किन्तु समवायाग सूत्र मे केवल विष्कम्भ ही कहा गया है। इमका समाधान यह है कि वृत्ताकार का आयाम-विष्कम्भ सदा समान होता है, सूर्यमण्डल वृत्ताकार है, अत केवल विष्कम्भ कहने मे आयाम और विष्कम्भ दोनो समझ लेने चाहिए।

सूर्यप्रज्ञप्ति मे सूर्यमण्डल का वाहल्य एक योजन के इकसठ भागो मे से अडतालीस भाग जितना कहा गया है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति मे सूर्यमण्डल का वाहल्य एक योजन के इकसठ भागो मे से चौबीस भाग जितना कहा गया है।

इन दो प्रकार के वाहल्य प्रमाणो मे से कौन सा वास्तविक है, यह शोध का विषय है।

सूर्यप्रज्ञप्ति मे सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि वाह्याभ्यन्तर मण्डलो की अपेक्षा अनियत हैं, ऐसा लिखा है किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति मे सूर्यमण्डल का आयाम, विष्कम्भ और परिधि अनियत नही लिखी है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति मे सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि जो कही है वह आभ्यन्तर या वाह्य-मण्डलो की है? क्योकि सूर्यप्रज्ञप्ति मे कथित वाह्याभ्यन्तर मण्डलो के आयाम-विष्कम्भप्रमाणो मे जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्तिकथित आयाम-विष्कम्भपरिधि का प्रमाण मिलता नही है।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३. से निक्खम्ममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,

णवणउइ जोयणसहस्साइं छच्च एकावन्ने जोयणसए णव य एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खभेण,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ पण्णरस जोयणसहस्साइ एग च पणवीस जोयणसय परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

४. एव खलु एएण उवाएण निक्खम्ममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मंडल सकममाणे सकममाणे पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले विक्खंभवुड्ढि अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे अट्ठारस अट्ठारस जोयणाइ परिरयवुड्ढि अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिर मंडलं उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,

एग च जोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठे जोयणसए आयामविक्खभेण,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ अट्ठारस सहस्साइ तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१. से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि बाहिराणंतर मडल उवसंकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया णं सा मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,

एग जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पणे जोयणसए छव्वीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,
दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

२. से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,
तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य एगूणासीए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,
तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,
दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं निवुड्ढेमाणे निवुड्ढेमाणे अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं निवुड्ढेमाणे निवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं,
तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरससहस्साइं एगूणणउइं च जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,
तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,
एस णं आइच्चे संवच्छरे एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

सव्वसूरमंडलाणं बाहल्लं अंतरं अद्धा पमाणं च

ता सव्वा वि णं मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
सव्वा वि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं,
एस णं अद्धा तेसीयं सयपडुप्पण्णे पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वएज्जा,

ता अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरं मंडलवय बाहिराओ वा मंडलवयाओ अब्भितरं मंडलवयं, एस णं अद्धा केवइय आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वएज्जा,

अब्भितराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलवया—एस ण अद्धा केवइय आहिए त्ति वएज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स अहिया,

ता अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरमंडलवया बाहिराओ मंडलवयाओ अब्भितर-मंडलवया—एस णं अद्धा केवइय आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचनवुत्तरे जोयणसए तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिए त्ति वदेज्जा,

अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरा मंडलवया, बाहिराए मंडलवयाए अब्भितर-मंडलवया—एस ण अद्धा केवइया आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वदेज्जा । □□

द्वितीय प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

सूराण तेरिच्छगई

२१ ता कहं ते तेरिच्छगई आहिए ? त्ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ मरीची आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमसि लोयतंसि सायंमि आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगाससि उट्ठेइ, से ण इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगाससि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता पुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए आगाससि उट्ठेइ, से णं इम लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमसि लोयतसि साय सूरिए आगास अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविओ उट्ठेइ, से ण इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि साय सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उट्ठेइ, से ण इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि साय सूरिए पुढविकायं अणुपविसइ अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उट्ठेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोय तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमसि लोयंतसि सायं सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, से ण इमं लोयं तिरियं करेइ करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतसि सायं सूरिए आउकायंसि पविसइ, पविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेई, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता उत्तरड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरड्ढलोयं तिरियं करेइ, करित्ता दाहिणड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिण-उत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ, करित्ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वयामो—

ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणायय-उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिण-पुरत्थिमंसि उत्तर-पच्चत्थिमंसि य चउब्भाग-मंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता-एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासाओ उत्तिट्ठति,

ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीव-भागाइं तिरियं करेंति, करेंतित्ता पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबुद्दीव-भागाइं तामेव राओ,

ते णं इमाइं पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेंतित्ता दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव राओ,

ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेंतित्ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणायय-उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिण-पुरत्थिमंसि उत्तर-पच्चत्थिमंसि य चउब्भाग-मंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमर-मणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता-एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठति। □□

द्वितीय प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मंडलाओ मंडलांतर-संकमणं

२२ ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए चारं चरइ आहिए ? ति वएज्जा,

तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकामइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

१. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए भेयघाएणं[1] संकामइ, तेसि णं अयं दोसे,

"ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे भेयघाएणं संकमइ-एवइयं च णं अद्धं पुरओ न गच्छइ, पुरओ पुरओ अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेइ" तेसि णं अयं दोसे।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

२. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे,

ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं[2] निव्वेढेइ एवइयं च णं अद्धं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मंडलकालं न परिहवेइ, तेसि णं अयं विसेसे,

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ एएणं णएणं णेयव्वं, णो चेव णं इयरेणं,

---

१ मण्डलादपरमण्डलं सङ्क्रामन् सङ्क्रमितुमिच्छन् सूर्यो भेदघातेन सङ्क्रामति, भेदो मण्डलस्य मण्डलस्यापान्तरालं तत्र घातो—गमनं, एतच्च प्रागेवोक्तं, तेन सङ्क्रामति,
किमुक्तं भवति ? विवक्षिते मण्डले सूर्येणापूरिते सति तदन्तरमपान्तरालगमनेन द्वितीयं मण्डलं सङ्क्रामति सङ्क्रम्य च तस्मिन् मण्डले चारं चरति।

२ मण्डलान्मण्डलं सङ्क्रामन् सङ्क्रमितुमिच्छन् सूर्यस्तदधिकृतं मण्डलं प्रथमक्षणादूर्ध्वमारभ्य कर्णकलं निर्वेष्टयति मुञ्चति,
इयमत्र भावना-'भरत ऐरावतो वा सूर्यः स्व-स्वस्थाने उद्गतः
सन् अपरमण्डलगतं कर्णं प्रथमकोटिभागरूपं लक्ष्यीकृत्य शनैः शनैरधिकृतं
मण्डलं तया कयाचनापि कलया मुञ्चन् चारं चरति' येन तस्मिन्नहोरात्रेऽतिक्रान्ते सति अपरानन्तरमण्डलस्यारम्भे वर्तते इति।
कर्णकलमिति च क्रियाविशेषणं द्रष्टव्यं, तच्चैव भावनीय—कर्ण-अपरमण्डलगतप्रथमकोटिभागरूपं लक्ष्यीकृत्याधिकृतमण्डलं प्रथमक्षणादूर्ध्वं क्षणे क्षणे कलयाऽतिक्रान्तं यथा भवति तथा निर्वेष्टयतीति। —सूर्य टीका

द्वितीय प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मुहुत्त-गइ-पमाणं—

२३. ता केवइय ते खेत्त सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेणं गच्छइ ? आहिए त्ति वएज्जा।

तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा :—

तत्थेगे एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहसु—

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण, मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया णं सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

तसि च ण दिवससि एगं जोयणसयसहस्स अट्ठ य जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिरं मंडल उवसंकमित्ता चारं चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

तसि च दिवससि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया ण छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतरं मंडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

तसि च ण दिवससि नउइ जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च ण दिवससि सट्ठिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया ण पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च ण दिवससि अडयालीस जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया ण चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्थ ण जे ते एवमाहंसु—

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता सूरिए ण उग्गमणमुहुत्तसि य, अत्थमणमुहुत्तसि य सिग्घगई भवइ, तया ण छ छ जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

मज्झिम तावक्खेत्ते समासाएमाणे समासाएमाणे सूरिए मज्झिमगई भवइ, तया ण पच पच जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

मज्झिम तावक्खेत्तं सपत्ते सूरिए मदगई भवइ, तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेणं गच्छइ ।

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतरं मंडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च दिवससि एक्काणउइ जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडलं उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च ण दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते तया णं छ वि, पंच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एव वयामो—

ता साइरेगाइं पच पच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेणं गच्छइ।

प—तत्थ को हेऊ? त्ति वएज्जा।

उ—ता अयण्ण जवुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खभेणं, तिन्नि जोयणसयसहस्साइ दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोसे, अट्ठावीसं च घणुसय, तेरस य अंगुलाइ, अद्धगुल च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते।

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण पच पच जोयण-सहस्साइ दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसयाइं एगूणतीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

से निक्खममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण पंच पंच जोयणसहस्साइ दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए सीयालीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता एगूणवीसाए चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिया।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चारं चरइ।

ता जया ण सूरिए अब्भितर तच्च मंडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण पच पच जोयणसहस्साइं दोण्णि य वावण्णे जोयणसए पंच य सट्ठिभाए जोयणस्स एगेमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीओलीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

एव खलु एएण उवाएण निक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे अट्ठारस अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले मुहुत्तगइ अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे चुलसीइ चुलसीइ सीयाइ जोयणाइं पुरिसच्छाय निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडलं उवसंकमित्ता चार चरइ तया ण पंच पंच जोयण-सहस्साइ तिन्नि य पचुत्तरे जोयणसए पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसेमुहुत्ते दिवसे भवइ।

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मास अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि बाहिराणतरं मडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणतरं मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण पच पच जोयण-सहस्साइ तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसए सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोलसुत्तरेहिं जोयणसएहिं एगूणचत्तालीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठीए चुण्णिया भागेहिं, सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मंडल उवसंकमित्ता चार चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चारं चरइ, तया णं पच पंच जोयण-सहस्साइ तिन्नि य चउरुत्तरे जोयणसए एगूणचत्तालीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मडलाओ तयाणंतरं मडलं संकममाणे सकममाणे अट्ठारस अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइ निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे साइरेगाइ पचासीइ पचासीइ जोयणाइ पुरिसच्छाय अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्मंतरं मडल उवसंकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण पच पच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अट्ठतीस च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे ण मुहुत्ते णं गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य दोवट्ठेहिं जोयणसएहिं य एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

एस णं आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे। □□

तृतीय प्राभृत

चंदिम-सूरियाणं ओभासखेत्तं उज्जोयखेत्तं तावखेत्तं पगासखेत्तं च

२४ प —ता केवइय खेत्त चदिम-सूरिया ओभासति, उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति ? आहिएत्ति वएज्जा,

उ —तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एग दीवं एग समुद्दं चदिम-सूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति, पगासेंति[1] एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता अद्धचउत्थे दीवे, अद्धचउत्थे समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता सत्तदीवे, सत्तसमुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

५. ता दसदीवे, दससमुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता बारसदीवे, बारससमुद्दे चदिम-सूरया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता बायालीसं दीवे, बायालीस समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति एगे एवमाहंसु,

---

१ अवभासयन्ति, तत्रावभासो ज्ञानस्यापि व्यवह्रियते अतस्तद्व्यवच्छेदार्थमाह-उद्योतयन्ति, स चोद्योतो यद्यपि लोके भेदेन प्रसिद्धो यथा सूर्यगत आतप इति, चन्द्रगत प्रकाश इति, तथाप्यातपशब्दश्चन्द्रप्रभायामपि वर्तते, यदुक्तम् 'चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना, तथा चन्द्रगत स्मृत इति' प्रकाशशब्द सूर्यप्रभायामपि, एतच्च प्रायो बहूना सुप्रतीत-तत एतदर्थप्रतिपत्यर्थमुभयसाधारण भूयोऽप्येकार्थकद्वयमाह तापयन्ति प्रकाशयन्ति आख्याता इति ।

—सस्कृतटीका

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता बावत्तरिं दीवे, बावत्तरिं समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

९. ता बायालीसं दीवसयं, बायालीसं समुद्दसयं चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहंसु—

१० ता बावत्तरिं दीवसयं बावत्तरिं समुद्दसयं चंदिम-सूरिया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

११ ता बायालीसं दीवसहस्सं, बायालीसं समुद्दसहस्सं चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१२ ता बावत्तरं दीवसहस्सं, बावत्तरं समुद्दसहस्सं चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायामं—विक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते सा णं जगई अट्ठ-जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता,

एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव,[1]

एवामेव सपुव्वावरे णं जंबुद्दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति-मक्खायं,

जंबुद्दीवे णं दीवे पंच चक्कभागसंठिए ? आहिए त्ति वएज्जा,

प —ता कहं जंबुद्दीवे दीवे पंच चक्कभागसंठिए ? आहिए त्ति वएज्जा,

---

१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के प्रथम वक्षस्कार सूत्रांक ४ से पष्ठ वक्षस्कार सूत्रांक १२५ पर्यन्त के सभी सूत्रों के पाठ यहाँ समझने की सूचना है ।

उ—ता जया ण एए दुवे सूरिया सव्वभंतर मंडल उवसकमित्ता चारं चरंति तया णं जबु-द्दीवस्स दीवस्स तिण्णि पच चक्कभागे ओभासेंति जाव पगासेंति, त जहा—

ता एगे वि सूरिए एग दिवड्ढ पच चक्कभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढ पच चक्कभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ता जया ण एए दुवे सूरिया सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरति तया ण जबुद्दीवस्स दीवस्स दोण्णि पच चक्कभागे ओभासेंति जाव पगासेंति,

ता एगे वि सूरिए एग पच चक्कवालभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एग पच चक्कवालभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। □□

चतुर्थ प्राभृत

सेयाते संठिई

प.—ता कह ते सेआते[1] सठिई[2] आहितातित वदेज्जा ?

उ.—तत्थ खलु इमा दुविहा सठिती पण्णत्ता, त जहा—

१.—चदिम-सूरियसठिती य ।

२.—तावक्खेत्तसठिती य ।

चंदिम-सूरियसंठिई

प.—ता कह ते चदिम-सूरियसठिती आहितातित वदेज्जा ?

उ.—तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ ।

१.—तत्थेगे एवमाहसु—

ता समचउरससठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

२.—एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचउरससठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णता, एगे एवमाहसु ।

३.—एगे पुण एवमाहसु —

ता समचउक्कोणसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

४.—एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचउक्कोणसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

५.—एगे पुण एवमाहसु—

ता समचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

६. एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

---

१ वृत्तिकार ने 'श्वेतता' की व्याख्या इस प्रकार की है—
'इह श्वेतता चन्द्र-सूर्यविमानानामपि विद्यते, तत्कृततापक्षेत्रस्य च, तत श्वेततायोगादुभयमपि श्वेतताशब्देनोच्यते ।

२. चन्द्र-सूर्य विमानो के सस्थान अन्यत्र कहे गये है । अत चन्द्र-सूर्य विमानो की सस्थिति के सम्बन्ध मे प्रश्नकर्ता के अभिप्राय का स्पष्टीकरण वृत्तिकार ने इस प्रकार किया है—
'इह चन्द्र-सूर्यविमानाना सस्थानरूपा संस्थिति प्रागेवाभिहिता तत इह चन्द्र-सूर्यविमान-सस्थितिश्चतुर्णामपि अवस्थानरूपा पृष्टा द्रष्टव्या ।'

७. एगे पुण एवमाहंसु—
ता चक्कद्धचक्कवालसंठिया चंदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

८. एगे पुण एवमाहंसु—
ता छत्तागारसंठिया चदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

९. एगे पुण एवमाहंसु—
ता गेहसंठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

१० एगे पुण एवमाहंसु—
ता गेहावणसंठिया चंदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

११ एगे पुण एवमाहसु—
ता पासायसंठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

१२ एगे पुण एवमाहसु—
ता गोपुरसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

१३. एगे पुण एवमाहसु—
ता पेच्छाघरसठिया चदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

१४ एगे पुण एवमाहसु—
ता वलभीसंठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

१५ एगे पुण एवमाहंसु—
ता हम्मियतलसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

१६.—एगे पुण एवमाहंसु—
ता बालग्गपोतियासंठिया[1] चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

तत्थ जे ते एवमाहसु—
ता समचउरस-संठिया चदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता,
एएण णएणं णेयव्वं णो चेव ण इयरेहिं[2] ।

---

१ बालाग्रपोतिकाशब्दो देशीशब्दत्वादाकाशतडागमध्ये व्यवस्थित क्रीडा-स्थान लघुप्रासादम् । —सूर्य वृत्ति

२ परतीर्थिको की इन सोलह प्रतिपत्तियो मे से केवल एक प्रतिपत्ति सूत्रकार की मान्यतानुसार है—इस विषय मे वृत्तिकार का कथन यह है—

'तत्थेत्यादि-तत्र तेषा षोडशाना परतीर्थिकाना मध्ये ये ते वादिन एवमाहु'—समचतुरस्रसस्थिता चन्द्रसूर्य-सस्थिति प्रज्ञप्ता इति,

एतेन नयेन नेतव्य, एतेनाभिप्रायेणास्मन्मतेऽपि चन्द्र-सूर्यसस्थितिरवधार्येति भाव, तथाहि—'इह सर्वेऽपि कालविशेषा सुपमसुपमादयो युगमूला ।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सूरियस्स तावक्खेत्तसठिती

प.—ता कह ते तावक्खेत्तसठिती ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ.—तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—तत्थ ण—

१.—एगे एवमाहसु—

ता गेहसठिता तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

२.—एगे पुण एवमाहसु—

गेहावणसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

३.—एगे पुण एवमाहसु—

पासायसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

४.—एगे पुण एवमाहसु—

गोपुरसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

५.—एगे पुण एवमाहसु—

पिच्छाघरसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

६.—एगे पुण एवमाहसु—

वलभीसंठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

७.—एगे पुण एवमाहसु—

हम्मियतलसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

८.—एगे पुण एवमाहसु—

वालग्गपोतियासठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

युगस्य चादौ श्रावणे मासे बहुलपक्षप्रतिपदि प्रातरुदयसमये एकसूर्यो दक्षिणपूर्वस्या दिशि वर्तते, तद्द्वितीयस्त्व-परोत्तरस्या,

चन्द्रमा अपि तत्समये एको दक्षिणापरस्या दिशि वर्तते, द्वितीय उत्तरपूर्वस्यामत एतेषु युगस्यादौ चन्द्र-सूर्या समचतुरस्रसस्थिता वर्तन्ते ।

यस्त्वत्र मण्डलकृत वैषम्य यथा सूर्यौ सर्वाभ्यन्तरमण्डले वर्तेते, चन्द्रमसौ सर्वबाह्ये, इति तदल्पमितिकृत्वा न विवक्ष्यते ।

तदेव यत सकलकालविशेषाणा सुपमासुपमादिरूपाणामादिभूतस्य युगस्यादौ समचतुरस्रसस्थिता सूर्य-चन्द्रमसौ भवन्ति, ततस्तेषा सस्थिति समचतुरस्रसस्थानेनोपवर्णिता, अन्यथा वा यथासम्प्रदाय समचतुरस्रसस्थिति परिभावनीयेति ।

नो चेव ण इयरेहिं ति—नो चेव नैव इतरै —शेषैर्नयैश्चन्द्र-सूर्यसस्थितिर्ज्ञातव्या,

तेषा मिथ्यारूपत्वात्, तदेवमुक्ता चन्द्र-सूर्यसस्थिति ।

९.—एगे पुण एवमाहंसु—

जस्संठिए जंबुद्दीवे तस्संठिए तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१०.—एगे पुण एवमाहंसु—

जस्संठिए भारहे वासे तस्संठिए तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

११.—एगे पुण एवमाहंसु—

उज्जाणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१२.—एगे पुण एवमाहंसु—

निज्जाणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१३.—एगे पुण एवमाहंसु—

एगओ णिसधसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१४.—एगे पुण एवमाहंसु—

दुहओ णिसधसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१५.—एगे पुण एवमाहंसु—

सेयणगसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१६.—एगे पुण एवमाहंसु—

सेयणगपट्ठसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वदामो—

ता उद्धीमुहकलबुआपुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता ।

अंतो संकुचिया, बाहिं वित्थडा ।

अंतो वट्टा, बाहिं पिधुला ।

अंतो अंकमुहसंठिया,[1] बाहिं सत्थियमुहसंठिया ।[2]

तावक्खेत्तसंठिइए दुवे बाहाओ

उभओ पासेण तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ[3] भवंति, पणयालीसं पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेण ।

---

१ अंतर्मेरुदिशि अंक-पद्मासनोपविष्टस्योत्सगरूप आसनबन्ध तस्य मुख अग्रभागोर्द्धवलयाकारस्तस्येव संस्थित संस्थान यस्य सा ।

२ तथा बहिर्लवणदिशि स्वस्तिकमुखसंस्थिता, स्वस्तिक सुप्रतीत तस्य मुखम्-अग्रभाग तस्येवातिविस्तीर्णतया संस्थित-संस्थान यस्या सा ।

३. 'ये द्वे बाहे ते आयामेन-जम्बूद्वीपगतमायाममाश्रित्यावस्थिते भवत ।' सूरिय वृत्ति.

तीसे दुवे वाहाओ अणवट्ठिआओ[1] भवंति, तं जहा—

१.—सव्वब्भतरिया चेव वाहा।

२.—सव्ववाहिरिया चेव बाहा।

प.—तत्थ को हेउ त्ति ? वएज्जा।

उ.— ता अयण्ण जंबुद्दीवे दीवे—

सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए, सव्वखुड्डाए।
वट्टे तेल्लापूय-संठाण-सठिए।
वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-सठिए।
वट्टे पुक्खरकण्णिया-सठाण-सठिए।
वट्टे पडिपुण्णचंद-संठाण-संठिए।
एगं जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेणं।

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस अगुलाइ अद्धगुल च किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णत्ते।

तावक्खेत्तसंठिइए परिक्खेवो

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मंडल उवसकमित्ता चार चरति, तया ण उद्धीमुहकलंबुआ-पुप्फसठिया तावक्खेत्तसठिई आहितातिं वएज्जा, अतो सकुडा, बाहिं वित्थडा, अतो वट्टा, बाहिं पिथुला, अतो अंकमुहसठिया, बाहिं सत्थियमुहसठिया, दुहओ पासेण तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा।

(क) तीसे णं सव्वब्भतरिया बाहा=मदरपव्वय तेण णव जोयणसहस्साइ चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिए त्ति वएज्जा।

प —ता से ण परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ —ता जे णं मदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेव तिहिं गुणित्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे=एस णं परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।

---

१. 'द्वे च वाहे अनवस्थिते भवत,
तद्यथा सर्वाभ्यन्तरा, सर्ववाह्या च।
(क) तत्र या मेरुसमीपे विष्कम्भमधिकृत्य वाहा सा सर्वाभ्यन्तरा।
(क) या तु लवणदिशि जम्बूद्वीपपर्यन्ते विष्कम्भमधिकृत्य वाहा सा सर्ववाह्यवाहा।
(ग) आयामश्च-दक्षिणायततया प्रतिपत्तव्यो,
विष्कम्भ पूर्वापरायततया।

(ख) तीसे ण सव्वबाहिरिया बाहा=लवणसमुद्दतेण, चउणउइ जोयणसहस्साइ, अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए, चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण, आहिए त्ति वएज्जा।[1]

प.—ता से ण परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ.—ता जे ण जबुद्दीव-दीवस्स परिक्खेवे त परिक्खेव तिहिं गुणित्ता, दसहिं छेत्ता, दसहिं भागे हीरमाणे=एस ण परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।[2]

तावखेत्तस्स अंधकारखेत्तस्स य आयामाईणं परूवणं

प —ता तीसे ण तावक्खेत्ते केवइय आयामेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ.—ता अट्ठत्तरि जोयणसहस्साइ, तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे च आयामेण, आहिए त्ति वएज्जा।

प —तया ण किंसठिया अधकारसठिई ? आहिय त्ति वएज्जा।

उ —उद्धीमुह-कलबुआपुप्फसठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा।

तीसे ण सव्वब्भतरिया बाहा मदरपव्वयतेण छज्जोयणसहस्साइ तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण, आहिय त्ति वएज्जा।

प —ता तीसे ण परिक्खेवविसेसे ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ.—ता जे ण मदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे णं त परिक्खेव दोहिं गुणेत्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।

तीसे ण सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्द तेण तेवट्ठि जोयणसहस्साइ दोण्णि य पणयाले जोयसए छच्च दस भागे जोयणस्स परिक्खेवेण, आहिए त्ति वएज्जा।

प —ता से ण परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ.— ता जे ण जबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, त परिक्खेव दोहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागेहिं हीरमाणे एस ण परिक्खेवविसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।

प —ता से ण अधकारे केवइय आयामेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ —ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइ तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च आयामेणं, आहिए त्ति वएज्जा।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति।

---

१ मेरु की परिधि ३१,६,२३ योजन की है, इसे तीन से गुणा करने पर ९४,८,७९ योजन हुए, इन के दश का भाग देने पर ९,८,८६$\frac{6}{10}$ लब्ध होते है—यह सर्व आभ्यन्तर वाहा की परिधि है।

२ जबूद्वीप की परिधि ३,१६,२,२७ योजन तीन कोस २८ धनुष १३ अगुल तथा आधे अगुल से कुछ अधिक है।
इसमे दश का भाग देने पर ९४, ८, ६८ योजन और एक योजन के दस भागो मे से चार भाग जितनी सर्व-वाह्य वाहा की परिधि विशेष है।

जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

प —ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसंकमित्ता चारं चरइ तया ण किंसठिया तावखेत्तसंठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ —ता उद्धमुह-कलंबुयापुप्फसठिया तावक्खेत्तसठिई आहिय त्ति वएज्जा, एव ज अब्भितर-मंडले अधकारसठिईए पमाण त बाहिरमडले तावक्खेत्तसठिईए, ज तहि तावक्खेत्तसठिईए त बाहिर-मंडले अंधकारसंठिईए भाणियव्व, जाव

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

सूरियाणं तावखेत्तपमाण-परूवण

प —ता जवुद्दीवे दीवे सूरिया केवइय खेत्त उड्ढं तवति, केवइय खेत्तं अहे तवति, केवइय खेत्त तिरियं तवति ?

उ —ता जवुद्दीवे ण दीवे सूरिया एग जोयणसय उड्ढ तवति ।

अट्ठारस जोयणसयाइ अहे पतवन्ति ।

सीयालीस जोयणसहस्साइ दुन्नि य तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरिय तवति । □□

पंचम प्राभृत

सूरियस्स लेस्सा पडिघायगा पव्वया

२६ ता कंसि ण सूरियस्स लेस्सा पडिहया ? आहिय ति वएज्जा।

तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता मंदरंसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता मेरुंसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता सुदंसणसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता सयंपभंसि णं पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता गिरिरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

७ ता रयणुच्चयंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

९ ता लोयमज्झंसि णं पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१० ता लोगनाभिंसि ण पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

११ ता अच्छंसि ण पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१२ ता सूरियावत्तंसि ण पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१३ ता सूरियावरणंसि ण पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१४ ता उत्तमंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१५ ता दिसादिंसि ण पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१६ ता अवयसंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१७ ता धरणिखीलंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१८ ता धरणिसिंगंसि ण पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१९ ता पव्वइंदंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२० ता पव्वयरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो,

जंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, से ता मंदरे वि पवुच्चइ जाव पव्वयराया वि पवुच्चइ,[1]

[क] ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेस्स पडिहणति,

[ख] अदिट्ठा वि णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणति,

चरिमलेस्संतरगया वि पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति।

---

१ मदरम्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा गाहाओ—

१. मंदर २ मेरू ३. मणोरम ४. सुदसण ५ सयंपभे य ६ गिरिराया।
७ रयणुच्चय ८. पियदसण ९-१०. मज्झे लोगस्स, नाभी य ॥ १ ॥
११ अच्छे य १२ सूरियावत्ते १३ सूरियावरणे त्ति य।
१४ उत्तमे य १५ दिसादी य १६. वडेंसे इ य सोलसे ॥ २ ॥

क—सम स १६, सु ३
ख—जंबू वक्ख ४, सु १०९

इन-दोनो गाथाओ मे 'मदर पर्वत' के सोलह नाम गिनाये हैं, यहाँ इनके अतिरिक्त चार औपमिक नाम और भी है।

मन्दर पर्वत के इन बीस पर्यायवाची नामो को अन्यान्य मान्यतावाले भिन्न भिन्न पर्वत मानते हैं। किन्तु सूर्यप्रज्ञप्ति के सकलनकर्ता ने समवायाग और जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति के अनुसार मन्दर पर्वत के ये बीस पर्यायवाची नाम मानकर सभी अन्य मान्यताओ का 'समन्वय' किया है।

छठा प्राभृत

सूरियस्स ओयसंठिई

प—ता कहं ते ओयसंठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ—तत्थ खलु इमाओ पणवीस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता अणुसमयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता अणुराइदियमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता अणुपक्खमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता अणुमासमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

६. ता अणुउउमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता अणुअयणमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता अणुसंवच्छरमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

९. ता अणुजुगमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१०. ता अणुवाससयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

११. ता अणुवाससहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१२. ता अणुवास-सय-सहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१३. ता अणुपुव्वमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१४. ता अणुपुव्व-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१५. ता अणुपुव्वसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१६ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१७. ता अणुपलिओवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे, एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१८. ता अणुपलिओवमसयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१९. ता अणुपलिओवमसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२० ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२१. ता अणुसागरोवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२२ ता अणुसागरोवम-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२३. ता अणुसागरोवम-सहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२४. ता अणुसागरोवम-सयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२५ ता अणुउस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।[1]

वयं पुण एव वयामो—

(क) ता तीसं तीसं मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिया भवइ तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिया भवइ।

(ख) छम्मासे सूरिए ओयं णिव्वुड्ढेइ।
छम्मासे सूरिए ओयं अभिवुड्ढेइ।

(ग) निक्खममाणे सूरिए देसं णिव्वुड्ढेइ।
पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ।

प.—तत्थ को हेऊ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ.—ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भतराए सव्व खुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खंभे णं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवे णं पण्णत्ते।

१. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

२ से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखित्तस्स निव्वुड्ढित्ता रयणि-खित्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे।

---

१ इन प्रतिपत्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि जैनागमों के अतिरिक्त अन्य दार्शनिक पुराणादि ग्रन्थों में भी औपमिककालवाचक 'पल्योपम-सागरोपम, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी' आदि शब्दों का प्रयोग था।
वर्तमान में भी यदि पुराणादि ग्रन्थों में इन औपमिककाल वाचक शब्दों का कहीं प्रयोग हो तो अन्वेषणशील विद्वान् प्रयत्न करके प्रकाशित करें।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ-दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

३ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितराणतरं तच्च मडलं उवसंकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए अब्भितराणंतर तच्चं मडल उवसकमित्ता चारं चरइ, तया ण दोहिं राइदिएहिं दो भागे ओयाए दिवस-खेत्तस्स निव्वुड्ढित्ता, रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मडल अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

४ एव खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणंतर मंडलं सकममाणे सकममाणे एगमेगे मंडले, एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं एगमेगं भागं ओयाए दिवस-खेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे रयणि-खेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिर मडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

५ ता जया ण सूरिए सव्वब्भंतराओ मडलाओ सव्वबाहिरं मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण सव्वब्भतर मडल पणिहाय एगेणं तेसिएण राइंदियसएण एगं तेसीय भागसयं ओयाए दिवस-खेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

१ से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मंडलं उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चार चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

२ से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तसि बाहिराणतर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणतर तच्च मडलं उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चर्डाहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चर्डाहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

३ एवं खलु एएणं उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मडलाओ तयाणतर मडलं संकममाणे सकममाणे एगमेगे मडले एगमेगेण राइदिएण एगमेग भाग ओयाए रयणि-खेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चारं चरइ।

४ ता जया ण सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं सव्वबाहिर मडल पणिहाय एगेण तेसीएणं राइदियसएण एगं तेसीय भागसय ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चार चरइ, मडल अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

एस णं आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे। 

सप्तम प्राभृत

सूरियेण पगासिया पव्वया

प —ता किं ते सूरियं वरइ ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ —तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता मेरू णं पव्वए सूरियं वरइ एगे एवमाहंसु ।

३-१९. एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं तहेव जाव ।[1]

एगे पुण एवमाहंसु—

२०. ता पव्वयराये णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वदामो—

ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पवुच्चइ तहेव जाव (१–२० सूरिय० पा० ५, सु. २६ को देखें)।[2]

ता पव्वयराये णं पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पवुच्चइ ।

(क) ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति, ते णं पुग्गला सूरियं वरयंति ।

(ख) अदिट्ठा वि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ।

(ग) चरिमलेस्संतरगया वि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ।

□□

---

१ 'सूरियस्स लेस्सा पडिघायगा पव्वया' इस शीर्षक के अन्तर्गत सूर्य प्रा ५, सु २६ मे वीस प्रतिपत्तियो के अनुसार सूर्य की लेश्या को प्रतिहत करने वाले वीस पर्वतो के नाम गिनाये है । यहाँ भी उसी के अनुसार मूल-पाठ के सभी आलापक कहने चाहिए ।

२ ऊपर के टिप्पण मे सूचित शीर्षक के अन्तर्गत सूर्य पा ५, सु २६ के अनुसार सूर्यप्रज्ञप्ति के सकलनकर्ता ने यहाँ भी मदर पर्वत के वीस नामो को पर्यायवाची मानकर समन्वय कर लिया है ।

अष्टम प्राभृत

सूरस्स उदय-सठिई

प.—ता कह ते उदयसठिई आहिया ? ति वएज्जा ।

उ.—तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१. तत्थेगे एवमाहसु—

(क) ता जया णं जंवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ख) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया णं जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया ण जंवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(च) ता जया णं जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ते दिवसे, भवइ ।

(छ) ता जया णं जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

(ज) तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहंसु।

२. एगे पुण एवमाहंसु—

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ।

(ख) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[ग] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[घ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि पण्णरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[ङ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[च] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ।

[छ] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[ज] तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण णो सया पण्णरस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणवट्ठिया णं तत्थ राइदिया पण्णत्ता, समणाउसो ! एगे एवमाहंसु।

३ एगे पुण एवमाहंसु—

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

तया ण जंवुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ।

वोच्छिण्णा ण तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो ! एगे एवमाहसु।

वयं पुण एवं वयामो

ता जंवुद्दीवे दीवे सूरिया
उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति।
पाईण-दाहिणमुग्गच्छति, दाहिण-पडीणमागच्छति।
दाहिण-पडीणमुग्गच्छंति, पडीण-उदीणमागच्छंति।
पडीण-उदीणमुग्गच्छति, उदीण-पाईणमागच्छति।[1]

[क] ता जया ण जंवुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चित्थिमे णं राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंवुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि दिवसे भवइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण राई भवइ।

[क] ता जया णं जंवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

---

१ प जम्वुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिआ ? उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छति ?
पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छति ?
दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छति ?
पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छति ?
उ हता गोयमा ! जहा पचमसए पढमे उद्देसे जाव णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए ण तत्थ काले प समणाउसो ! —भग स ५, उ १ सु ५
(क) जवु वक्ख ७, सु १५०

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

एवं एएण गमेणं णेयव्वं

अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-दुवालस-मुहुत्ता राई।

सत्तरस-मुहुत्ते दिवसे—
तेरस-मुहुत्ता राई।

सत्तरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-तेरस-मुहुत्ता राई।

सोलस-मुहुत्ते दिवसे—
चोद्दस-मुहुत्ता राई।

सोलस-मुहुत्ताणतरे दिवसे—
साइरेग-चोद्दस-मुहुत्ता राई।

पण्णरस-मुहुत्ते दिवसे—
पण्णरस-मुहुत्ता राई।

पण्णरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-पण्णरस-मुहुत्ता राई।

चोद्दस-मुहुत्ते दिवसे—
सोलस-मुहुत्ता राई।

चोद्दस-मुहुत्ताणतरे दिवसे—
साइरेग-सोलस-मुहुत्ता राई।

तेरस-मुहुत्ते दिवसे—
सत्तरस-मुहुत्ता राई।

तेरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-सत्तरस-मुहुत्ता राई।

जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ—
उक्कोसिया अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ एवं भाणियव्वं।[1]

---

१. भग श ५, उ १, सु ४-१३

वासाउउ

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणतर-पुरक्खड-काल-समयंसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतरपच्छाकय-काल-समयसि वासाण पढमे समए पडिवन्ने भवइ।

जहा समओ तहा १ आवलिया, २. आणापाणू, ३ थेवे, ४. लवे, ५ मुहुत्ते, ६. अहोरत्ते ७. पक्खे, ८. मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा वासाण तहा भाणियव्वा।[१]

हेमत उउ

(क) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि हेमंताण पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे हेमताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण अणतर-पुरक्खड-काल-समयसि हेमताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

(ख) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि हेमताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणतर-पच्छाकड-काल-समयसि हेमताण पढमे समए[२] पडिवज्जइ।

जहा समओ तहा १. आवलिया, २ आणापाणू, ३. थोवे, ४ लवे, ५ मुहुत्ते, ६ अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८. मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा हेमताण तहा भाणियव्वा।

---

१ ऊपर सूत्र मे 'पढमे समए' आठ स्थानो पर 'रेखाकित' हैं उन स्थानो मे नीचे लिखे आलापक कहे, और प्रत्येक आलापक के दो दो सूत्र ऊपर के समान कहे—

१ पढमा आवलिया, २ पढमो आणापाणू, ३ पढमे थोवे, ४ पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढमे अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढमे मासे।

२ ऊपर सूत्र मे 'पढमे समए' आठ स्थानो पर हैं उन स्थानो पर नीचे लिखे आलापक कहे, और प्रत्येक आलापक के ऊपर के समान दो दो सूत्र कहे—

१. पढमा आवलिया, २ पढमो आणापाणू, ३ पढमे थोवे, ४ पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढमे अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढमे मासे।

गिम्ह उउ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया ण उत्तरड्ढे गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ।

(ख) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ,

जया ण पच्चत्थिमे ण गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणंतर-पच्छाकड काल-समयंसि गिम्हाण पढमे समए[1] पडिवज्जइ।

जहा समओ तहा १ आवलिया, २. आणापाणू, ३. थोवे, ४. लवे, ५. मुहुत्ते, ६. अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८ मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा गिम्हाण तहा भाणियव्वा।

अयणाइ

(क) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया ण उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया ण उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

(ख) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण पुरत्थिमेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणंतर-पच्छाकड-काल-समयंसि पढमे अयणे[2] पडिवज्जइ।

जहा पढमस्स अयणस्स आलावगो तहा दोच्चस्स अयणस्स भाणियव्वो।

जहा अयणे तहा संवच्छरे, जुगे, वाससए, वाससहस्से, वास-सयसहस्से, पुव्वगे, पुव्वे, जाव सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे य।

---

१. ऊपर सूत्र मे "पढमे समए" आठ स्थानो पर है, उन स्थानो पर नीचे लिखे आलापक कहे और प्रत्येक आलापक के ऊपर के समान दो दो सूत्र कहे।

१ पढमा आवलिया, २ पढमो आणापाणू, ३ पढमे थोवे, ४ पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढमे अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८. पढमे मासे।

२ जहाँ जहाँ "पढमे अयणे" है, वहा वहा "दोच्चे अयणे" कहे।

उस्सप्पिणो

ता जया णं जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि उस्सप्पिणी पडिवज्जइ ।

जया णं उत्तरड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं णेवत्थि उस्सप्पिणी णेवत्थि ओसप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

एवं ओसप्पिणी ।[1]

लवणसमुद्दो

ता जया ण लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं लवणे समुद्दे उत्तररड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया ण लवणे समुद्दे उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया ण लवणे समुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ।

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी ।[2]

धायइखंडो

ता धायइखडे णं दीवे सूरिया—

उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति,

---

१ (क) ऊपर जहा जहा "उस्सप्पिणी" है वहा वहा "ओसप्पिणी" कहे ।

२ "जच्चेव जबुद्दीवस्स वत्तव्वता भणिता, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिता लवणसमुद्दस्स वि भाणितव्वा" ।
नवर—इमेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणितव्वा ।

प (क) लवणे ण भते ! समुद्दे सूरिया—
उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छति ?
(ख) पादीण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पादीणमागच्छति ?
(ग) दाहिण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-उदीणमागच्छति ?
(घ) पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण-पादीणमागच्छति ?

उ (क-घ) हता गोयमा ! लवणे ण समुद्दे सूरिया—
उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छति, जाव
पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण-पादीणमागच्छति ।
एतेण अभिलावेण णेतव्व—जाव

प (क) जदा ण भते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति
तदा ण उत्तरड्ढे वि पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति ?
(ख) जदा ण उत्तरड्ढे पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति, तदा ण लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी ? अवट्ठिते ण तत्थ काले पण्णत्ते ?

उ हता गोयमा ! त चेव उच्चारेयव्व जाव समणाउसो ।

भग स ५, उ १, सु. २२

जाव पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति,

ता जया ण धायइसंडे दीवे मदराणं पव्वयाणं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया ण उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं धायइसडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवति,

सेस जहा जवुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी,

कालोए णं समुद्दे जहा लवणे समुद्दे ।

अब्भंतरपुक्खरद्धो

ता अब्भंतर-पुक्खरद्धे ण दीवे सूरिया—

उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति,

जाव पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति,

ता जया ण अब्भंतर-पुक्खरद्धे मदराण पव्वयाण दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया ण उत्तर-ड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया ण उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया ण अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराण पव्वयाण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवइ,

सेसं जहा जवुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी । □□

नवम प्राभृत

पोरिसिच्छाय-निव्वत्तणं—

३० प. ता कइकट्ठ ते सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसुः—

१. ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोग्गला सतप्पंति, ते ण पोग्गला सतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता जे ण पोग्गला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोगला नो संतप्पति, ते णं पोग्गला असतप्पमाणा तदणंराइं बाहिराइं पोग्गलाइ णो सतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसति, ते णं पोग्गला अत्थेगइया संतप्पति, अत्थेगइया नो संतप्पति,

तत्थ अत्थेगइया सतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगयाइं संतावेंति, अत्थेगयाइं नो संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु,

वय पुण एवं वयामोः—

ता जाओ इमाओ चदिम-सूरियाणं देवाण विमाणेहिंतो लेसाओ बहित्ता उच्छूढा अभिणिसट्ठाओ पतावेंति,

एयासि ण लेसाण अतरेसु अण्णयरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छति, तए णं ताओ छिण्णलेस्साओ संमुच्छियाओ समाणीओ तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइ संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते ।

पोरिसिच्छाय-निवत्तणंः—

३१ प. ता कइकट्ठे ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा.—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ, आहिए त्ति वएज्जा,

जाओ चेव ओयसंठिईए पडिवत्तीओ एएण अभिलावेण णेयव्वाओ, जाव[1] [३-२४]

एगे पुण एवमाहंसु—

२५ ता अणुउस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो:—

ता सूरियस्स ण—

१. उच्चत्त च लेस च पडुच्च छायुद्देसे,

२ उच्चत्तं च छाय च पडुच्च लेसुद्देसे,

३ लेस्स च छाय च पडुच्च उच्चत्तोद्देसे

प. २

उ तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

(क) १ ता अत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए चउपोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि ण दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहंसु—

(क) २. ता अत्थि णं से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि ण से दिवसे जंसि णं दिवससि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

---

१ सूरिए पा ६ सु २७

२ सूर्यप्रज्ञप्ति की सकलनशैली के अनुसार यहा प्रश्नसूत्र होना चाहिए था, किन्तु यहा प्रश्नसूत्र था स आदि किसी प्रति मे नही है, अत यहा का प्रश्नसूत्र विच्छिन्न हो गया है, ऐसा मान लेना ही उचित है।
सूर्यप्रज्ञप्ति के टीकाकार भी यहा प्रश्न-सूत्र के होने न होने के सम्बन्ध मे सर्वथा मौन है, अत यहा प्रश्न-सूत्र का स्थान रिक्त रखा है।
यदि कही किसी प्रति मे प्रश्न-सूत्र हो तो स्वाध्यायशील आगमज्ञ सूचित करने की कृपा करें, जिससे द्वितीय सस्करण मे परिवर्धन किया जा सके।

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

(क) १. ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउ-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु,

(क) ता जया णं सूरिए सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ।

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउ-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा-उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण-मुहुत्तंसि य,

लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे।

[ख] ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा-उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण-मुहुत्तंसि य,

लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

२. ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु,

[क] ता जया णं सूरिए सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ,

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण-मुहुत्तंसि य,

लेसं अभिवड्ढेमाणे, नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे,

[ख] ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण-मुहुत्तंसि य,

नो चेव णं लेसं अभिवड्ढेमाणे वा, निव्वुड्ढेमाणे वा।[1]

---

१ इसके अनन्तर यहाँ स्वमतसूचक 'वयं पुण एवं वयामो' यह वाक्य नहीं है और न स्वमत का कथन ही है।
'तदेवं परतीर्थिक-प्रतिपत्तिद्वयं श्रुत्वा भगवान् गौतमः
स्वमतं पृच्छति, ता कइ कट्ठमित्यादि' —सूर्य टीका
टीकाकार का यह कथन सूर्यप्रज्ञप्ति की संकलनशैली के अनुरूप नहीं है—क्योंकि प्रतिपत्तियों के कथन के अनन्तर 'वयं पुण एवं वयामो' इस वाक्य से ही सर्वत्र स्वमत का प्रतिपादन किया गया है।

प ता कइकट्ठ ते सूरिए पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ इमाओ छण्णउइ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता अत्थि ण से देसे जसि णं देससि सूरिए एगपोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ,[1] एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए दु-पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ, एगे एवमाहसु,

एव एएण अभिलावेण णेयव्वं, जाव (३-९५)

एगे पुण एवमाहसु—

९६—ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहसु,

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

१ ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देससि सूरिए एग-पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति' ते एवमाहंसु,

ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहीओ वहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवइयाए एगाए अद्धाए, एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेण उमाए, तत्थ से सूरिए एगपोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति,

तत्थ जे ते एवमाहसु—

२. ता अत्थि ण से देसे, जसि णं देससि सूरिए दु-पोरिसीय छायं निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,

ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहीओ वहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्ज-माणीहिं, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवइयाइ दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ त्ति,

३-९५—एव एएण अभिलावेण णेयव्वं, जाव .

तत्थ जे ते एवमाहसु—

९६—'ता अत्थि ण से देसे जसि णं देससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति' ते एवमाहंसु,

---

१ तत्र-तेपा पण्णवते परतीर्थिकाना मध्ये, एके एवमाहु

'ता' इति पूर्ववत् अस्ति स देशो, यस्मिन् देशे सूर्य आगत सन् एकपौरुषी-एकपुरुषप्रमाणा (पुरुषग्रहणमुपलक्षण सर्वस्यापि प्रकाश्यवस्तुन स्व-प्रमाणा) छाया निर्वर्तयति । —सूर्य टीका

ता सूरियस्स ण सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढे उच्चत्तेण, एवइयाइ छण्णउईए छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ ण से सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ त्ति,

वय पुण एवं वयामो—

ता साइरेग-अउणट्ठि-पोरिसीणं सूरिए पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ त्ति।

पोरिसिच्छाय-प्पमाणं

प ता अवड्ढ-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता ति-भागे गए वा सेसे वा।

प ता अउणसट्ठिपोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा।

प ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता चउब्भागे गए वा सेसे वा,[1]

प. ता दिवड्ढ-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता पंचभागे गए वा, सेसे वा।

प. ता बि-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता छब्भागगए वा, सेसे वा।

प ता अड्ढाइज्ज-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता सत्तभागगए वा, सेसे वा।

एवं अवड्ढपोरिसिं छोढुं छोढुं पुच्छा,[2]

दिवसभागं छोढुं छोढुं वागरण[3] जाव .

---

१ पौरुपी की परिभापा—

"पुरिस त्ति, सकु, पुरिस-सरीर वा, ततो पुरिसे निप्फन्ना पोरिसी, एव सव्वस्स वत्थुणो यदा स्वप्रमाणा छाया भवति, तदा हवइ,

एय पोरिसि-प्रमाण उत्तरायणस्स अते, दक्खिणायणस्स आईए इक्क दिण भवइ, अतो पर अद्ध-एगसट्ठिभागा अगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढति, उत्तरायणे हस्सति, एव मडले मडले अन्ना पोरिसो"

'यह पौरुपी की परिभापा सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका मे नन्दिचूर्णि से उद्धृत है।' चूर्णि की भाषा सस्कृत-मिश्रित प्राकृत होती है, अत ऊपर अकित चूर्णि-पाठ अशुद्ध नही है।

२. एवमित्यादि-एवमुक्तेन प्रकारेण 'अर्द्धपौरुषी' अर्द्धपुरुषप्रमाणा छाया क्षिप्त्वा, क्षिप्त्वा पृच्छा पृच्छासूत्र द्रष्टव्य। —सूर्य टीका

३ "दिवसभाग" ति, पूर्व-पूर्वसूत्रापेक्षया एकैकमधिक दिवसभाग क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा व्याकरण, उत्तरसूत्र ज्ञातव्यम्। —सूर्य टीका

प. ता अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता एगूणवीस-सय-भागे गए वा, सेसे वा।

प. ता अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता बावीसहस्सभागे गए वा सेसे वा।

प ता साइरेग-अउणसट्ठि-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता नत्थि किंचि गए वा, सेसे वा।[1]

तत्थ खलु इमा पणवीसविहा छाया पण्णत्ता, तंजहा—

१ खभ-छाया २ रज्जु-छाया ३ पागार-छाया ४ पासाय-छाया ५ उग्गम छाया ६. उच्चत्त-छाया ७ अणुलोम-छाया ८ पडिलोम-छाया ९ आरभिया-छाया १० उवहया-छाया ११ समा-छाया १२ पडिहया-छाया १३ खील-छाया १४ पक्ख-छाया १५. पुरओउदया-छाया १६. पुरिम कंठ-भागुवगया-छाया १७ पच्छिम-कठ-भागुवगया-छाया १८. छायाणुवाइणी-छाया १९ किट्ठाणुवाइणी-छाया २० छाय-छाया २१. विक्कप्प-छाया २२. वेहास-छाया २३ कड-छाया २४. गोल-छाया २५. पिट्ठओदग्गा-छाया।

---

१ यहाँ अकित प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई सक्षिप्त वाचना की सूचनानुसार सशोधित है। सूर्यप्रज्ञप्ति की '१ आ स । २ शा म । ३ अ मु । ४ ह अ' इन चारो प्रतियो मे दिये गये प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई सक्षिप्त वाचना की सूचना से कितने विपरीत हैं ? यह निर्णय पाठक स्वय करें।

प 'ता अद्धअउणसट्ठि पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

त ता एगूणवीससयभागे गए वा, सेसे वा।

प ता अउणसट्ठि पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता बावीस-सहस्स भागे गए वा, सेसे वा।

प ता साइरेग-अउणसट्ठि-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता नत्थि किंचि गए वा, सेसे वा।

(क) यहाँ इन प्रश्नोत्तरो मे व्यतिक्रम हो गया प्रतीत होता है। सर्वप्रथम साढे गुनसठ पौरुषी छाया का प्रश्नोत्तर है। द्वितीय प्रश्नोत्तर गुनसठ पौरुषी छाया का है। तृतीय प्रश्नोत्तर कुछ अधिक गुनसठ पौरुषी छाया का है।

(ख) यहाँ प्रश्नो के अनुरूप उत्तर भी नही है। प्रथम प्रश्नोत्तर मे—"साढे गुनसठ पौरुषी छाया, एक सौ उन्नीस दिवस भाग से निष्पन्न होती है" ऐसा माना है किन्तु सक्षिप्तवाचना पाठ के सूचनानुसार एक सौ बीस दिवस से निष्पन्न होती है।

द्वितीय प्रश्नोत्तर मे—गुनसठ पौरुषी छाया की निष्पत्ति बावीस हजार दिवस भाग से होती है—ऐसा माना है, किन्तु यह मानना सर्वथा असगत है, क्योकि सक्षिप्त वाचना के सूचनापाठ की टीका मे एक एक दिवस भाग बढाने का ही सूचन है।

तृतीय प्रश्नोत्तर मे—प्रश्न ही असगत है, क्योकि सक्षिप्त वाचना के सूचनापाठ मे अर्द्ध पौरुषी छाया से सबधित प्रश्न हो तो यहाँ कहा गया उत्तरसूत्र यथार्थ है।

तत्थ णं गोल-छाया अट्ठविहा पण्णत्ता, त जहा—

१. गोल-छाया २. अवड्ढ-गोल-छाया ३. गाढ-गोल-छाया ४ अवड्ढ-गाढ-गोल-छाया ५ गोलावलि-छाया ६ अवड्ढ-गोलावलि-छाया ७ गोलपुंज-छाया ८ अवड्ढ-गोल-पुंज-छाया।[1]

□□

---

१ प्रस्तुत सूत्र मे छाया के पच्चीस प्रकार तथा गोल छाया के आठ प्रकार का कथन है। 'तत्थेत्यादि, तत्र = तासा पचविंशति-छायाना मध्ये खल्विय गोल-छाया अष्टविधा प्रज्ञप्ता।'

सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका के इस कथन से प्रतीत होता है कि छाया के पच्चीस प्रकारो मे 'गोल-छाया' का नाम था और उसके आठ प्रकार भिन्न थे, किन्तु सूर्यप्रज्ञप्ति की '१ आ स। २ शा स। ३ अ सु।' इन तीन प्रतियो मे छाया के केवल सत्तरह नाम हैं और गोल-छाया के आठ नाम है। इस प्रकार पच्चीस पूरे नाम लिये गये हैं। सत्तरह नामो मे गोल-छाया का नाम नही है, फिर भी 'तत्थेत्यादि' पाठ से सगति करके पच्चीस नाम पूरे मानना आश्चर्यजनक है।

एक 'ह् अ' प्रति मे छाया के पच्चीस नाम तथा गोल-छाया के आठ नाम हैं, जो मूल पाठ के अनुसार हैं।

दशम प्राभृत

[प्रथम प्राभृत प्राभृत]

णक्खत्ताणं आवलिया-णिवायजोगो य

३२ प ता कहं ते जोगे ति वत्थुस्स आवलिया-णिवाए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तजहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, महादिया अस्सेस-पज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, धणिट्ठादिया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, अस्सिणो-आदिया रेवईपज्जवसाणा पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, भरणोआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

वय पुण एव वयामो—

ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, अभिई आदिया, उत्तरासाढा पज्जवसाणा पण्णत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा ।[1]

□□

---

१ जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं मववहारे वट्टति । —सम २७, सु. २

दशम प्राभृत
[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं चंदेण जोगकालो

३३. प ता कहं ते मुहुत्तग्गे आहिए ? ति वएज्जा,

उ ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

[क] अत्थि णक्खत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोयं जोएइ।

[ख] अत्थि णक्खत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे ण तीसं मुहुत्ते चदेण सद्धि जोयं जोएति।

[घ] अत्थि णक्खत्ता जे ण पणयालीसे मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति।

[क] प. ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण

कयरे णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स [चदेण सद्धि जोयं जाएति ?

[ख] कयरे णक्खत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोयं जोएति ?

[ग] कयरे णक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[घ] कयरे णक्खत्ता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोयं जोएति ?

[क] उ. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ते, जे ण णव मुहुत्ते, सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोयं जोएंति, से णं एगे, अभीयी।[1]

[ख] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ता ण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोयं जोएति, ते णं छ, तं जहा—१. सतभिसया, २. भरणी, ३ अद्दा, ४ अस्सेसा, ५ साति, ६ जेट्ठा।

[ग] ता एएसि णं णट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण तीस मुहुत्तं चदेण सद्धि जोयं जोएति, ते ण पण्णरस त जहा—१. सवणो, २. धणिट्ठा, ३ पुव्वाभद्दवया, ४ रेवई, ५. अस्सिणी, ६ कत्तिया, ७ मग्गसिरा, ८ पुस्सो, ९. महा, १०. पुव्वाफग्गुणी, ११. हत्थो, १२ चित्ता, १३ अणुराहा, १४ मूलो, १५. पुव्वासाढा।

[घ] ता एएसि ण अट्ठावीसाए, णक्खत्ताण,

---

१ अभिजिणक्खत्ते माइरेगे णव मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोएइ सम ९ सु ५

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं पणयालीस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति, ते णं छ, तंजहा—१ उत्तराभद्दवया, २. रोहिणी, ३. पुणव्वसू, ४. उत्तराफग्गुणी, ५ विसाहा ६ उत्तरासाढा।

सूरिय पा १०, पाहु. २, सु ३२

णक्खत्ताण सूरेण जोगकालो

३४—ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

[क] अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति।

[ख] अत्थि णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एक्कवीस च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे ण वीस अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति।

प [क] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ते ज चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ?

[ख] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ते जे णं छ अहोरत्ते, एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति ?

[ग] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ?

[घ] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति ?

उ. [क] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ते जे ण चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय् जोएंति से णं एगे अभीयी।

(ख) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते, एक्कवीस च मुहुत्ते, सूरेण सद्धि जोय जोएंति ते णं छ, तजहा—१. सतभिसया, २. भरणी, ३. अद्दा, ४ अस्सेसा, ५ साती, ६. जेट्ठा।

(ग) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति, ते णं पण्णरस तंजहा—१. सवणो, २. धणिट्ठा, ३. पुव्वाभद्दवया, ४. रेवई, ५. अस्सिणी, ६. कत्तिया, ७ मग्गसिरं, ८. पुस्सो, ९, महा, १०. पुव्वाफग्गुणी, ११ हत्थो, १२. चित्ता, १३. अणुराहा, १४ मूलो, १५. पुव्वासाढा।

(घ) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते, सूरेण सद्धि जोय जोएंति ते ण छ, तंजहा—१. उत्तराभद्दवया, २ रोहिणी, ३. पुनव्वसू, ४. उत्तराफग्गुणी, ५. विसाहा, ६. उत्तरासाढा।

□□

दशम प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं पुव्वाइभागा खेत्त-कालप्पमाण च

३५ प. ता कहं ते एवभागा णक्खत्ता ? आहिया ति वएज्जा,

उ. ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

(क) अत्थि णक्खत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता तीसइ मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ख) अत्थि णक्खत्ता पच्छभागा, समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ग) अत्थि णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(घ) अत्थि णक्खत्ता उभय भागा विड्ढ खेत्ता, पणयालीस मुहुत्ता पण्णत्ता ।

प. (क) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ख) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता पच्छभागा समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ग) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(घ) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता, पणयालीस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

उ (क) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वभागा, समक्खेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता, पण्णत्ता, ते ण छ तजहा—
१. पुव्वापोट्ठवग्ग, २. कत्तिया, ३. महा, ४. पुव्वाफग्गुणी, ५ मूलो, ६. पुव्वासाढा ।

(ख) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता पच्छभागा समक्खेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ते ण दस, तजहा—
१. अभिई, २. सवणो. ३ धणिट्ठा, ४ रेवई, ५. अस्सिणी, ६. मिगसिर, ७ पूसो, ८. हत्थो, ९ चित्ता,
१०. अणुराहा ।

(ग) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता णत्तभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता, ते ण छ, तंजहा—
१. सयभिसया, २ भरणी, ३ अद्दा, ४. अस्सेसा, ५ साती, ६ जेट्ठा ।

(घ) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता, पणयालीस मुहुत्ता पण्णत्ता, ते ण छ, तजहा—
१. उत्तरापोट्ठवया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू, ४. उत्तराफग्गुणी, ५ विसाहा, ६ उत्तरासाढा ।

दशम प्राभृत

[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं चदेण जोगारभकालो

३६. प   ता कहं ते जोगस्स आई ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता अभियी-सवणा खलु दुवे णक्खत्ता, पच्छाभागा समखित्ता[1], साइरेगएगूणचत्तालिसइ मुहुत्ता[2] तप्पढमयाए साय[3] चदेण सद्धि जोय जोएति[4], तओ पच्छा अवर साइरेगं दिवसं ।

एवं खलु अभियी-सवणा दुवे णक्खत्ता एगराइ एग च साइरेग दिवसं चंदेण सद्धि जोयं जोएति,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति,[5]

जोय अणुपरियट्टित्ता सायं चंद धणिट्ठाण समप्पेंति,

२. ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते[6] तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं ।

एव खलु धणिट्ठा णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चद सयभिसयाणं समप्पेइ,

---

१ "इह अभिजिन्नक्षत्र न समक्षेत्र, नाप्यपार्धक्षेत्र, नापि द्वयर्द्धक्षेत्र,
केवल श्रवणनक्षत्रेण सह सम्वद्धमुपात्तमित्यभेदोपचारात् तदपि ममक्षेत्रमुपकल्प्य ममक्षेत्रमित्युक्तम्"

२ "सातिरेका नवमुहूर्ता अभिजित् त्रिशन्मुहूर्ता श्रवणस्येत्युभयमीलने यथोक्त मुहूर्तपरिमाण भवति ।"

३ "साय-विकालवेलाया, इह दिवमस्य कतितमाच्चरमाद् भागादारभ्य यावद्रात्रे कतितमो भागो यावन्नाद्यापि परिस्फुट-नक्षत्र-मण्डलालोकस्तावान् कालविशेष सायमिति विवक्षितो द्रष्टव्य "

४ "इहाभिजिन्नक्षत्र यद्यपि युगस्यादौ प्रातश्चन्द्रेण सह योगमुपैति, तथापि श्रवणेन सह सम्वद्धमिह तद्विक्षित, श्रवण-नक्षत्र च मध्याह्नादूर्ध्वमपसरति दिवसे चन्द्रेण सह योगमुपादत्ते, ततस्तत्साहचर्यात् तदपि माय समये चन्द्रेण युज्यमान विवक्षित्वा सामान्यत साय चन्द्रेण" सद्धि जोय जोएति" इत्युक्तम् ।
अथवा युगस्यादिमतिरिच्यान्यदा वाहुल्यमधिकृत्येदमुक्त ततो न कश्चिद्दोष ।" —टीका

५ "एतावन्त काल योग युक्त्वा तदनन्तर योगमनुपरिवर्तयते, आत्मनश्चयावयत इत्यर्थ ?"
—सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका से उद्धृत,

६ "समक्षेत्रं त्रिशन्मुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग, यदि तीस मुहूर्त पर्यन्त रहता है तो वह "समक्षेत्र-योग" कहा जाता है ।

३. ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तभागे अवड्ढखेत्ते[1] पण्णरस-मुहुत्ते, तप्पढमयाए साय चंदेण सद्धि जोयं जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु सयभिसया णक्खत्ते, एग राइ च चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चद पुव्वपोट्ठवयाण समप्पेइ,

४. ता पुव्वा-पोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वं भागे[2] समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवर राइ,

एवं खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते एग च दिवसं एगं च राइ चंदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोयं जोएत्ता अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चदं उत्तरापोट्ठव्वयाण समप्पेइ,

ता उत्तरापोट्ठव्वया खलु णक्खत्ते उभय भागे[3] दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते[4], तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धि जोय जोएइ, अवरं च राइ तओ पच्छा अवर च दिवस ।

एवं खलु उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चदं रेवईण समप्पेइ,

ता रेवई खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर दिवस,

एवं खलु रेवई णक्खत्ते एगं च राइ, एगं च दिवस चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चद अस्सिणीणं समप्पेइ,

७. ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं,

एव खलु अस्सिणी णक्खत्ते, एगं च राइं, एगं च दिवस, चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

---

१ "अपार्ध-क्षेत्र पञ्चदशमुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग, यदि पन्द्रह मुहूर्त पर्यन्त रहता है, तो वह "अपार्ध-क्षेत्र-योग" अर्थात् "आधा क्षेत्र योग" कहा जाता है ।

२ "इह पूर्वप्रोष्ठपपदानक्षत्रस्य प्रातश्चन्द्रेण सह प्रथमतया योग प्रवृत्त इतीद पूर्वभागमुच्यते ।"

३ "इद मिनोत्तराभद्रपदाख्य नक्षत्रमुक्तप्रकारेण प्रातश्चन्द्रेण सहयोगमधिगच्छति । केवल प्रथमान् पचदश-मुहूर्तान् अधिकानपनीय समक्षेत्र कल्पयित्वा यदा योगश्चिन्त्यते तदा नक्तमपि योगेऽस्तीत्युभयभागमवसेयम् ।

४ "उत्तरप्रोष्ठपदानक्षत्र खलूभयभाग द्व्यर्धक्षेत्र पचचत्वारिंशन्मुहूर्त्त, तत्प्रथमतया-योगप्रथमतया प्रातश्चन्द्रेण सार्द्ध योग युनक्ति, तच्च, तथायुक्त सत् त सकलमपि दिवसमपर च रात्रिं तत पश्चादपर दिवस यावद्वर्तते ।

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता, सायं चंद भरणीण समप्पेइ ।

८ ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्त भागे,[1] अवड्ढखेत्ते, पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवर दिवस.

एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं च राइ चदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चदं कत्तियाणं समप्पइ ।

९ ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्व भागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोय जोएइ, तओ पच्छाराइ,

एव खलु कत्तिया णक्खत्ते, एग च दिवस एगं च राइं चदेण सद्धिं जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चंद रोहिणीण समप्पेइ[2] ।

---

१ "योगमनुपरिवर्त्य साय परिस्फुटनक्षत्रमण्डलालोकसमये भरण्या समर्पयति, इद च भरणी नक्षत्रमुक्तयुक्त्या रात्रौ चन्द्रेण सह योगमुपैति, ततो नक्त भागमवसेयम्"

२ इसके आगे मूल प्रति मे—"सक्षिप्तवाचना" का पाठ इस प्रकार है—

१० "रोहिणी जहा उत्तराभद्दवया",
११ मगसिर जहा धणिट्ठा,
१२. अद्दा जह सतभिसया,
१३ पुणव्वसू जहा उत्तराभद्दवया,
१४ पुस्सो जहा धणिट्ठा,
१५ असलेसा जहा सतभिसया,
१६ महा जहा पुव्वाफग्गुणी,
१७ पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया,
१८ उत्तराफग्गुणी जहा उत्तराभद्दवया,
१९-२० हत्थो, चित्ता य जहा धणिट्ठा,
२१ साती जहा सतभिसया,
२२ विसाहा जहा उत्तराभद्दवया,
२३. अणुराहा जहा धणिट्ठा,
१४ जिट्ठा जहा सतभिसया,
२५ मूलो जहा पुव्वाभद्दवया,
२६. पुव्वासाढा जहा पुव्वाभद्दवया
२७. उत्तरासाढा जहा उत्तराभद्दवया

१०. ता रोहिणी खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए, पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राई तओ पच्छा अवर दिवस,

एव खलु रोहिणी णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद मिगसर समप्पेइ।

११. ता मिगसिरे खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एवं खलु मिगसिरे णक्खत्ते एग च राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चंद अद्दाए समप्पेइ।

१२. ता अद्दा खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एवं खलु अद्दा णक्खत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुणव्वसूण समप्पेइ।

१३. ता पुणव्वसू खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राइ तओ पच्छा अवर च दिवस,

एव खलु पुणव्वसू णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइं चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता सायं चद पुस्सस्स समप्पेइ।

१४. ता पुस्से खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समखेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोयइ, तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एवं खलु पुस्से णक्खत्ते एग च राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता साय चद असिलेसाए समप्पेइ।

१५. ता असिलेसा खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पन्नरसमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एवं खलु असिलेसा णक्खत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टेइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चंद मघाण समप्पेइ ।

१६ ता मघा खलु णक्खत्ते पुव्वभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवर राइं,

एव खलु मघा णक्खत्ते एग च दिवस एग च राइं चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोय जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चदं पुव्वाफग्गुणीणं समप्पेइ ।

१७. ता पुव्वाफग्गुणी खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर राइ,

एवं खलु पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते एग च दिवस एग च राइ चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोय जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टेइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद उत्तराफग्गुणीण समप्पेइ ।

१८ ता उत्तरा-फग्गुणी खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राइ तओ पच्छा अवर च दिवस,

एव खलु उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ च देण सद्धि जोय जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चंदं हत्थं समप्पेइ ।

१९. ता हत्थे खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवर च दिवसं,

एव खलु हत्थणक्खत्ते एग च राइं, एग च दिवस चदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता साय चंदं चित्ताए समप्पेइ ।

२० ता चित्ता खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु चित्ता णक्खत्ते एग च राइ, एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ

जोयं अणुपरियट्टित्ता साय चदं साईए समप्पेइ ।

२१ ता साई खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चदेण सद्धि जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एव खलु साई णक्खत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद विसाहाण, समप्पेइ ।

२२. ता विसाहा खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोयं जोएइ-अवर च राइं तओ पच्छा अवर दिवसं,

एवं खलु विसाहा णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ
जोयं अणुपरियट्टित्ता साय चंद अणुराहाए समप्पेइ ।

२३ ता अणुराहा खलु णक्खत्ते पच्छभाग समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइ अवरं च दिवस,

एव खलु अणुराहा णक्खत्ते एग राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोयं जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोयं अणुपरियट्टित्ता साय चदं जिट्ठाए समप्पेइ ।

२४ ता जेट्ठा खलु णक्खत्ते नत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु जिट्ठा णक्खत्ते एग दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,
जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चद मूलस्स समप्पेइ ।

२५ ता मूले खलु णक्खत्ते पुव्वभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवर च राइं,

एव खलु मूल णक्खत्त एग च दिवस च राइ च चदेण सद्धि जोयं जोएइ,
जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,
जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चदं पुव्वासाढाण समप्पेइ ।

२६ ता पुव्वासाढा खलु णक्खत्ते पुव्व भागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ तओ पच्छा अवर च राइ,

एव खलु पुव्वासाढा णक्खत्ते एगं च दिवसं एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,
जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं उत्तरासाढाणं समप्पेइ ।

२७. ता उत्तरासाढा खलु णक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवर च दिवसं,

एवं खलु उत्तरासाढा णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चंदेण सद्धि जोयं जोएइ,

जोय जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चद अभिई सवणाण समप्पेइ ।[1] □□

---

१ नूत्राक १० से २७ पर्यन्त मे मूलपाठ सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका से यहाँ उद्धृत किया है ।

दशम प्राभृत

[पंचम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं कुलोवकुलाइं.—

३७ ता कहं ते कुला (उवकुला, कुलोवकुला) ? आहिए त्ति वएज्जा ।[1]

तत्थ खलु इमे बारस कुला, बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ।

बारसकुला पण्णत्ता त जहा—

१. धणिट्ठा कुल २. उत्तराभद्दवया कुल ३. अस्सिणी कुल ४. कत्तियाकुल ५. मिगसिरकुल ६ पुस्सकुल ७. महाकुल ८. उत्तराफग्गुणी कुल ६ चित्ताकुल १० विसाहाकुलं ११ मूलकुलं १२ उत्तरासाढाकुलं ।

बारस उवकुला पण्णत्ता त जहा—

१. सवणो उवकुल २ पुव्वापोट्ठवयाउवकुल ३ रेवई उवकुल ४ भरणी उवकुल ५ रोहिणी उवकुल ६. पुणव्वसु उवकुल ७ अस्सेसा उवकुल ८ पुव्वाफग्गुणी उवकुल ६ हत्थो उवकुल १० साती उवकुलं ११ जेट्ठा उवकुल १२ पुव्वासाढा उवकुल ।

चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता तं जहा—

१ अभियी कुलोवकुल २ सतभिसया कुलोवकुलं ६ अद्दा कुलोवकुल ४ अणुराहा कुलोवकुलं ।

---

१ सूर्यप्रज्ञप्ति मे प्रस्तुत प्रश्नसूत्र खण्डित है, अत कोष्ठक के अन्तर्गत "उवकुला, कुलोवकुला" अकित करके उसे पूरा किया है, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १६१ मे, यह प्रश्नसूत्र इस प्रकार है—
प्र० कति ण भते ! कुला ? कति उवकुला ? कति कुलोवकुला पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! बारस कुला बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ।
शेष पाठ सूर्यप्रज्ञप्ति के समान है, किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के इस प्रश्नोत्तर सूत्र मे बारह कुल नक्षत्रो के नामो के बाद कुलादि के लक्षणो की सूचक एक गाथा दी गई है जो सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका मे भी उद्धृत है और यह गाथा प्रस्तुत सकलन मे भी उद्धृत है । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सकलनकर्ता यदि यह गाथा प्रस्तुत सूत्र के प्रारम्भ मे या अन्त मे देते तो अधिक उपयुक्त रहती ।

गाहा—मासाण परिणामा, होंति कुला, उवकुला उ हेट्ठिमगा ॥
होंति पुण कुलोवकुला, अभियी-सयभिसय-अद्द-अणुराहा । —जबु वक्ख ७, सु १६१

"कि कुलादीना लक्षणम् ?
उच्यते-मासाना परिणामानि-परिसमापकानि भवन्ति कुलानि, कोऽर्थ ? इह यैर्नक्षत्रै प्रायो मासाना परिसमाप्य उपजायन्ते माससदृशनामानि च तानि नक्षत्राणि कुलानीति प्रसिद्धानि ।"
"कुलानामधस्तनानि नक्षत्राणि श्रवणादीनि उपकुलानि, कुलाना समीपमुपकुल तत्र वर्तन्ते यानि नक्षत्राणि तान्युपचारादुपकुलानि ।"
"यानि कुलानामुपकुलाना चाधस्तनानि तानि कुलोपकुलानि ।"
—जम्बू टीका

दुवालसासु पुण्णमासिणीसु णक्खत्त-संजोग-सखा

३८ प ता कह ते पुण्णिमासिणी ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ तत्थ खलु इमाओ बारस पुण्णिमासिणीओ, बारस अमावासाओ पण्णत्ताओ तंजहा—
१ साविट्ठि, २ पोट्ठवई, ३ आसोया, ४ कत्तिया, ५, मग्गसिरी, ६ पोसी ७ माही, ८ फग्गुणी, ९ चेती, १० विसाही, ११. जेट्ठामूली, १२ आसाढी।

१ प ता साविट्ठिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा—१. अभिई, २ सवणो, ३. घणिट्ठा।

२ प ता पोट्ठवइण्ण पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा—१ सतभिसया, २. पुव्वापोट्ठवया, ३ उत्तरापोट्ठवया।

३ प ता आसोइण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा—१. रेवती, २ अस्सिणी य।

४ प ता कत्तिइण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा—१ भरणी, २ कत्तिया य।

५ प ता मग्गसिरिं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा—१ रोहिणी, २ मग्गसिरो य।

६ प ता पोसिण्ण पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा—१ अद्दा, २ पुणव्वसू, ३ पुस्सो।

७ प ता माहिण्ण पुण्णमासिं कति णक्खत्ता, जोएति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएति, तंजहा—१ अस्सेसा, २ महा य।

८ प ता फग्गुणिणं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएति, तंजहा—१ पुव्वाफग्गुणी, २ उत्तराफग्गुणी य।

९ प ता चित्तिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१ हत्थो, २ चित्ता य।

१० प ता विसाहिण्ण पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएति, तंजहा—१ साती, २. विसाहा य।

११ प ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१ अणुराहा, २. जेट्ठा, ३ मूलो।

१२ प ता आसाढिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?

उ ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१ पुव्वासाढा, २ उत्तरासाढा य। □□

दशम प्राभृत

[छठा प्राभृतप्राभृत]

दुवालसासु पुण्णमासिणीसु कुलाइ-णक्खत्त-जोगसखा

३६ १. प. ता साविट्ठिण्ण पुण्णिम ण किं कुल जोएइ उवकुलं जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुल जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुल जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएइ,

साविट्ठिण्णि पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ, कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्व सिया।

२. प ता पोट्ठवइण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ ?

उ. ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

१. कुल जोएमाणे उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,

३ कुलोवकुल जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएइ,

पोट्ठवइण्णं पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ,[1] कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता पुट्ठवया पुण्णिमा जुत्ता ति वत्तव्व सिया।

३ प ता आसोइण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,

१. कुल जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे रेवई णक्खत्ते जोएइ,

---

१ शेषमपि सूत्र निगमनीय "एव नेयव्वाओ, जाव आसाढी-पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया, णवर पोषी पौर्णमासी, ज्येष्ठामूली च पौर्णमासी कुलोपकुलमपि युनक्ति, श्रवणेपासु च पौर्णमासीषु कुलोपकुल नास्तीति परिभाव्य वक्तव्या । —सूर्य टीका

आसोइण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता आसोइण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया ।

४ प. ता कत्तिइण्ण पुण्णिमं कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१ कुल जोएमाणे कत्तिआ णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे भरणी णक्खत्ते जोएइ,

कत्तिइण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइण्ण पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया ।

५ प ता मागसिरी पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१ कुल जोएमाणे मग्गसिर णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ,

मागसिरी पुण्णिमं कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता मागसिरी पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया ।

६ प ता पोसिण्ण पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

१ कुल जोएमाणे पुस्से णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुल जोएमाणे पुणव्वसू णक्खत्ते जोएइ,

३ कुलोवकुल जोएमाणे अद्दा णक्खत्ते जोएइ,

पोसिण्ण पुण्णिमं कुल वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोसिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया ।

७. प ता माहिण्ण पुण्णिमं कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,

१ कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे असेसा णक्खत्ते जोएइ,

माहिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता माहिण्णं पुण्णिमं जुत्ते त्ति वत्तव्व सिया ।

८ प ता फग्गुणीणं पुण्णिमं किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ नो लभइ कुलोवकुल,

१. कुलं जोएमाणे उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ,

फग्गुणीणं पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता फग्गुणीण पुण्णिम जुत्ते त्ति वत्तव्व सिया,

९ प ता चित्तिण्णं पुण्णिमं किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,

१ कुलं जोयमाणे चित्ता णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोयमाणे हत्थ णक्खत्ते जोएइ,

चित्तिण्णं पुण्णिमं कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता चित्तिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया ।

१० प. ता विसाहिण्ण पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,

१ कुलं जोएमाणे विसाहा णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे साती णक्खत्ते जोएइ,

विसाहिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता विसाहिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया ।

११ प ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ ता कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

१ कुल जोएमाणे मूले णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

३ कुलोवकुल जोएमाणे अणुराहा णक्खत्ते जोएइ,

जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

कलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया,

१२ प ता आसाढिण्णं पुण्णिमं किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,

१. कुलं जोएमाणे उत्तरासाढा णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे पुव्वासाढा णक्खत्ते जोएइ,

आसाढिण्णं पुण्णिमं कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता आसाढिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया,

दुवालसासु अमावासासु णक्खत्तजोग-सखा—

१ प ता साविट्ठि ण अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा-अस्सेसा य मघा य,

२ प ता पोट्ठवइं ण अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति, तं जहा-पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी,

३ प ता आसोइं ण अमावासं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति तंजहा-हत्थो, चित्ता य,

४ प ता कत्तिइ ण अमावासं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति तंजहा—साती, विसाहा य,

५ प ता मग्गसिरि णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ तिण्णि णक्खत्ता जोएति तजहा-अणुराधा जेट्ठा-मूलो य,

६ प ता पोसिं णं अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति तंजहा-पुव्वासाढा, उत्तरासाढा,

७ प ता माहिं ण अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ तिण्णि णक्खत्ता जोएति, तजहा-१ अभीयी, २ सवणो, ३, धणिट्ठा,

८ प ता फग्गुणी ण अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति तजहा-१ सतभिसया, २ पुव्वापोट्ठवया ।

९ प ता चेतिं ण अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति तजहारेवई, अस्सिणी य,

१० प. ता विसाहिं णं अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएति तजहा-भरणी, कत्तिया य,

११ प ता जेट्ठा-मूलिं ण अमावास कति णक्खत्ता जोएति ?

उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, त जहा-रोहिणी, मग्गसिरं च,

१२ प ता आसाढिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएति ?

उ तिण्णि णक्खत्ता जोएति, तंजहा-१ अद्दा, २ पुणव्वसू, ३ पुस्सो,

दुवालसासु अमावासासु कुलाइ-णक्खत्त-जोग-संखाः—

१ प ता साविट्ठि ण अमावास किं कुलं जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं,
१ कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुलं जोएमाणे असिलेसा जोएइ,
ता साविट्ठि ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी असावासा जुत्ता त्ति वत्तव्वं सिया ।

२ प ता पोट्ठवइं णं अमावासं किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुलं जोएमाणे उत्तराफग्गुणी जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे पुव्वाफग्गुणीं जोएइ,
पुट्ठवइं णं अमावास कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवया अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया ।

३. प. ता आसोइ ण अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोइए ?
उ कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुलं जोएमाणे चित्ता णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे हत्थ णक्खत्ते जोएइ,
ता आसोइ ण अमावासं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता आसोई अमावासा जुत्ता त्ति वत्तव्व सिया ।

४ प कत्तिइ णं अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे विसाहा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुलं जोएमाणे साई णक्खत्ते जोएइ,
ता कत्तिइं ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइ ण अमावास जुत्तत्तिवत्तव्वं सिया ।

५ प. ता मग्गसिरिं ण अमावास किं कुलं जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,
१ कुलं जोएमाणे मूलणक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

३ कुलोवकुल जोएमाणे अणुराहा णक्खत्ते जोएइ,

ता मग्गसिरिण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता, मग्गसिरि ण अमावासं जुत्तत्तिवत्तव्व सिया।

६ प पोषि ण अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ उ कुल वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,

१ कुलं जोएमाणे पुव्वासाढा णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे, उत्तरासाढा णक्खत्ते जोएइ,

ता पोषि णं अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोषि ण अमावासा जुत्तति वत्तव्व सिया।

७. प ता माहिं णं अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

१ कुल जोएमाणे अभीयी णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ,

३ कुलोवकुल जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

ता माहिं ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता माहिण अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया।

८. प ता फग्गुणि अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,

१ कुल जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,

ता फग्गुणी अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता फग्गुणि अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

९. प ता चेत्तिं अमावासं किं कुल जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ लब्भइ कुलोवकुल,

१ कुल जोएमाणे रेवती णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ,

ता चेत्ति अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता चेत्ति अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

१० प ता वेसाहिं अमावास किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुल,

१ कुल जोएमाणे भरणि णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुल जोएमाणे कत्तिया णक्खत्ते जोएइ,

ता वेसाहिं अमावास कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता वेसाहिं अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।

११. प. ता जेट्ठामूली अमावास किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ उवकुल वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१ कुल जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे मग्गसिरे णक्खत्ते जोएइ,

ता जेट्ठामूली अमावास कुलं वा जोएइ उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठामूली अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।

१२. प ता आसाढि अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,

१ कुल जोएमाणे अद्दा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुल जोएमाणे पुणव्वसू णक्खत्ते जोएइ,

३ कुलोवकुल जोएमाणे पुस्से णक्खत्ते जोएइ,

ता आसाढि अमावास कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता, आसाढि अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया । □□

दशम प्राभृत

[सप्तम प्राभृतप्राभृत]

दुवालस पुण्णिमासु अमावासासु य चदेण-णक्खत्तसंजोगो

४० १ प ता कह ते सण्णिवाए आहिए त्ति वएज्जा ?

उ [क] ता जया णं साविट्ठी पुण्णिमा भवइ,
तया णं माही अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं माही पुण्णिमा भवइ,
तया ण साविट्ठी अमावासा भवइ ।

२ [क] ता जया ण पुट्ठवई पुण्णिमा भवइ,
तया णं फग्गुणी अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण फग्गुणी पुण्णिमा भवइ,
तया णं पुट्ठवई अमावासा भवइ ।

३ [क] ता जया ण आसोई पुण्णिमा भवइ,
तया ण चेत्ती अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं चेत्ती पुण्णिमा भवइ,
तया ण आसोई अमावासा भवइ ।

४ [क] ता जया णं कत्तियी पुण्णिमा भवइ,
तया णं वेसाही अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण वेसाही पुण्णिमा भवइ,
तया णं कत्तिग्गी अमावासा भवइ ।

५ [क] ता जया ण मग्गसिरी पुण्णिमा भवइ,
तया ण जेट्ठामूली अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण जेट्ठामूली पुण्णिमा भवइ
तया ण मग्गसिरी अमावासा भवइ ।

६ [क] ता जया णं पोसी पुण्णिमा भवइ,
तया णं आसाढी अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण आसाढी पुण्णिमा भवइ,
तया णं पोसी अमावासा भवइ ।

□□

दशम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं संठाणं

४१. १ प. ता कह ते णक्खत्तसंठिई आहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभीयी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ गोसीसावलि-सठिए पण्णत्ते,

२ प. ता सवणे णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ. काहार-संठिए पण्णत्ते,

३ प ता धणिट्ठा णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ सउणीपलीणग-संठिए पण्णत्ते,

४ प ता सयभिसया णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ पुप्फोवयारसंठिए पण्णत्ते,

५. प ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ अवड्ढवाविसठिए पण्णत्ते ?

६ प ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ अवड्ढवावि-संठिए पण्णत्ते,

७ प ता रेवई णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ णावासंठिए पण्णत्ते,

८ प ता अस्सिणी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ आसक्खध-सठिए पण्णत्ते,

९ प ता भरणी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ भग-सठिए पण्णत्ते,

१० प ता कत्तिया णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ छुरघरग-सठिए पण्णत्ते,

११ प ता रोहिणी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ सगडुद्धि-संठिए पण्णत्ते,

१२ प ता मियसिरा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ मगसीसावलि-सठिए पण्णत्ते,

१३ प ता अद्दा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ रुहिरबिंदु-सठिए पण्णत्ते,

१४ प ता पुणव्वणक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ तुला-सठिए पण्णत्ते,

१५ प ता पुस्से णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ वद्धमाण-सठिए पण्णत्ते,

१६ प ता अस्सेसा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ पडाग-सठिए पण्णत्ते,

१७ प. ता महा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. पागार-सठिए पण्णत्ते,

१८. प ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ अद्धपलियक-सठिए पण्णत्ते,

१९. प. ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. अद्धपलियक-सठिए पण्णत्ते,

२०. प ता हत्थ णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. हत्थ-सठिए पण्णत्ते,

२१. प. ता चित्ता णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ मुहफुल्ल-सठिए पण्णत्ते,

२२ प ता साई णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. खीलग-संठिए पण्णत्ते,

२३. प ता विसाहा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. दामणि-सठिए पण्णत्ते,

२४. प. ता अणुराहा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ एगावलि-संठिए पण्णत्ते,

२५ प ता जेट्ठा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ गयदंत-संठिए पण्णत्ते,

२६ प ता मूले णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. विच्छुयलंगोलसंठिए पण्णत्ते,

२७ प ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. गयविक्कम-सठिए पण्णत्ते,

२८ प्र ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ. सीहनिसाइयसंठिए पण्णत्ते ।[1] □□

---

१ प एएसि ण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभीई णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! गोसीसावलिसठिए पण्णत्ते,
गाहाओ—
१ गोसीसावलि, २ काहार, ३ सउणी, ४ पुप्फोवयार, ५-६ वावी य ।
७ णावा, ८ आसक्खधग, ९ भग, १० छुरघरए, ११ अ सगडुद्धी ॥
१२ मिगसीसावली, १३ रुहिरविंदु, १४ तुला, १५ वद्धमाणग, १६ पडागा ।
१७ पागारे, १८-१९ पलिअंके, २० हत्थे, २१ मुहफुल्लए चेव ॥
२२ खीलग, २३ दामणी, २४ एगावली य, २५ गयदत, २६ विच्छुयलगुले य ।
२७ गयविक्कमे य तत्तो, २८ सीहनिसीही य सठाणा ॥ —जबु वक्ख ७, सु. १६०
सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति मे ये गाथाए उद्धृत हैं—
पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद के सस्थान तथा पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी के सस्थान समान माने गए हैं किन्तु पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा के सस्थान भिन्न भिन्न माने गए हैं ।
सस्थानो की इस विभिन्नता का हेतु इस प्रकार है—
पूर्वभद्रपदाया अर्द्धवापीसस्थान, उत्तरभद्रपदाया अप्यर्धवापी सस्थान, एतदर्द्धवापीद्वयमीलनेन परिपूर्णा वापी भवति, तेन सूत्रे वापीत्युक्तम् ।
पूर्वफल्गुन्या अर्द्धपल्यकसस्थान, उत्तरफल्गुन्या अप्यर्धपल्यक सस्थान, अत्रापि अर्द्धपल्यकद्वयमीलनेन परिपूर्णकल्यको भवति, तेन सख्यान्यूनता न । —जबु वक्ख ६, सु १६० वृत्ति

दशम प्राभृत

[नवम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं तारग्गसंखा—

सूत्र ४२-१. प ता कहं ते तारग्गे आहिए त्ति वएज्जा ?

ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[1]

२ सवणे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[2]

३ प धणिट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. पंचतारे पण्णत्ते,[3]

४. प. सतभिसया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ सततारे पण्णत्ते,[4]

---

१ क-प एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ गोयमा ! तितारे पण्णत्ते,

एवं णेयव्वा जस्स जइयाओ ताराओ,

इमं च तं तारग्गं,

गाहाओ —

तिग-तिग-पंचग-सय-दुग-बत्तीसग-तिग तह तिग च ।

छ, पंचग-तिग-एक्कग-पंचग-तिग-छक्कग चेव ॥ १ ॥

सत्तग-दुग-दुग-पंचग-एक्केक्कग-पंच-चउ-तिग चेव ।

एक्कारसग-चउक्क, चउक्क चेव तारग्गं ॥ २ ॥ —जंबु. वक्ख ७, सु १५९

ख अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते,

एवं सवणो, अस्सिणी भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा —ठाण अ ३, उ ३, सु २२७

अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते, —सम. स ३, सु ९

२ क ठाण अ ३, उ ३, सु २२७

ख सम स ३, सु. ९

३ क पंच णक्खत्ता पंचतारा पण्णत्ता, तं जहा-१. धणिट्ठा, २. रोहिणी, ३ पुणव्वसू ४ हत्थो,

५ विसाहा, —ठाण अ ५, उ ३, सु ४७३

ख सम स ५, सु. १३

४ सतभिसयाणक्खत्ते एगसयतारे पण्णत्ते, —सम. स. १००, सु २

५ प पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. दुतारे पण्णत्ते,[५]

६. प उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. दुतारे पण्णत्ते,[६]

७ प रेवई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ बत्तीसइतारे पण्णत्ते,[७]

८ प अस्सिणी, णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,[८]

९ प भरणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,[९]

१०. प. कत्तिया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. छतारे पण्णत्ते,[१०]

११. प रोहिणीणक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. पंचतारे पण्णत्ते,[११]

१२ प मिगसिरे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,[१२]

---

५ क-पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते, —ठाण अ. २ उ ४, सु ११०
ख- मम म २, सु ९

६ क-उत्तराभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते, — ठाण अ २, उ ४, सु ११०
ख- मम म २, सु ९

७ रेवईणक्खत्ते बत्तीसइ तारे पण्णत्ते, —सम म ३२, सु ५

८ क-ठाण, अ ३, उ ३, सु २२७
ख-मम स ३, सु ९

९ क-ठाण, अ ३ उ ३, सु २२७
ख-सम म ३, सु ९

१० कत्तिया णक्खत्ते छतारे पण्णत्ते
क-ठाण अ ६, सु ५३९
ख-सम म ६ सु ७

११ क-ठाण अ ५, उ ३, सु ४७३
ख-सम स ५, सु १३

१२ क-ठाण अ ३, उ ३, सु २२७
ख-सम स ३, सु ९

१३ प. अद्दा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ एगतारे पण्णत्ते,[13]

१४. प. पुणव्वसू णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. पंचतारे पण्णत्ते,[14]

१५ प. पुस्से णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,[15]

१६. प. अस्सेसा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. छतारे पण्णत्ते,[16]

१७ प मघा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ सत्ततारे पण्णत्ते,[17]

१८ प पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. दुतारे पण्णत्ते,[18]

१९ प. उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ दुतारे पण्णत्ते,[19]

---

१३. क-अद्दा णक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते,
ठाणं, अ १, सु ५५
ख-सम स १, सु २३

१४ क-ठाण अ ५, उ. ३, सु ४७३
ख-सम स ५, सु १३

१५. क-ठाण अ. ३ उ ३, सु २२७
ख-सम स ३, सु. ९

१६ क-ठाण, अ ६, सु ५३९
ख-सम स ६, सु ७

१७ क-मघा णक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते
ठाण, अ. ७ सु ५८९
ख-सम स ७, सु ७

१८ क-ठाण अ २, उ ४, सु ११०
ख-सम. स २, सु. ६

१९ क-ठाण ठा २, उ ४, सु. ११०
ख-सम स २, सु ६

२० प हत्थ णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ पंचतारे पण्णत्ते,[२०]

२१. प चित्ता णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ एकतारे पण्णत्ते,[२१]

२२ प. साती णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ एकतारे पण्णत्ते,[२२]

२३ प विसाहा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ पंचतारे पण्णत्ते,[२३]

२४ प अणुराहा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ पंचतारे पण्णत्ते,[२४]

२५ प. जेट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. तितारे पण्णत्ते,[२५]

२६ प मूले णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. एगतारे पण्णत्ते,[२६]

---

२० क-ठाण, ठा ५, उ ३, सु ४७३
ख-सम म ५, सु १३

२१ क-ठाण, ठा १, सु ५५
ख-सम म १, सु ५५

२२ क-ठाण, ठा १, सु ५५
ख-सम १, सु २३

२३ क-ठाण, ठा ५, उ ३, सु ४७३
ख-सम म ५, सु १२

२४ क-अणुराहा णक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते —ठाण अ ४ उ ४ सु ३८६
ख-सम ४ सु ७

२५ क-ठाण, ठा ३, उ ३, सु २२७
ख-सम म ३, सु ९

२६ मूलनक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते —सम ११ सु ५

२७ प. पुव्वासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. चउतारे पण्णत्ते,[२७]

२८ प उत्तरासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ चउतारे पण्णत्ते ।[२८]

□□

---

२७ क-ठाण, ठा ४, उ ४, सु ३८६
ख-सम स ४, सु ८

२८ क-ठाण, ठा ४, उ ४, सु ३८६
ख-सम स ४, सु ९

दशम प्राभृत

[दशम प्राभृतप्राभृत]

वास-हेमंत-गिम्ह-राइदियाण—

४३. प. १. क. ता कह ते णेता आहिए ति वएज्जा ?

ख ता वासाण पढमं मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ उत्तरासाढा, २ अभिई, ३ सवणो, ४ धणिट्ठा।

१ उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४. धणिट्ठा एग अहोरत्तं णेइ,

तंसि ण माससि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ चत्तारि य अगुलाणि पोरिसी भवइ।

प २. ता वासाण वितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ धणिट्ठा, २. सतभिसया, ३ पुव्वपोट्ठवया, ४. उत्तरपोट्ठवया,

१. धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. सतभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ पुव्वपोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४. उत्तरपोट्ठवया एगं अहोरत्तं णेइ,

तसि णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ।

प. ३ ता वासाण ततिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ उत्तरपोट्ठवया, २. रेवई, ३. अस्सिणी,

१. उत्तरपोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ अस्सिणी एगं अहोरत्त णेइ,

तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहत्थाइ तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ।

प ४. ता वासाण चउत्थं मास कति णक्खत्ता णेंति ?
उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा—१ अस्सिणी, २ भरणी, ३. कत्तिया,
१ अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ कत्तिया एगं अहोरत्तं णेइ,
तंसि च णं मासंसि सोलसगुलाए पोरिए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि अगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. १. ता हेमताण पढम मास कति णक्खत्ता णेंति ?
उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा—१ कत्तिया, २. रोहिणी, ३. सठाणा,
१. कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२. रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३. संठाणा एगं अहोरत्त णेइ,
तसि च ण मासंसि वीसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. २. ता हेमताण बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?
उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तजहा—१ सठाणा, २. अद्दा, ३. पुणव्वसू, ४. पुस्सो,
१. संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ अद्दा सत्त अहोरत्ते णेइ,
३. पुणव्वसू अट्ठ अहोरत्ते णेइ,
४ पुस्से एगं अहोरत्तं णेइ,
तंसि च णं मासंसि वीसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइ चत्तारि पदाइ पोरिसी भवइ ।

प. ३. ता हेमंताण ततिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?
उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा—१. पुस्सो, २ अस्सेसा, ३. महा,
१ पुस्सो चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेइ,
३ महा एग अहोरत्त णेइ,
तंसि च ण मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइ अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प ४ ता हेमंताणं चउत्थ मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति त जहा—१. मघा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी,

१ मघा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ उत्तराफग्गुणी एग अहोरत्त णेइ,

तसि च णं मासंसि सोलस अगुलाइ पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प. १. ता गिम्हाणं पढमं मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा-१. उत्तराफग्गुणी, २. हत्थो, ३. चित्ता,

१. उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. चित्ता एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण मासंसि दुवालसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइ य तिण्णि पयाइ पोरिसी भवइ ।

प. २. ता गिम्हाणं वितिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा-१. चित्ता, २ साई, ३ विसाहा

१. चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ साई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ विसाहा एग अहोरत्ते णेइ,

तसि च ण मासंसि अट्ठ गुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइ अट्ठ अंगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प ३ गिम्हाणं ततियं मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति त जहा—१ विसाहा, २ अणुराहा, ३ जेट्ठामूलो,

१ विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ अणुराहा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. जेट्ठामूलो एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च ण मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चत्तारि अंगुलाणि पोरिसी भवइ ।

प ४. ता गिम्हाण चउत्थ मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा—१ मूलो, २. पुव्वासाढा, ३ उत्तरासाढा,

१. मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च ण मासंसि वट्टाए समचउरंससठियाए णग्गोधपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ।

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पदाइ पोरसीए भवइ । □□

दशम प्राभृत
[ग्यारहवां प्राभृत-प्राभृत]

चंदमग्गे णक्खत्तजोगसंखा—

४४. प ता कहं ते चंदमग्गा आहिए त्ति वएज्जा ?

उ १. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेण जोगं जोएंति,
२ अत्थि णक्खत्ता जे ण सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति,
३. अत्थि णक्खत्ता जे णं चदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दपि जोग जोएंति,
४ अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दपि जोगं जोएंति,
५. अत्थि णक्खत्ता जे ण चदस्स सया पमद्दं जोगं जोएति ।

प १. ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण—
कयरे णक्खत्ता जे ण सया चंदस्स दाहिणेण जोग जोएति ?
२ कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेण जोगं जोएंति ?
३. कयरे णक्खत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्द जोग जोएंति ?
४ कयरे णक्खत्ता जे णं चदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं जोगं जोएति ?
५ कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स सया पमद्द जोगं जोएति ?

उ १. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
तत्थ जे ण णक्खत्ता सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएति, ते ण छ, तंजहा—१ संठाणा, २ अद्दा, ३ पुस्सो, ४ अस्सेसा, ५ हत्थो, ६ मूलो,

२ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएंति, ते ण बारस, तंजहा—
१ अभिई, २. सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वभद्दवया, ६. उत्तरभद्दवया, ७ रेवई, ८ अस्सिणी, ९ भरणी, १० पुव्वफग्गुणी, ११. उत्तरफग्गुणी, १२ साती,

३ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति, ते णं सत्त, तंजहा—१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू, ४ महा, ५ चित्ता, ६ विसाहा, ७ अणुराहा,

४ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽवि पमद्द जोगं जोएति,
ताओ ण दो आसाढाओ सव्ववाहिरे मडले जोग जोएसु वा, जोएंति वा जोएस्सति वा,

५ तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं सया चदस्स पमद्द जोग जोएइ, सा ण एगा, जेट्ठा ।[1]

रवि-ससि-णक्खत्तेहिं अविरहियाण, विरहियाणं सामण्णाण य चदमंडलाण संखा—

४५. क ता एएसि णं पण्णरसण्ह चदमडलाणं—
अत्थि चदमंडला जे ण सया णक्खत्तेहिं अविरहिया,
ख अत्थि चदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया,
ग अत्थि चदमंडला जे णं रवि-ससि-णक्खत्ताण सामण्णा भवति,
घ अत्थि चदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ।

प क ता एएसि णं पण्णरसण्ह चदमडलाण—
कयरे चदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ?
ख कयरे चदमंडला जे ण सया णक्खत्तेहिं विरहिया ?
ग कयरे चदमंडला जे ण रवि-ससि-णक्खत्ताण सामण्णा भवति ?
घ कयरे चंदमंडला जे ण सया आदिच्चेहिं विरहिया ?

---

१ प १ एएसि ण भते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण—
कयरे णक्खत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएति ?
२ कयरे णक्खत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएति ?
३ कयरे णक्खत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्द जोग जोएति ?
४ कयरे णक्खत्ता जे ण सया दाहिणेण पमद्द जोग जोएति ?
५ कयरे णक्खत्ता जे ण सया चदस्स पमद्द जोग जोएति ?
उ १ गोयमा ! एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण—
तत्थ ण जे ते णक्खत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएति, ते ण छ, तजहा—१ सठाण, २ अद्द, ३ पुस्सो, ४ असिलेस, ५ हत्थो, ६ तहेव मूलो अ वाहिरओ वाहिर मडलस्स छप्पते णक्खत्ता,
२ तत्थ ण जे ते णक्खत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएति, ते ण वारस, तजहा—१ अभिई २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सयभिसया, ५ पुव्वभद्दवया, ६ उत्तरभद्दवया, ७ रेवई, ८ अस्सिणी, ९ भरणी, १० पुव्वफग्गुणी, ११ उत्तरफग्गुणी, १२ साती,
३ तत्थ ण जे ते णक्खत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणओऽवि, उत्तरओऽवि पमद्द जोग जोएति, ते ण सत्त, तजहा—१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू ४ मघा, ५ चित्ता, ६ विसाहा, ७ अणुराहा,
४ तत्थ ण जे ते णक्खत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणओ पमद्द जोग जोएति, ताओ ण दुवे आसाढाओ सव्व-वाहिरए मडले जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोएस्सति वा,
५. तत्थ ण जे से णक्खत्ता, जे ण सया चदस्स जोग जोएइ सा ण एगा जेट्ठा —जबु वक्ख ७, सु १५७

उ. क. ता एएसि णं पण्णरसण्ह चदमडलाणं—
तत्थ जे ते चंदमडला जे ण सया णक्खत्तेहि अविरहिया,
ते णं अट्ठ, तजहा—
१. पढमे चंदमंडले, २. ततिए चदमडले, ३ छट्ठे चंदमडले, ४. सत्तमे चंदमंडले,
५ अट्ठमे, चंदमंडले, ६ दसमे चदमंडले, ७ एकादसे चंदमडले, ८. पण्णरसमे चंदमडले,

ख तत्थ जे ते चदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहि विरहिया,
ते णं सत्त तंजहा—
१. वितिए चंदमंडले, २ चउत्थे चदमडले, ३ पचमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले.
५ वारसमे चदमडले, ६ तेरसमे चदमडले, ७. चउद्दसमे चंदमडले,

ग तत्थ जे ते चदमडला जे णं रवि-ससि-णक्खत्ताण सामण्णा भवंति, ते ण चत्तारि, तं जहा—
१ पढमे चदमडले, २ बीए चदमडले, ३. इक्कारसमे चदमंडले, ४ पन्नरसमे चदमडले,

घ तत्थ जे ते चदमंडला जे ण सया आदिच्चेहि विरहिया ते ण पंच तजहा—
१. छट्ठे चंदमडले, २ सत्तमे चदमडले, ३ अट्ठमे चदमंडले, ४. नवमे चंदमडले,
५. दसमे चंदमंडले। □□

दशम प्राभृत

[बारहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं देवया—

४६. प ता कहं ते णक्खत्ताण देवया आहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
अभीई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?

उ. बभदेवयाए पण्णत्ते,

२ प. ता सवणे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. विण्हुदेवयाए पण्णत्ते,

३ प ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ वसुदेवयाए पण्णत्ते,

४ प. ता सयभिसया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. वरुणदेवयाए पण्णत्ते,

५ प ता पुव्वपोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अजदेवयाए पण्णत्ते,

६ प ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अहिवड्ढि देवयाए[1] पण्णत्ते,

७ प ता रेवई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ पुस्सदेवयाए[2] पण्णत्ते,

८ प ता अस्सिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अस्सदेवयाए[3] पण्णत्ते,

९ प ता भरिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. जमदेवयाए पण्णत्ते,

---

१ अभिवृद्धि, अन्यत्र-अहिर्बुध्न इति ।
२ पूषा—पूषनामको देवो, न तु सूर्यपर्यायस्तेन रेवत्येव पौष्णमिति प्रसिद्धम् ।
३. अश्वनामको देव ।

१० प ता कत्तिया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अग्गिदेवयाए पण्णत्ते,

११ प ता रोहिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ पयावइदेवयाए[1] पण्णत्ते,

१२ प ता संठाणा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ सोमदेवयाए[2] पण्णत्ते,

१३ प. ता अद्दा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ रुद्ददेवयाए[3] पण्णत्ते,

१४ प ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अदितिदेवयाए पण्णत्ते,

१५ प पुस्से णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. वहस्सइदेवयाए पण्णत्ते,

१६ प. ता अस्सेसा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. सप्पदेवयाए पण्णत्ते,

१७ प ता महा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ पितिदेवयाए[4] पण्णत्ते,

१८ प. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ भगदेवयाए पण्णत्ते,

१९ प ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अज्जम[5] देवयाए पण्णत्ते,

२० प. ता हत्थे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ सुविया देवयाय[6] पण्णत्ते,

२१ प ता चित्ता णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. तट्ठेदेवयाए[7] पण्णत्ते,

---

१ प्रजापतिरिति ब्रह्मनामको देव, अय च ब्रह्मण पर्यायान् सहते, तेन ब्राह्ममित्यादि प्रसिद्धम्।
२ सोम —चन्द्रस्तेन सौम्य चान्द्रमसमित्यादि प्रसिद्धम्।
३. रुद्र —शिवस्तेन रौद्रा कालिनीति प्रसिद्धम्।
४ पितृनामा देव,
५ अर्यमा—अर्यमनामको देवविशेष,
६ सविता—सूर्य,
७ त्वष्टा—त्वष्ट्रनामको देवस्तेन त्वाष्ट्री—चित्रा इति प्रसिद्धम्।

२२ प ता साती णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ वाउदेवयाए पण्णत्ते,

२३ प ता विसाहा णक्खत्ते[1] किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ इदग्गीदेवयाए पण्णत्ते,

२४ प ता अणुराहा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ मित्तदेवयाए पण्णत्ते,

२५ प ता जेट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ इददेवयाए पण्णत्ते,

२६ प ता मूले णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ णिरइदेवयाए[2] पण्णत्ते,

२७ प ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ आउदेवयाए[3] पण्णत्ते,

२८ प ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ विस्सदेवयाए पण्णत्ते,[4]

---

१ क—विशाखा—द्विदैवतमिति प्रसिद्धम् ।
२ नैऋत —राक्षसस्तेन ।
३ आपो—जलनामा देवस्तेन पूर्वापाढा तोयमिति प्रसिद्धम् ।
४ विश्वेदेवास्त्रयोदश ।

क प एएसि ण भते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभीई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! वम्हदेवया पण्णत्ता,
एएण कमेण णेयव्वा अणुपरिवाडीए इमाओ देवयाओ,
गाहाओ —
१ वम्हा, २ विण्हु, ३ वसू, ४ वरुणे, ५ अय, ६, अभिवद्धी, ७ पूमे,
८ आसे, ९ जमे, १० अग्गी, ११ पयावई, १२ मोमे, १३ रुद्दे, १४ अदिइ ॥१॥
१५ वहस्सई, १६ मप्पे, १७ पिऊ, १८ भगे, १९ अज्जम, २० सविआ, २१ तट्ठा
२२ वाउ, २३ इदग्गी, २४ मित्तो, २५ इदे, २६ निरई, २७, आउ, २८ विस्सा य ॥२॥
एव णक्खत्ताण एगा परिवाडी णेअव्वा, जाव
प उत्तरासाढा णक्खत्ते ण भते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! विस्मदेवया पण्णत्ता, —जबू वक्ख ७, सु, १५८

दशम प्राभृत

[तेरहवां प्राभृतप्राभृत]

मुहुत्ताणं णामाइ—

४७. प ता कहं ते मुहुत्ताण णामधेज्जा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ एगमेगस्स ण अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पण्णत्ता तजहा—

गाहाओः—

१. रोद्दे, २ सेते, ३ मित्ते, ४ वायु, ५ सुगीए, ६ अभिचदे।
६ महिंद, ८. बलव ६ वभो, १० बहुसच्चे, ११ चेव ईसाणे ॥१॥

१२ तट्ठे य, १३. भावियप्पा, १४ वेसमणे, १५ वरुणे य, १६ आणदे।
१७ विजए य, १८. वीससेणे, १९ पायावच्चे चेव, २०. उवसमे य ॥२॥

२१. गधव्व, २२ अग्गिवेसे, २३. सयरिसहे, २४ आयव च, २५ अममे य।
२६ अणवं, २७ च भोम, २८ रिसहे, २६ सव्वट्ठे, ३० रक्खसे चेव ॥३॥ □□

ख. एतया-ब्रह्म-विष्णु-वरुणादिरूपया परिपाट्या, न तु परतीर्थिकप्रयुक्त-अश्व-यम-दहन-कमलजादिरूपया नेतव्या-परिसमदि प्रापणीया।

गाहाओ —

१ बम्हा, २. विण्हू, ३ अवसू, ४ वरुणे, ५ अय, ६ वुड्ढी, ७ पूस, ८ आस, ९ जमे।
१० अग्गि, ११ पयावइ, १२ सोमे, १३ रुद्दे, १४ अदिति, १५ बहस्सई, १६. सप्पे, ॥१॥
१७ पिउ, १८ भग, १९ अज्जम, २० सविआ २१ तट्ठा, २२ वाउ, २३. तहेव, इदग्गी।
२४ मित्ते, २५ इदे, १६ निरुई, २७ आउ, २८ विस्सा या वोद्धव्वे ॥२॥ —जबु वक्ख ४७, सु, १७४

एक ही आगम मे अट्ठावीस नक्षत्र-देवताओ के नामो की गाथाए भिन्न भिन्न रचनाशैली मे दो वार आना, विचारणीय प्रश्न है। इसका समाधान बहुश्रुत करें तो जिज्ञासुओ के ज्ञान की वृद्धि हो।

१ एगमेगे ण अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेण पण्णत्ता,
एएसि ण तीसाए मुहुत्ताण तीस नामधेज्जा पण्णत्ता,
त जहा—
१, रोद्दे, २ सत्ते, ३ मित्ते, ४ वाऊ ५ सुपीए, ६ अभिचदे, ७ माहिंदे, ८ पलवे, ९ वभे, १०. सच्चे, ११ आणदे, १२ विजए, १३ विस्ससेणे, १४ पायावच्चे, १५. उवसमे, १६. ईसाणे, १७ तट्ठे, १८. भाविअप्पा, १९ वेसमणे, २०. वरुणे, २१. सतरिसमे, २२. गधव्वे, २३. अग्गिवेसायणे, २४. आतवे, २५. आवते, २६. तट्ठवे, २७. भूमहे, २८ रिसभे, २९. सव्वट्ठसिद्धे ३० रक्खसे,

दशम प्राभृत
[चौदहवां प्राभृतप्राभृत]

दिवसराईणं णामाइं—

४८ प. ता कहं ते दिवसा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तंजहा—पडिवया दिवसे, वितिया दिवसे, तइया दिवसे, चउत्थी दिवसे, पंचमी दिवसे, छट्ठी दिवसे, सत्तमी दिवसे, अट्ठमी दिवसे, नवमी दिवसे, दसमी दिवसे, एक्कारसी दिवसे, बारसी दिवसे, तेरसी दिवसे, चउद्दसी दिवसे, पण्णरसे दिवसे,

ता एएसि णं पण्णरसण्हं दिवसाण पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—
गाहाओ.—

१. पुव्वगे, २ सिद्धमणोरमे, य तत्तो, ३. मणोहरो चेव ।
४. जसभद्दे, ५ जसोधर, ६ सव्वकामसमिद्धे ति य ।।१।।
७ इंदे मुद्धाभिसित्ते य, ८. सोमणस, ९. धणंजए य बोद्धव्वे ।
१० अत्थसिद्धे, ११. अभिजाए, १२. अच्चासणे, १३. सतंजए ।।२।।
१४ अग्गिवेसे, १५ उवसमे, दिवसाणं णामधेज्जाइं ।।

प ता कहं ते राईओ पण्णत्ताओ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस राईओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पडिवाराई वितियाराई, ततीयाराई, चउत्थीराई, पंचमीराई, छट्ठीराई, सत्तमीराई, अट्ठमीराई, नवमीराई, दसमीराई, एक्कारसीराई, बारसीराई तेरसीराई, चउद्दसीराई, पण्णरसीराई,

ता एयासिणं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—
गाहाओ.—

१. उत्तमा य, २. सुणक्खत्ता, ३ एलावच्चा, ४ जसोधरा ।।
५ सोमणसा चेव तहा, ६ सिरिसंभूता य बोद्धव्वा ।।१।।
७ विजया य, ८. वेजयंती, ९ जयंति, १०. अपराजिया य, ११. गच्छा य ।
१२ समाहारा चेव तहा, १३ तेया य तहा य, १४ अतितेया ।।२।।
१५ देवाणंदानिरती, रयणीणं णामधेज्जाइं ।।

□□

दशम प्राभृत

[पन्द्रहवां प्राभृतप्राभृत]

तिहीणं णामाइं—

४९. प ता कह ते तिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमा दुविहा तिही पण्णत्ता, तं जहा—१. दिवसतिही, २ राईतिही य,

प. ता कहं ते दिवसतिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस, दिवसतिही पण्णत्ता तजहा—

१. णदे, २ भद्दे, ३ जए, ४ तुच्छे, ५. पुण्णे

पक्खस्स पचमी,

पुणरवि—६ णदे, ७. भद्दे, ८. जए, ९ तुच्छे, १० पुण्णे

पक्खस्स दसमी,

पुणरवि—११ णंदे, १२ भद्दे, १३. जए, १४ तुच्छे, १५ पुण्णे

पक्खस्स पण्णरस,

एव ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाण ।

प ता कहं ते राईतिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस राईतिही पण्णत्ता त जहा—

१ उग्गवई, २ भोगवई, ३. जसवई, ४. सव्वसिद्धा, ५. सुहणामा,

पुणरवि—६ उग्गवई, ७. भोगवई, ८. जसवई, ९ सव्वसिद्धा, १० सुहणामा,

पुणरवि—११. उग्गवई, १२ भोगवई, १३. जसवई, १४. सव्वसिद्धा, १५. सुहणामा,

एए तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं राईणं ।। □□

दशम प्राभृत

[सोलहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं गोत्ता—

५०. प. ता कह ते गोत्ता ? आहिए त्ति वएज्जा ।

प १ ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
अभियी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ ता मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते ।

प २ सवणे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ संखायणसगोत्ते पण्णत्ते ।

प ३ धणिट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ अग्गितावसगोत्ते पण्णत्ते,

प ४ सतभिसया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ कण्णलोयणसगोत्ते पण्णत्ते,

प ५ पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ जोउकण्णियसगोत्ते पण्णत्ते,

प ६ उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ धनंजयसगोत्ते पण्णत्ते,

प ७ रेवई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ पुस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प ८ अस्सिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्त ?
उ अस्सादणसगोत्ते पण्णत्ते,

प ९ भरणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ भग्गवेससगोत्ते पण्णत्ते,

प १० कत्तिया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ अग्गिवेससगोत्ते पण्णत्ते,

प ११. रोहिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. गोतमसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १२. संठाणा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ भारद्दायसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १३. अद्दा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. लोहिच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १४ पुणव्वसु णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. वासिट्ठसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १५ पुस्से णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. उज्जायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १६ अस्सेसा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ मडव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १७ मघा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ पिंगायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १८ पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोवल्लायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १९ उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ स कासवगोत्ते पण्णत्ते,

प २० हत्थे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ स कोसियगोत्ते पण्णत्ते,

प २१ चित्ता णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ दब्भियाणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २२ साई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. स चामरच्छसगोत्ते पण्णत्ते,

प २३ विसाहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ सुंगायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २४ अणुराहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोलव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २५. जेट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ तिगिच्छायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २६ मूले णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ कच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २७. पुव्वासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ वज्झियायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २८ उत्तरासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. वग्घावच्चसगोत्ते पण्णत्ते,[1] □□

---

१. प एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिइणक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते,
गहाओ—
१ मोग्गलायण, २ संखायणे अ तह, ३. अग्गभाव, ४. कण्णिल्ले ।
ततो अ ५. जाउकण्णे, ६ धणंजए चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥
७ पुस्सायणे य, ८ अस्सायणे य, ९ भग्गवेसे य, १०. अग्गिवेसे य ।
११ गोयम, १२. भारद्दाए, १३. लोहिच्चे चेव, १४. वासिट्ठे ॥ २ ॥
१५ ओमज्जायण, १६. मडव्वायणे य, १७ पिंगायणे य, १८. गोवल्ले ॥
१९ कासव, २०. कोसिय, २१ दब्भिय, २२. चामरच्छा य, २३. सुंगा य ॥ ३ ॥
२४. गोलव्वायण, २५ तेगिच्छायणे अ, २६ कच्चायणे हवइ मूले ॥
२७ तत्तो अ वज्झियायण, २८ वग्घावच्चे य गोत्ताइं ॥ ४ ॥ —जंबु. वक्ख. ७, सु. १६०

दशम प्राभृत

[सत्तरहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं भोयण कज्जसिद्धी य—

५१. प. ता कहं ते भोयणा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता एएसि ण अट्ठावीसाए ण णक्खत्ताण मज्झे—

१. कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधेंति,

२ रोहिणीहिं वसभ-मस भोच्चा कज्ज साधेंति,

३ मिगसिरे ण (सठाणाहिं) मिग-मंस[1] भोच्चा कज्ज साधेंति,

४ अद्दाहिं णवणीएण भोच्चा कज्ज साधेंति,

५ पुणव्वसुणाऽय घएण भोच्चा कज्ज साधेंति,

६ पुस्से ण खीरेण भोच्चा कज्जं साधेंति,

७ अस्सेसाए दीवग-मस भोच्चा कज्ज साधेंति,

८ महाहिं कसोति भोच्चा कज्ज साधेंति,

९ पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेढक-मस भोच्चा कज्ज साधेंति,

१० उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खी-मस भोच्चा कज्ज साधेंति,

११ हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा कज्जं साधेंति,

१२ चित्ताहिं मुग्ग—सूवेणं भोच्चा कज्ज साधेंति,

१३. साइणा फलाइं भोच्चा कज्ज साधेंति ।

१४ विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्जं साधेंति,

१५ अणुराहाहिं मिस्सकूर भोच्चा कज्ज साधेंति,

१६ जेट्ठाहिं कोलट्ठिएण भोच्चा कज्ज साधेंति,

१७ मूलेणं मूलापन्नेण भोच्चा कज्जं साधेंति,

---

१ रोहिणीहिं चमम-मम (चममम) भोच्चा कज्ज माधेंति,
आ स समिति मे प्रकाशित प्रति के पृष्ठ १५१ पर (पाठान्तर) है ।

१८. पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलग-सरीरं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१९ उत्तराहिं आसाढाहिं बिल्लेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२० अभीयिणा पुप्फेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति.

२१. सवणेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२१ धणिट्ठाहिं जूसेणं भोच्चा कज्ज साधेंति,

२३ सतभिसयाए तुवरीओ भोच्चा कज्ज साधेंति,

२४ पुव्वाहिं पुट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२५ उत्तराहिं पुट्ठवयाहिं वराहमस भोच्चा कज्ज साधेंति,

२६ रेवतीहिं जलयर-मसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२७. अस्सिणीहिं तितिर-मस वट्टकमस वा भोच्चा कज्जं साधेंति,

२८. भरणीहिं तल (तिल) तदुलकं भोच्चा कज्जं साधेंति।[1] □□

---

१ कुल्माषास्तिलतण्डुलानपि तथा माषाश्च गव्य दधि, त्वाज्य दुग्धमथैणमासमपर तस्यैव रक्त तथा।
तद्वत्पायसमेव चाषपलल मार्गं च शाश तथा, षाष्टिक्य च प्रियग्वपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम्॥ ८४॥
कौर्मं सारिकगोधिक च पलल शाल्य हविष्य हयाद्यृक्षे स्यात्कृसरान्नमुद्गमपि वा पिष्ट यवाना तथा।
मत्स्यान्न खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेव क्रमाद्भक्ष्याऽभक्ष्यमिद विचार्य मतिमान् भक्षेत्तथाऽऽलोकयेत्॥ ८५॥

—मुहूर्तचिन्तामणि यात्राप्रकरण

वस्तुत इद सप्तदश प्राभृतप्राभृत न भगवता प्रतिपादित किन्तु केनाऽप्यत्र प्रक्षिप्तमिति प्रतिभाति, नेय भाषाशैली भगवतो लक्ष्यते, यतोऽत्र सूत्रे कुत्रचित् 'कत्तियाहिं रोहिणीहिं, अद्दाहिं' इत्यादि तृतीयाबहुवचन लभ्यते कुत्रचिच्च 'पुणव्वसुणा, पुस्सेण, अद्दाए' इत्यादि तृतीयैकवचन लभ्यते। अन्यच्च भोज्यवस्तुविषये कुत्रचित्तृतीया कुत्रचिद् द्वितीया च। यथा—'दहिणा भोच्चा, णवणीयेण भोच्चा, खीरेण भोच्चा' इति तृतीया, कुत्रचिच्च यत्र मासविषयकथन तत्र द्वितीया, यथा—"वसभमस भोच्चा, मिगमस भोच्चा, दीवगमस भोच्चा" इत्यादि, एवमव्यवस्थितजल्पनेन ज्ञायते नेद भगवता प्ररूपितमिति। अन्यच्च कतिपयस्थलेषु स्थलचर-जलचर-खेचर-प्राणिना मासभक्षण कार्यसिद्धौ कारणत्वेन प्रतिपादित तत्तु नितान्तमसङ्गतमेव, यत षट्कायप्रतिपालकस्य षट्कायरक्षणोपदेशतत्परस्य च भगवतो मुखान्नैष मासभक्षणविधिर्भवितुमर्हति, शास्त्रेषु कुत्रापि नैतादृशी वाणी भगवत समुपलभ्यतेऽतो निश्चीयते-नेद भगवदुपदेशविषयकमिति। अस्तु, अन्यदपि सयुक्तिक कारण श्रूयताम्—शास्त्रेषु सर्वत्र नक्षत्राणा गणना अभिजिन्नक्षत्रादारभ्यैव कृता युगस्याद्यदिवसेऽभिजित एव सद्भावात्। अत्रैव शास्त्रे पूर्वं दशमप्राभृतस्य प्रथमे प्राभृतप्राभृते आदावेव सूत्रमिदम्—

"ता कह ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाए आहिएति वएज्जा, तत्थ खलु इमाओ पच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहसु ता सव्वेवि णक्खत्ता, कत्तियादिया भरणीपज्जवसाणा एगे एवमाहसु ॥१॥" इयमन्यतीर्थिकाना प्रथमा प्रतिपत्ति, एते कृत्तिकादीनि भरणीपर्यवसानानि नक्षत्राणि मन्यन्ते, एवमन्यतीर्थिकाना पञ्च प्रतिपत्तय सन्ति। तत्र द्वितीया—'मघादिकानि अश्लेषापर्यवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि' इति

दशम प्राभृत
[अठारहवां प्राभृतप्राभृत]

एगे जुगे आदिच्च-चंदचारसंखा—

५२. प क—ता कहं ते चारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ तत्थ खलु इमा दुविहा चारा पण्णत्ता, तजहा—१ आदिच्चचारा य, २ चदचारा य।

प. क—ता कह ते चदचारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंच सवच्छरिए णं जुगे,

१ अभोइ णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धि जोग जोएइ,

२ सवणे णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चदेण सद्धि जोगं जोएइ, एव जाव,

३-२८ उत्तरासाढा णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चदेण सद्धि जोगं जोएइ,

प. ख—ता कहं ते आइच्चचारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पचसवच्छरिए णं जुगे,

१. अभीई णक्खत्ते पचचारे सूरेण सद्धि जोगं जोएइ, एव जाव,

२-२८ उत्तरासाढा णक्खत्ते पचचारे सूरेण सद्धि जोगं जोएइ। □□

२, तृतीया—धनिष्ठादीनि श्रवणपर्यवसानानि इति ३, चतुर्था अश्विन्यादीनि रेवतीपर्यवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि ४, एके भरण्यादिकानि अश्विनी पर्यवसानानि इति कथयन्ति। ५। एता पञ्चापि प्रतिपत्तयो मिथ्यारूपा इति कथयित्वा, भगवान् स्वमत प्रदर्शयति—

"वय पुण एव वयामो—सव्वेवि ण णक्खत्ता अभिई आइया उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा ॥" इति।

अस्य मलयगिरिसूरिणा कृता टीका यथा—

"युगस्य चादि प्रवर्त्तते श्रावणमासि बहुलपक्षे प्रतिपदि तिथौ बालवकरणे अभिजिन्नक्षत्रे चन्द्रेण सह योगमुपागच्छति (सति)। तथा चोक्तम्-ज्योतिष्करण्डके—

सावण बहुलपडिवए बालवकरणे अभिईनक्खत्ते।

सव्वत्थ पढमसमये जुगस्स आइ वियाणाहि ॥ १ ॥ इति

'सव्वत्थ' सर्वत्रेति भरतैरवते महाविदेहे च। इत्थ सर्वेषामपि कालविशेषाणामादौ चन्द्रयोगमधिकृत्याभिजिन्नक्षत्रस्य वर्त्तमानत्वादभिजिदादीनि नक्षत्राणि प्रज्ञप्तानि।' इति टीका।

अत्र कृत्तिकातो भरणीपर्यवसानानि नक्षत्राणि प्रथमान्यतीर्थिकै—सम्मतानि सन्ति, तन्मतानुसारेणेद—प्राभृतप्राभृत रच्यते। नेद भगवतो मतमित्यत स्पष्ट ज्ञायतेऽस्मिन् सप्तदशे प्राभृतप्राभृते भगवत प्ररूपणा न भवितुमर्हतीत्यल विस्तरेणेति। —चन्द्रप्रज्ञप्तिप्रकाशिका टीका

दशम प्राभृत

[उन्नीसवां प्राभृतप्राभृत]

एगसंवच्छरस्स मासा—

५३, प ता कहं ते मासा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स वारस मासा पण्णत्ता,

तेसिं च दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तजहा—१ लोइया, २. लोउत्तरिया य ।

तत्थ लोइया णामाः—

१. सावणे, २ भद्दवए, ३ आसोए, ४. कत्तिए, ५ मग्गसिरे, ६. पोसे, ७. माहे, ८ फग्गुणे, ९ चेत्ते, १०. वेसाहे, ११ जेट्ठे, १२ आसाढे ।

लोउत्तरिया णामाः—

गाहाओ.—

१ अभिणदणे, २ सुपइट्ठे य, ३ विजए, ४. पीइवद्धणे ।
५ सेज्जंसे य, ६ सिवेया वि, ७. सिसिरे वि य, ८ हेमवं ।। १ ।।

९. नवमे वसंतमासे, १० दसमे कुसुमसभवे ।
११ एकादसमे णिदाहो, १२ वणविरोही य वारसे[1] ।। २ ।। □□

---

१ जवु वक्ख. ७, सु १५३

दशम प्राभृत
[बीसवां प्राभृतप्राभृत]

संवच्छराणं संखा लक्खणं च—

५४. प. ता कइ णं संवच्छरे ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता पंच सवच्छरा पण्णत्ता, तजहा—१ णक्खत्त-संवच्छरे, २. जुग-संवच्छरे, ३. पमाण-संवच्छरे ४ लक्खण-संवच्छरे, ५ सणिच्छर-संवच्छरे ।[1]

णक्खत्तसंवच्छरस्स भेया तस्स कालपमाणं च—

५५ १ क—ता णक्खत्तसवच्छरे ण दुवालसविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ सावणे, २ भद्दवए, ३. आसोए, ४ कत्तिए, ५ मग्गसिरे, ६ पोसे, ७ माहे, ८ फग्गुणीए ६ चित्ते, १० वइसाहे, ११ जेट्ठे, १२ आसाढे ।

२ ख—जं वा बहस्सई महग्गहे दुवालसहि संवच्छरेहि सव्वं णक्खत्तमंडल समाणेइ ।

जुगसंवच्छरस्स भेया कालपमाण च—

५६ २ ता जुगसंवच्छरे णं पचविहे पण्णत्ते, तजहा—१ चंदे, २ चदे, ३ अभिवड्ढिए, ४ चदे, ५. अभिवड्ढिए[2] ।

१ ता पढमस्स णं चदसंवच्छरस्स चउवीस पव्वा पण्णत्ता,

२. दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

३. तच्चस्स णं अभिवड्ढिय सवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता,

४ चउत्यस्स णं चंद संवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

५ पंचमस्स ण अभिवड्ढिय सवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता,

एवामेव सपुव्वावरेण पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसए भवतीतिमक्खाय ।

३. पमाणसंवच्छरस्स भेया—

५७-५८ ता पमाणसवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ णक्खत्ते, २ चंदे, ३ उडू, ४. आइच्चे, ५ अभिवड्ढिए,[3]

---

१. ठाण ५, उ. ३, सु ४६०

२ ठाण. ५, उ ३, सु ४६०

३. ,, ,, ,,

४. लक्खणसवच्छरस्स भेया—

ता लक्खणसवच्छरे ण पचविहे पण्णत्ते तजहा—१ णक्खत्ते, २ चदे, ३ उडू, ४ आइच्चे, ५ अभिवड्डिए।

५. सणिच्छरसवच्छरभेया—

क ता सणिच्छरसंवच्छरे ण अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ अभियी, २ सवणे, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वापोट्ठवया, ६ उत्तरापोट्ठवया, ७ रेवई, ८ अस्सिणी, ९ भरणी, १० कत्तिय, ११ रोहिणी, १२ सठाणा, १३ अद्दा, १४ पुणव्वसू, १५ पुस्से, १६ अस्सेसा, १७ महा, १८ पुव्वाफग्गुणी, १९ उत्तराफग्गुणी, २० हत्थे, २१ चित्ता, २२ साई, २३ विसाहा, २४ अणुराहा, २५ जेट्ठा, २६ मूले, २७ पुव्वासाढा, २८ उत्तरासाढा।

ख ज वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमडल समाणेइ।

गाहाओ[1]—

१. णक्खत्तसवच्छरलक्खणः—

समगं णक्खत्ता जोयं जोएति, समगं उडू परिणमति॥
नच्चुण्ह नाइसीए, वहु उदए होइ नक्खत्ते॥ १॥

२ चदसवच्छरलक्खणंः—

ससि समग पुण्णमासिं, जोइ ता विसमचारि णक्खत्ता॥
कडुओ वहु उदगवओ, तमाहु सवच्छरं चंद॥ २॥

३ उडु (कम्म) सवच्छरलक्खण—

विसम पवालिणो परिणमति, अणउसु दिंति पुप्फफल॥
वास न सम्म वासइ, तमाहु सवच्छरं कम्म॥ ३॥

४ आइच्चसवच्छरलक्खणंः—

पुढवि-दगाण च रसं, पुप्फ-फलाण च देइ आइच्चे॥
अप्पेण वि वासेण, सम्म निप्फज्जए सस्स॥ ४॥

५ अभिवुड्डियसवच्छरलक्खणं—

आइच्चतेयतविया, खण-लव-दिवसा उऊ परिणमति॥
पूरेइ रेणु-थलयाइ, तमाहु अभिवड्डिय जाण[2]॥ ५॥

□□

१ ठाण ५, उ ३, सु ४६०
२ ठाण ५, उ ३, सु ४६०

दशम प्राभृत
[इक्कीसवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं दाराइं—

५९. प ता कहं ते जोइसस्स दारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ तत्थ खलु इमाओ पच पडिवत्ताओ पण्णत्तीओ, तजहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४. ता अस्सिणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता भरणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१ तत्थ णं जे ते एवमाहसु—

(क) ता कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—
१. कत्तिया, २. रोहिणी, ३. संठाणा, ४ अद्दा, ५. पुणव्वसू, ६ पुस्सो, ७. असिलेसा ।

(ख) महादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ महा, २. पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी, ४ हत्थो, ५. चित्ता, ६ साई, ७ विसाहा,

(ग) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अणुराधा, २ जेट्ठा, ३ मूलो, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अभीइ, ७ सवणो,

(घ) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—
१. धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्ठवया, ४ उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६

अस्सिणी, ७. भरणी ।[1]

२ तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(क) ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तजहा—
१ महा, २. पुव्वाफग्गुणी. ३ उत्तराफग्गुणी, ४. हत्थो, ५. चित्ता, ६ साती, ७. विसाहा,

(ख) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अणुराधा, २ जेट्ठा, ३ मूले, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६. अभिई, ७. सवणे,

(ग) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३. पुव्वापोट्ठवया, ४. उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६ अस्सिणी, ७ भरणी,

(घ) कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—
१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ संठाणा, ४ अद्दा, ५ पुणव्वसू, ६ पुस्सो, ७. अस्सेसा,

३ तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(क) ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तंजहा—
१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्ठवया, ४ उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६. अस्सिणी, ७ भरणी,[1]

(ख) कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ कत्तिया २. रोहिणी, ३ संठाणा, ४. अद्दा, ५ पुणव्वसू, ६. पुस्सो, ७ अस्सेसा,

(ग) महादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ महा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी, ४ हत्थो, ५. चित्ता, ६ साई, ७ विसाहा,

(घ) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अणुराहा, २ जेट्ठा, ३ मूलो, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अभीयी, ७ सवणो ।

---

१ (क) कत्तियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता,
(ख) महाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता,
(ग) अणुराहाईया सत्त णक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता,
(घ) धणिट्ठाइया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता । —सम स ७, सु ८, ९, १०, ११

ये समवायाग के जो सूत्र यहाँ दिये गये हैं वे अन्य मान्यता के सूचक हैं किन्तु इन सूत्रो मे ऐसा कोई वाक्य नहीं है जिससे सामान्य पाठक इन सूत्रो को अन्य मान्यता के जान सके । यद्यपि जैनागमो मे नक्षत्र-मण्डल का प्रथम नक्षत्र अभिजित् है और अन्तिम नक्षत्र उत्तराषाढा है, पर इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न कालो मे परिवर्तित नक्षत्रमण्डलो के भिन्न भिन्न क्रमो का परिज्ञान आगमो के स्वाध्याय के विना कैसे सम्भव हो ?

४ तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(क) ता अस्सिणी, आदीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एते एवमाहसु, तंजहा—
१ अस्सिणी, २ भरणी, ३ कत्तिया, ४ रोहिणी, ५. संठाणा, ६. अद्दा, ७. पुणव्वसू,

(ख) पुस्सादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तजहा—
१ पुस्सा, २ अस्सेसा, ३. महा, ४ पुव्वाफग्गुणी, ५. उत्तराफग्गुणी, ६ हत्थो, ७. चित्ता,

(ग) साइयाइया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. साती, २. विसाहा, ३ अणुराहा, ४ जेट्ठा, ५ मूलो, ६ पुव्वासाढा, ७ उत्तरासाढा,

(घ) अभिइयादिया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. अभिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५. पुव्वभद्दवया, ६ उत्तरभद्दवया, ७ रेवई,

५. तत्थ ण जे ते एवमाहंसु—

(क) ता भरणियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—
१ भरणी, २ कत्तिया, ३ रोहिणी, ४ सठाणा, ५ अद्दा, ६ पुणव्वसू, ७ पुस्सो,

(ख) अस्सेसादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. अस्सेसा, २ महा, ३ पुव्वाफग्गुणी, ४ उत्तराफग्गुणी, ५ हत्थो, ६ चित्ता, ७ साई,

(ग) विसाहादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ विसाहा, २. अणुराहा, ३ जेट्ठा, ४ मूलो, ५ पुव्वासाढा, ६ उत्तरासाढा, ७ अभिई,

(घ) सवणादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तजहा—
१ सवणो, २ धणिट्ठा, ३ सतभिसया, ४ पुव्वापोट्ठवया, ५ उत्तरापोट्ठवया, ६ रेवई, ७, अस्सिणी ।

वय पुण एव वयामो—

(क) ता अभीइयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अभिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वापोट्ठवया, ६ उत्तरापोट्ठवया, ७ रेवई,

(ख) अस्सिणीआदीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अस्सिणी, २ भरणी, ३ कत्तिया, ४ रोहिणी, ५ संठाणा, ६ अद्दा, ७, पुणव्वसू,

दशम प्राभृत

[बावीसवाँ प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं सरूवपरूवणं—

६०. प ता कहं ते णक्खत्तविजए ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए जाव एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, सोलससहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसय, तेरस अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

क ता जंबुद्दीवे ण दीवे—
दो चंदा १. पभासेंसु वा, २. पभासेंति वा, ३. पभासिस्संति वा,

ख दो सूरिया १ तविंसु वा, २. तवेंति वा, ३ तविस्संति वा,

ग. छप्पण्ण णक्खत्ता जोयं १. जोएसु वा, २. जोएंति वा, ३ जोइस्संति वा, तंजहा—
१ दो अभीई, २ दो सवणा, ३. दो धणिट्ठा, ४. सतभिसया, ५. दो पुव्वापोट्ठवया, ६ दो उत्तरापोट्ठवया, ७. दो रेवई, ८. दो अस्सिणी, ९ दो भरणी, १०. दो कत्तिया, ११. दो रोहिणी, १२. दो सठाणा, १३. दो अद्दा, १४. दो पुणव्वसू; १५ दो पुस्सा, १६. दो अस्सेसाओ, १७. दो महाओ, १८ दो पुव्वाफग्गुणी, १९ दो उत्तराफग्गुणी, २०. दो हत्था, २१. दो चित्ता, २२. दो साई, २३. दो विसाहा, २४. दो अणुराधा, २५. दो जेट्ठा, २६. दो मूला, २७. दो पुव्वासाढा, २८ दो उत्तरासाढा।

ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

क. अत्थि णक्खत्ता जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धि जोयं जोएंति,

ख अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोयं जोएंति,

ग. अत्थि णक्खत्ता जे णं तीस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति,

घ अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति,

प क. ता एएसि छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
कयरे णक्खत्ता जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोयं जोएंति ?

ख. कयरे णक्खत्ता जे ण पण्णरसमुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?
ग कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चदेण सद्धि जोयं जोएति ?
घ. कयरे णक्खत्ता जे ण पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ?

उ. क ता एएसि ण छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोयं जोएंति, ते ण दो अभीई,

ख तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं पण्णरसमुहुत्ते चदेण सद्धि जोगं जोएंति, ते णं बारस, तजहा—
१ दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४. दो अस्सेसा, ५ दो साती, ६. दो जेट्ठा।

ग तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोगं जोएंति, ते ण तीसं, तजहा—
१ दो सवणा, २ दो घणिट्ठा, ३ दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवई, ५ दो अस्सिणी, ६. दो कत्तीया, ७. दो संठाणा, ८. दो पुस्सा, ९. दो महा, १०. दो पुव्वाफग्गुणी, ११ दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराधा, १४. दो मूला, १५. दो पुव्वासाढा,

घ. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चदेण सद्धि जोगं जोएति ते णं बारस, तं जहा—
१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३. दो पुणव्वसू, ४. दो उत्तराफग्गुणी, ५. दो विसाहा, ६. दो उत्तरासाढा।

क ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
अत्थि णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोगं जोएति, ते ण दो अभीयी,

ख अत्थि णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एगवीसं च मुहुत्ते सूरिएणं सद्धि जोगं जोएति,
ग अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोगं जोएति,
घ अत्थि णक्खत्ता जे ण वीसं अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोगं जोएंति।

प. क ता एएसि ण णक्खत्ताण—
कयरे णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोगं जोएति ?
ख कयरे णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एगवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोगं जोएंति ?
ग कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोगं जोएति ?
घ कयरे णक्खत्ता जे ण वीसं अहोरत्ते, तिन्नि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोगं जोएंति ?

उ क ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोगं जोएंति, ते णं दो अभीई,

ख तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एगवीस च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएंति, ते ण बारस तजहा—
१. दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो अस्सेसा, ५. दो साती, ६ दो जेट्ठा,

ग. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति, ते ण तीसं, तजहा—
१ दो सवणा, २. दो धणिट्ठा, ३ दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवती, ५ दो अस्सिणी, ६ दो कत्तिया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुस्सा, ९. दो महा, १० दो पुव्वाफग्गुणी, ११. दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३. दो अणुराधा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोगं जोएंति, ते ण बारस, तजहा—
१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफग्गुणी ५ दो विमाहा, ६ दो उत्तरासाढा।

णक्खत्तमंडलाणं सीमाविक्खंभो—

६१ प ता कहं ते सीमाविक्खभे ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
अत्थि णक्खत्ता, जेसि णं छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खभो,

ख अत्थि णक्खत्ता, जेसि णं सहस्स पंचोत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो

ग अत्थि णक्खत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खभो,

घ अत्थि णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पचदसुत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो,

प क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
कयरे णक्खत्ता जेसि णं छसया, तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो ?

ख कयरे णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पचोत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमाविक्खभो ?

ग कयरे णक्खत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमाविक्खंभो ?

घ कयरे णक्खत्ता जेसि ण तिसहस्स पचदसुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमाविक्खंभो ?

उ क ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि ण छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमाविक्खंभो, ते ण दो अभिई।

ख तत्थ जे ते णक्खत्ता, जेसि णं सहस्सं पंचुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमाविक्खंभो, ते ण बारस, तजहा—
१ दो सतभिसया, २. दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो अस्सेसा, ५ दो साती, ६ दो जेट्ठा।

ग तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमाविक्खभो, ते ण तीसं, तंजहा—
१ दो सवणा, २ दो धणिट्ठा, ३. दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवई, ५ दो अस्सिणी, ६. दो कत्तिया, ७ दो संठाणा, ८. दो पुस्सा, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफग्गुणी, ११ दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराहा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि ण तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमाविक्खंभो, ते ण बारस, तंजहा—
१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफग्गुणी, ५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा,

णक्खत्ताणं चंदेण जोगो—

६२ प क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
किं सया पादो चदेण सद्धि जोगं जोएंति ?

ख ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
किं सया सायं चदेण सद्धि जोग जोएति ?

ग ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
किं सया दुहा पविसिय पविसिय चंदेण सद्धि जोगं जोएंति ?

उ. क ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
न किं पि त जं सया पादो चंदेण सद्धिं जोग जोएंति,

ख न सया सायं चदेण सद्धिं जोगं जोएति,

ग. न सया दुहओ पविसित्ता पविसित्ता चदेण सद्धिं जोगं जोएति, णण्णत्थ दोहिं अभिईहिं।

ता एएण दो अभिई पायचिय पायचिय चोत्तालीस चोत्तालीस अमावासं जोएंति णो चेव ण पुण्णमासिणिं।

चंदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो—

६३. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठि पुण्णिमासीओ बावट्ठि अमावासाओ पण्णत्ताओ,

१ प ता एएसिण पचण्हं संवच्छराण पढम पुण्णिमासिणिं चदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. जंसि ण देससि चदे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणिं जोएइ ताए तेणं पुण्णिमासिणिट्ठाणाए[1] मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चदे पढम पुण्णिमासिणिं जोएइ,

२ प ता एएसिण पचण्हं सवच्छराण दोच्चं पुण्णिमासिणिं चदे कसि देससि जोएइ ?

उ. जसि ण देससि चदे पढम पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए तेणं पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणि जोएइ,

३ प ता एएसि ण पंचण्ह संवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणिं चदे कंसि देससि जोएइ ?

उ जसि ण देससि चदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताए ते ण पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडलं चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से चदे तच्च पुण्णिमासिणिं जोएइ,

४ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ जसि णं देससि चदे तच्च पुण्णमासिणिं जोएइ ता पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता दोण्णि अट्ठासीए भागसए[2] उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चदे दुवालसम पुण्णिमासिणिं जोएइ,

---

१ तस्मात्पूर्णमामीस्थानात्-चरमद्वाषष्टितम-
पौर्णमासीपरिसमाप्तिस्थानात् परतो मण्डल,
चतुर्विशत्यधिकेन शतेन छित्वा विभज्य ॥

२ "दोण्णि अट्ठासीए भागसए" त्ति,
तृतीयस्या पौर्णमास्या परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी भवति,
ततो नवभिर्द्वात्रिंशतो गुणने द्वे शते अष्टाशीत्यधिके भवत ।

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता वत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि तसि देससि तं तं पुण्णिमासिणि चंदे जोएइ।

५ प ता एएसि ण पंचण्ह सवच्छराण चरम बावट्ठि पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?

उ· ता जंबुदीवस्स ण दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहिणययाए जीवाए मढल चउव्वीसेण सए णं छेत्ता दाहिणंसि चउब्भामडलंसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता, अट्ठावीसइ भागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहि पच्चत्थिमिल्ल चउब्भागमडल असंपत्ते एत्थणं चदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणि जोएइ।[1]

सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगोः—

६४ १ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढमं पुण्णिमासिणि सूरे कंसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणि-ठाणाए मडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइ भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए पढम पुण्णिमासिणि जोएइ।

२. प ता एएसिणं पचण्ह संवच्छराणं दोच्च पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देसंसि सूरे पढमं पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसेण सएणं छेत्ता दो चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से सूरिए दोच्चं पुण्णिमासिणि जोएइ,

३ प. ता एएसिणं पचण्हं संवच्छराणं तच्च पुण्णिमासिणि सूरे कंसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि णं देसंसि सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं

---

१ "जंबुद्दीवस्स णमित्यादि"
जम्बूद्वीपस्य णमिति वाक्यालङ्कारे द्वीपस्योपरि प्राचीना प्राचीनतया,
इह प्राचीनग्रहणेनोत्तरपूर्वा (ईशान) गृह्यते, अपाचीनग्रहणेन दक्षिणापरा, (नैऋत्य)।
ततोऽयमर्थं पूर्वोत्तर-दक्षिणापरायतया, एवमुदीचि-दक्षिणायतया, पूर्व-दक्षिणोत्तरापरायतया जीवया प्रत्यचया दवरिकया इत्यर्थ,
मण्डल चतुर्विशेन-चतुर्विशत्यधिकेन शतेन छित्वा विभज्य भूयश्चतुर्भिर्विभज्यते,
ततो दाक्षिणात्ये चतुर्भागमण्डले एकत्रिंशद्भागप्रमाणे सप्तविंशतिभागानुपादायाष्टाविंशतितम च भाग विंशतिधा छित्वा तद्गतानष्टादश—
भागानुपादाय शेषैस्त्रिभिर्भागैश्चतुर्थस्य भागस्य द्वाभ्या कलाभ्या,
पाश्चात्य चतुर्भागमण्डलमसम्प्राप्त अस्मिन् प्रदेशे चन्द्रो द्वाषष्टितमा चरमा पौर्णिमासी परिसमापयति।
—टीका

चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए तच्चं पुण्णिमासिणि जोएइ,

४. प. ता एएसिण पचण्हं संवच्छराण दुवालस पुण्णिमासिणि सूरे कसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि ण देससि सूरे तच्चं पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसए[1] उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरिए दुवालसमं पुण्णिमासिणि जोएइ,

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता चउणवइं चउणवइं भागे उवाइणावेत्ता[2], तंसि तंसि ण देसंसि तं तं पुण्णिमासिणि सूरे जोएइ,

५ प ता एएसिणं पचण्ह सवच्छराण चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणि सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जवुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणा-वेत्ता अट्ठावीसइभागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं सूरिए चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणि जोएइ ।

चंदस्य अमावासासु जोगो

६५ प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ताए अमावासट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएइ,

---

१ "अट्ठछत्ताले भागसए" त्ति,
तृतीयस्या पौर्णमास्या परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी,
ततश्चतुर्नवतिर्नवभिर्गुण्यते, जातान्यष्टौ शतानि षट्चत्वारिंशदधिकानि ।

२ पाश्चात्ययुगचरमद्वापष्टितमपौर्णमासीपरिसमाप्तिनिवन्धनात्
स्थानात् परतो मण्डलस्य चतुर्विंशत्यधिक शत प्रविभक्तस्य सत्काना
चतुर्नवतिचतुर्नवतिभागानामतिक्रमे तस्याः तस्या पौर्णमास्या
परिसमाप्ति , ततश्चतुर्नवतिर्द्विषष्ट्या गुण्यते, जातान्यष्टा—
पचाशच्छतानि अष्टाविंशत्यधिकानि, तेषां चतुर्विंशत्यधिकेन शतेन भागो ह्रियते लब्धा
सप्तचत्वारिंशत्सकलमण्डलपरावर्ता ।

—टीका

एव जेणेव अभिलावेणं चदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिआओ तेणेव अभिलावेण अमावासाओ भाणियव्वाओ, तजहा—विइया, तइया, दुवालसमी ।[1]

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए अमावासाठाणाए मडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता बत्तीसं बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता तसि तंसि देसंसि त त अमावासं चदेण जोएइ,

प ता एएसिणं पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जंसि णं देससि चदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति, ताए पुण्णिमासिणि-ठाणाए मडल चउव्वीसेणं सएण छेत्ता सोलस भागे ओसक्कावइत्ता, एत्थ ण से चंदे चरिम बावट्ठिं अमावास जोएइ ।

सूरस्स अमावासासु जोगो—

६६. प ता एएसिण पचण्हं सवच्छराण पढम अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ. ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठिं अमावासं जोएइ, ताए अमावाससठाणाए मडलं चउव्वीसेण सएणं छेत्ता चउणउइभागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से सूरे पढम अमावास जोएइ,

एव जेणेव अभिलावेण सूरियस्स पुण्णिमासिणीओ तेणेव अभिलावेण अमावासाओ भणियव्वाओ, तजहा—विइया, तइया, दुवालसमी ।[2]

---

१ "एवमित्यादि" एवमुक्तप्रकारेण येनैवाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्यो भणितास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि भणितव्या , तद्यथा—द्वितीया, तृतीया, द्वादशी च ताश्चैवम् ।

प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे पढम अमावास जोएइ, ताओ ण अमावासट्ठाणाओ मडल चउवीसेण सएण छेत्ता, बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से चदे दोच्च अमावास जोएइ,

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे दोच्च अमावास जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से चदे तच्च अमावास जोएइ,

प. ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे अमावास जोएइ, ताओ ण अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, दोण्णि अट्ठासीए भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ ण चदे दुवालसम अमावास जोएइ,

२ एवमित्यादि एवमुक्तेन प्रकारेण तेनैवाभिलापेन सूर्यस्य पौर्णमास्य उक्तास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि वक्तव्या , तद्यथा—द्वितीया, तृतीया द्वादशी च ताश्चैवम् ।

प. एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे पढम अमावास जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउवीसेण सएण छेत्ता चउणउई भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण सूरे दोच्च अमावास जोएइ,

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि दोच्च अमावास जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता चउणउइ भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण सूरे तच्च अमावास जोएइ,

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे तच्च अमावास जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता अट्ठ छत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से सूरे दुवालसम अमावास जोएइ ।

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए अमावासट्ठाणाए मडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता, चउणउइं चउणउइं भागे उवाइणावेत्ता तंसि तंसि देससि तं तं अमावासं सूरिए जोएइ ।

प. ता एएसिण पचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठि अमावास सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जसि ण देसंसि सूरे चरिम बावट्ठि अमावास जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडम चउव्वीसे ण सएणं छेत्ता सत्तालीस भागे ओसक्कावइत्ता, एत्थ णं से सूरिए चरिमं बावट्ठि अमावास जोएइ ।

पुण्णिमासिणिसु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताणं जोगो—

६७ १ क. प ता एएसिण पचण्ह संवच्छराण पढमं पुण्णिमासिणि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एगूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठि चुण्णिया भागा सेसा,

ख प. तं समय च णं सूरिए केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुव्वफग्गुणीहिं, पुव्वफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठतीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता बत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

२ क प. ता एएसिणं पंचण्हं सवच्छराणं दोच्च पुण्णिमासिणि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहि पोट्ठवयाहिं, उत्तराण पोट्ठवयाण सत्तावीसं मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठि-भागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा,

ख प तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराफग्गुणीण सत्तमुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, एक्कवीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

३. क प. ता एएसिणं पंचण्हं सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि चदे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीण एक्कवीसं मुहुत्ता णव य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठि चुण्णिया भागा सेसा,

ख प. तं समय च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, तीसं चुण्णियाभागा सेसा ।

४ क. प ता एएसिण, पचण्हं सवच्छराण दुवालसम पुण्णिमासिणि चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं च आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता छवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, चउप्पण्ण चुण्णिया भागा सेसा,

ख प तं समयं च ण सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णियाभागा सेसा ।

५ क प. ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराणं चरमं बावट्ठि पुण्णिमासिणि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराण आसाढाणं चरमसमए ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पुस्से णं पुस्सस्स एगूणवीस मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेतीस चुण्णया भागा सेसा ।

अमावासासु चदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताण जोगो—

६८ १ क. प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम अमावास चंदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सेसाहिं चेव अस्सेसाण एक्के मुहुत्ते चत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठि-भाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प तं समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सेसाहिं चेव अस्सेसाण एक्को मुहुत्तो चत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

२ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अमावास चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं उत्तराण फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीस बावट्ठि-भागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, पण्णट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समयं च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं उत्तराण फग्गुणीण जहेव चदस्स ।

३ क. प ता एएसि ण पंचण्ह सवच्छराण तच्च अमावास चंदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेण चेव हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प तं समयं च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेणं चेव हत्थस्स जहेव चदस्स ।

४. क प. ता एएसि ण पचण्हं संवच्छराणं दुवालसम अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता अद्दाहिं चेव अद्दाणं चत्तारि मुहुत्ता, दस य बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प तं समय च सूरे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता अद्दाहिं चेव अद्दाणं जहा चदस्स ।

५ क. प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराण चरिमं बावट्ठि अमावास चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा चेव पुणव्वसुस्स बावीस मुहुत्ता बायालीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा ।

ख प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स जहा चंदस्स ।

चंदेण य सूरेण य णक्खत्ताणं जोगकालं—

६९ १ क ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चदे जोग जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं अट्ठ एगूणवीसाइ मुहुत्तसयाइं चउवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठि चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं सरिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोगं जोएइ अण्णसि देसंसि ।

ख ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चदे जोगं जोएइ, जसि देससि से णं इमाइ सोलस अट्ठतीसं मुहुत्तसयाइं अउणापण्ण च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, पण्णट्ठि चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता, पुणरवि से णं चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोगं जोएइ, अण्णंसि देसंसि ।

ग. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोगं जोएइ, जंसि देसंसि से णं इमाइं चउपण्ण-मुहुत्त-सहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेण तारिसएणं णक्खत्तेणं जोगं जोएइ, तंसि देसंसि,

घ ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोगं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं एगलक्ख नव य सहस्सं अट्ठ य मुहुत्तसए उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोग जोएइ, तंसि देसंसि ।

२ क ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोगं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरिए अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोगं जोएइ तं देसंसि ।

ख ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोग जोएइ तंसि देससि से णं इमाइं सत्त दुतीसं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे अण्णेण चेव तारिसएणं णक्खत्तेणं जोगं जोएइ, तसि देससि ।

ग. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ, जसि देससि से णं इमाइ अट्ठारस तीसाइ राइंदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोगं जोएइ, तसि देससि ।

घ ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोगं जोएइ जसि देसंसि से णं इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेण चेव णक्खत्तेण जोगं जोएइ तसि देससि ।

चंद-सूर-गह-णक्खत्ताण गइसमावण्णत्त—

७० ता जया ण इमे चदे गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इयरेऽवि चदे गइसमावण्णए भवइ ।

जया णं इयरे चदे गइसमावण्णए भवइ,
तया णं इमेऽवि चदे गइसमावण्णए भवइ ।

ता जया णं इमे सूरिए गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इयरेऽवि सूरिए गइसमावण्णए भवइ ।

ता जया ण इयरे सूरिए गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इमेऽवि सूरिए गइसमावण्णए भवइ ।

एवं गहे वि, णक्खत्ते वि ।

चंद-सूर-गह-णक्खत्ताण जोगो—

ता जया णं इमे चदे जुत्ते जोगे ण भवइ,
तया णं इयरेवि चदे जुत्ते जोगे ण भवइ ।

ता जया णं इयरे चदे जुत्ते जोगे णं भवइ,
तया ण इमेऽवि चदे जुत्ते जोगे ण भवइ ।

एवं सूरेऽवि गहेऽवि णक्खत्तेऽवि ।

सया वि चदा जुत्ता जोगेहिं,
सया वि सूरा जुत्ता जोगेहिं,
सया वि गहा जुत्ता जोगेहिं,
सया वि णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं ।

दुहओऽवि चंदा जुत्ता जोगेहिं,
दुहओऽवि सूरा जुत्ता जोगेहिं,
दुहओऽवि गहा जुत्ता जोगेहिं,
दुहओऽवि णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं ।

मडलं सयसहस्सेण अट्ठाणउईए सएहिं छेत्ता इच्चेस णक्खत्ते खेत्तपरिभागे, णक्खत्तविजए पाहुडे, त्ति बेमि । 

ग्यारहवां प्राभृत

पंचण्हं संवच्छराण, पारंभ-पज्जवसाणकाल चद-सूराण-णक्खत्तसंजोगकालं च—

७१. क १ प ता कहं ते सवच्छराणादी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ खलु इमे पच संवच्छरे पण्णत्ते त जहा—१ चदे, २ चदे, ३ अभिवड्ढिए, ४. चदे, ५ अभिवड्ढिए ।

पढमं चंदसंवच्छरं—

ख. १ प. ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढमस्स चदस्स सवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पढमस्स चदस्स सवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ग प ता से णं किं पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण दोच्चस्स चदसंवच्छरस्स आदी, से ण पढमस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, अणतर-पच्छाकडे समए ।

घ प तं समयं च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण छव्वीसं मुहुत्ता, छ व्वीसं च बासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छित्ता चउप्पणं चुण्णिया भागा सेसा ।

ङ. प तं समय च ण सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता, अट्ठ य बासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीस चुण्णिया भागा सेसा ।

वितियं चंदसवच्छर—

क. २ प ता एएसिण पचण्हं सवच्छराण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण पढमस्स चंदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से ण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स आदी, अणंतर-पुरक्खडे समए ।

ख प ता से ण किं पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय-सवच्छरस्स आदी, से णं दोच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए ।

ग प त समय च णं चंदे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाण आसाढाण सत्त मुहुत्ता, तेवण्ण च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीस चुण्णिया भागा सेसा।

घ प तं समय च ण सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स ण बायालीस मुहुत्ता पणतीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा।

तत्तियं अभिवड्ढियं संवच्छर—

क ३ प. ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्चस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता जे ण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स आदी, अणतरपुरक्खडे समए।

ख प. ता से ण किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता जे ण चउत्थस्स चदसवच्छरस्स आदी, से ण तच्चस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए।

ग प. त समय च णं चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण तेरसमुहुत्ता, तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीस चुण्णिया भागा सेसा।

घ प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता, छप्पण्ण बावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा।

चउत्थं चंदसंवच्छरं

क ४ प. ता एएसि ण पचण्हं संवच्छराण चउत्थस्स चदसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स पज्जवसाणे से ण चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, अणतरपुरक्खडे समए।

ख. प ता से ण किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए।

ग प तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चत्तालीस मुहुत्ता, चत्तालीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउसट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ।

घ. प तं समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुस्स अउणतीस मुहुत्ता, एक्कवीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठि-भाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता सितालीस चुण्णिया भागा सेसा ।

पंचमं अभिवड्ढिय सवच्छर—

क. ५ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स के आदो ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे ण चउत्थस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, अणतरपुरक्खडे समए ।

ख प ता से ण किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

ता जे ण पढमस्स सवच्छरस्स आदी से ण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए ।

ग. प. त समय च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चरमसमए ।

घ प तं समय च ण सूरे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुस्सेण, पुस्सस्स ण एक्कवीस मुहुत्ता तेतालीस च बावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीस चुण्णिया भागा सेसा ।

□□

बारहवां प्राभृत

पंचण्हं संवच्छराणं, मासाणं च राइंदिय-मुहुत्तप्पमाणं

७२ क. १ प ता कति णं संवच्छरा ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ तत्थ खलु इमे पच सवच्छरा पण्णत्ता तं जहा—१. णक्खत्ते, २ चंदे, ३ उडू, ४. आइच्चे, ५. अभिवड्डिए।

पढमं णक्खत्त-संवच्छरं—

ख. प. ता एएसि णं पंचण्हं सवच्छराण पढमस्स णक्खत्तसवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसइ मुहुत्तेण तीसइ मुहुत्तेणं अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइदियग्गेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सत्तावीसं राइदियाइं एक्कवीस च सत्तट्ठिभागा राइदियस्स राइदियग्गेणं, आहिए त्ति वएज्जा।

ग प. ता से ण केवइए मुहुत्तग्गेण ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताण, सत्तावीस च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेण, आहिए त्ति वएज्जा।

घ प ता एएसि ण अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे, ता से णं केवइए राइदियग्गे ण ? आहिएत्ति वएज्जा।

उ ता तिण्णि सत्तावीसे राइदियसए एक्कावन्न च सत्तट्ठिभागे राइदियस्स राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा।

ङ प. ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता णव मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य वत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्न च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा।

बितियं चदसंवच्छर—

२ क. प. ता एएसि णं पंचण्ह सवच्छराणं दोच्चस्स चदसंवच्छरस्स चदे मासे तीसइमुहुत्ते णं तीसइ-मुहुत्ते ण अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवइए राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बासट्ठिभागा राइदियस्स राइदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा।

ख प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता अट्ठपचासए मुहुत्ते तेत्तीसं बासट्ठिभागा मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

ग. प. ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा चदे संवच्छरे, ता से णं केवइए राइदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तिन्नि चउप्पन्ने राइंदियसए दुवालस य बासट्ठिभागा राइदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता दसमुहुत्तसहस्साइ छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पण्णासं च बासट्ठिभागे मुहुत्ते णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ततिय उडुसंवच्छरं—

३ क. प. ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसइ मुहुत्ते णं, तीसइ मुहुत्ते ण मिज्जमाणे केवइए राइदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तीस राइदियाणं राइदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प. ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता णवमुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प ता एस ण अद्धा दुवालसखुत्तकडा उडू संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तिण्णि सट्ठे राइदियसए राइदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता दसमुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य सयाइ मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

चउत्थं आइच्चसवच्छर—

४ क. प ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसइमुहुत्ते ण, तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तीस राइदियाइ अवड्ढभाग च राइंदियस्स राइदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा आदिच्चे सवच्छरे, ता से णं केवइए राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तिन्नि छावट्ठे राइदियसए राइदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता दसमुहुत्तस्स सहस्साइ णव असीए मुहुत्तसए मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

पंचमं अभिवड्ढियसंवच्छर—

५ क. प ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स अभिवड्ढिए मासे तीसइमुहुत्तेण, तीसइमुहुत्ते णं अहोरत्ते ण मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता एगतीसं राइदियाइ एगूणतीस च मुहुत्ता सत्तरस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा।

ख. प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसए सत्तरस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा।

ग प ता एस ण अद्धा दुवालसखुत्तकडा अभिवड्ढियसंवच्छरे, ता से णं केवइए राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता तिण्णि तेसीए राइंदियसए एक्कतीस च मुहुत्ता अट्ठारस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता एक्कारसमुहुत्तसहस्साइ पच य एक्कारसमुहुत्तसए अट्ठारस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा।

एगस्स जुगस्स अहोरत्त-मुहुत्तप्पमाणं—

७३ क प. ता केवइयं ते नो-जुगे राइदियग्गेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सत्तरस एकाणउए राइदियसए, एगूणवीस च मुहुत्त, सत्तावण्णे बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपन्नं चुण्णिया भागे राइदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा।

ख. प ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता तेवण्णमुहुत्तसहस्साइं, सत्त य अउणापन्ने मुहुत्तसए, सत्तावण्ण बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा मुहुत्ते ण, आहिए त्ति वएज्जा।

ग प ता केवइए ण ते जुगपत्ते राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता, चत्तारि य बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठि-भागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागे राइंदियग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा;

उ. ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए, चत्तारि य बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागे मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

ङ. प ता केवइयं जुगे राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता अट्ठारस तीसे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा,

च प ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता चउप्पण्ण मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा।

छ प ता से णं केवइए बासट्ठिभागं मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता चोत्तीसं सयसहस्साइं अट्ठावीसं च बासट्ठिभागमुहुत्तसए बासट्ठिभाग मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

पंचण्हं संवच्छराणं पारंभ-पज्जवसाणकालस्स समत्तपरूवणं—

७४ १क प ता कया णं एए आदिच्च-चद संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता सट्ठि एए आदिच्चमासा बासट्ठि एए य चंदमासा।

एस णं अद्धा छक्खुत्तकडा दुवालसभयिता तीस एए आदिच्चसवच्छरा, एक्कतीसं एए चंदसवच्छरा,

तया णं एए आदिच्च-चंद-सवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिए त्ति वएज्जा।

ख. प. ता कया णं एए आदिच्च-उडु-चद-णक्खत्ता-संवच्छरा समादीया, समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सट्ठि एए आदिच्चा मासा, एगट्ठि एए उडुमासा, बासट्ठि एए चंदमासा, सत्तट्ठि एए णक्खत्तमासा।

एस णं अद्धा दुवालस खुत्तकडा दुवालसभयिता सट्ठि एए आइच्चा सवच्छरा, एगट्ठि एए उडु संवच्छरा, बासट्ठि एए चंदा संवच्छरा, सत्तट्ठि एए णक्खत्ता सवच्छरा।

तया णं एए आइच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादीया, समपज्जवसिया, आहिए त्ति वएज्जा।

ग प ता कया णं एए अभिवड्ढिअ-आदिच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सत्तावण्ण मासा, सत्त य अहोरत्ता, एक्कारस य मुहुत्ता, तेवीसं बासट्ठि भागा-मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिया मासा, सट्ठि एए आइच्चामासा, एगट्ठि एए उडुमासा बासट्ठि एए चंदमासा सत्तट्ठि एए णक्खत्त मासा।

एस णं अद्धा छप्पण्ण-सयखुत्तकडा दुवालस भयिता
सत्त सया चोयाला, एए णं अभिवड्ढिया संवच्छरा,
सत्तसया असीया, एए णं आइच्चा संवच्छरा,
सत्तसया तेणउया, एए णं उडु संवच्छरा,
अट्ठसत्ता छल्लुत्तरा, एए णं चंदा संवच्छरा,
एकसत्तरी अट्ठसया, एए णं णक्खत्ता संवच्छरा।

तया णं एए अभिवड्ढिअ-आइच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया, आहिए त्ति वएज्जा।

२ ता णयट्ठयाए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए, दुवालस य बासट्ठिभागे राइंदियस्स, आहिए त्ति वएज्जा।

३. ता अहातच्चे णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए, पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बासट्ठि भागे मुहुत्तस्स, आहिए त्ति वएज्जा।

उडूणं णामाइं कालप्पमाणं च—

७५ तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तंजहा—१ पाउसे, २ वरिसारत्ते, ३. सरते, ४ हेमंते, ५ वसंते, ६ गिम्हे।[1]

ता सव्वे वि णं एए चंद-उडू दुवे दुवे मासा तिचउप्पण्णसएणं तिचउप्पण्णसएणं आयाणेण गणिज्जमाणा साइरेगाइं एगूणसट्ठि एगूणसट्ठि राइंदियाइं राइंदियग्गेण[2] आहिए त्ति वएज्जा।

ओम-अइरित्तरत्ताणं संखा तं हेउं च—

तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तंजहा—१. तइए पव्वे, २. सत्तमे पव्वे, ३. एक्कारसमे पव्वे, ४ पण्णरसमे पव्वे, ५ एगूणवीसइमे पव्वे, ६ तेवीसइमे पव्वे।

---

१ ठाण, ६, सु ५२६

२ चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि राइंदियाइं राइंदियग्गेण पण्णत्ता।

तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तंजहा—

१ चउत्थे पव्वे, २ अट्ठमे पव्वे, ३ बारसमे पव्वे, ४ सोलसमे पव्वे, ५ वीसइमे पव्वे, ६. चउवीसइमे पव्वे ।[1]

गाहा—

छच्चेव य अइरत्ता, आइच्चाओ हवंति माणाइं ।
छच्चेव ओमरत्ता, चदाहिं हवंति माणाइं ॥१॥

वासिक्कियासु आउट्टियासु चंदेण सूरेण य णक्खत्त जोगकालो

७६ तत्थ खलु इमाओ पंचवासिकीओ, पंच हेमंतीओ आउट्टीओ पण्णत्ताओ ।

१ क प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता अभिइणा अभिइस्स पढमसमएण ।

ख प तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता पूसेण, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

२ क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता संठाणाहिं, संठाणाणं एक्कारस मुहुत्ते, एगूणतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेपण्णं चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता पूसे णं, पूसस्स णं तं चेव, जं पढमाए ।

३ क. प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता विसाहाहिं, विसाहा णं तेरस मुहुत्ता, चउप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, चत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता पूसे णं, पूसस्स णं तं चेव, जं पढमाए ।

४ क प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं च चउत्थं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

---

१ क पर्वणि-पक्षे । यहाँ पर्व-पक्ष का पर्यायवाची है ।
ख ठाणं ६, सु ५२४

उ. ता रेवईहिं, रेवईणं पणवीस मुहुत्ता बत्तीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा।

ख प. त समयं च णं सूरे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पूसे णं, पूसस्स णं त चेव, ज पढमाए।

५ क प. ता एएसि ण पचण्ह संवच्छराण च पचमं वासिक्कि आउट्टि चदे केणं णक्खत्ते णं जोएइ ?

उ ता पुव्वाहि फग्गुणीहि पुव्वाफग्गुणीणं बारसमुहुत्ता सत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसेणं, पूसस्स त ण चेव, ज पढमाए।

हेमंतियासु आवट्टियासु चदेरण सूरेरण य णक्खत्तजोगकालो

७७ १ क प. ता एएसि ण पचण्ह संवच्छराण पढम हेमंति-आउट्टि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता हत्थेण, हत्थस्स ण पचमुहुत्ता पण्णासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठि चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि आसाढाहि उत्तराण आसाढाण चरिमसमए।

२ क. प ता एएसि ण पंचण्हं सवच्छराण दोच्चं हेमंति आउट्टि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता सतभिसयाहि, सतभिसयाणं दुन्नि मुहुत्ता अट्ठावीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तालीसं च चुण्णिया भागा सेसा।

ख प तं समय च ण सूरे केणं णक्खत्तेण जोइए ?

उ ता उत्तराहि उासाढाहि उत्तराण आसाढाणं चरिमसमए।

३ क प एएसि ण पंचण्हं सवच्छराणं तच्च हेमति आउट्टि चदे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पूसे णं, पुसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं च चुण्णिया भागा सेसा।

ख प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता उत्तराहि आसाढाहि उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए।

४ क प. एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थि हेमति आउट्टि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता, अट्ठावन्नं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाण, चरिमसमए,

५ क. प ता एएसि ण पंचण्ह सवच्छराणं पचम हेमति आउट्टिं चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता कत्तियाहिं, कत्तियाण अट्ठारस मुहुत्ता, छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च सूरे केणं णक्खत्तेण जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चरिमसमए ।

जोगाणं चदेण सद्धिं जोग-परूवण

७८. तत्थ खलु इमे दसविहे जाए पण्णत्ते, तजहा—

१. वसभाणु जोए, २. वेणुयाणु जोए
३ मचे जोए, ४. मचाइमचे जोए
५ छत्ते जोए, ६ छत्ताइ छत्ते जोए,
७ जुअणद्धे जोए, ८. घणसमद्दे जोए
९. पीणिए जोए १० मडुकप्पुते जोए

१ प. ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण छत्ताइच्छत्तं जोय चदे कंसि देससि जोएइ ?

उ. ता जवुद्दीवस्स दीवस्स,
पाईण-पडिणीआययाए, उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसेणं सएण छित्ता दाहिण-पुरत्थिमिल्लसि चउभागमडलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिण-पुरत्थिमिल्ल चउब्भागमडल असपत्ते एत्थ ण से चदे छत्तातिच्छत्तं जोय जोइए ।

उप्पि चदो मज्झे णक्खत्ते, हेट्ठा आइच्चे ।

२ प तं समय च ण चदे केण णक्खत्तेणं जोएइ ?



उ. ता चित्ताहिं चरमसमए ।

तेरहवां प्राभृत

चंदमसोवड्ढोऽवड्ढी—

७९ प ता कह ते चंदमसो वड्ढोऽवड्ढी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठ पचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स ।

क ता दोसिणापक्खाओ अंधगारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायालसए, छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जइ, तजहा—

पढमाए पढमं भागं वितियाए वितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं,

चरमिसमए चदे रत्ते भवइ,

अवसेसे समए चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं अमावासा, एत्थ ण पढमे पव्वे अमावासे ता अधगारपक्खो,

ख ता णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारे बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चदे विरज्जइ, तंजहा—

पढमाए पढमं भागं वितियाए वितिय भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमसमए चदे विरत्ते भवइ, अवसेससमए रत्ते य, विरत्ते य भवइ,

इयण्णं पुण्णमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी ।

एगयुगे पुण्णिमासिणोओ अमावासो—

८० तत्थ खलु इमाओ बावट्ठि पुण्णिमासिणीओ बावट्ठि अमावासाओ पण्णत्ताओ,

बावट्ठिं एते कसिणा रागा,

बावट्ठि एते कसिणा विरागा,

एते चउव्वीसे पव्वसए,

एते चउव्वीसे कसिण-राग-विरागसए,

जावइयाण पचण्ह संवच्छराणं समया एगे णं चउव्वीसेणं समयसएगुणगा,

एवइया परित्ता असखेज्जा देस-राग-विराग सया भवतीतिमक्खाया,

ता अमावासाओ ण पुण्णिमासिणी चत्तारि .बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ णं अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता अमावासाओ ण अमावासा अट्ठपचासीए मुहुत्तसए तीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ ण पुण्णिमासिणी अट्ठ पचासीए मुहुत्तसए तीस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

एस ण एवइए चदे मासे,
एस ण एवइए सगले जुगे ।

चदाइच्च अद्धमासे चदाइच्चाण मडलचार—

८१ क प. ता चदेण अद्धमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता चउद्दस चउब्भागमडलाइ चरइ एगं च चउवीससयभाग मडलस्स ।

ख प ता आइच्चेण अद्धमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता सोलस मंडलाइ चरइ, सोलसमडलचारी तया अवराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ ।

ग प कयराइं खलु दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ ?

उ इमाइ खलु ते दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ त जहा—

१ निक्खममाणे चेव अमावासते णं,
२ पविसमाणे चेव पुण्णिमासितेण,

एयाइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइ चदे केणई असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ ।

पढमे चंदायणे—

ता पढमा पढमायणगए चदे दाहिणगए भागाए पविसमाणे सत्त अद्धमडलाइं जाइं चदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

प कयराइ खलु ताइं सत्त अद्धमडलाइ जाइ चदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे, चारं चरइ ?

उ. इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तं जहा—

१. बिइए अद्धमंडले, २ चउत्थे अद्धमडले,
३ छट्ठे अद्धमडले, ४ अट्ठमे अद्धमंडले,
५ दसमे अद्धमडले, ६. बारसमे अद्धमंडले,
७ चउदसमे अद्धमंडले।

एयाइं खलु ताइ सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

ता पढमायणगए चदे उत्तराए भागाए पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्त-ट्ठिभागाइं अद्धमडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ।

प कयराइं खलु ताइं छ अद्धमडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइ अद्धमडलस्स जाइ चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ?

उ. इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तंजहा—

१ तईए अद्धमंडले, २ पंचमे अद्धमंडले,
३ सत्तमे अद्धमडले, ४. नवमे अद्धमडले,
५. एकारसमे अद्धमंडले, ६ तेरसमे अद्धमंडले
पण्णरसमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं,

एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

एयावया च पढमे चंदायणे समत्ते भवइ।

दोच्चे चंदायणे—

ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चदे अद्धमासे,
चदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे,

प. ता णक्खत्ताओ अद्धमासाओ ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं चरइ ?

उ ता एगं अद्धमंडलं चरइ, चत्तारि य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं एगतीसाए छेत्ता णव भागाइं,

ता दोच्चायणगए चदे पुरच्छिमाए भागाए णिक्खममाणे सत्त चउप्पणाइं जाइ चदे परस्स चिन्नं पडिचरइ, सत्त तेरसगाइ जाइं चदे अप्पणा चिण्णं चरइ,

ता दोच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए णिक्खममाणे छ चउप्पण्णाइ जाइ चदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, छ तेरसगाइ चदे अप्पणो चिण्ण पडिचरइ,

अवरगाइं खलु दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामन्नगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पवि-ट्ठित्ता चार चरइ,

प. कयराइ खलु ताइं दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णागयाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ ?

उ इमाइ खलु ताइ दुवे तेरसगाइं जाइ चदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

१ सव्वब्भतरे चेव मडले,

२ सव्ववाहिरे चेव मडले,

एयाणि खलु ताणि दुवे तेरसगाइं जाइं चदे केणइ असामण्णगयाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

एयवया दोच्चे चंदायणे समत्ते भवइ ।

तच्चे चंदायणे—

ता णक्खत्ते मासे नो चदे मासे,
चदे मासे नो णक्खत्ते मासे,

प ता णक्खत्ताए मासाए चदे चदेण मासेण किमधिय चरइ ?

उ ता दो अद्धमडलाइं चरइ, अट्ठ य सत्तट्ठि भागाइ अद्धमडलस्स, सत्तट्ठिभाग च एक्क-तीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइ,

ता तच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणतरस्स पच्चत्थि-मिल्लस्स अद्धमडलस्स इगयालीस सत्तट्ठिभागाइ जाइं चदे अप्पणो, परस्स य चिन्नं पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडिचरइ,
तेरस सत्तट्ठिभागाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ,

एयावया बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ ।

तच्चायणगए चदे पुरत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर तच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमडलस्स इगयालीस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चंदे परस्स चिण्ण पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

एयावया बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ,

ता तच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे वाहिर चउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमडलस्स अट्ठसत्तट्ठिभागाइ, सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइ जाइं चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

एयावया बाहिर चउत्थ पच्चत्थिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

एव खलु चदेण मासेण चदे तेरस चउप्पण्णगाइ दुवे तेरसगाइं जाइ चदे परस्स चिण्ण पडियरइ,

तेरस तेरसगाइ जाइ चदे अप्पणो चिण्णाइ पडियरइ,

दुवे इगयालीसगाइ दुवे तेरसगाइ, अट्ठ सत्तट्ठिभागाइ सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

अवराइं खलु दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामन्नगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

इच्चेसो चदमासो अभिगमण-णिक्खमण-वुड्ढि-णिव्वुड्ढि-अणवट्ठिय-सठाण-सठिई-विउव्वणगिड्ढिपत्ते चदे देवे चदे देवे, आहिए त्ति वएज्जा ।

□□

चौदहवां प्राभृत

दोसिणा अंधयारस्स य बहुत्तकारणं—

८२ क १ प ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

२ प ता कहं ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अंधकारपक्खाओ ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

३ प ता कहं ते अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अंधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जति, तंजहा—
पढमाए पढमं भागं बिदियाए बिदिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरस भाग ।
एव खलु अंधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ?

उ ता परित्ता असखेज्जा भागा ।

ख १ प ता कता ते अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खे णं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा,

२ प ता कहं ते अंधकारपक्खे णं अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खे णं अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

३ प ता कहं ते दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खेण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ णं अधकारपक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चंदे रज्जति, तंजहा—पढमाए पढम भाग बितियाए बितिय भाग जाव पण्णरस भागं,
एव खलु दोसिणापक्खाओ ण अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिए ण अंधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ परित्ते असखेज्ज भागे ।[1]

□□

---

१ "सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृत १३, सूत्र ७९ और सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा. १४ सूत्र ८२" इन दोनो सूत्रो का फलितार्थ समान है । अन्तर इतना ही है कि सूत्र ७९ मे "चन्द्र की हानि-वृद्धि" का कथन है । सूत्र ८२ मे "चन्द्रिका तथा अन्धकार की अधिकता" का कथन है । किन्तु चन्द्र की हानि-वृद्धि से ही चन्द्रिका एव अन्धकार की अधिकता होती है ।

पन्द्रहवाँ प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराण गइपरूवण—

८३. प ता कह ते सिग्घगई ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एएसि ण चदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाण--
चदेहिंतो सूरे सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चदा सव्वसिग्घगई तारा ।[1]

१ प. ता एगमेगेण मुहुत्तेण चदे केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता ज ज मडल उवसकमित्ता चार चरइ तस्स तस्स मडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अडसट्ठि भागसए गच्छइ, मडलं सयसहस्से ण अट्ठाणउइ सएहिं छेत्ता छेत्ता ।

२ प ता एगमेगेण मुहुत्तेण सूरिए केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता जं ज मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तस्स तस्स मंडल-परिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसए गच्छइ, मडलं सयसहस्से णं अट्ठाणउइसएहिं छेत्ता छेत्ता ।[2]

---

१ प ता एएसि ण चदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाण कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा मदगई वा ?
उ ता चदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चदा, सव्वसिग्घगई तारा ।

२ ग्रहो की गति का निरूपण मूल पाठ मे नही है ।
ग्रहो की गति के सम्बन्ध मे टीकाकार का स्पष्टीकरण —
ग्रहास्तु वक्रानुवक्रादिगतिभावतोऽनियतगतिप्रस्थानास्ततो न तेपामुक्तप्रकारेण गतिप्रमाणप्ररूपणा कृता, उक्त च गाहाओ—
'चदेहिं सिग्घयरा, सूरा सूरेहिं होंति णक्खत्ता ।
अणिययगइपत्थाणा, हवति सेसा गहा सव्वे ॥ १ ॥
अट्ठारस पणतीसे, भागसए गच्छइ मुहुत्तेण ।
नक्खत्त चदो पुण, सत्तरससए उ अडसट्ठे ॥ २ ॥
अट्ठारस भागसए, तीसे गच्छइ रवी मुहुत्तेण ।
नक्खत्तसीमछेदो, सो चेव इह पि णायव्वो ॥ ३ ॥

३ प ता एगमेगेण मुहुत्तेण णक्खत्ते केवइयाइं भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता ज ज मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तस्स तस्स मडल-परिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ, मडल सयसहस्से ण अट्ठाणउईसएहि छेत्ता छेत्ता ।[1]

चद-सूर-णक्खत्ताण विसेसगइपरूवण—

८४ १ प. ता जया ण चद गइसमावण्ण सूरे गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय विसेसेइ ?

उ वावट्ठिभागे विसेसेइ ।

२ प. ता जया ण चद गइसमावण्ण, णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय विसेसेइ ?

उ ता सत्तट्ठि भागे विसेसेइ ।

३ प ता जया ण सूर गइसमावण्ण णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय विसेसेइ ?

उ ता पच भागे विसेसेइ ।

चदस्स-णक्खत्ताण य जोगगइपरूवण—

ता जया ण चदे गइसमावण्ण अभिई णक्खत्ते ण गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ समासाइत्ता णवमुहुत्ते सत्तावीस च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता, जोग विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ,

ता जया ण चद गइसमावण्ण सवणे णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, समासाइत्ता तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

एवं एएण अभिलावेण णेयव्व, पण्णरसमुहुत्ताइ, तीसइमुहुत्ताइ पणयालीसमुहुत्ताइ । भाणियव्वाइ जाव उत्तरासाढा,

चंदस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवण—

८४ ता जया ण चद गइसमावण्ण गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता चदेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

---

१ 'ताराओ की गति सबसे अधिक है' ऐसा मूल पाठ मे कथन है किन्तु गति के प्रमाण का कथन नही है, टीकाकार ने भी इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहा है ।

सूरस्स णक्खत्ताण य जोग-गइकालपरूवणं—

ता जया ण सूर गइसमावण्ण अभिइणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता, चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेणं सद्धि जोग जोएइ, जोगं जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ,

एव छ अहोरत्ता एक्कवीस मुहुत्ता य, तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य, वीस अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भणियव्वा जाव—

ता जया ण सूर गइसमावण्ण उत्तरासाढा णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

सूरस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवणं —

ता जया ण सूर गइसमावण्ण गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोगं अणुपरियट्टित्ता जोगं विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

क–णक्खत्तमासे चंदस्स सूरस्स, णक्खत्तस्स य मंडलचार—

८५ [णक्खत्ताइसु पचसु मासेसु चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स च मंडलचारसंखा]

१ प ता णक्खत्तेण मासेण चंदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता तेरस मंडलाइ चरइ, तेरस य सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

२ प ता णक्खत्तेण मासेण सूरे कइ मंडलाइ चरइ ?

उ ता तेरस मडलाइं चरइ चोत्तालीस च सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

३ प ता णक्खत्तेण मासेण णक्खत्ते कइ मंडलाइ चरइ ?

उ ता तेरस मडलाइं चरइ अद्धसेतालीस च सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

ख–चंदमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडल चारं—

१ प ता चदेण मासेणं चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता चोद्दस्स चउभागाइ मडलाइं चरइ, एग च चउवीससय भागं मंडलस्स ।

२ प ता चंदेण मासेण सूरे कइ मडलाइं चरइ ?

उ ता णण्णरस चउभागूणाइ मंडलाइ चरइ, एगं ज चउवीससयभागं मंडलस्स ।

३ प ता चदेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मडलाइं चरइ ?

उ ता पण्णरस चउभागूणाइं मडलाइ चरइ, छच्च चउवीससयभागे मंडलस्स ।

ग—उडुमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तमासस्स य मंडलचारं—

१ प ता उडुणा मासेण चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता चोद्दस मंडलाइं चरइ तीसं च एगट्ठिभागे मंडलस्स।

२ प ता उडुणा मासेणं सूरे कइ मडलाइं चरइ ?

उ ता पण्णरस मंडलाइ चरइ।

३ प. ता उडुणा मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता पण्णरस मंडलाइ चरइ, पंच य बावीस सयभागे मंडलस्स।

घ—आइच्चमासे चंदस्स, सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं—

१ प. ता आइच्चेण मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता चोद्दस्स मडलाइं चरइ, एक्कारस पण्णरस य भागे मंडलस्स।

२ प. ता आइच्चेण मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरइ।

३ प. ता आइच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता पण्णरस चउभागाहिगाइ मंडलाइं चरइ पचतीसं च चउवीससयभाग मंडलाइं चरइ।

ङ—अभिवड्ढियमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं—

१ प. ता अभिवड्ढिएणं मासेणं चदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता पण्णरस मडलाइं चरइ, तेसीइं छलसीयभागे मंडलस्स।

२ प. ता अभिवड्ढिएण मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता सोलस मंडलाइ चरइ, तिहिं भागेहि ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सएहिं मंडलं छित्ता।

३ प ता अभिवड्ढिएणं मासेण णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता सोलस मंडलाइ चरइ सेयालीसएहिं भागेहिं अहियाहिं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं मंडलं छेत्ता।

एगमेगे अहोरत्ते चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडलचारं—

८६ १ प ता एगमेगेण अहोरत्तेणं चदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता एगं अद्धमंडलं चरइ, एक्कतीसेहिं भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता।

२ प ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता एगं अद्धमंडलं चरइ ।

३ प ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता एगं अद्धमंडलं चरइ, दोहिं भागेहिं अहियं सत्तहिं बत्तीसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।

एगमेगे मंडले चंद-सूर-णक्खत्ताणं अहोरत्ते चारं–

१ प ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, एक्कतीसेहिं भाएहिं अहिएहिं चउहिं चोयालेहिं सएहिं राइदिएहिं छेत्ता ।

२ प ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ. ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ ।

३ प ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सएहिं राइं-दिएहिं छेत्ता ।

एगमेगजुगे चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडलचारं–

१ प. ता जुगे णं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता अट्ठचुल्लसीए मंडलसए चरइ ।

२ प ता जुगे णं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता णव-पण्णरसमंडलसए चरइ ।

३ प ता जुगे णं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसए चरइ ।

इच्चेसा मुहुत्तगई रिक्ख-उडुमास-राइदिय-जुगमंडल-पविभत्ती सिग्घगई वत्थु आहिए त्ति बेमि ।

□□

सोलहवां प्राभृत

दोसिणाइयाण लक्खणा—

८७. १ प ता कहं ते दोसिणालक्खणा ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता चंदलेसाइ य दोसिणाइ य ।

२ प दोसिणाइ य चंदलेसाइ य के अट्ठे, किंलक्खणे ?

उ. ता एगट्ठे एगलक्खणे ।

१ प. ता कहं ते सूरलेस्सालक्खणो ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता सूरलेस्साइ य आयवेइ य ।

२ प. ता सूरलेस्साइ य, आयवेइ य के अट्ठे किंलक्खणे ?

उ. ता एगट्ठे, एगलक्खणे ।

१ प. ता कहं ते छायालक्खणे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता छायाइ य, अंधकाराइ य ।

२ प ता छायाइ य अंधकाराइ य के अट्ठे किंलक्खणे ?

उ ता एगट्ठे एगलक्खणे । □□

सत्तरहवाँ प्राभृत

चंद-सूरियाणं चवणोववाया

८८ प. ता कहं ते चवणोववाया, आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थ एगे एवमाहंसु—

१. ता अणुसमयमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता अणुमुहुत्तमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति ।

३-२४ एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव[1]

---

१. "एव जहा हिट्ठा तहेव जावेत्यादि—

एव उक्तेन प्रकारेण यथा अधस्तात् षष्ठे प्राभृते पञ्चविंशति प्रतिपत्तयस्तथैवात्रापि वक्तव्या यावत् अणुओ-सप्पिणि-उस्सप्पिणिमेवेत्यादि चरमसूत्रम् ।

ताश्चैव भणितव्या —

एगे पुण एवमाहसुः—

ता अणुराइदियमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता अणुपक्खमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता अणुमासमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

६ ता अणु-उउमेव

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता अणु-अयणमेव,

एगे पुण एवमाहसु—

८ ता अणु-सवच्छरमेव,

एगे पुण एवमाहसु—

९ ता अणुजुगमेव,

एगे पुण एवमाहसु—

(शेष टिप्पणिया अगले पृष्ठ पर)

२५　एगे पुण एवमाहंसु—
ता अणुओसप्पिणी, उस्सप्पिणीमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, एगे एवमाहंसु ।

१०　ता अणुवाससयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
११　ता अणुवाससहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१२　ता अणु वाससयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१३.　ता अणुपुव्वमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१४　ता अणुपुव्वसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१५　ता अणुपुव्वसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१६　ता अणुपुव्वसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१७　ता अणुपलिओवमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१८　ता अणुपलिओवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१९　ता अणुपलिओवमसहस्समेव
एगे पुण एवमाहंसु—
२०　ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२१　ता अणुसागरोवमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२२　ता अणुसागरोवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२३　ता अणुसागरोवमसहस्समेव ।
एगे पुण एवमाहंसु—
२४　ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव ।
पञ्चविंशतितम प्रतिपत्तिसूत्र तु साक्षादेव सूत्रकृता दर्शितम् तदेवमुक्ता परतीर्थिकप्रतिपत्तय ।　—टीका

वयं पुण एवं वयामो—

ता चंदिम-सूरियाणं देवा महिड्ढीया, महाजुईया-महाबला, महाजसा, महासोक्खा, महाणुभावा।

वर वत्थधरा, वरमल्लधरा, वरगंधधरा, वराभरणधरा, अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए काले अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, चवणोववाया आहिए त्ति वएज्जा।

□□

अठारहवां प्राभृत

चंदाइच्चाइणं भूमिभागाश्रो उड्ढत्तं

८९. प ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वदेज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तिओ, पण्णत्ताओ, तजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं दिवड्ढं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढातिज्जाइ चदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता तिन्नि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धुट्ठाइं चदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता पंच जोयणसहस्साइ सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछट्ठाइं चदे, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेण, अद्धसत्तमाइं चदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहसु—

७. ता सत्तजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धट्ठमाइं चदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धनवमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

९ ता नवजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढ उच्चत्तेणं अद्धदसमाइं चदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१० ता दसजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धएक्कारस चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

११ ता एक्कारस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धबारस चदे, एगे एवमाहंसु।

एते णं अभिलावेण णेतव्व—

१२. बारस सूरे, अद्धतेरस चदे, १३ तेरससूरे अद्धचोद्दस चंदे,

१४. चोद्दस सूरे, अद्धपण्णरसचदे, १५. पण्णरस सूरे अद्धसोलस चदे,

१६ सोलस सूरे, अद्धसत्तरस चंदे, १७. सत्तरस सूरे अद्धअट्ठारस चंदे,

१८. अट्ठारस सूरे, अद्धएकोणवीसं चंदे, १९ एकोणवीसं सूरे अद्धवीसं चंदे,

२०. वीसं सूरे, अद्धएक्कवीसं चंदे, २१ एक्कवीस सूरे, अद्धबावीसं चंदे,

२२. बावीस सूरे, अद्धतेवीसं चंदे, २३ तेवीसं सूरे, अद्ध चउवीसं चंदे,

२३ चउवीसं सूरे अद्धपणवीसं चंदे,

एगे पुण एवमाहंसु—

२५. ता पणवीस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेण अद्धछव्वीसं चदे, एगे एवमाहंसु।

वय पुण एवं वदामो—

ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउइ जोयणसए उड्ढं उप्पतित्ता हेट्ठिल्ले ताराविमाणे चारं चरति जाव ता चंदविमाणातो णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता उवरिल्लते तारारूवे चारं चरति।

एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरं जोयणसतं बाहल्ले तिरियमसखेज्जे जोतिसविसए जोतिस-चारं चरति आहितेति वदेज्जा।

ताराणं अणुत्ते तुल्लत्ते कारणाइं

९० ता अत्थि णं चदिम-सूरियाण देवाणं—

हिट्ठंपि[1] तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,

समपि[2] तारारूवा अणुंपि तुल्ला वि,

उप्पिपि[3] तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि[4]।

---

१ जंबु. वक्ख ७ सु १६२

हिट्ठ पि त्ति—क्षेत्रापेक्षया अधस्तना अपि तारारूपविमानाधिष्ठातारो देवास्तेऽपि चद्र-सूर्याणा देवाना द्युति-विभवादिकमपेक्ष्य केचिदणवोऽपि भवति, केचित्तुल्या अपि।

२ "सममवि त्ति—चद्रविमानै सूर्यविमानैश्च क्षेत्रापेक्षया समश्रेण्यापि।"

३. "उप्पि पि त्ति चद्रविमानाना सूर्यविमानाना चोपर्यपि।"

४ ता जहजहेत्यादि यै प्राग्भवे तपोनियम—ब्रह्मचर्याणि मदानि कृतानि ते तारारूपविमानाधिष्ठातृ-देवभव-मनुप्राप्ताश्चन्द्र-सूर्यदेवेभ्यो द्युति-विभवादिकमपेक्ष्य हीना भवति।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

प. ता कहं ते चंदिम-सूरियाण देवाणं—
हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
समंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्ला वि ?

उ. ता जहा जहा णं तेसिं णं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं उस्सियाइं भवंति—तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं भवंति, तंजहा—अणुत्ते वा, तुल्लत्ते वा।

ता एवं खलु चंदिम-सूरियाण देवाणं—
हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
समंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि।

चंदस्स गह-णक्खत्त-ताराणं परिवारो

९१. प क. ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवइया गहा परिवारो पण्णत्तो ?
ख केवइया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो ?
ग केवइया तारा परिवारो पण्णत्तो ?

उ. क. ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीइगहा परिवारो पण्णत्तो,
ख अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो,
ग. गाहा—

छावट्ठि सहस्साइं, णव चेव सयाइं पंचुत्तराइं।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं[1]॥
परिवारो पण्णत्तो[2]।

यैस्तु भवान्तरे तपोनियम-ब्रह्मचर्याणि अत्युत्कटान्यासेवितानि ते तारारूपविमानाधिष्ठातृरूपदेवत्वमनुप्राप्ता द्युतिविभवादिकमपेक्ष्य चन्द्र-सूर्यैर्देवैः सह समाना भवन्ति न चैतदनुपपन्नम्।
दृश्यन्ते हि मनुष्यलोकेऽपि केचिज्जन्मान्तरोपचिततथाविधपुण्यप्राग्भारा राजत्वमनुप्राप्ता अपि राज्ञा सह तुल्य-विभवा इति।

१. जम्बू वक्ख ७, सु १६३
२ क "एगमेगस्स णं चंदिम-सूरियस्स अट्ठासीइं अट्ठासीइं महग्गहा परिवारो पण्णत्तो। —सम ८८, सु १
ख. प एगमेगस्स णं चंदिम-सूरियस्स
उ गाहाओ—अट्ठासीतिं च गहा, अट्ठावीसं च होइ णक्खत्ता।
एगससीपरिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि॥

(शेष टिप्पणियां अगले पृष्ठ पर)

मंदरपव्वयाओ जोइसचारं

९२ १ प. ता मंदरस्स णं पव्वयस्स ण केवइयं अवाहाए जोइसे चारं चरइ ?

उ. ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अवाहाए जोइसे चारं चरइ[1] ।

लोअंताओ जोइसठाणं

प. ता लोअंताओ णं केवइयं अवाहाए जोइसे पण्णत्ते ?

उ. ता एक्कारस एक्कारे जोयणसए अवाहाए जोइसे पण्णत्ते ।[2]

णक्खत्ताणं अब्भंतराइं चारं

९३. १ प. ता जंबुद्दीवे णं दीवे
कयरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरइ ?

२ प. कयरे णक्खत्ते सव्ववाहिरिल्लं चारं चरइ ?

३ प. कयरे णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ ?

४ प. कयरे णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरइ ?

१ उ. अभिई णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरइ[3] ।

छावट्ठीसहस्साइ, णव चेव सयाइ पचसयराइ ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥
—जीवा प ३, उ २, सु. १९४

ग: जीवाभिगम प्रति. ३, उ. २, सू १९४ मे—"चन्द्र और सूर्य दोनो के सयुक्त प्रश्नोत्तर है। मूल मे प्रश्नसूत्र का केवल प्रतीक है और उत्तर के रूप मे दो गाथाएँ है।

टीका मे—"प्रश्नसूत्र का यह प्रतीक है—"एगमेगस्स ण भते ! चदिम-सूरियस्सेत्यादि इस प्रतीक के सम्बन्ध मे टीकाकर का स्पष्टीकरण यह है—

"एकैकस्य भदन्त ! चद्र-सूर्यस्य" अनेन च पदेन यथा नक्षत्रादीना चद्र स्वामी तथा सूर्योऽपि, तस्यापीन्द्रत्वात् .

.इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गलितानि च सूत्राणि वहुषु पुस्तकेषु ततो यथावस्थित-वाचनाभेदप्रतिपत्त्यर्थं गलितसूत्रोद्धरणार्थं चैव सुगमान्यपि विव्रियन्ते.

१. सम. स. ११, सु. ३

२ क सम स ११, सु २
ख. जम्बु. वक्ख ७, सु १५४

३. "सर्वाभ्यन्तर सर्वेभ्यो मण्डलेभ्योऽभ्यन्तर सर्वाभ्यन्तर अनेन द्वितीयादि-मण्डलचारव्युदास"
"यद्यपि सर्वाभ्यन्तरमण्डलचारीण्यभिजिदादिद्वादशनक्षत्राण्यभिहितानि, तथापीद शेषैकादशनक्षत्रापेक्षया मेरु-दिशि स्थित सत् चार चरतीति सर्वाभ्यन्तरचारीत्युक्तम्" ।

२ उ मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्ल चारं चरइ[1]।

३ उ. साई णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ[2]।

४ उ भरणी णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्ल चार चरइ।

चंद-सूर-गह-णक्खत्तविमाणाणं संठाणाइं

९४. प. ता चंदविमाणे ण किंसठिए पण्णत्ते ?

उ ता अद्धकविट्ठग-सठाणसठिए[3] सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसियपहसिए विविह-मणि-रयण-भत्तिचित्ते, वाउद्धुय-विजय-वेजयतीपडागा छत्ताइछत्तकलिए, तुंगे गगणतलमणुलिहंत-सिहरे, जालंतररयण-पंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागे, वियसिय-सयवत्त-पुंडरीय-तिलयरयणद्धचदचित्ते, अतो बहिं च सण्हे, तवणिज्जवालुगापत्थडे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

एवं सूरविमाणे, गहविमाणे, नक्खत्तविमाणे ताराविमाणे[4]।

---

१ "सर्ववाह्य -सर्वतो नक्षत्रमण्डलिकाया वहिश्चार चरति"।
"यद्यपि पचदशमण्डलाद्वहिश्चारीणि मृगशिर प्रभृतीनि षड् नक्षत्राणि पूर्वाषाढोत्तराषाढयोश्चतुर्णां तारकाणा मध्ये द्वे द्वे च तारे उक्तानि, तथाप्येतदपरवहिश्चारिनक्षत्रापेक्षया लवणदिशि स्थित सच्चार चरतीति सर्ववहिश्चारीत्युक्तम्"।

२. क "दशोत्तरशतयोजनरूपे ज्योतिश्चक्रवाहल्ये यो नक्षत्राणा क्षेत्रविभागश्चतुर्योजनप्रमाणस्तदपेक्षयोक्तनक्षत्रयो क्रमेणाधस्तनोपरितनभागो ज्ञेयो।" इस टिप्पण मे उद्धृत उद्धरण जम्बू वक्ख. ७ सू १६५ टीका के हैं।
ख. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सूत्र १६५ के समान यह सूर्यप्रज्ञप्ति का सूत्र भी है।

३ गाहाओ—
अद्धकविट्ठागारा उदयत्थमणमि कह न दीसति,
ससि-सूराण विमाणा, तिरियक्खेत्तट्ठियाण च ?
उत्ताणद्धकविट्ठागार, पीढ तदुवरि च पासाओ।
वट्टालेखेण तओ, समवट्ट दूरभावाओ॥
जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणेन विशेषणावत्यामाक्षेपपुरस्सरमुक्तम्॥
"यदि चन्द्रविमानमुत्तानीकृतार्द्धमात्रकपित्थफलसस्थानसस्थित तत उदयकाले अस्तमयकाले वा,
यदि वा तिर्यक् परिभ्रमत् पौर्णमास्या कस्मात्तदर्धकपित्थफलाकार नोपलभ्यन्ते ?
काम शिरस उपरि वर्तमान वर्तुलमुपलभ्यते अर्धकपित्थस्य उपरि दूरमवस्थापितस्य परभागादर्शनतो वर्तुलतया दृश्यमानत्वात् उच्यते।
इहार्द्धकपित्थफलाकार चन्द्रविमान न सामस्त्येन प्रतिपत्तव्य, किन्तु तस्य चन्द्रविमानस्य पीठ, तस्य च पीठस्योपरि चन्द्रदेवस्य ज्योतिश्चक्रराजस्य प्रासाद स च प्रासादस्तथा कथचनापि व्यवस्थितो यथा पीठेन मह भूयान् वर्तुलाकारो भवति, स च दूरभावादेकान्तत समवृत्ततया जनाना प्रतिभासते, ततो न कश्चिद्दोष॥
—सूर्य टीका,

४. जबु वक्ख ७, सु १२५

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराविमाणाणं आयाम-विक्खंभ-परिक्खेव-वाहल्लाइं

प. क. ता चंदविमाणे णं—
केवइयं आयाम-विक्खंभेण ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग केवइयं वाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ क ता छप्पण्णं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं ।
ख तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।[1]

प. क. ता सूरविमाणे णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं वाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ क. ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खभेणं ?
ख तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स वाहल्लेणं पण्णत्ते ।

प. क. ता गहविमाणे णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं वाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ क ता अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं ।
ख तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. कोसं वाहल्लेणं पण्णत्ते ।

---

१. प क चदमडले ण भते ।
केवइय आयाम-विक्खभेणं ?
ख. केवइय परिक्खेवेण ?
ग केवइय वाहल्लेण पण्णत्ते ?
उ क गोयमा ! छप्पन्न एगसट्ठिभाए जोअणस्स आयाम-विक्खभेण,
ख त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण;
ग अट्ठावीस च एगसट्ठिभाए जोयणस्स वाहल्लेण, पण्णत्ते । —जबु. वक्ख ७, सु १४५
चदमडले णं एगसट्ठिविभाग-विभाइए समसे पण्णत्ते । —सम ६१, सु ३
इस सूत्र से यह स्पष्ट है कि चन्द्रविमान और चन्द्रमण्डल एक ही है ।

प. क. ता णक्खत्तविमाणे णं केवइयं आयामविक्खंभेण ?
ख केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग केवइयं बाहल्लेणं ?

उ. क. ता कोसं आयाम-विक्खंभेण ।
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेण ।
ग. अद्धकोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।

प. क. ता ताराविमाणे णं केवइयं आयामविक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं ?

उ. क ता अद्धकोसं आयामविक्खंभेण ।
ख तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. पंचधणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते[1] ।

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराण विमाणपरिवहणं—

प ता चंदविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?

उ सोलस देवसाहस्सीओ परिवहन्ति, तंजहा—
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,

---

१. क प चंदविमाणे णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ? केवइयं बाहल्लेणं ?
उ गाहाओ—
छप्पण्णं खलु भाए-विच्छिण्णं चंदमंडलं होइ ।
अट्ठावीसं भाए बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥ १ ॥
अडयालीसं भाए, विच्छिण्णं सूरमंडलं होइ ।
चउवीसं खलु भाए, बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥ २ ॥
दो कोसे अ गहाणं, णक्खत्ताणं तु हवइ तस्सद्धं ।
तस्सद्धं ताराणं, तस्सद्धं चेव बाहल्ले ॥ ३ ॥ —जंबु वक्ख. ७, सु १६५
"एकस्य प्रमाणांगुलयोजनस्यैकषष्टिभागीकृतस्य षट्पंचाशता भागैः समुदितैर्यावत्प्रमाणं भवति, तावत्प्रमाणोऽस्य विस्तारः"
"वृत्तवस्तुनः सदृशायाम-विष्कम्भात्"
परिक्षेपस्तु स्वयमभ्यूह्यः वृत्तस्य सविशेषस्त्रिगुणः परिधिरिति प्रसिद्धेः ।
यह स्पष्टीकरण जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति के वृत्तिकार ने ऊपर लिखित सूत्र का दिया है ।
ख यद्यपि जीवा. प. ३, उ. २, सू. १९७ प्रश्नोत्तरात्मक सूत्र हैं किन्तु उसमें "भंते" और "गोयमा" का प्रयोग अधिक है ।

दाहिणेण गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,
पच्चत्थिमेण वसभरूवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,
उत्तरेण तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति।

एवं सूरविमाणं पि,

प ता गहविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
उ ता अट्ठ देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेण सिंहरूवधारीण देवाण दो देवसाहस्सीओ परिवहंति,
एवं जाव—
उत्तरेण तुरगरूवधारीण देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति।

प ता णक्खत्तविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
उ ता चत्तारि देवसासहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेण सीहरूवधारीण देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ,
एवं जाव—
उत्तरेण तुरगरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ।

प ता ताराविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
उ. ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसया परिवहंति,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसया परिवहंति।[1]

---

१ प. चदविमाणे ण भते ! कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
गोयमा ! सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति ।
उ चदविमाणस्स ण पुरत्थिमेण,
सेआण, सुभगाण, सुप्पभाण, सखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रयणणिगरप्पभासाण, थिर-लट्ठ-पउट्ट-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढा-विडविअ-मुहाण,
रत्तुप्पलपत्त-मउय-सूमालतालु-जीहाण,
महु-गुलिअ-पिंगलक्खाण,
पीवरवरोरु-पडिपुण्ण-विउल-खधाण,
मिउ-विसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ-वरवण्ण-केसरसटोवसोहिआण,
ऊसिअ-सुनमिअ-सुजाय-अप्फोडिअ-लगूलाण,
वइरामय-णक्खाण, वइरामय-दाढाण, वइरामय-दताण,

तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्ज-तालुआण, तवणिज्ज-जुत्त-जोत्तगसुजोइआण कामगमाण, पीइगमाण, मणोग-माण, मणोरमाणं, अभिजिअगईण,

अमिअ-बल-वीरिअ-पुरिसक्कार-परक्कमाण,

महया अप्फोडिअ-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण महुरेण मणहरेण पूरेंता अंवर, दिशाओ य सोभयता,

चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधारीण पुरित्थिमिल्ल वाह वहति,

चदविमाणस्स ण दाहिणेण,

सेआण, सुभगाण, सुप्पभाण, सखतल-विमल-णिम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रयय-णिगरप्पगासगाण,

वइरामय-कुभयुगल-सुट्ठिअ-पीवर-वरवइरसोड-वट्टिअ-दित्त-सुरत्त, पउमप्पगासाण, अब्भुण्णय-मुहाण,

तवणिज्ज-विमाल-कण्णचचल-चलत-विमलुज्जलाण,

महुवण्ण-भिसत-णिद्ध-पत्तल-णिम्मल-तिवण्ण-मणि-रयण-लोयणाण,

अब्भुग्गय-मउल-मल्लिआधवलसरिससठिय-णिवण्णदढ-कसिण-फालिआमय-सुजाय-दतमुसलोवसोभिआण,

कचणकोसी-पविट्ठ-दतग्ग-विमल-मणि-रयण-रुइल-पेरत-चित्तरूवग-विराइआण,

तवणिज्ज-विमाल-तिलगप्पमुह-परिमण्डियाण,

णाणामणि-रयण-मुद्ध-गेविज्ज-बद्ध-गलयवरभूसणाण,

वेरुलिय-विचित्त-दण्ड-निम्मल-वइरामय-तिक्खलट्ठ-अकुस-कुभजुयलयतरोडिआण,

तवणिज्ज-सुबद्ध-कच्छ-दप्पिअ-बलुद्धराण,

विमल-घण-मडल-वइरामय-लालाललियतालण,

णाणामणि-रयण-घट-पासग-रजतमय-बद्ध-रज्जु-लबिअ-घटाजुयल-महुरसरमणहराण,

अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिअ-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-वालगत्तपरिपुछणाण,

उवचिअ-पडिपुण्ण-कुम्म-चलण-लहुविक्कमाण,

अकामयणक्खाण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्जतालुआण, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइआण,

कामगाण, पीइगाण, मणोगमाण, मनोरमाण, अमियगईण, अमिय-वल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमाण,

महया-गभीर-गुलगुलाइतरवेण महुरेण मणहरेण, पूरेंता अंवर, दिसाओ य सोभयता,

चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीण देवाण दक्खिणिल्ल वाह परिवहति,

चदविमाणस्स ण पच्चत्थिमेण,

सेआण, सुभगाण सुप्पभाण, चल-चवल-ककुह-सालीण, घण-निचिअ-सुबद्ध-लक्खणुण्णयईसिआणय-वसभोट्ठा-ण, चकमिअ-ललिअ-पुलिअ-चलचवल-गव्विअ-गईण, सन्नतपासाण सगतपासाण सुजायपासाण;

पीवरवट्टिअ-सुसठिअ-कडीण,

ओलव-पलव-लक्खण-पमाणजुत्त-रमणिज्ज-वालगडाण

समखुरवालिधाणाण,

समलिहिअ-सिंग-तिक्खग्ग-सगयाण,

तणु-सुहुम-सुजाय-णिद्ध-लोमच्छवीण,

उवचिअ-मसल-विमाल-पडिपुण्ण-खध-पएस-सुदराण, वेरुलिअ-भिसत-कडक्ख-सुनिरिक्खणाण,

जुत्तप्पमाण-पहाणलक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-गग्गर-गल्ल-सोभियाण,
घरघरग-सुसद्द-वद्ध-कड-परिमडियाण,
णाणामणि-कणग-रयणघटिआ-वेगच्छिग-सुकयमालिआण,
वरघटा-गलय-मालुज्जल-सिरिघराण,
पउमुप्पल-सगल-सुरभि-माला-विभूसिआण,
वइरखुराण, विविहक्खुराण,
फालिआमय-दताण, तवणिज्ज--जीहाण, तवणिज्जतालुआण,
तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइयाण,
कामगमाण, पीइगमाण, मणोगमाण मणोरमाण,
अमिअगईण अमिअ-वलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाण महया गज्जिअ-गभीर-रवेण, महुरेण, मणहरणं, पूरेंता अवर, दिसाओ य सोभता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहति,
चदविमाणस्स ण उत्तरेण—
सेणाण, सुभगाण, सुप्पभाण, तरमल्लिहायणाण तरमल्लिअच्छाण चचुच्चिअ-सेआण,
ललिअ-पुलिअ-चलचवल-चचलगईण, ललतलाम-गललाय-वरभूसणाण,
सन्नयपासाण सगयपासाण, सुजायपासाण,
पीवर-वट्टिअ-सुसठिअ-कडीण,
ओलव, पलव-लक्खण-पमाण-जुत्त-रमणिज्ज-वालपुच्छाण,
तणुसुहुम-सुजाय-णिद्ध-लोमच्छविहराण,
मिउविसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ-वित्थिण्ण-केसरवालिहराण,
ललत-थासग-ललाड-वरभूसणाण,
मुहमण्डग-ओचूलग-चामर-थासग-परिमण्डिअ-कडीण,
तवणिज्ज-खुराण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्ज-तालुआण, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइआण,
कामगमाण पीइगमाण, मणोगमाण, मणोरमाण,
अमिअगईण, अमिअ-वलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाण,
महया गज्जिअ महुरेणरवेण, गभीर-मणहरेण पूरेंता अवर, दिसाओ य सोभयता,
चत्तारि देवसाहस्सीओवस हरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहति,
चन्दविमाणस्स ण उत्तरेण—
सेआण सुभगाण, सुप्पमाण तरमल्लिअच्छाण चचुच्चिअ-सेयाण, ललिअ-पुलिअ-चलचवल-चचलगईण, ललतलाम-गललाय-वरभूसणाण,

—जवु वक्ख. ७, सु १६८

जोइसियाणं सिग्घ-मंदगइपरूवणं

९५ प ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारा-रूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा, मंदगई वा ?

उ. ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा।[1]

जोइसियाण अप्प-महिड्ढिपरूवण

प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाण कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढिया वा महिड्ढिया वा ?

उ: ता ताराहिंतो महिड्ढिया णक्खत्ता,
णक्खत्तेहिंतो महिड्ढिया गहा।
गहेहिंतो महिड्ढिया सूरा,
सूरेहिंतो महिड्ढिया चंदा,
सव्वप्पड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा।[2]

ताराणं अबाहा अंतरपरूवणं

९६. प. ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स तारारूवस्स य एस ण केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?

उ. दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तंजहा—
१. वाघाइमे य, २ निव्वाघाइमे य।

क तत्थ णं जे से वाघाइमे, से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसए।
उक्कोसेण, वारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बायाले जोयणसए तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

ख. तत्थ ण जे से णिव्वाघाइमे से णं जहण्णेण पंच धणुसयाइं,
उक्कोसेण अद्धजोयणं तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।[3]

---

१. क सूत्र ८३ और इस सूत्र मे साम्य है।
ख जंबू वक्ख. ७, सु १६९

२ जंबू वक्ख ७, सु १७०

३. जंबु वक्ख ७, सु १७१

चंदस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवारविउव्वणा य

९७. प ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तजहा—
१ चंदप्पभा, २. दोसिणाभा, ३ अच्चिमाली, ४. पभकरा।

तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सीपरिवारो पण्णत्तो।

प पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि चत्तारि देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए ?

उ. पभू ण ताओ एगमेगा देवी देवीसाहस्सीपरिवार विउव्वित्तए।
एवामेव सपुव्वावरेण सोलसदेवीसहस्सा पण्णत्ता, से त्तं तुडिए।

प. ता पभू ण चदे जोइसिंदे जोइसराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

उ. णो इणट्ठे समट्ठे।

प ता कहं ते णो पभू जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरित्तए ?

उ क. ता चदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए माणवएसु चेइयखमेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु वहवे जिणसकहाओ संणिक्खित्ताओ चिट्ठति।

ताओ ण चदस्स जोइसिंदस्स जोइसरण्णो अण्णेसि च वहूण जोइसियाणं देवाण य, देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ।

एव खलु णो पभू चदे जोइसिंदे जोइसराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरित्तए।

ख पभू ण चदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं, अण्णेहि य वहूहि जोइसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धि संपरिवुडे, महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइय-रवेणं, दिव्वाइं भोग-

भोगाइ भुजमाणे विहरित्तए केवल परिवारणिड्ढीए।
णो चेव णं मेहुणवत्तियाए।

सूरस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवारविउव्वणा य

प. ता सूरस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ. ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—
१. सूरप्पभा, २. आतवा, ३. अच्चिमाली, ४. पभंकरा।
सेस जहा चदस्स,
णवर-सूरवडेंसए विमाणे जाव नो चेव ण मेहुणवत्तियाए।

जोइसियाणं देवाणं ठिई—

९८. प. ता जोइसियाणं देवाणं केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेण पलिओवमं, वाससयसहस्समब्भहियं।

प. ता जोइसिणीण देवीणं केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवम,
उक्कोसेणं अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं।

प ता चंदविमाणे ण देवाण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेणं पलिओवम वाससयसहस्समब्भहियं।

प. ता चदविमाणे ण देवीणं केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं।

प. ता सूरविमाणे ण देवाणं केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेण पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं।

प. ता सूरविमाणे ण देवीणं केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं अद्ध पलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं।

प ता गहविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेण पलिओवम ।

प. ता गहविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण अद्धपलिओवम ।

प ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण अद्धपलिओवम ।

प. ता णक्खत्तविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम,
उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं ।

प. ता ताराविमाणे णं देवाणं केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेण चउब्भागपलिओवमं ।

प. ता ताराविमाणे ण देवीणं केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवम ।[१]

जोइसियाणं अप्प-बहुत्तं—

९९ प ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-ताराणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

उ. ता चदा य, सूरा य, एएण दोवि तुल्ला,
सव्वत्थोवा णखक्त्ता,

संखिज्जगुणा गहा,
संखिज्जगुणा तारा ।[२]



---

१ जवु वक्ख ७, सु १७३
२ जवु वक्ख ७, सु १७५

उन्नीसवां प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराण परिमाणं

१००. प. ता कइ णं चंदिम-सूरिया सव्वलोय ओभासति, उज्जोएति, तवेंति, पभासेंति ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोय ओभासइ, उज्जोएइ, तवेइ, पभासइ, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता तिण्णि चदा, तिण्णि सूरा सव्वलोयं ओभासेंति उज्जोएति, तवेंति, पभासेंति, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता अद्धट्ठ चंदा अद्धट्ठ सूरा सव्वलोयं ओभासेंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहसु।

एएण अभिलावेण णेयव्व,

४. सत्त चदा, सत्त सूरा,

५ दस चंदा, दस सूरा,

६. वारस चंदा, वारस सूरा,

७. वायालीस चदा, वायालीस सूरा,

८. वावत्तरीं चदा, वावत्तरीं सूरा,

९ वायालीसं चंदसयं वायालीसं सूरसय,

१० वावत्तरं चंदसय वावत्तरं सूरसय,

११. वायालीस चदसहस्स वायालीसं सूरसहस्सं,

१२. वावत्तरं चंदसहस्सं, बावत्तरं सूरसहस्सं, सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति, पभासेंति एगे एवमाहसु,

वयं पुण एवं वयामो—

जम्बूद्दीवो-जंबुद्दीवे जोइसियपरिमाणं—

ता अयण्ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डाए जाव एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, सोलस सहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, अट्ठावीस च धणुसयं तेरस अगुलाइं, अद्धगुलं च किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

१ प ता जबुद्दीवे दीवे—
केवइया चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केवइया सूरा तविसु वा, तवेंति वा, तविस्सत्ति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोअं जोइसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प केवइया तारागणकोडि-कोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ ता जंबुद्दीवे दीवे—
दो चदा पभासेंसु वा, पभासिति वा, पभासिस्संति वा।

२ उ दो सूरिया तविसु वा तवेंति वा, तविस्सति वा।

३ उ छावत्तरिं गहसयं चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा।

४ उ छप्पण्णं णक्खत्ता जोय जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्सति वा।

५ उ एग सयसहस्स तेत्तीस च सहस्सा णव सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभति वा, सो[illegible]सति वा।

गाहाओ—

दो चंदा दो सूरा, णक्खत्ता खलु हवति, छप्पणा।
छावत्तरं गहसय, जवुद्दीवे विचारीणं॥

एगं च सयसहस्स तेत्तीस खलु भवे सहस्साइ।
णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडीण॥

लवणसमुद्दो—

ता जंवुद्दीवं दीवं लवणे नामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समता सपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ।

प ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए।

प. ता लवणसमुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेण, केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण, पण्णरस जोयणसयसहस्साइं एक्कासीयं च सहस्साइं सयं च एगूणचालीसं किंचि विसेसूण परिक्खेवेणं। गाहा—

पण्णरस सयसहस्सा, एक्कासीयं सयं च ऊतालं।
किंचि विसेसेणूणो, लवणोदहिणो परिक्खेवो॥

१ प ता लवणसमुद्दे—
केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प केवइया सूरा तविंसु वा, तविंति वा, तविस्संति वा ?

३ प केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा चरिस्संति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागण कोडाकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ?

१ उ. ता लवणसमुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा।

२ उ चत्तारि सूरिया तविंसु वा, तविंति वा, तविस्संति वा।

३ उ. तिण्णि बावण्णा महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरंति वा, चरिस्संति वा।

४ उ. बारस णक्खत्तसयं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा, जोइस्संति वा।

५ उ दो सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा णव य सया तारागणकोडाकोडीण सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा।

गाहाओ—
चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए।
बारस णक्खत्तसयं, गहाण तिण्णेव बावण्णा॥

दोच्चेव सयसहस्सा, सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं।
णव य सया लवणजले, तारागणकोडिकोडीण॥

धायईसंडदीवे

ता लवणसमुद्दं धायईसंडे णाम दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ।

प. ता धायईसंडे णाम दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता धायईसंडे णामं दीवे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए।

प धायईसडे णं दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइय परिक्खेवेण ?

आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण, ईयालोसं जोयणसयसहस्साइं दस य सहस्साइं णव य एगट्ठे जोयणसए किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा

गाहा—

धायइसंड परिरओ, ईयाल दसूत्तरा सयसहस्सा ।
णव य सया एगट्ठा, किंचि विसेसेण परिहीणा ।।

१ प. धायईसडे दीवे—

केवइया चदा पभासेंसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केवइया सूरिया तवेंसु वा, तविंति वा, तविसिस्संति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरति वा चरिस्सति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडाकोडीओ, सोभं सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ. बारस चदा पभासेंसु वा, पभासति वा, पभासिस्सति वा ।

२ उ. बारस सूरिया तवेंसु वा, तविंति वा, तविसिस्सति वा ।

३ उ. एग छप्पण्णं महग्गहसहस्सं चारं चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ. तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जोगं जोएंसु वा, जोएति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. गाहाओ—

अट्ठेव सय सहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ।।

चउवीस ससि-रविणो, णक्खत्तसया य तिण्णि छत्तीसा ।
एगं च गहसहस्स, छप्पणं धायईसडे ।।

अट्ठेव सयसहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं ।
धायइसंडे दीवे, तारागण कोडिकोडीणं ।।

कालोए समुद्दे

ता धायईसंडं णं दीव कालोए णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ।

प ता कालोए णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए, विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता कालोए णं समुद्दे समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता कालोए ण समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता कालोए णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेणं पण्णत्ते ।

एक्काणउइं जोयणसयसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पचुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा । गाहा—

एक्काणउई सयसहस्सं, सत्तरिं सहस्साइं परिरओ तस्स ।
अहियाइं छच्च पंचुत्तराइ, कालोदधि वरस्स ॥

१ प. ता कालोये ण समुद्दे—
केवइया चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प. केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ?

३ प. केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्सति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ. ता कालोये णं समुद्दे वायालीसं चदा पभासेंसु वा पभासिति वा, पभासिस्संति वा ।

२ उ वायालीस सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ।

३ उ तिन्नि सहस्सा छच्च छन्नउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. एक्कारस छावत्तरा णक्खत्तसया जोगं जोइंसु वा, जोएति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. अट्ठावीस सयसहस्साइ, वारस सहस्साइ नव य सयाइं पण्णासा तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ।

गाहाओ—
वायालीसं चदा, वायालीस च दिणकरादित्ता ।
कालोदहिंमि एए, चरति संबद्धलेसागा ॥

णक्खत्तसहस्स, एगमि छावत्तर च सतमण्णे ।
छच्चसया छण्णउया, महग्गह, तिण्णि य सहस्सा ॥

अट्ठावीसं सयसहस्स, वारस य सहस्साइं।
णवयसया पण्णासा, तारागण कोडिकोडीणं ॥

पुक्खरवरदीवे—

ता कालोयं ण समुद्दं पुक्खरवरे णाम दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ।

प ता पुक्खरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता पुक्खरवरे णं दीवे समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए।

प. ता पुक्खरवरे ण दीवे केवइय समचक्कवालविक्खभेणं ? केवइय परिक्खेवेणं ?

उ ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खभेण।

एगा जोयणकोडी बाणउइ च सयसहस्साइ अउणावन्नं च सहस्साइ अट्ठ चउणउए जोयणसए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा। गाहा—

कोडी बाणउई खलु, अउणाणउइ भवे सहस्साइं।
अट्ठसया चउणउया, परिरओ पोक्खरवरस्स ॥

१ प ता पुक्खरवरे णं दीवे—
केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ?

३ प. केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्सति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्सति वा ?

५ प. केवइया तारागण कोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ ता चोयालं चंदसय पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्सति वा।

२ उ चोयालं सूरियाण सयं तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा।

३ उ. बारस सहस्साइ छच्च बावत्तरा महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्सति वा।

४ उ चत्तारि सहस्साइ बत्तीसं च णक्खत्ता जोगं जोएसु वा, जोएंति वा, जोइस्सति वा।

५ उ. छण्णउइसयसहसाइ चोयालीस सहसाइं चत्तारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीण सोभ सोभेंसु वा, सोभेंति वा, सोभिस्सति वा।

गाहाओ—

चत्ताल चंदसय, चत्ताल चेव सूरियाण सय।
पोक्खरवरदीवम्मि य, चरंति एए पभासंता॥

चत्तारि सहस्साइं, बत्तीसं चेव हुंति णक्खत्ता।
छच्च सया बावत्तरं, महग्गहा बारह सहस्सा॥

छण्णउइ सयसहस्सा, चोत्तालीसं खलु भवे सहस्साइं।
चत्तारि य सया खलु, तारागण कोडि कोडीण॥

माणुसुत्तरे पव्वए—

ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स बहुमज्झदेसभाए माणुसुत्तरे णामं पव्वए पण्णत्ते, वट्टे वलयाकार-संठाणसंठिए जे णं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे विभयमाणे चिट्ठइ, तंजहा—
१. अब्भिंतरपुक्खरद्धं च, २. बाहिरपुक्खद्धरद्धं च।

अब्भितर-पुक्खरद्धे—

प. ता अब्भिन्तर-पुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिए, विसमचक्कवालसंठिए?

उ. ता समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए।

प. ता अब्भितर-पुक्खरद्धे णं केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभे ण,

एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दो अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा,

"अट्ठेव सयसहस्सा अब्भितरपुक्खरस्स विक्खंभो।"[1]

१ प. ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा?

२ प. केवइया सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा?

५ प. केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा?

१ उ. बावत्तरिं चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा।

---

१. ये गाथा के प्रारम्भ के दो पद हैं।

२ उ बावत्तरिं सूरिया तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा।

३ उ. छ महग्गहसहस्सा तिन्नि सए य छत्तीसा चारं चरेंसु वा, चरति वा, चरिस्संति वा।

४ उ दोण्णि सोला णक्खत्तसहस्सा जोग जोएंसु वा, जोएति वा, जोइस्संति वा।

५ उ. अडयालीसं सयसहस्सा, बावीस च सहस्सा दोण्णि य सया तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा।

गाहाओ—

बावत्तरिं च चदा बावत्तरिमेव दिणकरादित्ता।
पुक्खरवरदीवड्ढे, चरंति एए पभासेंता॥

तिण्णि सया छत्तोसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु।
णक्खत्ताणं तु भवे, सोलाइं दुवे सहस्साइं॥

अडयालसयसहस्सा, बावीसं खलु भवे सहस्साइं।
दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोडिकोडीणं॥

समयक्खेत्ते

प ता समयक्खेत्ते णं केवइयं आयाम-विक्खम्भेण केवइय परिक्खेवेणं? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खम्भेणं—
एगा जोयणकोडी, बायालीसं च सयसहस्साइ दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं-आहिए त्ति वएज्जा,

गाहा—

पणयाल सय सहस्सा, समयखेत्तस्स विक्खंभो।[1]

कोडी बायालीसं, सहस्स दुसया य अउणपण्णासा।
समयखेत्तस्स परिरओ, एमेव य पुक्खरद्धस्स॥

१ प ता समयक्खेत्ते णं केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा?

२ प केवइया सूरा तवेंसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा?

३ प केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्संति वा?

४ प केवइया णक्खत्ता जोगं जोइसु वा, जोइति वा, जोइस्संति वा?

५ प. केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभति वा, सोभिस्सति वा?

१ ये गाथा के उत्तरार्ध के दो पद हैं।

१ उ ता वत्तीसं चंदसयं पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्सति वा ।

२ उ ता वत्तीस सूरसय तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ।

३ उ. ता एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसया चार चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ. ता तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया णक्खत्तसया जोग जोएंसु वा, जोएति वा, जोइ-स्सति वा ।

५ उ. ता अट्ठासीइं सयसहस्साइ चत्तालीस च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडिकोडीणं सोभ सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्सति वा ।

गाहाओ—

वत्तीसं चंदसय, वत्तीसं चेव सूरियाण सय ।
सयलं माणुसलोयं चरंति एए पभासेंता ।।

एक्कारस य सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाण तु ।
छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ।।

अट्ठासीइ चत्ताइं, सय सहस्साइ मणुयलोगमि ।
सत्त य सया अणूणा, तारागणकोडिकोडीण ।।

एसो तारापिडो, सव्वसमासेण मणुयलोगमि ।
वहिया पुण ताराओ, जिणेहि भणिया असखेज्जा ।।

एवइयं तारग्ग, ज भणिय माणुसमि लोगमि ।
चारं कलंवुया-पुप्फसठिय जोइस चरइ ।।

रवि ससि गह णक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ।
जेसिं णामागोत्त, न पागया, पण्णवेहिंति ।।

जोइसियाणं पिडगाइ—

छावट्ठि पिडगाइं, चदाइच्चाण मणुयलोगंमि ।
दो चंदा दो सूरा, य हुति एक्केकए पिडए ।।

छावट्ठि पिडगाइ, महागहाण मणुयलोगमि ।
छावत्तर गहसय, होइ एक्केकए पिडए ।।

छावट्ठि पिडगाइं णक्खत्ताण तु मणुयलोगंमि ।
छप्पण्णं णक्खत्ता हुंति एक्केक्कए पिडए ॥

जोइसियाणं पंतीओ—

गाहाओ—

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि च, हवइ एक्केक्किया पंती ॥

छावत्तरं गहाणं. पंतिसयं हवंति मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि च हवइ एक्केक्किया पंती ॥

छप्पन्नं पंतीओ, णक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि हवइ एक्केक्किया पंती ॥

जोइसियाणं मंडला—

गाहाओ—

ते मेरुमणुचरता, पदाहिणावत्त मंडला सव्वे ।
अणवट्ठिय जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ॥

णक्खत्त-तारगाणं, अवट्ठिया, मंडला मुणेयव्वा ।
तेऽवि य पदाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति ॥

जोइसियाणं मंडलसंकमणं—

रयणिकर-दिणकराणं, उद्धं व अहेव संकमो नत्थि ।
मंडलसंकमणं पुण, सब्भंतर-बाहिरं तिरिए ॥

जोइसाणं चारं सुह-दुहस्स निमित्तकारणं—

रयणिकर-दिणकराणं, णक्खत्ताणं महग्गहाणं च ।
चारविसेसेण भवे, सुह-दुक्खविही मणुस्साणं ॥

जोइसाणं तावक्खेत्तं—

तेसिं पविसंताणं तावक्खेत्तं तु वड्ढए णिययं ।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायइ निक्खमाणाणं ॥

तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावक्खेत्तपहा ।
अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंद-सूराणं ॥

चंदस्स परिवुड्डि-परिहाणी—

गाहाओ—

केणइ वड्ढइ चदो ? परिहाणी केण हुंति चदस्स ?
कालो वा जोण्हो वा ? केणऽणुभावेण चदस्स ?

किण्ह राहुविमाणं णिच्च चदेण होइ अविरहिय।
चउरंगुलमसपत्तं, हिच्चा चदस्स त चरइ॥

बावट्ठि बावट्ठि, दिवसे दिवसे तु सुक्कपक्खस्स।
जं परिवड्ढइ चदो, खवेइ त चेव काले ण॥

पण्णरसइ भागेण य चंद पण्णरसमेव त वरइ।
पण्णरसइ भागेण य, पुणोऽवि तं चेव वक्कमइ॥

एव वड्ढइ चंदो, परिहाणी एव होइ चदस्स।
कालो वा जोण्हो वा, एवऽणुभावेण चंदस्स॥

अणवट्ठिया अवट्ठिया वा जोइसिया—

गाहाओ—

अंतोमणुस्स खेत्ते, हवति चारोवगा उ उववण्णा।
पंचविहा जोइसिया, चदा सूरा गहगणा य॥

तेण पर जे सेसा, चदाइच्च-गह-तार-णक्खत्ता।
णत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिया ते मुणेयव्वा॥

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु जोइसियाण पमाण—

गाहाओ—

एव जबुद्दीवे, दुगुणा, लवणे चउग्गुणा हुंति।
लावणगा य तिगुणिया, ससि-सूरा धायइसडे॥

दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए।
धायइसडे दीवे, बारस चदा य सूरा य॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाण पमाण—

गाहाओ—

धायइसडप्पभिइस्स, उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चदा।
आइल्लचंद सहिया, अणंतराणतरे खेत्तेग॥

रिक्खग्गह-तारग्गं, [दीव-समुद्दे जहिच्छसी णाउं ।
तस्ससीहिं तग्गुणिय, रिक्ख-ग्गह-तारग्गं तु ॥

बहिया उ माणुसणगस्स चद-सूराणऽवट्ठिया जोण्हा ।
चदा अभिईजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥

माणुसनगस्स बहिया जोइसियाण अंतरं—

गाहाओ—

चदाओ सूरस्स य, सूरा चंदस्स अंतर होइ ।
पण्णाससहस्साइ तु जोयणाणं अणूणाइं ॥

सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अंतरं होई ।
बाहिं तु माणुसनगस्स जोयणाण सयसहस्स ॥

सूरंतरिया चंदा, चदंतरिया य दिणयरा दित्ता ।
चित्तंतरलेसागा, सुहलेसा मंदलेसा य ॥

माणुसनगस्स बहिया एगससीपरिवारो—

गाहाओ—

अट्ठासीइं च गहा, अट्ठावीसं च हुंति णक्खत्ता णं ।
एगससी परिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ॥

छावट्ठि सहस्साइं, णव चेव सयाइंपंचसयराइं ।
एगससी परिवारो, तारागण कोडिकोडीणं ॥

अंतोमणुस्सखेत्ते जोइसियाणं उड्ढोववण्णगाइपरूवणं

प. अतो मणुस्सखेत्ते जे चदिम-सूरिया गह-णक्खत्त-तारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा, कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठितिया, गतिरतिया गतिसमावण्णगा ?

उ. ता ते ण देवा नो उड्ढोववण्णगा नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा; चारोववण्णगा नो चारट्ठिईया गइरइया गइसमावण्णा ।

उड्ढामुह-कलबुअपुप्फसठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिएहिं बाहिराहि य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहयणट्टगीयवाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-

घणमुइग-पडुप्पवाइयरवेण, महया उक्किट्ठ सीहणादबोलकलकलरवेणं, अच्छ पव्वयराय पयाहिणावत्तमडलचारं मेरु अणुपरियट्टंति।

पुव्वइंदस्स चवणाणतरं अण्णइदस्स उववज्जणं

प. ता तेसिं ण देवाण जाहे इदे चयइ से कयमिदाणिं पकरेइ ?

उ. ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा त ठाणं उवसपज्जित्ताणं विहरति जाव अण्णे इत्थ इदे उववण्णे भवइ।

प. ता इदठाणे ण केवइएण कालेण विरहियं पण्णत्त ?

उ. ता जहण्णेण इक्क समय उक्कोसेण छम्मासे।

माणुसखेत्तस्स बाहियाजोइसियाणउड्ढोववण्णगाइपरूवणं

प. ता बहिया ण माणुस्सखेत्तस्स जे चदिमसूरिया गहगण-णक्खत्त-तारारूवा, ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठिइया, गइरईया गइसमावण्णगा ?

उ. ता ते णं देवा नो उड्ढोववण्णगा, नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, नो चारोववण्णगा, चारट्ठिइया नो गइरइया, नो गइसमावण्णगा।

पगिट्ठगसठाणसंठिएहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सिएहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंग-पडुप्प-वाइयरवेणं, महया उक्किट्ठसीहणाद-बोलकलकलरवेण, दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ।

सुहलेसा मदलेसा मदायवलेसा, चित्ततरलेसा, अण्णोऽण्ण सभोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिया ते पदेसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति।

प. ता तेसिं ण देवाण जाहे इदे चयइ, से कहमिदाणिं पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पच सामाणिया देवा तं ठाणं उवसपजित्ताणं विहरंति, जाव अण्णे इत्थ इदे उववण्णे भवइ।

प. ता इदठाणे ण केवइएण कालेणं विरहियं पण्णत्ते ?

उ. ता जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं छम्मासे।

सेसाणं दीव-समुद्दाण आयामाइ

१०१. ता पुक्खरवरं ण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयाकारसठाणसठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ।

प ता पुक्खरोदे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,
संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा ।

प ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवइया चंदा पभासेंसु वा, जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभं सोभिस्संति वा ।

उ ता पुक्खरोदे णं समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव संखेज्जाओ तारागणकोडिकोडिओ सोभं सोभिस्संति वा ।

एवं एएणं अभिलावेणं—
१ वरुणवरे दीवे, २ वरुणोदे समुद्दे,
१ खीरवरे दीवे, २ खीरोदे समुद्दे,
१ घयवरे दीवे, २. घयोदे समुद्दे,
१ खोयवरे दीवे, २. खोयोदे समुद्दे,
१ नंदीसरवरे दीवे, २ नंदीसरे समुद्दे,
१ अरुणे दीवे, २ अरुणोदे समुद्दे,
१ अरुणवरे दीवे, २. अरुणवरोदे समुद्दे,
१. अरुणवरोभासे दीवे, २ अरुणवरभासोदे समुद्दे,
१. कुंडले दीवे, २. कुंडलोदे समुद्दे,
१ कुंडलवरे दीवे, कुंडलवरोदे समुद्दे,
१. कुंडलवरोभासे दीवे, २ कुंडलवरभासोदे समुद्दे ।

सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवो जोइसाइं च पुक्खरोदसागरसरिसाइं ।

ता कुंडलवरभासोदं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ।

प. ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प. ता रुयए णं दीवे केवइय समचक्कवालविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ?

उ. ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खभेणं,
असखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा ।

प. ता रुयगे णं दीवे केवइया चदा पभासेंसु वा जाव केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु सोभिस्संति वा ?

उ. ता रुयगे ण दीवे असखेज्जा चदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागण-कोडि-कोडीओ सोभं सोभिस्सति वा ।

एवं रुयगोदे समुद्दे,
१. रुयगवरे दीवे, २. रुयगवरोदे समुद्दे,
१. रुयगवरोभासे दीवे. २. रुयगवरभासोदे समुद्दे ।

एव तिपडोयारा दीव-समुद्दा णायव्वा,
जाव, १. सूरे दीवे, २ सूरोदे समुद्दे,
१. सूरवरे दीवे, २. सूरवरोदे समुद्दे,
१. सूरवरोभासे दीवे, २. सूरवरभासोदे समुद्दे ।

सव्वेसिं विक्खम-परिक्खेवो जोइसाइ रुयगवरदीवसरिसाइ ।

ता सूरवरोभासोद ण समुद्दं देवे णाम दीवे वट्टे वलायाकारसठाणसंठिए सव्वओ समता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ।

प ता देवे णं दीवे किं समचक्कवालसठिए, विसमचक्कवालसठिए ?

उ. ता समचक्कवालसठिए नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता देवे ण दीवे केवइय चक्कवालविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प. ता देवे ण दीवे केवइया चदा पभासेंसु वा जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा ?

उ. ता देवे ण दीवे असखेज्जा चदा पभासेंसु वा जाव असखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा ।

एव देवोदे समुद्दे—

१ णागे दीवे, २. णागोदे समुद्दे,

१ जक्खे दीवे, २. जक्खोदे समुद्दे,

१ भूए दीवे, २. भूओदे समुद्दे,

१. सयम्भूरमणे दीवे, २. सयम्भूरमणे समुद्दे।

सव्वेसिं विक्खभ-परिक्खेवे जोइसाइं देवदीवसरिसाइं।



बीसवां प्राभृत

चंदिम-सूरियाणं अणुभावो

१०२. प ता कह ते अणुभावे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

१ तत्थेगे एवमाहसु—

ता चदिम-सूरिया ण—
नो जीवा, अजीवा,
नो घणा, झुसिरा,
नो वादरवोंदिधरा कलेवरा ।

नत्थि ण तेसिं १. उट्ठाणेइ वा, २ कम्मेइ वा, २. बलेइ वा, ४. वीरिएइ वा, ५ पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।

नो विज्जुं लवति, नो असणिं लवति, नो थणिय लवति ।

अहे य णं वादरे वाउकाए समुच्छइ, समुच्छित्ता विज्जु पि लवति, असणिं पि लवति, थणिय पि लवंति "एगे एवमाहंसु" ।

१ एगे पुण एवमाहंसु—

ता चदिम-सूरिया णं—
जीवा, नो अजीवा,
घणा, नो झुसिरा,
वादरवोंदिधरा, नो कलेवरा ।

अत्थि ण तेसिं १ उट्ठाणेइ वा, २. कम्मेइ वा, ३. बलेइ वा, ४ वीरिएइ वा, ५ पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।

ते विज्जुं पि लवति, असणिं पि लवंति, थणियं पि लवति, "एगे एवमाहंसु" ।

वय पुण एव वयामो—

ता चंदिम-सूरिया णं देवाणं महिड्ढिया, महज्जुइया, महब्बला, महाजसा, महासोक्खा, महाणु-भागा वरवत्थधरा, वरमल्लधरा, वराभरणधरा अवोछित्तिणयट्ठयाए अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जति ।

राहु-कम्मपरूवणं

१०३ प ता कह ते राहुकम्मे ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

एत्थेगे एवमाहंसु—

१ अत्थि ण से राहू देवे जे ण चंद वा सूर वा गिण्हइ, "एगे एवमाहसु" ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ नत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा सूर वा गिण्हइ "एगे एवमाहंसु" ।

तत्थ जे ते एवमाहसु—

ता अत्थि ण से राहू देवे जे ण चदं वा सूरं वा गिण्हइ, से एवमाहंसु—

ता राहू णं देवे चंदं वा सूर वा गेण्हमाणे—

१ बुद्धतेण गिण्हित्ता, बुद्धतेणंमुयइ,
२ बुद्धतेण गिण्हित्ता, मुद्धतेणमुयइ,
३ मुद्धंतेण गिण्हित्ता, बुद्धतेणमुयइ,
४ मुद्धतेण गिण्हित्ता, मुद्धतेणमुयइ,

१ वामभुयतेण गिण्हित्ता वामभुयतेणं मुयइ,
२ वामभुयतेण गिण्हत्ता, दाहिणभुयतेणं मुयइ,
३ दाहिणभुयंतेण गिण्हित्ता वामभुयतेण मुयइ,
४ दाहिणभुयतेण गिण्हित्ता दाहिणभुयतेणं मुयइ ॥

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

ता नत्थि ण से राहू देवे जे णं चद वा, सूर वा गेण्हइ, ते एवमाहंसु—

तत्थ ण इमे पण्णरसकसिणपोग्गला पण्णत्ता, तंजहा—१. सिंघाणए, २ जडिलए, ३ खरए, ४ खतए, ५. अजणे, ६ खजणे, ७. सीतले, ८ हिम-सीतले, ९ केलासे, १० अरुणाभे, ११. परिज्जए, १२. णभसूरए, १३ कवि-लिए, १४. पिंगलए, १५ राहू ।

ता जया ण एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला सया चदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्ध-चारिणो भवति, तया ण माणुसलोयसि माणुसा एव वयति—"एव खलु राहू चद वा सूर वा गेण्हइ" ।

एव ता जया ण एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला णो सया चदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवति, णो खलु तया माणुसलोयसि माणुसा एवं वयति—"एव खलु राहू चद वा सूर वा गेण्हइ. ते एवमाहसु ।

वय पुण एव वयामो—

ता राहू णं देवे महिड्ढीए महज्जुइए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभावे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे वराभरणधारी।

राहुस्स णव णामाइं

ता राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—१ सिंघाडए, २. जडिलए, ३ खरए, ४. खेत्तए, ५. ढड्डरे, ६. मगरे, ७ मच्छे, ८. कच्छमे, ९ कण्णसप्पे।

राहुस्स विमाणा पंचवण्णा

ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पचवण्णा पण्णत्ता, तंजहा—१. किण्हा, २. नीला, ३ लोहिया, ४. हालिद्दा, ५ सुक्किलला।

अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि हालिद्दए राहुविमाणे हालिद्दावण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाण वा, चंदस्स वा, सूरस्स वा लेस्सं पुरत्थिमेण आवरित्ता पच्चत्थिमेण वीईवयइ, तया ण पुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ पच्चत्थिमेण राहू।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणेणं आवरित्ता उत्तरेणं वीईवयइ, तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ, उत्तरेण राहू।

एएणं अभिलावेण पच्चत्थिमेण आवरित्ता पुरत्थिमेण वीईवयइ, उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीईवयई।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपुरत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं दाहिण-पुरत्थिमेण चंदे वा सूरे वा उवदसेइ, उत्तरपचचत्थिमेण राहू।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स

वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीईवयइ, तया ण दाहिणपच्चत्थिमेण चदे वा, सूरे वा उवदसेइ उत्तरपुरत्थिमेण राहू।

एएण अभिलावेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेण वीईवयई, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपच्चत्थिमेण वीईवयइ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्स आवरेत्ता वीईवयइ तया ण माणुसलोयसि मणुस्सा एवं वयति "राहुणा चदे वा, सूरे वा गहिए।"

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेत्ता पासेणं वीईवयइ, तया ण माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयंति—"चदेण वा, सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा, सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पच्चोसक्कइ तया णं माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति—"राहुणा चंदे वा सूरे वा वते।"

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा, सूरस्स वा लेस आवरेत्ता मज्झ मज्झेण वीईवयइ, तया णं माणुसलोयसि मणुस्सा एवं वयति—"राहुणा चदे वा, सूरे वा विइयरिए।"

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता अहे सपक्खि सपडिदिसि चिट्ठइ, तया ण माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयति—"राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे।"

राहुस्स दुविहत्तं

प. कइविहे णं राहू पण्णत्ते ?

उ. दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—ता धुवराहू य पव्वराहू य।

क. तत्थ ण जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसइ भागेणं भागं चंदस्स लेसं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तंजहा—पढमाए पढमं भागं, जाव पण्णरसमीए पण्णरसम भागं।

चरमे समए चदे रत्ते भवइ,
अवसेसे समए चदे रत्ते य, विरत्ते य भवइ।

तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठइ, तंजहा—पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसमीए पण्णरसमं भागं।

चरमे समए चंदे विरत्ते य भवइ,
अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ।

ख तत्थ णं जे ते पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं,
उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स।

चंदस्स ससी-अभिहाणं

१०४ प. ता कहं ते चंदे ससी चंदे ससी आहिए ? त्ति वएज्जा।

उ ता चंदस्स णं जोईसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंड-मत्तोवगरणाइं।

अप्पणा वि णं चंदे देवे जोईसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभे पियदंसणे सुरूवे।
ता एवं खलु चंदे ससी, चंदे ससी आहिए त्ति वएज्जा।

सूरस्स आइच्चाभिहाणं

प ता कहं ते सूरिए आइच्चे सूरिए आइच्चे आहिए ? त्ति वएज्जा।

उ ता सूरादीया समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूइ वा थोवेइ वा, जाव उस्सप्पिणी, ओसप्पिणीइ वा। ता एवं खलु सूरे आइच्चे सूरे आइच्चे आहिए त्ति वएज्जा।

चंद-सूराईणं काम-भोगपरूवणं

१०५ प ता चंदस्स णं जोईसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—१ चंदप्पभा, २ दोसिणाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पभंकरा।

जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं।

एवं सूरस्स वि णेयव्वं।

प ता चंदिम-सूरिया जोईसिंदा जोइसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति?

उ ता से जहाणामए केई पुरिसे,
पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे,
पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थाए भारियाए सद्धिं,
अचिरवत्तविवाहे,

अत्थत्थी अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवसिए,

से णं ततो लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियगघरं हव्वमागए,

ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए,

अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे,

मणुण्णं थालीपाकसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे,

तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अंतो सचित्तकम्मे,

बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोअ-चिल्लियतले बहुसमसुविभत्तभूमिभाए, मणि-रयण-पणासियंधयारे।

कालागुरू-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए, गंधवट्टिभूए,

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि दुहओ उण्णए मज्झे णयगंभीरे उभओ सालिंगणवट्टिए, उभओ पण्णत्तगंडबिब्बोयणे,

सुरम्मे गंगापुलिण-वालुआ-उद्दाल-सालिसए सुविरइयरयत्ताणे, ओयविय-खोमिय-खोमदुगूलपट्टपडिच्छायणे, रत्तंसुयसंवुडे,

सुरम्मे आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासे, सुगंधवर-कुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिए,
ताए तारिसाए भारियाए सद्धिं सिंगारागारचारुवेसाए संगत-हसित-भणित-चिट्ठित संलाव-विलास-णिउणजुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताविरत्ताए मणोऽणुकूलाए सद्धिं एगंतरतिपसत्ते अण्णत्थ कत्थई मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरिज्जा।

प. ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसए सायासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उ उरालं समणाउसो !

ता तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव वाणमंतराणं देवाणं कामभोगा,

वाणमंतराणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा,

असुरिंदवज्जियाणं देवाणं काम-भोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा,

असुरकुमाराणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव गहगण-णक्खत्त-तारा-रूवाणं कामभोगा,

गहगण-णक्खत्त-तारारूवाण काम-भोगेहिंतो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव चदिम-सूरियाण देवाणं कामभोगा,

ता एरिसए ण चदिम-सूरिया जोईसिदा जोइसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरति ।



अट्ठासीई महग्गहा

१०६ तत्थ खलु इमे अट्ठासीई महग्गहा पण्णत्ता, तंजहा—

१ इंगालए, २ वियालए, ३ लोहियक्खे, ४ सणिच्छरे, ५ आहुणिए, ६ पाहुणिए, ७. कणे, ८ कणए, ९ कणकणए, १० कणवियाणए, ११ कणसताणए।

१२ सोमे, १३ सहिए, १४ अस्सासणे, १५ कज्जोयए, १६ कब्बडए, १७ अयकरए, १८ दुंदुभए, १९ सखे, २० संखवण्णे, २१ सखवण्णाभे, २२ कसे।

२३ कसवण्णे, २४ कंसवण्णाभे, २५ णीले, २६ णीलोभासे, २७ रूप्पी, २८ रूप्पोभासे, २९ भासे, ३० भासरासी, ३१ तिले, ३२ तिलपुप्फवण्णे, ३३ दगे।

३४ दगपचवण्णे, ३५ काले, ३६ काकधे, ३७. इदग्गी, ३८ धूमकेऊ, ३९. हरी, ४० पिंगले, ४१ बुहे, ४२ सुक्के, ४३. बहस्सई, ४४. राहू।

४५ अगत्थी, ४६ माणवगे, ४७ कासे, ४८ फासे, ४९ धूरे, ५० पमुहे, ५१. वियडे, ५२ विसंधी, ५३ णियल्ले, ५४ पयल्ले, ५५ जडियाइल्ले।

५६ अरुणे, ५७ अग्गिल्लए, ५८ काले, ५९ महाकाले, ६०. सोत्थिए, ६१ सोवत्थिए, ६२ वद्धमाणगे, ६३. पलंबे, ६४ णिच्चालोए, ६५ निच्चुज्जोए, ६६ सयंपभे।

६७ ओभासे, ६८ सेयकरे, ६९ खेमकरे, ७० आभकरे, ७१ पभकरे, ७२ अपराजिए, ७३ अरए, ७४. असोगे, ७५ वीयसोगे, ७६ विमले, ७७ वियत्ते।

७८. वितथे, ७९. विसाले, ८० साले, ८१ सुव्वए, ८२ अनियट्टी, ८३ एगजडी, ८४. दुजडी, ८५. करकरिए, ८६ रायग्गले, ८७, पुप्फकेऊ, ८८ भावकेऊ[1]।

---

१ स्थानाग श्र २, उ ३, सू ९५ मे जबूद्वीप के दो चन्द्रो दो सूर्यों के ८८ ग्रहो की सख्या दो दो की दी गई है।

संगहणीगाहाओ

१ इगालए, २ वियालए, ३ लोहियक्खे, ४ सणिच्छरे चेव।
५ आहुणिए, ६. पाहुणिए, ७-११ कणगसनामा उ पचेव ।।

२ १२. सोमे, १३ सहिए, १४. आसासणे य, १५ कज्जोवए य, १६ कब्बडए।
१७ अयकरए, १८ दुदुहए, १९-२१ सखसनामाओ तिन्नेव ।।

३ २२-२४ तिन्नेव कसनामा, २५-२६ णीला, २७-२८ रुप्पी य होति चत्तारि।
२९-३०. भास, ३१-३२ तिलपुप्फवण्णे, ३३-३४ दग-पणवण्णे य, ३५ काय, ३६ काकंधे ।।

४ ३७ इंदग्गि, ३८ धूमकेऊ, ३९ हरि, ४० पिंगलए, ४१ बुहे य, ४२ सुक्के य।
४३ बहस्सई, ४४ राहु, ४५ अगत्थी, ४६ माणवए, ४७ कास, ४८ फासे य ।।

५ ४९ धूरे, ५०. पमुहे, ५१. वियडे, ५२ विसधि, ५३ णियले, ५४ तहा पयल्ले य।
५५ जडियाइलए, ५६ अरुणे, ५७ अग्गिल्ल, ५८ काले, ५९ महाकाले य ।।

६ ६० सोत्थिय, ५१. सोवत्थिय, ६२ वद्धमाणगे, ६३ तहा पलबे य।
६४. णिच्चालोए, ६५ णिच्चुज्जोए, ६६ सयपभे, ६७ चेव ओभासे ।।

७ ६८ सेयकर, ६९ खेमकर, ७० आभकर, ७१ पभकरे व बोद्धव्वे।
७२ अरए, ७३ विरए य तहा, ७४ असोगे, ७४ वीयसोगे य ।।

८. ७६ विमल, ७७. वितत्त, ७८ वितथे, ७९ विसाल, ८० तह साल, ८१ सुव्वए चेव।
८२ अनियट्टी, ८३ एगजडी य, ८४ होइ बिजडी य बोद्धव्वे ।।

९ ८५. करकरए, ८६ रायगल, ८७ बोद्धव्वे पुप्फ, ८८ भावकेऊ य।
अट्ठासीई गहा खलु णेयव्वा आणुपुव्वीए ।।

□□

उवसंहारो

१०७ इइ एस पाहुडत्था, अभव्वजणहियययदुल्लाहा इणमो ।
उक्कित्तिया भगवई, जोइसरायस्स पण्णत्ती ।।

एस गहियाऽवि सता, थद्धे गारविय माणि-पडिणीए ।
अबहुस्सए ण देया, तव्विवरीए भवे देया ।।

सद्धा-धिति-उट्ठाणुच्छहह-कम्म-बल-विरिय-पुरिसकारेहिं ।
जो सिक्खिओऽवि सतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ।।

सो पवयण-कुल-गण-सघबाहिरो णाण-विणय-परिहीणो ।
अरहत-थेर-गणहरमेरं किर होइ वोलीणो ।।

तम्हा धितिउट्ठाणुच्छाह कम्म-बल-विरियसिक्खिअं णाणं ।
धारेयव्वं णियमा ण य अविणएसु दायव्वं ।।

वीरवरस्स भगवओ, जर-मरण-किलेस-दोसरहियस्स ।
वदामि विणयपणओ, सोक्खुप्पाए सया पाए ।।

।। सूरियपण्णत्ती समत्ता ।।



सुयथविरपणीयं चंदपण्णत्तिसुत्तं

नमो अरिहंताणं ।।

जयइ नव-नलिण-कुवलय-वियसिय-सयवत्त-पत्तलदलच्छो ।
वीरो गइद-मयगल-सललिय-गयविक्कमो भयव ।। १ ।।

नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवंदिए गयकिलेसे ।
अरिहे सिद्धायरिय-उवज्झाए सव्वसाहू य ।। २ ।।

फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छ पुव्व-सुय-सार-नीसद ।
सुहुम गणिणोवइट्ठ, जोइस-गणरायपण्णत्ति ।। ३ ।।

नामेण इदभूइत्ति गोयमो वदिऊण तिविहेण ।
पुच्छइ जिणवर-वसहं, जोइसरायस्स पण्णत्ति ।। ४ ।।

कइ मडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छई २ ।
ओभासइ केवइयं ३, सेयाइ किं ते सठिई ४ ।। ५ ।।

कहिं पडिहया लेसा ५, कह ते ओयसठिई ६ ।
के सूरिय वरयते ७, कह ते उदयसठिई ८ ।। ६ ।।

कइकट्ठा पोरिसीच्छाया ९, जोगेत्ति किं ते आहिए १० ।
किं ते सवच्छराणाई ११, कइ सवच्छराइ य १२ ।। ७ ।।

कह चंदमसो वुड्ढी १३, कया ते दो (जो) सिणा बहू १४ ।
के सिग्घगई वुत्ते १५, किं ते दो (जो) सिणलक्खण १६ ।। ८ ।।

चयणोववाय १७, उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९ ।
अणुभावे केरिसे वुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ।। ९ ।। सूत्र १ ।।

वड्ढोवड्ढी १, मुहुत्ताण-मद्धमडलसठिई २ ।
के ते चिण्ण परियरइ ३, अतर किं चरति य ४ ।। १० ।।

ओगाहइ केवइयं ५, केवइयं च विकपइ ६ ।
मडलाण य सठाणे ७, विक्खभो ८ अट्ठ पाहुडा ।। ११ ।। सूत्र २ ।।

छप्पंच य सत्तेव य, अट्ठ य तिन्नि य हवंति पडिवत्ती ।
पढमस्स पाहुडस्स उ, हवंति एयाओ पडिवत्ती ।। १२ ।। सूत्र ३ ।।

पडिवत्तीओ उदए, अदुव अत्थमणेसु य।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य॥ १३॥

निक्खममाणे सिग्घगई, पविसते मदगईइ य।
चुलसीइसयं पुरिसाण, तेसिं च पडिवत्तीओ॥ १४॥

उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयग्घाए दुवे च पडिवत्ती।
चत्तारि मुहुत्तगईए, होति तइयम्मि पडिवत्ती॥ १५॥ सूत्र ४

आवलिय १, मुहुत्तग्गे २, एवभागा ३ य, जोगस्सा ४।
कुलाइ ५, पुण्णमासी ६ य, सनिवाए ७ य सठिई ८॥ १६॥

तारग्ग ९, च णेता य, १०, चदमग्गत्ति ११ यावरे।
देवताण य अज्झयणा १२, मुहुत्ताणं नामया १३ इय॥ १७॥

दिवसा राई य वुत्ता १४ य, तिहि १५, गोत्ता १६ भोयणाणि य १७।
आइच्चचार १८, मासा १९ य, पंच सवच्छरा २० इय॥ १८॥

जोइसस्स य दाराइं २१, नक्खत्तविचए २२ विय।
दसमे पाहुडे एए, बावीस पाहुड-पाहुडा॥ १९॥ सूत्र ५॥

तेणं कालेण तेण समएण मिहिला णाम णयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पासादीया, वण्णओ॥ १॥

तीसे ण मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था चिराईए, वण्णओ॥ २॥

तीसे ण मिहिलाए णयरीए जियसत्तूणाम राया, धारिणी देवी, वण्णओ॥ ३॥

तेण कालेणं तेण समएणं तमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥ ४॥ सूत्र ६॥

तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई णाम अणगारे गोयमगोत्ते णं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी॥ सूत्र ७॥

प० ता कह ते वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताण आहितेत्ति वदेज्जा?

उ० गोयमा! ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसते सत्तावीस च सत्तट्ठिभागो मुहुत्तस्स आहितेत्ति वदेज्जा॥ सूत्र ८॥

जाव •

इय एस पागडत्था, अभव्वजणहियय-दुल्लभा इणमो।
उक्कित्तिया भगवती जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥ १ ॥

एस गहियावि संती, थद्धे गारवियमाणपडिणीए।
अबहुस्सुए ण देया, तव्विवरीए भवे देया ॥ २ ॥

(सद्धा) धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलविरिय-पुरिसकारेहिं।
जो सिक्खिओवि संतो, अभायणे पक्खिविज्जाहि ॥ ३ ॥

सो पवयण-कुल-गण-संघबाहिरो णाणविणय-परिहोणो।
अरहंत-थेरगणहरमेरं किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥

तम्हा धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलवीरियसिक्खियं नाणं।
धारेयव्वं णियमा, ण य अविणएसु दायव्वं ॥ ५ ॥

वीरवरस्स भगवतो, जरमरण-किलेस-दोसरहियस्स।
वंदामि विणयपणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ सूत्र १०७ ॥

वीसइमं पाहुड समत्त ॥

चदपन्नत्ती समत्ता ॥

परिशिष्ट

श्री सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र का गणित विभाग

सूत्रसंख्या ८

मुहूर्त के परिमाण की हानि-वृद्धि : नक्षत्रमास के मुहूर्त का परिमाण

एक युग के अहोरात्र १८३० होते हैं। एक युग के नक्षत्रमास की संख्या ६७ है। एक नक्षत्रमास के दिवस १८३०÷६७ करने से २७ दिन २१/६७ मुहूर्त प्रमाण होता है। वह इस प्रकार—

```
६७)१८३०(२७
   १३४
   ———
   ४९०
   ४६९
   ———
    २१
```

२१/६७ के मुहूर्त करने के लिए ३० से गुणा करने पर २१×३०=६३० होते हैं। उनको ६७ से भाग देने पर (६३०÷६७) ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होते हैं। अर्थात् नक्षत्रमास २७ दिवस ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होता है। उसके मुहूर्त करने पर २७×३०=८१० होते हैं। उनमे ९ जोड़ने से ८१९ होते हैं। अतएव नक्षत्रमास के मुहूर्तों की संख्या ८१९। २७/६७ होती है।

सूर्यमास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग के दिवस १८३० हैं और एक युग के सूर्यमास ६० हैं। सूर्यमास के दिवस करने के लिए १८३० को ६० से भाग देने पर ३० दिन और ३०/६० होंगे। उनके मुहूर्त करने के लिए सूर्यमास के दिनों को ३० से गुणा करने पर ३०×३०=९०० होते हैं और ३०/६० को ३० से गुणा करने पर ३०×३०÷६० करने पर १५ मुहूर्त होते हैं। इनको ९०० मे जोड़ने पर ९१५ मुहूर्त होते हैं। अर्थात् सूर्यमास के मुहूर्तों की संख्या ९१५ होती है।

चन्द्रमास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग के चन्द्रमास ६२ होते है और एक युग के दिवस १८३० हैं। चन्द्रमास के दिन बनाने के लिए १८३०÷६२ करने से २९ दिन ३२/६२ प्राप्त होते हैं। इनके मुहूर्त बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर २९×३०=८७० होंगे और ३२/६२×३० करने पर ९६०/६२ होंगे एव मुहूर्त के

रूप मे १५ मुहूर्त ३०/६२ होगे। इस सख्या को पूर्वोक्त ८७० मे मिलाने पर ८८५ मुहूर्त पूर्ण एव ३०/६२ मुहूर्त की संख्या होगी।

कर्ममास के मुहूर्तों की सख्या

एक युग मे ३० दिन का एक कर्ममास होता है। उसके मुहूर्त वनाने के लिए ३० से गुणा करने पर ३०×३०=९०० होते हैं। यह कर्ममास के मुहूर्तों की सख्या है।

मास	मुहूर्तों की सख्या
१ नक्षत्रमास	८१९×२७/६७ मु
२ सूर्यमास	९१५ मु
३ चन्द्रमास	८८५। ३०/६२ मु
४ कर्ममास	९०० मु

प्रथम प्राभृत का आठवा सूत्र समाप्त

सूत्रसंख्या ९, १०, ११

३६६ रात्रि-दिवस का प्रमाण

सर्वाभ्यंतरमडल से सर्ववाह्य मडल मे गमन करने पर एव सर्ववाह्य मडल से सर्वाभ्यतर मडल मे गमन करने पर सूर्य को (३६६ रात्रि दिवस) लगते है। —सूत्र स. ९

सूर्य ३६६ दिवस मे १८४ मडल मे सचार करता है। —सूत्र स १०

रात्रि-दिवस की हानि-वृद्धि का प्रमाण

सूर्य ३६६ दिवस मे सर्वाभ्यन्तर मडल मे से सर्ववाह्य मडल मे, सर्ववाह्य मडल मे से सर्वाभ्यन्तर मडल मे परिक्रमा करता है। सर्वाभ्यन्तर मडल मे से सर्ववाह्य मडल तक १८३ दिवस मे परिक्रमा करता है। जव सूर्य सर्वाभ्यन्तर मडल मे होता है तव १८ मुहूर्त का दिन एव १२ मुहूर्त की रात्रि होती है। सर्वाभ्यन्तर मडल मे से सर्ववाह्य मडल तक जाने मे १८३ दिन होते हैं और उस समय मे ६ मुहूर्त की हानि-वृद्धि होती है।

एक दिवस मे मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि-हानि होती है। अर्थात् दिवस के परिमाण मे मुहूर्त के २/६१ भाग की हानि होती है और रात्रि के परिमाण मे मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि होती है।

सूर्य जैसे-जैसे वाह्यमडल की ओर गमन करता है वैसे-वैसे दिवस के परिमाण मे हानि और रात्रि के प्रमाण मे वृद्धि होती है।

सूर्य जव सर्ववाह्यमडल मे वर्तमान होता है तव १२ मुहूर्त का दिन और १८ मुहूर्त की रात्रि होती है। सूर्य जैसे-जैसे सर्वाभ्यन्तरमडल की तरफ गमन करता है वैसे-वैसे दिन मे वृद्धि और रात्रि में हानि होती है।

प्रथम ६ मास मे दिवस घटता है और रात्रि बढती है। दूसरे ६ मास मे दिवस बढता है और रात्रि घटती है।

हानि-वृद्धि का प्रमाण मुहूर्त के २/६१ भाग जितना होता है। —सूत्र ११

प्रथम प्राभृत का प्रथम प्राभृत-प्राभृत समाप्त

तृतीय प्राभृत-प्राभृत मे 'सयमेग चोयाल' गाथा अपूर्ण होने से अर्थ नही कर सकते है। शेष व्यवच्छेद है। इस प्रकार श्री अमोलक ऋषिजी ने सूर्यप्रज्ञप्ति की भाषा मे लिखा है तथा टीकाकार मलयगिरिकृत टीका से भी यथार्थ गणित १४४ आता नही है। जिनके ध्यान मे गणित की प्रक्रिया हो यदि वे बताने की कृपा करेंगे तो श्रुतसेवा मानी जायेगी।

प्रथम प्राभृत का तृतीय प्राभृत-प्राभृत समाप्त।

सूत्र १५

दो सूर्यो के (भरत और ऐरवत के) संचरण समय मे परस्पर अन्तर

सचरण करते समय दोनो सूर्यों के बीच प्रत्येक मडल मे ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर होता है। जब दोनो सूर्य सर्वाभ्यन्तरमडल मे वर्तमान हो तब दोनो सूर्यों के बीच ९९६४० योजन अन्तर होता है।

जम्बूद्वीप क्षेत्र एक लाख योजन के विष्कम्भ वाला है। प्रत्येक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके सचार करता है।

१००००० योजन मे से दोनो सूर्य का अवगाहन क्षेत्र १८० और १८० योजन कुल मिलाकर ३६० योजन कम करने पर ९९६४० योजन शेष रहते है। जो सर्वाभ्यन्तरमडल मे वर्तमान दोनो सूर्यो का अन्तर होता है।

१८४ सूर्यमडल के १८३ अन्तर होते है और एक मडल का दूसरे मडल तक २ योजन ४८/६१ भाग का अन्तर होता है। अत जब सूर्य एक मडल से दूसरे मडल मे जाता है तव दोनो ओर के मडल के अन्तर २ योजन ४८/६१ और २ योजन ४८/६७ का जोड करने पर ५ योजन ३५/६१ भाग होता है।

सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान दोनो सूर्यो का परस्पर अन्तर

दोनो सूर्यों की अपेक्षा प्रतिमडल ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर पूर्व मे वताया है। सर्व-आभ्यन्तर मडल से सर्वबाह्यमडल १८३ वा होता है। १८३ को ५ योजन ३५/६१ से गुणा करने पर $\frac{३ \times ३४०}{६१}$ इस प्रकार १०२० योजन अन्तर आता है। इस १०२० योजन अन्तरको ९९६/४० मे मिलाने पर १००६६० योजन होता है। जो सर्वबाह्यमडल मे वर्तमान दो सूर्यो का परस्पर अन्तर है। —सूत्र १५

प्रथम प्राभृत का चौथा प्राभृत-प्राभृत समाप्त।

एक अहोरात्र में सूर्य का सचरण-क्षेत्र

सूर्य एक अहोरात्र मे २ योजन ४८/६१ भाग सचरण करता है। सूर्य १८३ दिवस मे ५१० योजन सचरण करता है, जिससे एक दिवस मे २ योजन ४८/६१ भाग सचरण करता है ।

१८३ मडल का १८३ दिवस मे सूर्य सचरण करता है। एक दिवस मे एक मडल मे सचार करता है। सूर्य के सर्वमडलो का सचरण क्षेत्र ५१० योजन का है। एक मडल का एक दिवस का सचरण २ योजन ४८/६१ भाग होता है। —सूत्र १८

प्रथम प्राभृत का छठा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।

सूत्र २०

प्रत्येक मडल का विष्कम्भ-आयाम

जव सूर्य सर्वाभ्यन्तरमडल मे हो तव १ लाख योजन का ४८/६१ भाग वाहल्य से ९९६४० योजन आयाम-विष्कम्भ से ३१५०८९ योजना परिक्षेप से सक्रमण करता है तब १८ मुहूर्त का उत्कृष्ट दिवस और जघन्य १२ मुहूर्त की रात्रि होती है ।

जव सूर्य सर्वाभ्यन्तरमडल के अनन्तरवर्ती मडल मे सक्रमण करता है तब १ योजन का ४८/६१ भाग वाहल्य से ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग आयाम विष्कम्भ से, ३१५१०७ योजन किंचित् विशेष न्यून परिक्षेप से चार (गति) करता है। तव दिवस और रात्रि का प्रमाण सर्वाभ्यन्तर-मडल के समान ही होता है।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में आयाम-विष्कम्भ का प्रमाण

एक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके गति करता है। जम्बूद्वीप के दोनो सूर्य की अपेक्षा ३६० योजन अवगाहना जम्बूद्वीप क्षेत्र के १ लाख योजन प्रमाण मे से कम करने पर ९९६४० योजन रहते हैं। जो सर्वाभ्यन्तरमडल का आयाम-विष्कम्भ है ।

सूत्र २०

सर्वाभ्यन्तरमडल का परिक्षेप

सर्वाभ्यन्तरमडल का परिक्षेप (३१५०८९) योजन है। वह इस प्रकार है—

$\sqrt{(\text{सर्वाभ्यन्तर मडल का विष्कम्भ})^2 \times 10}$ इस सूत्र से परिक्षेप का विचार करने पर निम्न प्रकार से होगा—

$$\sqrt{(९९६४०)^2 \times १०}$$

$$\sqrt{९९२८१२९६०० \times १०}$$

$$\sqrt{९९२८१२९६०००}$$

```
 )| | | | | |
  ९९२८१२९६०००

  ३१५०८९ योजन परिक्षेप
 )| | | | | |
 ३  ९२२८१२९६०००
+३  ९
---  ---
 ६१  ०
+१  ६१
---  ------
 ६२५  ३१८१
  +५  ३१२५
------  ----------
 ६३००८  ००५६२९६०
    +८    ५०४०६४
------  ----------
६३०१६९     ०५६८९६००
    +९      ५६७१५२१
------  ----------
६३०१७८      ००१८०७९
```

उक्त प्रकार से गणित करने पर सर्वाभ्यतरमडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन होता है और १८०७९ शेष रहते हैं।

प्रत्येक मंडल का परिक्षेप

प्रत्येक मडल मे ५ योजन ३५/६१ भाग आयाम-विष्कम मे वृद्धि होती है। तदनुसार सर्वाभ्यतरमडल के अनन्तरवर्ती मडल का आयाम विष्कम ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग है। प्रत्येक मडल का परिक्षेप निकालने के लिये (जानने के लिये) ५ योजन के इकसठिया भाग करने पर ५×६१=३०५ आते हैं। उनमे ३५ भाग और मिलाने पर ३४० होते हैं।

परिक्षेप निकालने की विधि—

(विष्कभ का)^2 × १०

$\sqrt{(३४०)^2 \times १०}$

$\sqrt{११५६०० \times १०}$

$\sqrt{११५६०००}$

```
        १०७५
        | | | |
१   )११५६०००
१    १
--------------------
२०७   ०१५६०
  ७    १४४९
--------------------
२१४५   ०१११००
   ५    १०७२५
--------------------
२१५०   ००३७५
```

१०७५ के योजन बनाने के लिये ६१ से भाग देने पर [१०७५—६१] १७ योजन ३८/६१ आएगे। प्रत्येक मडल मे १७ योजन ३८/६१ भाग परिक्षेप बढता है।

प्रत्येक परिमडल का परिक्षेप व्यवहार से १८ योजन और निश्चय से १७ योजन ३८।६१ भाग है। प्रत्येक मडल के परिक्षेप मे १८ योजन मिलाने पर दूसरे मडल का परिक्षेप होता है। ऐसा करने पर सूर्य सक्रमण करता-करता सर्ववाह्य मडल मे आता है तब आयाम विष्कभ १००६६० होता है।

सर्ववाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१४ ८६९ है

व्यवहार से ३१८३१५ योजन होता है।

सर्ववाह्य मंडल का आयाम-विष्कम-परिक्षेप निकालने की विधि

प्रत्येक मडल मे ५ योजन ३५।६१ भाग बढता है जिससे सर्वबाह्यमडल मे कितनी वृद्धि होगी ?

परिमडल १८३ होने से ५ योजन ३५/६१ भाग से गुणा करने पर १८३ मडल×५ योजन=९१५ योजन होते हैं।

३५ भाग×१८३ मडल=६४०५ होते है। इनके योजन बनाने के लिये ६४०५ को ६१ से भाग देने पर १०५ योजन आते हैं। पूर्वोक्त ९१५ योजन मे १०५ योजन मिलाने से १०२० योजन होते हैं। सर्वाभ्यतरमंडल के आयाम ९९६४० योजन मे १०२० योजन जोडने से सर्वबाह्यमडल का १००६६० योजन आयाम होता है।

सर्ववाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन है। जिसको प्राप्त करने की विधि इस प्रकार है—

सर्वबाह्यमंडल का परिक्षेप निकालने की विधि

परिक्षेप निकालने के लिये

$\sqrt{(\text{आयाम})^२ \times १०}$

$\sqrt{(१००६६०)^२ \times १०}$

$\sqrt{१०१३२४३५६०० \times १०}$

३१८३१४ ८६९ योजन परिक्षेप

	$\sqrt{१०१३२ ४३५६०००}$
३	१०१३२ ४३५६०००
३	९
६१	११३
१	६१
६२८	५२२४
८	५०२४
६३६३	०२००३५
३	१९०८९
६३६६१	००९४६६०
१	६३६६१
६३६६२४	३०९९९००
४	२५४६४९६
६३६६२८८	०५५३४०४००
८	५०९३०३०४
६३६६२९६६	०४४१००९६००
६	३८१९७५७९६
६३६६२९७२९	५९०३३८०४००
९	५६२९६६७५६१

इस प्रकार ८६९ हजार से कम हैं, परन्तु 'अर्धादूर्ध्वमेक ग्राह्यम्' इस न्याय से ३१४ के स्थान पर ३१५ ग्रहण किये हैं। इस प्रकार सर्ववाह्यमडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन (व्यवहार से) होता है।

सर्वाभ्यतरमडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन है। पूर्व मे बताई गई रीति से प्रत्येक मडल के परिक्षेप मे १७ योजन ३८।६१ भाग की वृद्धि होती है तो १८३ मडल मे कितने योजन परिक्षेप की वृद्धि होती है ?

१८३ मडल × १७ योजन = ३१११ योजन होते हैं।

१८३ मडल × ३८ (योजन का भाग) करने पर ६९५४ भाग आयेगे।

६९५४ भाग के योजन करने के लिये ६१ से भाग देने पर ११४ योजन होगे।

३१११ योजन मे ११४ योजन मिलाने पर ३२२५ योजन १८३ परिमडल की परिक्षेप वृद्धि होती है।

सर्वाभ्यतरमडल के परिक्षेप ३१५०८९ योजन मे ३२२५ योजन के मिलाने पर सर्ववाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१४ होगा।

इस सूत्र के मूल पाठ मे ३१८३१५ योजन सर्ववाह्यमडल का परिक्षेप कहा है। वह व्यवहार से समझना चाहिये। क्योकि पूर्व मे प्रत्येक मडल का परिक्षेप निकालने पर ३७५ शेष बढते हैं। उनको १८३ मडल से गुणा करने पर ६८६२५ आते है। इस सख्या को २१५० से भाग देने पर ३१ आते है। जो ६१ के अर्धभाग की अपेक्षा विशेप होने से व्यवहार से पूर्ण मानकर ३१८३१५ कहे हैं।

प्रत्येक मडल का अतर २ योजन ४८।६१ भाग है। दोनो सूर्य के मडल का अन्तर ५ योजन ३५/६१ भाग है। सर्वमडल का क्षेत्र ५१० योजन है। —सूत्र २०

प्रथम प्राभृत का अष्टम प्राभृत-प्राभृत समाप्त।

सूत्र २३

सूर्य की प्रत्येक मंडल मे प्रतिमुहूर्त्त की गति

सूर्य जव मडल मे सक्रमण करता है तब अपनी एक विशेष गति से सक्रमण करता है। भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र के दोनो सूर्य अपनी विशिष्टगति से सक्रमण करके ६० मुहूर्त्त मे १ मडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं।

अर्थात् २ अहोरात्र मे दोनो सूर्य १ मडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं।

प्रत्येक मुहूर्त्त की सूर्य की विशेष गति इस सूत्र से ज्ञात की जा सकती है—

१ मुहूर्त्त की गति = मडल की परिधि — २ अहोरात्र के मुहूर्त्त

१ अहोरात्र के ३० मुहूर्त्त के अनुसार २ अहोरात्र के ६० मुहूर्त्त होते हैं।

सर्वाभ्यतरमडल की परिधि ३१५०८९ योजन है।

सर्वाभ्यतरमडल की परिक्रमा दोनो सूर्य ६० मुहूर्त्त मे पूर्ण करते हैं।

सर्वाऽभ्यतरमंडल मे सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति

सर्वाभ्यतरमडल की परिधि — ६० मुहूर्त्त = १ मुहूर्त्त की गति।

३१५०८९ योजन — ६० मुहूर्त्त = ५२५१ योजन २९/६० भाग सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति है।

प्रत्येक मडल की परिधि मे व्यवहार से १८ योजन का अतर होता है। अर्थात् सर्वाभ्यतर मडल की परिधि मे १८ योजन मिलाने पर सर्वाभ्यतरमडल के अनन्तरवर्ती दूसरे मे उसकी परिधि आती है। तदनुसार दूसरे मडल की परिधि मे १८ योजन मिलाने पर तीसरे मडल की परिधि आती है।

इस प्रकार प्रत्येक मडल की परिधि ज्ञात की जा सकती है।

प्रत्येक मडल मे सूर्य की एक मुहूर्त्त मे कितनी गतिवृद्धि होती है, यह जानने के लिये इस सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

प्रत्येक मडल मे परिधि की वृद्धि—६० मुहूर्त्त।

प्रत्येक मडल मे १८ योजन परिधि मे वृद्धि होती है। उसे ६० मुहूर्त्त से भाग देने पर १ मुहूर्त्त मे होने वाली गतिवृद्धि प्राप्त होगी।

१८ योजन प्रत्येक मडल की परिधि मे होने वाली वृद्धि—६० मुहूर्त्त=१८।६० योजन १ मुहूर्त्त मे गति मे वृद्धि होती है।

सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का अतर ज्ञात करने की विधि

उस-उस मडल मे विद्यमान सूर्य दृष्टिपथ के क्षेत्र का अतर ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

सूर्य की उस-उस मडल मे एक मुहूर्त्त की गति × दिनमान का अर्धभाग।

सर्वाभ्यन्तर मडल मे सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण ४७२६३ योजन २१।६० भाग है। उसको जानने के लिये उपर्युक्त सूत्र का उपयोग करने पर—५२५१ योजन २९।६० भाग।

(सर्वाभ्यतरमडल मे सूर्य की एक मुहूर्त्त की गति) ×९ मुहूर्त्त (दिनमान का अर्धभाग)

$$= \frac{३१५०८९ \times ९}{६०} \qquad = \frac{२८३५८०१}{६०}$$

=४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यतर मडल मे सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सर्वाभ्यंतर मडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण जानने की दूसरी विधि

$$\frac{\text{उस-उस मडल की परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$\frac{\text{सर्वाभ्यतरमडल की परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$\frac{३१५०८९ \times ९}{६०}$$

$$=\frac{२८३५८०१}{६०}$$

=४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यतरमडल मे सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सर्वबाह्यमंडल मे सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

सर्वबाह्यमडल मे सूर्य की एक मुहूर्त्त की गति

सर्वबाह्यमंडल की परिधि

$$\text{मडल की परिक्रमा करते हुए लगता समय}=\frac{\text{३१८३१५ योजन}}{\text{६० मुहूर्त्त}}$$

=५३०५ योजन १५।६० भाग १ मुहूर्त्त मे सूर्य की गति।

सर्वबाह्यमडल मे सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

सर्वबाह्यमंडल मे सूर्य की १ मुहूर्त्त मे गति × दिनमान का अर्धभाग

$$=\frac{\text{३१८३१५} \times \text{६ मुहूर्त्त दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$=\frac{१९०९८९०}{६०}$$

=३१८३१ योजन ३०।६० भाग सर्वबाह्यमडल मे दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण।

द्वितीय विधि—

$$\frac{\text{परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$=\frac{३१८३१५ \times ६}{६०}$$

$$=\frac{१९०९८९०}{६०}$$

=३१८३१ योजन ३०।६० भाग सर्वबाह्यमडल मे दृष्टिथप क्षेत्र का प्रमाण

१—उस-उस मडल मे सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति निकालने के लिये उस-उस मडल की परिधि को ६० से भाग देने पर १ मुहूर्त्त की गति प्राप्त होती है।

२—दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण निकालने के लिये १ मुहूर्त्त की गति को (सूर्य की) दिनमान के अर्धभाग से गुणा करने पर जो लब्धि आये वह दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण जानना चाहिये। —सूत्र २३

दूसरा प्राभृत समाप्त।

सूत्र २४

सूर्य द्वारा प्रकाशमान क्षेत्र का प्रमाण

जब सूर्य सर्वाभ्यतरमडल मे वर्तमान होता है तब जबूद्वीप के कल्पित पाँच चक्रवाल मे से डेढ भाग प्रकाशित करता है और एक भाग अप्रकाशित होता है।

जम्बूद्वीप मे वर्तमान दोनो सूर्य की अपेक्षा पाँच चक्रवाल मे से तीन भाग प्रकाशित करते हैं और दो भाग अप्रकाशित होते हैं। अर्थात् जम्बूद्वीप के कल्पित पाँच भाग मे से तीन भाग दिन होता है और दो भाग रात्रि होती है।

जम्बूद्वीप के ३६६ भाग की कल्पना करने पर १ भाग (चक्रवाल) के ७३२ भाग होते हैं, ३ चक्रवाल के २१९६ भाग होते है। अर्थात् ३६६० भाग मे से २१९६ भाग का दिवस होता है १४६४ भाग रात्रि होती है, अथवा दोनो सूर्य ६० मुहूर्त्त मे १ मडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं। जम्बूद्वीप के पाँच चक्रवाल की कल्पना करने पर १ चक्रवाल १२ मुहूर्त्तात्मक होता है। १२ मुहूर्त्त का काल जम्बूद्वीप के ३६६० भाग की कल्पना मे ७३२ भागात्मक होता है।

सर्वाभ्यितर मडल से सूर्य जब सर्ववाह्यमडल की ओर गमन करता है तब प्रतिमडल मे अहोरात्र मे २।६१ भाग हानि-वृद्धि होती है।

सर्वाभ्यन्तर मडल को कम करने पर सर्ववाह्य मडल १८३ वा आता है। जिससे १८३×२ करने पर ३६६/६१ भाग की हानि-वृद्धि अहोरात्र मे होती है। अर्थात् ६ मुहूर्त्त दिवस मे हानि और रात्रि मे वृद्धि होती है। दोनो सूर्य की अपेक्षा १२ मुहूर्त की हानि-वृद्धि होती है। सर्ववाह्यमडल मे सूर्य १ भाग प्रकाशित करता है और डेढ भाग अप्रकाशित रहता है।

पूर्व मे वताये गये अनुसार एक-एक सूर्य की अपेक्षा १ भाग दिवस और डेढ भाग रात्रि रहती है। दोनो सूर्य की अपेक्षा २ भाग दिवस और तीन भाग रात्रि होती है।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे ३ भाग दिवस और २ भाग रात्रि होती है।

सर्ववाह्यमडल मे २ भाग दिवस और ३ भाग रात्रि होती है।

१ भाग १२ मुहूर्तात्मक जानना चाहिए।

जम्बूद्वीप के ५ चक्रवाल की परिकल्पना करने पर १ चक्रवाल १२ मुहूर्त्तात्मक होता है। क्योकि दोनो सूर्य की अपेक्षा ६० मुहूर्त का काल ५ भागात्मक होता है।

तीसरा प्राभृत समाप्त।—सूत्र २४ समाप्त।

६३२४५५४६	०४२७५२७१००
६	३७९४७३२७६
६३२४५५५२	४८०५३८२४

७७६ एक हजार के अर्धभाग (५००) की अपेक्षा अधिक है। 'अर्द्धादूर्ध्वमेक ग्राह्यम्' के विधान से पूर्व संख्या गिन कर व्यवहार से ३१६२३ योजन बतलाये हैं।

उनके तिगुने करने से ९४८६९ होते है। उनको १० से भाजित करने पर ९४८६ योजन ९/१० भाग सर्वाभ्यन्तर तापक्षेत्र संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर-बाहा का परिमाण है।

जम्बूद्वीप के परिक्षेप से सर्वबाह्य बाहा का परिमाण

परिक्षेप = (विष्कम्भ)^2 × १०

जम्बूद्वीप का परिक्षेप प्रसिद्ध है। उसे ३ से गुणा करके १० से भाग देने पर ९४८६८ योजन ४/१० होते हैं।

जम्बूद्वीप का परिक्षेप ३१६२२७ योजन, ३ गव्यूति १२८ योजन और १३½ अगुल है। परन्तु व्यवहार से ३१६२२८ योजन मानकर इसे गुणा करने पर ९४८६८४ योजन होते है। उनको १० से भाग देने पर ९४८६८ योजन ४/१० भाग सर्वबाह्य बाहा का परिमाण होता है।

उत्तर-दक्षिण दिशा से तापक्षेत्र का आयाम

आयाम = उत्तर-दक्षिण दिशा का अन्तर
विष्कम्भ = पूर्व-पश्चिम दिशा का अन्तर
तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ योजन १/३ भाग है।
मेरुपर्वत से जम्बूद्वीपपर्यन्त ४५००० योजन है।

लवणसमुद्र के विस्तार का छठा भाग ३३३३३ ३३३ योजन है। दोनो का जोड करने पर तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ ३३३ योजन होता है।

अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा का परिमाण

अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा का परिमाण ६३२४ योजन ६/१० भाग है।

मेरुपर्वत के परिक्षेप को २ से गुणा कर १० से भाजित करने पर आभ्यन्तर बाहा का परिमाण ज्ञात होता है।

मेरुपर्वत की परिधि ३१६२३ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४६ योजन होते हैं। उन्हे १० से भाग देने पर ६३२४ योजन ६/१० अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा आती है।

लवणसमुद्र की निकटवर्ती जम्बूद्वीप तक की अन्धकार संस्थिति की सर्वबाह्य बाहा

जम्बूद्वीप की परिधि के २ से गुणा कर १० से भाग देने पर सर्वबाह्य बाहा का परिमाण

प्राप्त होता है। जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२८ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४५६ योजन होते हैं। जिन्हे १०६३२४५ योजन ६/१० भाग सर्वबाह्य बाहा का परिमाण होता है।

अन्धकार सस्थिति की लम्बाई तापमान की लम्बाई जितनी जाननी चाहिए।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे जो तापमान की स्थिति है वह सर्वबाह्य मडल मे अन्धकार की स्थिति जानना चाहिये।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे जो अन्धकार की स्थिति है वह सर्ववाह्यमडल मे ताप की स्थिति जानना चाहिए। अर्थात् सर्ववाह्यमडल मे तापमान की आभ्यान्तर बाहा ६३२४ योजन ६/१० भाग है। सर्वबाह्य बाहा ६३२४५ योजन ६/१० भाग है। तापमान की लम्बाई ७८३३३ ३३३ योजन है।

अन्धकार की सस्थिति सर्ववाह्य मडल मे आभ्यान्तर बाहा ६४८६ योजन ६/१० भाग है। शेष वाहा ६४८६८ योजन ४/१० भाग है। अन्धकार सस्थिति की लम्वाई ७८३३३ ३३३ योजन है।

—सूत्र २५ समाप्त

चतुर्थ प्राभृत समाप्त।

सूत्र ३३

दसवें प्राभृत का दूसरा प्राभृत-प्राभृत

अहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करनी चाहिये।

अहोरात्र के ६७ भाग मे से भाग सख्या	नक्षत्र सख्या	चन्द्र के साथ योग मुहूर्त	नक्षत्रनाम
२१	१	९ मु २७/६७	अभिजित
३३ भाग १/२	६	१५ मु	शतभिषा भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति ज्येष्ठा
६७	१५	३० मु	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा० रेवती, अश्विनी, कृतिका मृगशिर, पुष्य, मघा, पू० फा० हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढा
१०० भाग १/२	६	४५ मु	उ० भा० रोहिणी पुन० उ फा विशाखा उत्तराषाढा०

उपर्युक्त कोष्ठक नक्षत्र का चद्र के साथ कितने मुहूर्त्त का योग होता है, यह बतलाने के लिये है।

नक्षत्रो का सूर्य के साथ योग

नक्षत्र सख्या	सूर्य के साथ योग दिवस	मुहूर्त्त	नक्षत्रो का नाम
१	४	६	अभिजित
६	६	२१	शतभिषा, भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति, जेष्ठा
१५	१३	१२	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा रेवती, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, पू फा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल० पूर्वाषाढा
६	२०	३	उ भा, रोहिणी, पुनर्वसु उ फा, विशाखा, उ. षाढा।

जो नक्षत्र चन्द्रमा के साथ १ दिवस के ६७ भाग मे से अथवा उससे विशेप जितने भाग गमन करता है, उसके पाँचवे भाग प्रमाण सूर्य के साथ दिवस और मुहूर्त्त के परिमाण से गमन करता है।

जैसे कि अभिजित नक्षत्र चन्द्र के साथ २१।६७ भाग गमन करता है तो सूर्य के साथ कितना गमन करता है ? यह जानने के लिये २१ भाग को ५ से भाग देने पर ४ दिवस १।५ भाग मुहूर्त्त आते है। १।५ के मुहूर्त्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर ६ मुहूर्त्त आते हैं। जिसका आशय यह हुआ कि अभिजित नक्षत्र सूर्य के साथ ४ दिवस ६ मुहूर्त्त योग करता है। इस प्रकार अन्य स्थान पर भी समझना चाहिये।

१५ मुहूर्त्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

शतभिषा नक्षत्र चन्द्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग मे से ३३½ भाग योग करता है, तो सूर्य के साथ कितने दिवस और कितने मुहूर्त्त योग करता है ?

$$\frac{६७}{२} - ५ = \frac{६७}{२} \times \frac{१}{५} = \frac{६७}{१०}$$

अत ६ दिवस ७।१० मुहूर्त्त सूर्य के साथ योग करता है।

$\frac{७}{१०}$ के मुहूर्त्त जानने के लिये ३० से गुणा करने पर २१ मुहूर्त्त आते हैं। अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का सूर्य के साथ ६ दिवस और २१ मुहूर्त्त योग होता है।

इसी प्रकार अन्य नक्षत्रो के लिये जानना चाहिये।

३० मुहूर्त्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

श्रवण नक्षत्र चन्द्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग योग करता है तो सूर्य के साथ कितने समय योग करता है?

सूर्य के साथ होने वाले योग का समय जानने के लिये चन्द्र के साथ होने वाले योग के समय को ५ से भाग देने पर जो भाज्य-भाजक भाव से उपलब्ध होता है वह नक्षत्र का सूर्य के साथ का योगकाल समझना चाहिये।

६७—५=१३$\frac{२}{५}$ दिवस

२।५ के मुहूर्त्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर १२ मुहूर्त्त होते हैं। अतएव उस प्रकार से १३ दिवस १२ मुहूर्त्त अन्य नक्षत्र के साथ भी सूर्य का योगकाल जानना चाहिये।

४५ मुहूर्त्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

उत्तर भाद्रपद नक्षत्र चन्द्र के साथ $\frac{२०१}{२}$ भाग योग करता है। उसका सूर्य के साथ कितने समय योग होता है, यह समझने के लिये ५ से भाग देने पर $\frac{२०१}{२} \times \frac{१}{५}$ करने पर $\frac{२०१}{१०}$ आयेगा। उनके दिवस बनाने पर २० दिवस और ३ मुहूर्त्त समय होगे। जो उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल है।

—सूत्र ३४ समाप्त

दसवे प्राभृत का दूसरा प्राभृत-प्राभृत समाप्त।

सूत्र ४०

पूर्णिमा और अमावस्या का चन्द्र योग को अधिकार कर सन्निपात

पूर्णिमा	अमावस्या	कुल नक्षत्र	उपकुल नक्षत्र	कुलोपकुल नक्षत्र
१ श्रावणी	माघ	धनिष्ठा	श्रवण	अभिजित
२. भाद्रपदी	फाल्गुनी	उ भाद्रपद	पू भाद्रपद	शतभिषा
३ अश्विनी	चैत्री	अश्विनी	रेवती	
४. कार्तिक	वैशाखी	कृत्तिका	भरणी	
५ मार्गशीर्षी	जेष्ठा	मृगशिर	रोहिणी	

६	पौषी	आषाढी	पुष्य	पुनर्वसु	आर्द्रा
७	माध्वी	श्रावणी	मघा	आश्लेषा	
८	फाल्गुनी	भाद्रपदी	उ फाल्गुनी	पू फाल्गुनी	
९	चैत्री	अश्विनी	चित्रा	हस्त	
१०	वैशाखी	कार्तिकी	विशाखा	स्वाति	
११	ज्येष्ठा	मार्गशीर्षी	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा
१२	आषाढी	पौषी	उ षाढा	पू षाढा	

—सूत्र ४० समाप्त

दशम प्राभृत का सातवाँ प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।

दशम प्राभृत का दसवाँ प्राभृत-प्राभृत

सूत्र ४३

दक्षिणायन

मास	पौरुषी	वृद्धि
१. श्रावण	२ पाद ४ अंगुल	४ अंगुल
२ भाद्रपद	२ पाद ८ अंगुल	८ अंगुल
३ आसौज	३ पाद	१ पाद
४ कार्तिक	३ पाद ४ अंगुल	१ पाद ४ अंगुल
५ मार्गशीर्ष	३ पाद ८ अंगुल	१ पाद ८ अंगुल
६ पौष	४ पाद	२ पाद

उत्तरायण

मास	पौरुषी	हानि
१ माघ	३ पाद ८ अंगुल	४ अंगुल
२ फाल्गुन	३ पाद ४ अंगुल	८ अंगुल
३ चैत्र	३ पाद	१ पाद
४ वैशाख	२ पाद ८ अंगुल	१ पाद ४ अंगुल
५ जेष्ठ	२ पाद ४ अंगुल	१ पाद ८ अंगुल
६ आषाढ	२ पाद	२ पाद

—सूत्र ४३ समाप्त

दशम प्राभृत का दसवाँ प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।

दसवें प्राभृत का २२ (बाईसवां) प्राभृत-प्राभृत

सूत्र ६२

नक्षत्रसंख्या	सीमाविष्कम्भ भाग	नक्षत्र का नाम
२	६३०	दो अभिजित
अर्धक्षेत्र नक्षत्र १२	१००५	दो शतभिष यावत् दो ज्येष्ठा
समक्षेत्र नक्षत्र ३०	२०१०	दो श्रवण यावत् दो पूर्वाषाढा
द्व्यर्धक्षेत्र नक्षत्र १२	३०१५	दो उत्तराभाद्रपद यावत् दो उत्तराषाढा

५६ (नक्षत्र के नाम दसवें प्राभृत के दूसरे प्राभृत-प्राभृत मे देखें)
१ अहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करना चाहिये।

—सूत्र ६२ समाप्त।

सूत्र ७२ : बारहवां प्राभृत

संवत्सरों का प्रमाण

संवत्सर ५ प्रकार के कहे गये हैं—

१ नक्षत्र संवत्सर २ चन्द्र संवत्सर ३. ऋतु संवत्सर ४. आदित्य संवत्सर ५ अभिवर्धित संवत्सर।

१ नक्षत्र संवत्सर—नक्षत्र मास मे २७ दिवस २१/६७ मुहूर्त होते हैं। नक्षत्रमास ११९ मुहूर्त २७/६७ भागात्मक है।

नक्षत्र संवत्सर के दिवस कितने?—३२७ दिवस ५१/६७ भाग होते हैं। नक्षत्र संवत्सर ९८३२ मुहूर्त ५६/६७ भागात्मक है।

१ युग के ६७ नक्षत्र होते हैं।

१ युग के १८३० दिवस होते हैं।

नक्षत्रमास के दिवस ज्ञात करने के लिये १८३० को ६७ से भाग देने पर २७ दिवस २१/६७ भाग आते हैं।

नक्षत्रमास के मुहूर्त जानने के लिये १ दिवस के ३० मुहूर्त से नक्षत्रमास के दिवसों को गुणा करने पर मुहूर्तों की संख्या प्राप्त होगी—

$$\frac{१८३० \times ३०}{६७} = \frac{५४९००}{६७} = ८१९ \text{ मुहूर्त } २७/६७ \text{ भाग}$$

नक्षत्रसंवत्सर के दिवस ज्ञात करने के लिये नक्षत्रमास के दिवसों को १२ से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{१८३० \times १२}{६७} = \frac{२१९६०}{६७} = ३२७ \text{ दिवस } ५१/६७ \text{ मुहूर्त}$$

नक्षत्रसवत्सर के दिवस होते हैं।

नक्षत्रसवत्सर के मुहूर्त बनाने लिये नक्षत्रसवत्सर के दिवसो को ३० से गुणा करना चाहिये।

ऐसा करने पर $\frac{२१९६०}{६७} \times \frac{३०}{} = \frac{६५८८००}{६७} = ९८३२$ मुहूर्त ५६/६७ भाग नक्षत्रसंवत्सर के मुहूर्त है।

२ चन्द्रसंवत्सर—

चन्द्रमास के २९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त हैं।
चन्द्रमास ८८५ मुहूर्त ३०/६० भागात्मक है।
चन्द्रसवत्सर ३५४ दिवस १२/६२ मुहूर्तात्मक है।
चन्द्रसवत्सर १०६२५ मुहूर्त ५०/६२ भागात्मक है।
१ युग के चन्द्रमास ६२ हैं।
१ युग के दिवस १८३० हैं।
१ चन्द्रमास के दिवस जानने के लिये १८३० को ६२ से भाग देना चाहिये।
१८३०—६२=२९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त होते है।

चन्द्रमास के मुहूर्त जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसो की सख्या को ३० से गुणा करना चाहिये—

$$\frac{१८३० \times ३०}{} = \frac{५४९००}{६२} = ८८५ \text{ मुहूर्त } ३०/६२ \text{ भाग होते है।}$$

चन्द्रसवत्सर के दिवस जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसो को १२ से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{१८३० \times १२}{६२} = \frac{२१९६०}{६२} = ३५४ \text{ दिवस } १२/६२ \text{ मुहूर्तात्मक चन्द्रसवत्सर होता है।}$$

चन्द्रसवत्सर के मुहूर्त जानने के लिये वर्ष के दिवसो को ३० से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{२१९६० \times ३०}{६२} = \frac{६५८८००}{६२} = १०६२५ \text{ मुहूर्त } ५०/६२ \text{ भाग होते है।}$$

३ ऋतुसवत्सर—

१ युग के ऋतुमास ६१ है।
१ ऋतुमास के दिवस ३० है।

१ ऋतुमास के मुहूर्त ९०० है।
१ ऋतुवर्ष के दिवस ३६० है।
१ ऋतुवर्ष के मुहूर्त १०८०० है।

४. आदित्यसंवत्सर—

१ युग के आदित्यमास ६० है।
१ आदित्यमास के ३०$\frac{१}{२}$ दिवस हैं।
१ आदित्यमास के ९१५ मुहूर्त होते हैं।
१ आदित्यसवत्सर के ३६६ दिवस होते हैं।
१ आदित्यसवत्सर के १०९८० मुहूर्त होते है।

५ अभिवर्धितसंवत्सर—

१ अभिवर्धित मास के ३१ दिवस २९ मुहूर्त १७/६२ भाग होते है।
१ अभिवर्धित मास के ९५९ मुहूर्त १७/६२ भाग।
१ अभिवर्धित सवत्सर के ३८३ दिवस २१ मुहूर्त १८/६२ भाग होते है।
१ अभिवर्धित सवत्सर के ११५११ मुहूर्त १८/६२ भाग होते है। —सूत्र ७२ समाप्त।

सूत्र ७३—

नो युग के अहोरात्र का प्रमाण

	दिवस	मुहूर्त	वासठिया भाग	चूर्णित भाग
१ नक्षत्रसवत्सर	३२७	२२	५१	५५/६७
२ चन्द्रसवत्सर	३५४	५	५०	×
३ ऋतुसवत्सर	३६०	×	×	×
४ आदित्यसवत्सर	३६६	×	×	×
५ अभिवर्धितसवत्सर	३८३	२१	१८	×
	१७९१	१९	५७	५५/६७

नो युग के मुहूर्त—

१७९१ × ३० = ५३७३० + १९ = ५३७४९$\frac{५७}{६२}$ ५५/६७ चूर्णित भाग।
नो युग मे कितने दिवस मिलाने पर युग पूर्ण होता है ?—
३८ दिवस १० मुहूर्त $\frac{४}{६२}$ भाग १२/६७ चूर्णित भाग मिलाने से युग पूर्ण होता है।
कितने मुहूर्त मिलाने से युग के मुहूर्त पूर्ण होते है ?
३८ × ३० = १०४० + १० = ११ मुहूर्त
११५.० मुहूर्त $\frac{४}{६२}$ भाग १२/६७ चूर्णित भाग मिलाने पर युग के मुहूर्त पूर्ण होते है।
युग के दिवस कितने ?

१८३० दिवस ।
युग के मुहूर्त कितने ?
१८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त ।
५४९०० मुहूर्त के कितने वासठिया भाग होते है ?
५४९०० × ६२ = ३४०३८०० वासठिया भाग ।

—सूत्र ७३ समाप्त ।

वारहवां प्राभृत समाप्त ।

सूत्र ७९—

तेरहवां प्राभृत

चन्द्रमा की हानि-वृद्धि

शुक्लपक्ष मे वृद्धि होती है और कृष्णपक्ष मे हानि होती है ।
शुक्लपक्ष मे ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की वृद्धि होती है ।
कृष्णपक्ष मे ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की हानि होती है ।
चन्द्रमास का प्रमाण एव चन्द्रमास के मुहूर्तों का प्रमाण सूत्र ७२ के अनुसार जानना चाहिये ।
शुक्लपक्ष ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग हैं ।
कृष्णपक्ष मे ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग है ।
एकपक्ष १४ दिवस ४७/६२ भागात्मक है ।

—सूत्र ७९ समाप्त ।

सूत्र ८०—

१ युग मे ६२ पूर्णिमा और ६२ अमावस्या होती हैं ।
अमावस्या और पूर्णिमा तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हे ।
पूर्णिमा से अमावस्या तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं ।
पूर्णिमा से पूर्णिमा तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हे ।
अमावस्या से अमावस्या तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते है ।

—सूत्र ८० समाप्त ।

तेरहवां प्राभृत समाप्त ।

सूत्र ८३

पन्द्रहवां प्राभृत

एक मुहूर्त मे चन्द्र की गति

एक मुहूर्त मे चन्द्र उस-उस मडल के १७६८ भाग गति करता है ।
१ युग के अर्धमडल १७६८ है । १ युग के १८३० दिवस हैं ।

दो अर्धमडल अर्थात् एक मडल की परिक्रमा चन्द्र कितने रात्रि-दिवस मे पूर्ण करता है ? यह ज्ञात करने के लिये—

$$\frac{\text{१८३० दिवस} \times \text{२ अर्धमडल}}{\text{१७६८ भाग}} = \frac{\text{३६६०}}{\text{१७६८}}$$

= २ दिवस १२४/१७६८ भाग आते हैं।

१२४/१७६८ भाग के मुहूर्त बनाने के लिये उन्हे ३० से गुणा करने पर—

$$\frac{\text{१२४} \times \text{३०}}{\text{१७६८}} = \frac{\text{३७२०}}{\text{१७६८}} = \frac{\text{४६५}}{\text{२२१}}$$

=२ दिवस २ मुहूर्त २३/२२१ भाग मे चन्द्र एक मडल पूर्ण करता है।

एक मुहूर्त की गति कितनी ?

६२ मुहूर्त २३/२२१ भाग मे चन्द्र १०९८०० भाग (मडल का परिक्षेप) गति करता है तो एक मुहूर्त की गति जानने के लिये—

$$\frac{\text{२२१} \times \text{१०९८००}}{\text{१३७२५}} = \frac{\text{२४२६५८००}}{\text{१३७२५}}$$

१७६८ भाग
चन्द्र एक मुहूर्त मे १७६८ भाग गमन करता है।
सूर्य एक मुहूर्त मे १८३० भाग गति करता है।
सूर्य दो दिवस मे एक मडल पूर्ण करता है।
अर्थात् ६० मुहूर्त मे १०९८०० भाग गमन करता है।
एक मुहूर्त मे कितने भाग गमन करता है ?

$$\frac{\text{१०९८००}}{\text{६०}} = \text{१८३०}$$

सूर्य एक भाग मे १८३० भाग गमन करता है।
नक्षत्र एक मुहूर्त मे १८३५ भाग गमन करता है।
मुहूर्त जानने के लिये एक मडल का सक्रमण काल निकालना जरूरी है।
१८३५ अर्धमडल पूर्ण करने मे १८३० दिवस लगते है।
दो अर्धमडल पूर्ण करने पर कितने दिवस लगते है ?

$$\frac{\text{२} \times \text{१८३०}}{\text{१८३५}} = \text{१ दिवस १८२५/१८३५ मुहूर्त}$$

१८२५ भाग के मुहूर्त वनाने के लिये $\frac{\text{१८२५} \times \text{३०}}{\text{१८३५}}$

$$= \frac{\text{५४७५०}}{\text{१८३५}} = \text{२९ मुहूर्त ३०७/३६७ आते हैं।}$$

अर्थात् नक्षत्र को एक मडल पूर्ण करने मे १ दिवस २९ मुहूर्त ३०७/३६७ भाग समय लगता है।

अर्थात् ५९ मुहूर्त मे ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
अर्थात् ५९ मुहूर्त मे १०९८०० भाग परिक्षेप करता है।
एक मुहूर्त मे कितने भाग परिक्षेप करेगा?

$$५९\frac{३०७}{३६७}$$

$$=\frac{२१९६०}{३६७}$$

$$\frac{३६७\times१०९८००}{२१९६०}$$

=१८३५ भाग एक मुहूर्त मे गमन करता है।
सूर्य-चन्द्र की गति मे क्या विशेपता है?
सूर्य-चन्द्र की अपेक्षा ६२ भाग विशेप गमन करता है।
सूर्य १८३०—चन्द्र १७६८=६२ भाग
जब चन्द्र गति समापन्न हो तब नक्षत्र की गति से क्या विशेप है?
नक्षत्र ६७ भाग विशेप गति करता है। क्योकि नक्षत्र १८३५ भाग गमन करता है।
चन्द्र १७६८ भाग गमन करता है।
नक्षत्र १८३५—चन्द्र १७६८=६७ भाग अधिक गमन करता है।

सूत्र ८५—

नक्षत्रमास मे चन्द्र कितने मडल गति करता है?

चन्द्र एक नक्षत्रमास मे १३ मडल १३/६७ भाग गति करता है। इसका कारण यह है कि एक युग के नक्षत्रमास ६७ हैं। चन्द्र मडल ८८४ है। ६७ नक्षत्रमास मे ८८४ चन्द्रमडल चन्द्र गति करता है। एक नक्षत्रमास मे कितने मडल गति करता है?

८८४—६७=१३ मडल १३/६७ भाग गति करता है।
नक्षत्रमास मे सूर्य कितने मडल गति करता है?
१३ मडल ४४/६७ भाग गति करता है।

एक युग के ६७ नक्षत्रमास मे ९१५ सूर्यमडल की गति करे तो एक मास मे कितने मडल गति करता है?

$$\frac{९१५}{६७}$$ =१३ मडल ४४/६७ भाग गति करता है।

नक्षत्रमास मे नक्षत्र कितने मडल गति करना है?

एक युग के ६७ नक्षत्रमास मे १८३५ अर्धमडल गति करता है ।

$\frac{१८३५}{६७}$ = २७ अर्धमडल २६/६७ भाग

उनके मडल बनाने के लिये २ से भाग देने पर

$\frac{१८३५}{६७}$ — २ = १३ $\frac{४६॥}{६७}$ मडल

चन्द्रमास मे चन्द्र कितने मडल गति करता है ?
१२४ पर्व मे ८८४ मडल गति करता है ।
२ पर्व मे कितने मडल गति करता है ?

$\frac{२ \times ८८४}{१२४} = \frac{१७६८}{१२४} = १४ \frac{३२}{१२४}$

१४ मडल तथा पन्द्रहवे मडल के ३२/१२४ भाग ।

चन्द्रमास मे सूर्य कितने मडल गति करता है ?
१५ मडल मे चौथा भाग न्यून तथा १२४ भाग का एक अश ।
१४ मडल तथा पन्द्रहवे मडल के ९४/१२४ भाग ।
वह किस प्रकार से ?
१२४ पर्व मे ९१५ सूर्यमंडल गति करता है तो २ पर्व मे कितने सूर्यमडल गति करता है ?

$\frac{२ \times ९१५}{१२४} = \frac{१८३०}{१२४} = १४ \frac{९४}{१२४}$ मडल गति करता है ।

चन्द्रमास मे नक्षत्र कितने मडल गति करता है ?

१४ मडल तथा १५ वे मडल के $\frac{९४}{१२४}$ भाग ।

१२४ पर्व मे १८३५ नक्षत्र अर्धमडल गति करता है ।
तो २ पर्व मे कितने नक्षत्र अर्धमडल गति करता है ?

$\frac{२ \times १८३५}{१२४} = \frac{३६७०}{१२४} = २९ \frac{७४}{१२४}$

दो अर्धमडल का एक मडल होता है तो दो से भाग देने पर—

$\frac{३६७० — २}{१२४}$ = १४ मडल तथा ९९/१२४ भाग ।

ऋतुमास मे चन्द्र कितने मडल गति करता है ?
६१ कर्ममास मे ८८४ चन्द्रमडल गति करता है ।

तो कर्ममास मे कितने चन्द्रमडल गति करेगा ?

$$\frac{८८४}{६१} = १४\frac{३०}{६१}$$

१४ मडल तथा पन्द्रहवे मडल के ३०/६१ भाग।

ऋतुमास मे सूर्य कितने मडल की गति करता है ?
६१ कर्ममास मे ९१५ सूर्यमडल गति करता है।
१ कर्ममास मे कितने सूर्यमडल गति करेगा ?

$\frac{९१५}{६१}$ १५ मडल गति करता है।

ऋतुमास मे नक्षत्र कितने मडल गति करता है ?
१२२ ऋतुमास मे १८३५ नक्षत्रमडल गति करता है।
तो १ ऋतुमास मे कितने नक्षत्रमडल गति करेगा ?

$\frac{१८३५}{१२२} = १५\frac{५}{१२२}$ मडल गमन करता है।

सूर्यमास मे चन्द्र कितने मडल गमन करता है ?
६० सूर्यमास मे ८८४ चन्द्रमडल गति करता है।
तो १ सूर्यमास मे कितने चन्द्रमडल गति करेगा ?

$$\frac{८८४}{६०} = १४\frac{११}{१५}$$

१४ मडल पन्द्रहवे मडल का ११/१५ भाग

सूर्यमास मे सूर्य कितने मडल गमन करता है ?
६० सूर्यमास मे ९१५ सूर्यमडल गमन करता है।
तो एक सूर्यमास मे कितने सूर्यमडल गमन करेगा ?

$$\frac{९१५}{६०} = १५\frac{१५}{६०}$$

१५ मडल १/४ भाग।

सूर्यमास मे नक्षत्र कितने मडल गमन करता है।
१२० सूर्यमास मे १८३५ नक्षत्रमडल गमन करता है।
तो १ सूर्यमास कितने नक्षत्रमण्डल गमन करेगा ?

$\frac{१८३५}{१२०} = १५\frac{३५}{१२०}$ मडल

१५ मण्डल १६ वे के ३५/१२० भाग।

अभिवर्धित मास मे चन्द्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के अभिवर्धित मास ५७ $\frac{३}{१३}$ हैं।

क्योकि एक अभिवर्धित मास के मुहूर्त पूर्व मे बताये गये अनुसार—

९५९ $\frac{१७}{६२}$ मुहूर्त का एक मास।

$९५९ \times ६२ + १७ = \frac{५९४७५}{६२}$

युग के मुहूर्त १८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त। उनके ६२ भाग करना चाहिये
५४९०० × ६२ = ३४०३८०० भाग।

५९४७५/६२ मुहूर्त का १ अभिवर्धित मास होता है।

५४९०० मुहूर्त के कितने मास होगे ?

$\frac{५४९०० \times ६२}{५९४७५} = \frac{३४०३८००}{५९४७५}$

५७$\frac{१३७२५}{५९४७५}$ ५७$\frac{३}{१३}$ (४५७५ से छेद चलता है।)

५७ अभिवर्धित मास ३/१३ भाग।

५७$\frac{३}{१३}$ अभिवर्धित मास मे ८८४ चन्द्रमण्डल गमन करता है।

तो १ अभिवर्धित मास मे कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

५७$\frac{३}{१३}$ = ७४४/१३ होते हैं।

७४४/१३ अभिवर्धित मास मे कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

$\frac{८८४ \times १३}{७४४} = \frac{११४९२}{७४४} = १५\frac{८३}{१८६}$

१५ मण्डल चन्द्र गति करता है। ८३/१८६ भाग।

अभिवर्धित मास मे सूर्य कितने मण्डल गमन करता है।

एक युग के अभिवर्धित मास ७४४/१३ हैं, उनमें ९१५ सूर्यमण्डल गति करता है तो एक अभिवर्धित मास मे सूर्य कितने मण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{९१५ \times १३}{७४४} = \frac{११८९५}{७४४} = १५\frac{२४५}{२४८}$$

१५ मण्डल तथा १६वें मण्डल मे ३ भाग न्यून
अभिवर्धित मास मे नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के ७४४/१३ अभिवर्धित मास है। उसमे $\frac{१८३५}{२}$ मण्डल गमन करता है।

तो एक अभिवर्धित मास मे नक्षत्र कितने मण्डल गमन करेगा ?

$\frac{१३ \times १८३५}{२ \times ७४४} = \frac{२३८५५}{१४८८} = १६\frac{४७}{१४८८}$ मण्डल परिभ्रमण करेगा।

—सूत्र ८५ समाप्त।

सूत्र ८६

प्राभृत १५

चन्द्र रात्रि मे कितने मण्डल परिभ्रमण करता है ?
एक युग के अहोरात्र १८३० हैं। उनमे १७६८ अर्धमण्डल गति करता है।
तो एक अहोरात्र मे कितने अर्धमडल गति करेगा ?

$\frac{८८४}{९१५} = \frac{८८४}{९१५}$ एक अर्धमण्डल के ३१ भाग न्यून गति करता है।

सूर्य एक अहोरात्र मे कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० है, उनमे १८३० अर्धमण्डल गति करता है। तो एक अहोरात्र मे कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१८३०}{१८३०} = १$ अर्धमण्डल गति करेगा।

नक्षत्र कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० है। उनमे १८३५ अर्धमण्डल गति करता है। तो एक अहोरात्र मे कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१८३५}{१८३०} = १$ अर्धमण्डल ५/१८३० भाग गति करता है।

एक मण्डल गति करने पर चन्द्र को कितना समय लगता है ?

८८४ मण्डल गति करने पर चन्द्र को १८३० दिवस लगते है तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगेगे ?

$\frac{१८३०}{८८४} = २\frac{३१}{४४२}$ = दो दिवस और ३१/४४२ भाग मे एक मण्डल गति करता है।

एक मण्डल सूर्य कितने रात्रि-दिवस मे गमन करता है ?

९१५ मण्डल गति करने पर सूर्य को १८३० दिवस लगते है, तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगते है ?

$\frac{१८३०}{९१५}$ = २ अहोरात्र

नक्षत्र कितने दिवस मे एक मण्डल गति करता है ?

१८३५/२ मण्डल गति करने पर नक्षत्र को १८३० दिवस लगते है तो एक मण्डल की गति करने पर नक्षत्र को कितने दिवस लगेंगे ?

$$\frac{१८३०}{१८३५} \times २ = \frac{७३२}{३६७} = १\frac{३६५}{३६७}$$

दो अहोरात्र मे दो भाग कम
एक अहोरात्र के ३६७ भाग।

युग मे चन्द्र कितने मण्डल गति करता है ?

चन्द्र एक मुहूर्त में मण्डल के १०९८०० भाग मे से १७६८ भाग गति करता है। युग के मुहूर्त ५४९०० है।

एक मुहूर्त मे १७६८/१०९८०० गति करता है। तो ५४९०० मुहूर्त मे कितनी गति करेगा ?

$$\frac{५४९००}{१०९८००} \times १७६८ = \frac{९७०६३२००}{१०९८००} = ८८४$$

= ८८४ मण्डल गति करता है।

युग मे सूर्य के मण्डलो की सख्या ?
अर्थात् एक युग मे सूर्य कितने मण्डल गति करता है ?

सूर्य एक मुहूर्त मे १८३०/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त मे कितनी गति करेगा ?

$\frac{५४९०० \times १८३०}{१०९८००}$ = ९१५ मण्डल गति करता है।

युग मे नक्षत्रो की सख्या ?

अर्थात् एक युग मे नक्षत्र कितने मण्डल गति करता है ?

नक्षत्र एक मुहूर्त मे १८३५/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त मे कितनी गति करेगा ?

$$\frac{\text{५४९००} \times \text{१८३५}}{\text{१०९८००}} = \frac{\text{१८३५}}{\text{२}} = \text{९१७}\tfrac{\text{१}}{\text{२}} \text{ मण्डल}$$

९१७ मण्डल १/२ भाग गति करेगा ।

□□

परिशिष्ट-२

सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
सूत्र २० व २४

सूरमंडलस्स आयाम-विक्खंभो परिक्खेवो बाहल्लं च

प सूरमंडले णं भते ! केवइयं आयाम-विक्खभेण केवइय परिक्खेवेणं केवइय बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ गोयमा ! सूरमंडले अडयालीस एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खभेण[1] तं तिगुणं सविसेस परिक्खेवेणं चउवीसं एगसट्ठिभाए जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।

—जबु. वक्ख. ७, सु. १३०

जंबुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासति

प. जंबुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया किं तीय खेत्त ओभासति, पडुपन्न खेत्त ओभासति, अणागय खेत्तं ओभासंति ?

उ. गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासेंति, पडुप्पन्नं खेत्त ओभासेंति, नो अणागय खेत्तं ओभासेंति ।

प. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेंति, अपुट्ठं ओभासेंति ?

उ. गोयमा ! पुट्ठं ओभासेंति, नो अपुट्ठं ओभासेंति जाव ।[2]

प. तं भते ! किं एगदिसिं ओभासेंति, छद्दिसिं ओभासेंति ?

---

१ (क) सूरमडले ण अडयालीस एगसट्ठिभाए जोयणस्स विक्खभेण पण्णत्ते, —सम ४८, सु ३

(ख) सूरमडल जोयणे ण तेरसहिं एगट्ठिभाएहिं जोयणस्स ऊण पण्णत्त, —सम १३, सु ८

२ यावत् पद से सग्रहीत सूत्र

प त भते ! किं ओगाढ ओभासेति, अणोगाढ ओभासेति ?

उ गोयमा ! ओगाढ ओभासेति, नो अणोगाढ ओभासेति,

प. त भते ! किं अणतरोगाढ ओभासेंति, परपरोगाढ ओभासेति ?

उ गोयमा ! अणतरोगाढ ओभासेंति, नो परपरोगाढ ओभासेति,

प त भते ! किं अणु ओभासेंति, बायर ओभासेंति ?

उ गोयमा ! अणु पि ओभासेंति, बायर पि ओभासेंति,

प त भते ! किं उड्ढ ओभासेति, तिरिय ओभासेति अहे ओभासेंति ?

उ गोयमा ! उड्ढ पि, तिरिय पि, अहे वि ओभासेंति ।

(क्रमश)

उ. गोयमा ! नो एगदिसिं ओभासेंति, नियमा छद्दिसिं ओभासेंति।[1]—विया स. ८, उ ८, सु ३९, ४०

जबुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्नं खेत्तं उज्जोवेंति

प जबुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्त उज्जोवेंति, पडुप्पन्न खेत्त उज्जोवेंति, अणागयं खेत्त उज्जोवेंति ?

उ गोयमा ! नो तीये खेत्त उज्जोवेंति, पडुप्पन्न खेत्तं उज्जोवेंति, नो अणागय खेत्तं उज्जोवेंति, एव तवेंति, एव भासति जाव नियमा छद्दिसिं भासंति ।[2]

जबुद्दीवे सूरियाण ताव खेत्त पमाणं —विया. स ८, उ ८, सु. ४१-४२

प जबुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया केवइय खेत्त उड्ढं तवति ? केवइय खेत्त अहे तवति ? केवइयं खेत्तं तिरिय तवति ?

उ गोयमा ! एग जोयणसय उड्ढ तवति,[3] अट्ठारसजोयणसयाइं अहे तवति,[4] सीयालीसं जोयणसह-

---

प त भते ! किं आइ ओभासेति, मज्झे ओभासेंति, अते ओभासेंति ?

उ गोयमा ! आइ पि, मज्झे वि, अते वि ओभासेंति,

प त भते ! किं सविसए ओभासेंति, अविसए ओभासेंति ?

उ गोयमा ! सविसए ओभासेंति, नो अविसए ओभासेति,

प त भते ! किं आणुपुव्वि ओभासेति, अणाणुपुव्वि ओभासेंति ?

उ गोयमा ! आणुपुव्वि ओभासेंति, नो अणाणुपुव्वि ओभासेंति,

प त भते ! कइ दिसिं ओभासेंति ?

उ गोयमा ! नियमा छद्दिसिं ओभासेंति, —विया स ८, उ ८, सु ३९ टिप्पण

[प त भते ! किं एगदिसिं ओभासेंति, छद्दिसिं ओभासेति ?

उ गोयमा ! नो एगदिसिं ओभासेंति, नियमा छद्दिसिं ओभासेंति ।] (पाठान्तर)

१. जबु वक्ख ७, सु, १३७

२ जबु वक्ख ७, सु १३७

३ (क) जबु वक्ख ७, सु १३९

(ख) सूरिय पा ४, सु २५

सूर्य के विमान से सौ योजन ऊपर शनैश्चर ग्रह का विमान है और वही तक ज्योतिप चक्र की सीमा है, अत इससे ऊपर सूर्य का तापक्षेत्र नही है ।

४ जबूद्वीप के पश्चिम महाविदेह से जयतद्वार की ओर लवणसमुद्र के समीप क्रमश एक हजार योजन पर्यन्त भूमि नीचे है, इस अपेक्षा से एक हजार योजन तथा मेरु के समीप की समभूमि से ८०० योजन ऊँचा सूर्य का विमान है, ये आठ सौ योजन सयुक्त करने पर अठारह सौ योजन सूर्य विमान से नीचे की ओर का तापक्षेत्र है, अन्य द्वीपो मे भूमि सम रहती है । इसलिए वहाँ सूर्य का नीचे का तापक्षेत्र केवल आठ सौ योजन का है । अठारह सौ योजन नीचे की ओर के तापक्षेत्र के और सौ योजन ऊपर की ओर के तापक्षेत्र के, इन दोनो सख्याओ के सयुक्त करने पर १९०० योजन का सूर्य का तापक्षेत्र है ।

स्साइं दोण्णि तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरियं तवंति ।[1]

—विया. स ८, उ ८, सु ४५

□□

---

१ यहां तिरछे तापक्षेत्र का कथन पूर्व-पश्चिम दिशा की अपेक्षा से कहा गया है, अर्थात् उत्कृष्ट इतनी दूरी पर स्थित सूर्य मानव चक्षु से देखा जा सकता है ।

उत्तर मे १८० योजन न्यून पैंतालीस हजार योजन तथा दक्षिणदिशा मे द्वीप मे १८० योजन और लवण-समुद्र मे तेतीस हजार तीन सौ तेतीस योजन तथा एक योजन के तृतीय भाग सयुक्त दूरी से सूर्य देखा जा सकता है ।

अनध्यायकाल

[स्व० आचार्यप्रवर श्री आत्मारामजी म० द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत]

स्वाध्याय के लिए आगमो मे जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रो का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल मे स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियो मे भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायो का उल्लेख करते है। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थो का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वरविद्या सयुक्त होने के कारण, इनका भी आगमो मे अनध्यायकाल वर्णित किया गया है, जैसे कि—

दसविधे अतलिक्खिते असज्झाए पण्णत्ते, त जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते धूमिता, महिता, रयउग्घाते।

दसविहे ओरालिते असज्झातिते, त जहा—अट्ठी, मस, सोणिते, असुतिसामते, सुसाणसामते, चदोवराते, सूरोवराते, पडने, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अतो ओरालिए सरीरगे।

—स्थानाङ्गसूत्र, स्थान १०

नो कप्पति निग्गथाण वा निग्गथीण वा चउहि महापाडिवएहि सज्झाय करित्तए, त जहा—आसाढपाडिवए, इदमहपाडिवए, कत्तिअपाडिवए सुगिम्हपाडिवए। नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा, चउहि सझाहि सज्झाय करेत्तए, त जहा—पढिमाते, पच्छिमाते, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते। कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा, चाउक्काल सज्झाय करेत्तए, त जहा—पुव्वण्हे अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।

—स्थानाङ्गसूत्र, स्थान ४, उद्देश २

उपरोक्त सूत्रपाठ के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या, इस प्रकार बत्तीस अनध्याय माने गए है, जिनका सक्षेप मे निम्न प्रकार से वर्णन है, जैसे—

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१. **उल्कापात-तारापतन**—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२ **दिग्दाह**—जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पडे कि दिशा मे आग सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नही करना चाहिए।

३. **गर्जित**—बादलो के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. **विद्युत**—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास मे नही मानना चाहिए। क्योकि वह

गर्जन और विद्युत् प्राय ऋतु-स्वभाव से ही होता है । अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नही माना जाता ।

५. **निर्घात**—बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर, या बादलो सहित आकाश मे कडकने पर दो प्रहर तक अस्वाध्याय काल है ।

६ **यूपक**—शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है । इन दिनो प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

७ **यक्षादीप्त**—कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोडे थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है, वह यक्षादीप्त कहलाता है । अत आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

८ **धूमिका-कृष्ण**—कार्तिक से लेकर माघ तक का समय मेघो का गर्भमास होता है । इसमे धुम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध पडती है । वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है । जब तक यह धुध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

९ **मिहिकाश्वेत**– शीतकाल मे श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध मिहिका कहलाती है । जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्याय काल है ।

१० **रज-उद्घात**—वायु के कारण आकाश मे चारो ओर धूलि छा जाती है । जब तक यह धूलि फैली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

उपरोक्त दस कारण आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय के है ।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१२-१३. हड्डी, मांस और रुधिर—पचेन्द्रिय तिर्यंच की हड्डी, मास और रुधिर यदि सामने दिखाई दे, तो जब तक वहाँ से ये वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है । वृत्तिकार आस-पास के ६० हाथ तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं ।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, मास और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है । विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है । स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक । बालक एव बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमश सात एव आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है ।

१४ अशुचि—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है ।

१५ श्मशान—श्मशानभूमि के चारो ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है ।

१६. चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

१७ सूर्यग्रहण—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है ।

१८. पतन—किसी वडे मान्य राजा अथवा राष्ट्रपुरुष का निधन होने पर जव तक उसका दाहसस्कार न हो, तव तक स्वाध्याय नही करना चाहिए अथवा जव तक दूसरा अधिकारी सत्तारुढ न हो, तव तक शनै शनै स्वाध्याय करना चाहिए।

१९ राजव्युद्ग्रह—समीपस्थ राजाओ मे परस्पर युद्ध होने पर जव तक शान्ति न हो जाए, तव तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नही करें।

२० औदारिक शरीर—उपाश्रय के भीतर पचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जव तक कलेवर पडा रहे, तव तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पड़ा हो तो स्वाध्याय नही करना चाहिए।

अस्वाध्याय के उपरोक्त १० कारण औदारिक शरीर सम्वन्धी कहे गये हैं।

२१-२८ चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा—आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमाओ के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमे स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्धरात्रि—प्रात. सूर्य उगने से एक घडी पहिले तथा एक घडी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर मे एक घडी आगे और एक घडी पीछे एव अर्धरात्रि मे भी एक घडी आगे तथा एक घडी पीछे स्वाध्याय नही करना चाहिए।

□□

अर्थसहयोगी सदस्यों की शुभ नामावली

महास्तम्भ

१ श्री सेठ मोहनमलजी चोरडिया, मद्रास
२ श्री गुलावचन्दजी मागीलालजी सुराणा, सिकन्दरावाद
३ श्री पुखराजजी शिशोदिया, ब्यावर
४ श्री सायरमलजी जेठमलजी चोरडिया, बैंगलोर
५ श्री प्रेमराजजी भवरलालजी श्रीश्रीमाल, दुर्ग
६ श्री एस. किशनचन्दजी चोरडिया, मद्रास
७ श्री कवरलालजी बैताला, गोहाटी
८ श्री सेठ खीवराजजी चोरडिया, मद्रास
९ श्री गुमानमलजी चोरडिया, मद्रास
१० श्री एस वादलचन्दजी चोरडिया, मद्रास
११ श्री जे दुलीचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१२ श्री एस रतनचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१३ श्री जे अन्नराजजी चोरडिया, मद्रास
१४ श्री एस. सायरचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१५ श्री आर शान्तिलालजी उत्तमचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१६ श्री सिरेमलजी हीराचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१७ श्री जे हुक्मीचन्दजी चोरडिया, मद्रास

स्तम्भ सदस्य

१ श्री अगरचन्दजी फतेचन्दजी पारख, जोधपुर
२ श्री जसराजजी गणेशमलजी सचेती, जोधपुर
३ श्री तिलोकचदजी सागरमलजी सचेती, मद्रास
४ श्री पूसालालजी किस्तूरचदजी सुराणा, कटगी
५ श्री आर. प्रसन्नचन्दजी चोरडिया, मद्रास
६ श्री दीपचन्दजी चोरडिया, मद्रास
७ श्री मूलचन्दजी चोरडिया, कटगी
८ श्री वर्द्धमान इण्डस्ट्रीज, कानपुर
९ श्री मागीलालजी मिश्रीलालजी सचेती, दुर्ग

संरक्षक

१ श्री बिरदीचदजी प्रकाशचदजी तलेसरा, पाली
२ श्री ज्ञानराजजी केवलचन्दजी मूथा, पाली
३ श्री प्रेमराजजी जतनराजजी महता, मेडता सिटी
४ श्री श० जडावमलजी माणकचन्दजी बेताला, बागलकोट
५ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चौपडा, ब्यावर
६ श्री मोहनलालजी नेमीचदजी ललवाणी, चागाटोला
७ श्री दीपचदजी चन्दनमलजी चोरडिया, मद्रास
८ श्री पन्नालालजी भागचन्दजी बोथरा, चागाटोला
९ श्रीमती सिरेकुँवर बाई धर्मपत्नी स्व श्री सुगनचदजी झामड, मदुरान्तकम्
१० श्री बस्तीमलजी मोहनलालजी बोहरा (K G. F) जाडन
११ श्री थानचदजी मेहता, जोधपुर
१२ श्री भैरुदानजी लाभचदजी सुराणा, नागौर
१३ श्री खूबचन्दजी गादिया, ब्यावर
१४ श्री मिश्रीलालजी धनराजजी विनायकिया, ब्यावर
१५ श्री इन्द्रचदजी वैद, राजनादगाव
१६ श्री रावतमलजी भीकमचदजी पगारिया, बालाघाट
१७ श्री गणेशमलजी धर्मीचन्दजी कांकरिया, टगला
१८ श्री सुगनचन्दजी बोकडिया, इन्दौर
१९ श्री हरकचदजी सागरमलजी बेताला, इन्दौर
२० श्री रघुनाथमलजी लिखमीचदजी लोढा, चागाटोला
२१ श्री सिद्धकरणजी शिखरचन्दजी बैद, चागाटोला

२२ श्री सागरमलजी नोरतमलजी पीचा, मद्रास
२३ श्री मोहनराजजी मुकनचन्दजी बालिया, अहमदाबाद
२४ श्री केशरीमलजी जवरीलालजी तलेसरा, पाली
२५ श्री रतनचदजी उत्तमचदजी मोदी, ब्यावर
२६ श्री धर्मीचदजी भागचदजी बोहरा, झूठा
२७ श्री छोगमलजी हेमराजजी लोढा डोडीलोहारा
२८ श्री गुणचदजी दलीचदजी कटारिया, बेल्लारी
२९ श्री मूलचदजी सुजानमलजी सचेती, जोधपुर
३० श्री सी० अमरचदजी बोथरा, मद्रास
३१. श्री भवरलालजी मूलचदजी सुराणा, मद्रास
३२ श्री बादलचदजी जुगराजजी मेहता, इन्दौर
३३ श्री लालचदजी मोहनलालजी कोठारी, गोठन
३४ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चौपडा, अजमेर
३५ श्री मोहनलालजी पारसमलजी पगारिया, बैंगलोर
३६ श्री भवरीमलजी चोरडिया, मद्रास
३७ श्री भवरलालजी गोठी, मद्रास
३८ श्री जालमचदजी रिखबचदजी बाफना, आगरा
३९ श्री घेवरचदजी पुखराजजी भुरट, गोहाटी
४० श्री जवरचदजी गेलडा, मद्रास
४१ श्री जडावमलजी सुगनचदजी, मद्रास
४२ श्री पुखराजजी विजयराजजी, मद्रास
४३ श्री चेनमलजी सुराणा ट्रस्ट, मद्रास
४४ श्री लूणकरणजी रिखबचदजी लोढा, मद्रास
४५ श्री सूरजमलजी सज्जनराजजी महेता, कोप्पल

सहयोगी सदस्य

१ श्री देवकरणजी श्रीचन्दजी डोसी, मेडता सिटी
२ श्रीमती छगनीबाई विनायकिया, ब्यावर
३ श्री पूनमचदजी नाहटा, जोधपुर
४ श्री भवरलालजी विजयराजजी काकरिया, विल्लीपुरम्
५ श्री भवरलालजी चौपडा, ब्यावर
६ श्री विजयराजजी रतनलालजी चतर, ब्यावर
७ श्री बी गजराजजी बोकडिया, सेलम
८ श्री फूलचन्दजी गौतमचन्दजी काठेड, पाली
९ श्री के पुखराजजी बाफणा, मद्रास
१० श्री रूपराजजी जोधराजजी मूथा, दिल्ली
११ श्री मोहनलालजी मगलचदजी पगारिया, रायपुर
१२ श्री नथमलजी मोहनलालजी लूणिया, चण्डावल
१३. श्री भवरलालजी गौतमचन्दजी पगारिया, कुशालपुरा
१४ श्री उत्तमचदजी मागीलालजी, जोधपुर
१५ श्री मूलचन्दजी पारख, जोधपुर
१६ श्री सुमेरमलजी मेडतिया, जोधपुर
१७ श्री गणेशमलजी नेमीचन्दजी टाटिया, जोधपुर
१८ श्री उदयराजजी पुखराजजी सचेती, जोधपुर
१९ श्री बादरमलजी पुखराजजी बट, कानपुर
२० श्रीमती सुन्दरबाई गोठी W/o श्री ताराचन्दजी गोठी, जोधपुर
२१ श्री रायचदजी मोहनलालजी, जोधपुर
२२ श्री घेवरचदजी रूपराजजी, जोधपुर
२३ श्री भवरलालजी माणकचदजी सुराणा, मद्रास
२४ श्री जवरीलालजी अमरचन्दजी कोठारी ब्यावर
२५ श्री माणकचन्दजी किशनलालजी, मेडतासिटी
२६ श्री मोहनलालजी गुलाबचन्दजी चतर, ब्यावर
२७ श्री जसराजजी जवरीलालजी धारीवाल, जोधपुर
२८ श्री मोहनलालजी चम्पालालजी गोठी, जोधपुर
२९ श्री नेमीचदजी डाकलिया मेहता, जोधपुर
३० श्री ताराचदजी केवलचदजी कर्णावट, जोधपुर
३१ श्री आसूमल एण्ड क०, जोधपुर
३२ श्री पुखराजजी लोढा, जोधपुर
३३ श्रीमती सुगनीबाई W/o श्री मिश्रीलालजी साड, जोधपुर
३४ श्री बच्छराजजी सुराणा, जोधपुर
३५. श्री हरकचन्दजी मेहता, जोधपुर
३६ श्री देवराजजी लाभचदजी मेड़तिया, जोधपुर
३७ श्री कनकराजजी मदनराजजी गोलिया, जोधपुर
३८ श्री घेवरचन्दजी पारसमलजी टाटिया, जोधपुर
३९ श्री मागीलालजी चोरड़िया, कुचेरा

४०. श्री सरदारमलजी सुराणा, भिलाई
४१ श्री ओकचदजी हेमराजजी सोनी, दुर्ग
४२ श्री सूरजकरणजी सुराणा, मद्रास
४३ श्री घीसूलालजी लालचदजी पारख, दुर्ग
४४ श्री पुखराजजी बोहरा, (जैन ट्रान्सपोर्ट क) जोधपुर
४५ श्री चम्पालालजी सकलेचा, जालना
४६ श्री प्रेमराजजी मीठालालजी कामदार, वैंगलोर
४७ श्री भवरलालजी मूथा एण्ड सन्स, जयपुर
४८. श्री लालचदजी मोतीलालजी गादिया, वैंगलोर
४९ श्री भवरलालजी नवरत्नमलजी साखला, मेट्टूपालियम
५०. श्री पुखराजजी छल्लाणी, करणगुल्ली
५१ श्री आसकरणजी जसराजजी पारख, दुर्ग
५२ श्री गणेशमलजी हेमराजजी सोनी, भिलाई
५३ श्री अमृतराजजी जसवन्तराजजी मेहता, मेडतासिटी
५४ श्री घेवरचदजी किशोरमलजी पारख, जोधपुर
५५ श्री मागीलालजी रेखचदजी पारख, जोधपुर
५६. श्री मुन्नीलालजी मूलचदजी गुलेच्छा, जोधपुर
५७ श्री रतनलालजी लखपतराजजी, जोधपुर
५८ श्री जीवराजजी पारसमलजी कोठारी, मेडता सिटी
५९. श्री भवरलालजी रिखवचदजी नाहटा, नागौर
६० श्री मागीलालजी प्रकाशचन्दजी रूणवाल, मैसूर
६१. श्री पुखराजजी वोहरा, पीपलिया कला
६२ श्री हरकचदजी जुगराजजी बाफना, वैंगलोर
६३ श्री चन्दनमलजी प्रेमचदजी मोदी, भिलाई
६४ श्री भीवराजजी वाघमार, कुचेरा
६५ श्री तिलोकचदजी प्रेमप्रकाशजी, अजमेर
६६ श्री विजयलालजी प्रेमचदजी गुलेच्छा, राजनादगाव
६७ श्री रावतमलजी छाजेड, भिलाई
६८. श्री भंवरलालजी डूगरमलजी काकरिया, भिलाई
६९ श्री हीरालालजी हस्तीमलजी देशलहरा, भिलाई
७० श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावकसघ, दल्ली-राजहरा
७१ श्री चम्पालालजी बुद्धराजजी बाफणा, ब्यावर
७२ श्री गगारामजी इन्द्रचदजी बोहरा, कुचेरा
७३ श्री फतेहराजजी नेमीचदजी कर्णावट, कलकत्ता
७४ श्री बालचदजी थानचन्दजी भुरट, कलकत्ता
७५ श्री सम्पतराजजी कटारिया, जोधपुर
७६ श्री जवरीलालजी शातिलालजी सुराणा, बोलारम
७७ श्री कानमलजी कोठारी, दादिया
७८ श्री पन्नालालजी मोतीलालजी सुराणा, पाली
७९. श्री माणकचदजी रतनलालजी मुणोत, टगला
८० श्री चिम्मनसिंहजी मोहनसिंहजी लोढा, ब्यावर
८१ श्री रिद्धकरणजी रावतमलजी भुरट, गौहाटी
८२. श्री पारसमलजी महावीरचदजी बाफना, गोठन
८३ श्री फकीरचदजी कमलचदजी श्रीश्रीमाल, कुचेरा
८४. श्री माँगीलालजी मदनलालजी चोरडिया, भैरूदा
८५ श्री सोहनलालजी लूणकरणजी सुराणा, कुचेरा
८६ श्री घीसूलालजी, पारसमलजी, जवरीलालजी कोठारी, गोठन
८७ श्री सरदारमलजी एण्ड कम्पनी, जोधपुर
८८ श्री चम्पालालजी हीरालालजो बागरेचा, जोधपुर
८९ श्री धुखराजजी कटारिया, जोधपुर
९० श्री इन्द्रचन्दजी मुकनचन्दजी, इन्दौर
९१ श्री भवरलालजी बाफणा, इन्दौर
९२ श्री जेठमलजी मोदी, इन्दौर
९३ श्री बालचन्दजी अमरचन्दजी मोदी, ब्यावर
९४ श्री कुन्दनमलजी पारसमलजी भडारी, बैंगलौर
९५ श्रीमती कमलाकवर ललवाणी धर्मपत्नी श्री स्व पारसमलजी ललवाणी, गोठन
९६ श्री अखेचदजी लूणकरणजी भण्डारी, कलकत्ता
९७ श्री सुगनचन्दजी सचेती, राजनादगाँव

९८ श्री प्रकाशचदजी जैन, नागौर
९९ श्री कुशालचदजी रिखवचन्दजी सुराणा, वोलारम
१०० श्री लक्ष्मीचदजी अशोककुमारजी श्रीश्रीमाल, कुचेरा
१०१ श्री गूदडमलजी चम्पालालजी, गोठन
१०२ श्री तेजराजजी कोठारी, मागलियावास
१०३. सम्पतराजजी चोरड़िया, मद्रास
१०४ श्री अमरचदजी छाजेड, पादु वडी
१०५ श्री जुगराजजी धनराजजी बरमेचा, मद्रास
१०६ श्री पुखराजजी नाहरमलजी ललवाणी, मद्रास
१०७ श्रीमती कचनदेवी व निर्मलादेवी, मद्रास
१०८ श्री दुलेराजजी भवरलालजी कोठारी, कुशालपुरा
१०९ श्री भवरलालजी मागीलालजी वेताला, डेह
११० श्री जीवराजजी भवरलालजी चोरडिया, भैरू दा
१११ श्री माँगीलालजी शातिलालजी रूणवाल, हरसोलाव
११२ श्री चादमलजी धनराजजी मोदी, अजमेर
११३ श्री रामप्रसन्न ज्ञानप्रसार केन्द्र, चन्द्रपुर
११४ श्री भूरमलजी दुलीचदजी बोकडिया, मेड़ता सिटी
११५ श्री मोहनलालजी धारीवाल, पाली
११६ श्रीमती रामकुवरबाई धर्मपत्नी श्री चादमलजी लोढा, बम्बई
११७ श्री माँगीलालजी उत्तमचदजी वाफणा, वैंगलोर
११८ श्री साचालालजी वाफणा, औरगावाद
११९ श्री भीखमचन्दजी माणकचन्दजी खाविया, (कुडालोर) मद्रास
१२० श्रीमती अनोपकुवर धर्मपत्नी श्री चम्पालालजी सघवी, कुचेरा
१२१ श्री सोहनलालजी सोजतिया, थावला
१२२ श्री चम्पालालजी भण्डारी, कलकत्ता
१२३ श्री भीखमचन्दजी गणेशमलजी चौधरी, धूलिया
१२४ श्री पुखराजजी किशनलालजी तातेड, सिकन्दरावाद
१२५ श्री मिश्रीलालजी सज्जनलालजी कटारिया सिकन्दरावाद
१२६ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैनश्रावक सघ, वगडीनगर
१२७. श्री पुखराजजी पारसमलजी ललवाणी, बिलाडा
१२८ श्री टी पारसमलजी चोरड़िया, मद्रास
१२९ श्री मोतीलालजी आसूलालजी बोहरा एण्ड कं., बैंगलोर
१३० श्री सम्पतराजजी सुराणा, मनमाड़ □□